CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धेय दंडी श्री स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती को
प्रणाम सहित
चौधरी राजगुरुप्रसाद शर्मा
२४/३/८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि वंश

(भाग-2)

चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद

भारती प्रकाशन

नई दिल्ली-110016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि वंश (भाग-2)

सर्वाधिकार
लेखक के अधीन

© भारती प्रकाशन

प्रकाशक
भारती प्रकाशन
27-ए, जिया सराय,
नई दिल्ली-110016

प्रथम संस्करण
1988

मूल्य
अस्सी रुपये

मुद्रक
चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

BRAHAMARSHI VANSH (Part-2)
Ch. Raj Narayan Sharma
Rs. 80.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

लोकतन्त्र और औद्योगीकरण के युग में जाति-प्रथा और वर्णाश्रम समाज का ढांचा वस्तुतः अतीत का अवशेष बनकर रह गया है। आज सबसे अधिक जातिवाद की आलोचना होती है। साम्प्रदायिकता से भी अधिक घातक जातिवाद को माना जाता है, किन्तु यह भी देखने में आता है कि शादी-विवाह और नौकरी आदि के मामलों में ही नहीं, चुनावों के समय टिकट देने अथवा वोट जुटाने के क्रम में भी जाति का सहारा लिया जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो मुसलमानों के आक्रमण के बाद ही रक्त-सम्बन्ध और वर्ण-व्यवस्था की दीवारें गिरने लग गई थीं। लक्षण और गुण की दृष्टि से आज न तो कोई शुद्ध ब्राह्मण है, न शूद्र ही। फिर भी हर कोई अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए अपनी जाति की दुहाई देने से चूकता नहीं है। दुखदायी बात तो यह है कि एक जाति में से कई उपजातियां उत्पन्न हो गयी हैं। जितना गहरा स्वार्थ होगा, उतनी ही तीव्रता से कोई जाति विशेष अपनी उपजाति का पल्ला पकड़ना चाहेगी और इस स्वार्थ ने समाज को कई टुकड़ों में बांटकर रख दिया है।

बहरहाल, मैं इस पुस्तक की भूमिका में जातिवाद के गुण-दोष का विवेचन करना नहीं चाहता। कुछ भी लिखने से पूर्व एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आज के युग में कर्म और गुण से कोई ऊंच या नीच हो सकता है। आज यह विश्वास कर सकना कठिन है कि सब प्राणियों का जन्म से ही अपना-अपना कर्म निश्चित होता है—

"स्वयोनितः कर्म सदा चरन्ति।" एक समय था जब ज्ञान के प्रचार-प्रसार का दायित्व ब्राह्मणों पर था। एक समय था जब राजकर्मी अथवा कृषि-कर्मी ब्राह्मण को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था, किन्तु आज एक अपढ़, जाहिल और प्रपंच में डूबा हुआ व्यक्ति यदि ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होता है तो उसे भी ब्राह्मण ही कहा जाता है। इतना ही नहीं, ब्राह्मणों के बीच भी बहुत सारे भेद उत्पन्न हो गये हैं और इनमें से प्रत्येक शाखा अथवा उप-शाखा अपने आपको अन्य से श्रेष्ठ समझती है।

वस्तुतः इस पुस्तक में चौ० राजनारायण शर्मा ने ब्रह्मर्षि वंश की प्रामाणिक तालिका और विवरण देकर यह समझाने का प्रयत्न किया है कि ब्रह्मर्षि वंश की विभिन्न शाखाएं, उपशाखाएं एक ही वृक्ष से फूटी हैं। इनके न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। आज के युग में जातिवाद निश्चय ही अपना अर्थ खो चुका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, किन्तु यह जानना आवश्यक है कि कौन क्या था, कहां से चला और कहां पहुंचा।

महाभारत कालीन समाज में वर्ण-व्यवस्था पूरी तरह स्थापित हो चुकी थी। महाभारत में ऐसे कई दृष्टांत मिल जाते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि उन दिनों चातुर्वर्ण्य को ईश्वर प्रदत्त माना जाता था। प्राच्य पंडितों का सिद्धान्त है कि कौरव-पांडवों का युद्ध ईसा के जन्म से 3101 वर्ष पूर्व हुआ था और परीक्षित के शरीर-त्याग के बाद जन्मेजय के सर्पसत्र से पहले, महाभारत की रचना हुई थी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन दिनों विभिन्न व्यवसायों पर वंशगत अधिकार स्थापित हो चुका था।

पुरोहित का पुत्र पुरोहित, योद्धा का पुत्र योद्धा और कारीगर का पुत्र कारीगर कहलाने लग गया था, भले ही उसमें अपने पिता का व्यावसायिक गुण हो या न हो। चौथा वर्ण शूद्रों का था जो पराजित, पद-दलित, शोषित वर्ग के अधिकारहीन वंशज थे। कालान्तर में ये चार वर्ण कई उपवर्णों अथवा उपजातियों में बंट गये। बंटने और टूटने की प्रक्रिया आज तक जारी है और शायद तब तक जारी रहेगी जब तक शुद्ध सफल लोकतन्त्र और पूर्ण औद्योगीकरण इनकी निरर्थकता सिद्ध नहीं कर देता।

परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम है। इस नियम के अनुसार दृश्यमान कहीं अतीत के गर्त में तिरोहित हो जाता है और नवीन का आविर्भाव होता रहता है। अन्ततः नवीन पुरातन हो जाता है एवम् इस प्रकार सृष्टि की प्रक्रिया अविराम चलती रहती है। अनादि-काल से चला आ रहा यह क्रम सदैव अबाधित रहा है। समाज की संरचना के परिप्रेक्ष्य में भी यही बात चरितार्थ होती है। सहस्त्रों वर्ष पूर्व इस देश के समाज-स्रष्टाओं और व्यवस्थापकों ने ऋग्वेद के मंत्र —

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
उरु तदस्य वैश्यः पद्भ्यां शुद्रो अजायत॥

ऋग्वेद 10।90।12

का आश्रय लेकर सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला रखी थी। समाज में जो व्यक्ति उन्हें प्रज्ञावान, मनीषी, चिन्तक प्रतीत हुए और जिनसे समाज के उत्थान की आशा की जा सकती थी, ऐसे व्यक्तियों को 'ब्राह्मण' की संज्ञा प्रदान की गई। यह वर्ग अपने गुण, कर्म और स्वभाव से उदारचेता, अपरिग्रही एवम् प्राणि मात्र के योग क्षेम के लिए सदैव तत्पर रहा। इस सुधी समुदाय ने ब्रह्म विद्या, योग, आयुर्वेद, कृषि, युद्धकला, शस्त्रास्त्रों का निर्माण, शिल्प आदि सभी में पारंगत होकर सामाजिक उन्नयन में भरपूर योगदान दिया। जगत भर्त्ता बनकर भी भिक्षु रहे। सादा जीवन और उच्च विचारों के आदर्श का पालन करते हुए नगरों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर कहीं एकान्त वन में रहकर ज्ञान, विज्ञान के नवीनतम स्रोतों का अनुसंधान करना ही इन्हें इष्ट रहा। मनुस्मृति में ब्राह्मणों के महत्व का प्रतिपादन करते हुए निर्देश दिया गया है कि "इस देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों से पृथ्वीपर्यन्त के सभी व्यक्ति अपना-अपना आचार सीखें।"

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशा दग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः

मनुस्मृति अ० 2/20

मनुस्मृति के निर्माण से पूर्व भी ब्राह्मण श्रेष्ठ माने जाते थे। यह तथ्य मनु के शब्दों से भी स्पष्टतया ध्वनित होता है—

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धि जीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः॥

अर्थात् जीवों में प्राणधारी, प्राणधारियों में बुद्धिमान, बुद्धिमानों में मनुष्य और मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ कहे गये हैं। शास्त्रों में ब्राह्मणों की उपयोगिता तथा उनके सर्वकालिक महत्व के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। ब्राह्मण की देहयष्टि धर्म का अविनाशी शरीर है। उनका जन्म धर्म के विस्तार के लिए होता और वह आत्मज्ञान प्राप्त कर आवागमन से छूट कर मोक्ष पद को प्राप्त करता है। पृथ्वी में ब्राह्मण सभी व्यक्तियों से श्रेष्ठ इसलिए कहा गया है कि वह प्राणिमात्र की रक्षा के लिए सदैव सन्नद्ध रहता है। ब्राह्मण कभी किसी की कृपा पर अवलम्बित नहीं रहता। पृथ्वी की समस्त सम्पत्ति ब्राह्मणों की ही मानी गई है। वे जो कुछ अशन, वसन धारण करते हैं वह सब उन्हीं का है तथा अन्य लोग ब्राह्मण की कृपा से ही भोजनादि प्राप्त करते हैं। ब्राह्मणों की योग्यता, प्रतिभा, सदाचार, त्याग एवम् तपः पूत जीवन देखकर समाज के अन्य वर्गों के लोग उन्हें पूरा सम्मान देते थे। वनों के शान्ति एवम् सुरम्य आश्रमों में रहने वाले इन ऋषि-महर्षियों के यहां बड़े-बड़े चक्रवर्ती नरेश भी अपने बालकों को विविध विद्याओं के अध्ययन के लिए भेजते थे। आश्रमों का सादगी भरा जीवन तथा सुयोग्य गुरुओं से भली प्रकार दीक्षित होकर शिष्यगण यह भाव लेकर आश्रम से विदा लेते थे कि वे जीवन पर्यन्त अपने गुरुओं के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। गुरु भी बिना किसी भेदभाव के अपने शिष्यों को अनेक विद्याओं और कलाओं में निष्णात बनाना अपना कर्त्तव्य मानते थे। इन्ही महनीय गुणों के कारण उन्हें भूसुर, महिसुर अग्रजन्मा, द्विज श्रेष्ठ आदि कहा जाता था।

तपः पूत जीवन यापन, मानव मात्र की हित कामना के लिए यज्ञ-यागादि पावन सत्कर्मों का आयोजन उनकी दिनचर्या थी। उनको सामाजिक प्रतिष्ठा इसलिए दी गई थी कि वे निश्चय ही उसके पात्र थे। वैदिक काल से लेकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवाजी के समय तक ब्राह्मणों का वर्चस्व बना रहा। शासन करने के जब भी उन्हें अवसर मिले उन्होंने वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए उसे सहर्ष क्षत्रियों को सौंप दिया और मात्र आमात्य, कुल पुरोहित अथवा सचिव रहकर वे राज्य का इस प्रकार संचालन करते रहे ताकि सभी वर्ग के लोग सुखी रह सकें और उन्हें उचित न्याय मिल सके। समदृष्टि रखना ब्राह्मणों की विशेषता मानी जाती रही है।

ब्राह्मणों के बारे में देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने गम्भीरता से विचार किया है। कुछ लोगों के मत से हिन्दू धर्म की अवनति का कारण उसकी सामाजिक संरचना है जो ब्राह्मणों की देन है।

ब्राह्मण वस्तुतः जाति का प्रतीक नहीं है। वह समाज की मनीषा है, प्रज्ञा है, शाश्वत चिन्तन का अजस्र स्रोत है। किसी भी देश में उन्नति के द्वारा बुद्धि-जीवियों द्वारा ही खोले गये हैं। समाज को इस स्रोत की सदैव आवश्यकता रहेगी।

मुझे यह लिखते हुए नितान्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री चौधरी राजनारायण शर्मा ने एक ऐसे विषय को लेकर व्यापक और साहसपूर्ण कार्य किया है जिसे पुरातन तथा कालातीत (Outdated) कहा जाता है। ब्राह्मणों को जागृत करने तथा देश भर में फैले ब्राह्मणों के बीच आत्मीयता को प्रोत्साहन देने के लिए यह पुस्तक मील के पत्थर का कार्य करेगी। लेखक की यह पुस्तक ब्राह्मण समाज के बीच घनिष्ठ मैत्री और अपनत्व की भावना भरने में सहायक सिद्ध हो सकेगी। यह एक वर्ण का लघु इतिहास है और इसे इसी रूप में देखा जाना चाहिए। यह बात दूसरी है कि आज के युग में ब्राह्मण की कसौटी पर शायद ही कोई जन्मजात ब्राह्मण खरा उतरे।

—शिव सागर मिश्र

RâjGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखकीय

इतिहास का अध्ययन किसी भी समाज के लिए गौरव का विषय होता है। सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति उसके गुण-दोषों के आधार पर उत्कर्ष की ओर बढ़ने और समाज तथा देश की सेवा की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा प्राप्त करता है। क्योंकि व्यक्ति का समाज, संस्कृति और देश के प्रति स्वभाविक आकर्षण रहता है।

वर्तमान राजनीति की दौड़ में सामाजिक इतिहास का लोप होता जा रहा है। कुछ बड़े-बड़े विद्वानों और राजा-जमींदारों ने वंशावलियों के माध्यम से सामाजिक इतिहास को बचाये रखा था। अब इसकी संभावना क्षीण होती जा जा रही है।

ब्राह्मण पूर्वकाल में ऐक्यसूत्र में आबद्ध थे। उनमें कोई भेदभाव न था। बाद में बहुत छोटे-छोटे दल में विभक्त हो जाने से उनकी एकता नष्ट हो गयी और पारस्परिक प्रेम का अभाव तथा प्रगति में बाधा उपस्थित हो गयी।

वर्तमान समय में देश एकता की विशेष आवश्यकता है। इस दृष्टि से ब्राह्मणों को भी पूर्व की भांति एकत्व की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। इसी एकत्व की भावना बढ़ाने की दृष्टि से "ब्रह्मर्षि वंश" नामक पुस्तक की रचना कर पाठकों की सेवा में उपस्थित कर रहा हूं।

इस पुस्तक से वास्तविक जानकारी प्राप्त करने और ब्राह्मणों की एकता बढ़ाने में थोड़ी भी सहायता मिली तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

वर्षों पूर्व प्रकाशित "ब्रह्मर्षि वंश" का यह दूसरा भाग भूमिहार ब्राह्मणों के प्रमुख लोगों का परिचय प्रस्तुत करती है।

चौधरी राज नारायण शर्मा,
श्रीरामपुर अयोध्या,
पत्रा०—वैनी,
जिला—समस्तीपुर (बिहार)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ मूल पुरुष

श्री बाण भट्ट

महर्षि भृगु के दो पुत्र (1) च्यवन और (2) शुक्राचार्य हुए। च्यवन के दधीची और आप्नवान दो पुत्र हुए। आप्नवान (जिनकी पत्नी अक्षमाला थी) के पुत्र वत्स[1] हुए, जिनकी सन्तान वात्स्यायन कहलाये। भागीरथी के प्रवाह की तरह वंश वृद्धि हुई। युग वीतने पर कलियुग में इसी वंश परंपरा में कुबेर नाम के ब्राह्मण हुए। कुबेर के चार पुत्रों में एक पाशुपत के पुत्र अर्थपति हुए। अर्थपति के ग्यारह पुत्र हुए, जिनमें चित्रभानु के बाणभट्ट हुए। बाणभट्ट की माता का नाम राजदेवी था। वाणभट्ट बड़े विद्वान और संस्कृत के गद्य सम्राट थे। उनकी कादम्बरी इसका स्पष्ट प्रमाण है।

वाणभट्ट की जन्म भूमि गया जिले के पीरू[2] नामक स्थान में (च्यवन आश्रम देवकुंड के निकट) हिरण्यवाक् से पूर्व है। सोनभद्र के किनारे निवास के कारण आपके वंशज सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण (वामन) कहलाते हैं। इनके वंशजों की विशाल आवादी उसके आसपास है। गया जिले के ही कयाल गढ़ और नोआरगढ़ से पटना आदि जिले में इनका विस्तार हुआ। वर्तमान काल में गया, पटना, सीतामढ़ी, भागलपुर तथा अन्य जिलों में भी इनके वंशज निवास करते हैं। इसी वंश में चांढ़ (गया) निवासी डा० राम तवक्या शर्मा हिन्दी, संस्कृत, और अंग्रेजी के विशिष्ट विद्वान तथा रामायण के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान हैं।

श्री चाणक्य

नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र के महाविद्वान श्री चाणक्य, जिनका सांसारिक नाम विष्णु गुप्त था, का निवास स्थान पटना—गया लाइन में नदौल स्टेशन

---

1. विहार सरकार के भू० पू० संयुक्त सचिव श्री देवी शरण सिंह एम० ए० (संस्कृत) के अनुसार आप्नवान के पुत्र का नाम और्व है—वे ही वत्स हैं।
2. कुछ लोग भोजपुर जिले के पीरू को बाणभट्ट की जन्मभूमि मानते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से पूर्व तथा पटना से 20-25 किलोमीटर दक्षिण चणकिया (चणकाडीह) नामक स्थान में था। उनका जन्म अप्रतिग्राहक ब्राह्मण वंश में हुआ था। चाणक्य के शिष्य कामन्दक ने अपने 'कामन्दकीय नीतिसार में ऐसा ही कहा है—

"वंशे विशाल वंशानामृषिणामिव भूयसाम्।
अप्रति ग्राहकाणां यो वभूव भूवि विश्रुतः॥
अजहार नृचन्द्राय चन्द्र गुप्ताये मेदिनीम्।
नीति शास्त्रामृतं श्रीमान् अर्थशास्त्र महोदधे॥
या उदधे नामस्तस्मै विष्णु गुप्ताय वेधसे।" इत्यादि

उपर्युक्त श्लोक की व्याख्या करते हुए 10वीं-11वीं शताब्दी के शंकराचार्य ने 'विष्णु गुप्त इति सांसारिकी संज्ञा, कौटिल्य इति गोत्र नामतः चाणक्य इति जन्म भूमितः।' लिखा है।

श्री जयशंकर प्रसाद ने अपने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में उन्हें मगधवासी ही लिखा है। इस प्रकार चणका में उनका निवास तथा अप्रतिग्राहक ब्राह्मण वंश में उनका जन्म प्रमाणित होता है। आज भी उक्त ग्राम तथा उसके आसपास चणकिया मूल के कौटिल्य गोत्रीय ब्राह्मण (भू० ब्रा०) निवास करते हैं, जो चाणक्य के वंशज हैं।

चाणक्य दृढ़ प्रतिज्ञ और स्वाभिमानी थे। एक बार मगध के राजा नन्द द्वारा अपमानित होने पर उसके पूरे वंश का नाश कर मगध के सिंहासन पर चन्द्रगुप्त मौर्य को बिठाया और स्वयं प्रधानमंत्री बने। आपके ही प्रयास से पंजाब तथा सौराष्ट्र तक का प्रदेश मगध साम्राज्य के अधीन आया। चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार राजा हुआ। उसके समय में भी चाणक्य जीवित थे तथा 16 राजाओं और मंत्रियों को निर्मूल कर पूर्वी और पश्चिमी समुद्र के मध्य के सारे प्रदेशों को राजा बिन्दुसार के अधीन ला दिया।

नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र विषयक आपकी वाणी अत्यन्त उपयोगी और मार्ग दर्शक हैं।

श्री पुष्यमित्र

विदिशा के रहने वाले कश्यप गोत्रीय सुंगवंशी ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र ने मौर्य साम्राज्य के अन्तिम और कमजोर राजा वहदरथ को मारकर मगध का आधिपत्य प्राप्त कर अधिकांश उत्तरापथ, मध्यदेश और पश्चिम बंगाल तक अधिकार स्थापित करने के बाद सार्वभौम साम्राज्य के वैदिक आदर्श के लक्ष्य को घोषित करने के लिए उसने अश्वमेध यज्ञ का उद्धार किया—दो-दो अश्वमेध यज्ञ किये।

प्रसिद्ध वैयाकरण पातंजलि उसके पुरोहित थे। सम्राट होने के बाद सेनापति पुष्यमित्र के परिवार का निवास मगध में ही रहा। मि० स्मिथ तथा डा० काशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद जायसवाल ने पुष्यमित्र के परिवार का निवास राजगृह के आसपास माना है।

पुष्यमित्र की मुख्य राजधानी पाटलिपुत्र में तथा एक राजधानी विदिशा में भी थी। मुख्य राजधानी (पटना) में स्वयं तथा विदिशा में उसका पुत्र अग्निमित्र प्रतिनिधित्व करता था, जिसने वर्धा पर आक्रमण कर बृहद्रथ के साले यज्ञसेन से नदी तक का प्रदेश छीन लिया था।

पुष्यमित्र ने हरेक जनपद को अपने वंश का राजा देकर उन्हें आन्तरिक शासन में स्वतंत्र कर दिया था।

इस वंश में दस राजाओं ने 118 वर्ष (पुष्यमित्र 36 वर्ष, अग्निमित्र 8 वर्ष, वसु ज्येष्ठ 7 वर्ष, वसु मित्र 10 वर्ष, ओद्रक 2 वर्ष, पुलिन्द 3 वर्ष, घोष 3 वर्ष, वज्रमित्र 7 वर्ष, भागवत 32 वर्ष तथा देवभूति 10 वर्ष) राज्य किया।

अग्निमित्र ने पुष्यमित्र के नाम का सिक्का भी चलाया था। देवभूति नावालिग था, इसलिए मगध की राजशक्ति पूरी तरह उसके मंत्री कण्ववंशीय ब्राह्मण वासुदेव के हाथ चली गयी।

पुष्यमित्र और उसके वंशजों ने 118 वर्ष पाटलिपुत्र (पटना) में राज्य किया, इसलिए स्पष्टतः सुंगवंशी राज परिवार का निवास यहां हो गया और वे मगधवासी हो गये। आज भी इस ब्राह्मण वंश के लोग पटना जिले के पालीगंज आदि में निवास करते हैं और अपने को सुगनिया वामन (ब्राह्मण) कहते हैं।

पं० श्रीकृष्ण मिश्र[3]

वर्तमान देवरिया जिले के पिपरा ग्राम निवासी पं० श्रीकृष्ण मिश्र संस्कृत के विद्वान तथा तपस्वी ब्राह्मण थे। काशी के तत्कालीन क्षत्रिय राजा वन्नारि (यवनारि) द्वारा निमंत्रित होकर यज्ञ में काशी पधारे। आचार्य की दक्षिणा में राजा ने इन्हें दातुरिया (गंगापुर) तालुका दे दिया। श्री मिश्र दान नहीं लेते थे। किंवदन्ती है कि दानपत्र चुपचाप इनकी पगड़ी में रख दिया गया। पता चलने पर इन्होंने शाप दे दिया कि तुमने मेरा तेज नष्ट कर दिया है, इसलिए तुम्हारे वंश का राज्य आगे चलकर मेरे वंश में चला आयेगा। उसी के फलस्वरूप आगे चल कर काशी का राज्य आपके वंश में आया।

आपके दो पत्नियों से दो पुत्र थे—(1) श्री राम मिश्र, और (2) श्री देव मिश्र।

श्री राम मिश्र दातुरिया (गंगापुर) में बसे। इन्हीं श्रीराम मिश्र के वंशज

---

3. पं० श्री कृष्ण मिश्र दो भाई थे। एक भाई श्री विष्णु देव मिश्र पिपरा (देवरिया) में ही रहे। पं० कृष्ण मिश्र के वंशज भूमिहार ब्राह्मण तथा पं० विष्णु देव मिश्र के वंशज सरयू पारीण ब्राह्मण कहलाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मनोरंजन मिश्र के पुत्र श्री मनसाराम मिश्र को काशी का राज्य प्राप्त हुआ तथा इनके पुत्र श्री बलवन्त सिंह को राजा की उपाधि मिली। इस समय काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज डा० विभूति नारायण सिंह हैं।

श्री देव मिश्र मिर्जापुर (उ० प्र०) के तटरा में बसे, जिनके वंशज श्री रघुनाथ सिंह की शादी बेतिया (बिहार) के राजा ध्रुवसिंह की कन्या से हुई थी और श्री रघुनाथ सिंह के पुत्र महाराजा युगल किशोर ना० सिंह उत्तराधिकारी (नाती) के रूप में बेतिया की गद्दी पर बैठे।

ठाकुर गणेश्वर शर्मा[4]

(सरवार प्रदेश के निवासी कश्यप) गोत्रीय ब्राह्मण ठाकुर गणेश्वर शर्मा को महाराजा गोविन्द चन्द्र देव ने 1126 ई० में मनेर के निकट दो ग्राम पड़री और गुणादी का ताम्रपत्र देकर मगध में बसाया था। आप चारों वेदों के ज्ञाता और विद्वान थे। आप कश्यप गोत्रीय मनेरिया मूल के ब्राह्मणों के मूल पुरुष थे। आपके वंशज मनेर में राज्य करते थे। 1203 ई० में महम्मद बिन बख्तियार ने मनेर को लूटा और 1260 ई० के लगभग पीर इलाही मनेरी अरब के फकीर ने ब्राह्मण राजा को मारकर उसके देवमन्दिर को तोड़कर उस स्थान पर मस्जिद बनवा दी। युद्ध में इनके वंशज कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण हारकर इधर-उधर चले गये। इस समय इन्के वंशज सिमरी (भोजपुर); कथराई, नगरी, मुकुनपुर तथा कुछ पलामू और हजारी बाग जिले में भी निवास करते हैं। सिमरी वालों की उपाधि पांडेय की तथा हजारी बाग और पलामू वालों की उपाधि राउत की है। इसी वंश में सिमरी के प्रखंड प्रमुख तथा भू० पू० विधायक पं० सूर्य नारायण शर्मा सामाजिक गौरव गरिमा के रक्षक हैं।

श्री देवहर देव

नैमिषारण्य से अपने कुछ साथियों के साथ कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण श्री देवहर देव छपरा जिले में आये और वहां के अधिपति को युद्ध में पराजित कर जीत के उपलक्ष्य में उस गांव का नाम जयस्थल रखा, जो बाद में जैथर कहलाने लगा। आपके पुत्र श्री गंगेश्वर देव थे, जो 1244 ई० में जैथर में रहते थे। श्री गंगेश्वर देव की छठी पीढ़ी में श्री कमलधर देव हुए, जिन्होंने मुजफ्फरपुर जिले के पारू थाना में अपने नाम पर कमल पुरा ग्राम का नाम रखकर निवास किया तथा प्रथम जैथरिया कहलाये। यहीं से जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों का विस्तार हुआ। बेतिया, शिवहर और मधुवन का ब्राह्मण राजवंश आपके

4. सिमरी (भोजपुर) निवासी प० सूर्य नारायण शर्मा भू० पू० एम० एल० ए० लिखित 'सैनिक ब्राह्मण' के आधार पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वंशजों का ही रहा है। आपके वंश में ही संस्कृत के महाविद्वान स्व० पं० राम पदार्थ शर्मा, पं० महेश शर्मा तथा पं० शिवकुमार शर्मा रहे हैं।

पं० चिरायु मिश्र

तेरहवीं शताब्दी में दरभंगा जिले के सुसारी गांव (थाना बहेड़ी) से बेलौंचे सुदई मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण पं० चिरायु मिश्र मुंगेर जिले में आये। आप ज्योतिष और तंत्र विद्या के विशिष्ट विद्वान थे। भगवती की चक्रार्चना कर आपने चक्रपीठ की स्थापना की। उसी चक्र का अपभ्रंश चाक हो गया है। चाक नामक स्थान में बसने से आपके वंशज चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण कहलाते हैं। आपके वंशजों का विस्तार छितरौर, सदानन्दपुर आदि गांवों के अतिरिक्त समस्तीपुर आदि जिलों में भी हुआ। आपके ही वंश में रा०व० मेदिनी प्र० सिंह, रा० व० अवध किशोर प्र० सिंह, रा० स्त० रासधारी प्र० सिंह तथा संस्कृत के प्रकांड विद्वान पं० राम लक्ष्मणाचार्य आदि हो गये हैं।

पं० चिरमिची मिश्र[5]

तेरहवीं शताब्दी में दरभंगा जिले के सुसारी गांव से अपने भाई पं० चिरायु मिश्र के साथ आप भी मुंगेर जिले में आये और बस गये। आपके वंशज बेगूसराय, मुंगेर आदि में फैले हुए हैं और बेलौंचे मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण ही कहलाते हैं। श्री रामपरेखी सिंह प्राध्यापक अर्थशास्त्र, डा० वचन देव कुमर आदि इसी वंश में वर्तमान हैं।

पं० पृथु ठाकुर

दरभंगा जिले के सन्दहपुर से दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण पं० पृथु ठाकुर अपने छोटे भाई जयजय ठाकुर के साथ मुंगेर जिले के बरही में आकर बस गये और दिघवे सन्दहपुर मूल के ब्राह्मण कहलाने लगे। दोनों भाई पुरोहिती वृतिधारी थे। बरही (बड़हिया) में आने पर पं० पृथु ठाकुर कृषि व्यवसाय में लग गये औरपं० जयजय ठाकुर पुरोहिती वृत्ति में ही लगे रहे। पं० पृथु ठाकुर के वंशजों की पुरोहिती भी पं० जय जय ठाकुर के वंशज ही कराते रहे हैं। वर्तमान समय में पं० पृथु ठाकुर के वंशज दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण तथा पं० जय जय ठाकुर के वंशज दिघवे सन्दहपुर मूल के मैथिल ब्राह्मण कहलाते हैं।

पं० पृथु ठाकुर के वंश में ही प्रसिद्ध विधिवेत्ता तथा स्वतंत्रता सेनानी श्री विश्वनाथ प्र० सिंह थे तथा श्री ललित विजय सिंह (आरक्षी महानिरीक्षक

---

5. डी० ए० वी० कालेज सीवाम के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक श्री राम परेखी सिंह (पं० चिरमिची मिश्र के वंशज) से वार्ता के आधार पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(विधि-व्यवस्था) भू० पू० मंत्री श्री कपिल देव सिंह और डा० वमवम सिंह 'नील कमल' आदि प्रमुख व्यक्ति हैं।

श्री न्याय भट्ट

महाराष्ट्र के बीजापुर भीमनगर निवासी अथर्ववेदी कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री मेरू शर्मा के सुपुत्र। वीर तथा प्रभावशाली होने के कारण आपको भट्ट की उपाधि मिली थी। बीजापुर भीमनगर से आकर पटना जिले के महावली पुर ग्राम में आकर बस गये। आपके पांचवें पुश्त में श्री कृष्णचन्द्र भट्ट हुए, जो शेरशाह के प्रधान सेनापति थे। आपके वंशज बेलखरा, सेहरा, धरहरा, भरतपुरा आदि में निवास करते हैं। इसी वंश में रा० ब० चन्द्रधारी सिंह, श्री रामनन्दन प्र० ना० सिंह, श्री रजनधारी सिंह (बिहार उड़ीसा विधान परिषद तथा बिहार लोक सेवा आयोग के भू० पू० अध्यक्ष और पटना नगर निगम के भू० पू० मेयर) आदि प्रमुख व्यक्ति हो गये हैं।

पं० जगन्नाथ दीक्षित

पराशर गोत्रीय ब्राह्मण पं० जगन्नाथ दीक्षित दिल्ली के निकट हस्तिनापुर से संवत् 1607 (ई० सन् 1550)[6] में छपरा जिले में आये। आप विद्वान तथा सिद्ध पुरुष थे। कहा जाता है कि आपके आशीर्वाद से नेपाल महाराजा का कुष्ठ रोग दूर हो जाने के उपलक्ष्य में महाराजा ने गंडक और सरयू नदी के बीच की सारी उपजाऊ भूमि आपको अर्पित की। वहीं एकसार आदि ग्रामों में आपके पुत्रों ने निवास किया। एकसार से अन्यत्र फैलने के कारण आपके वंशज एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण तथा सहदौली डीह से फैलने के कारण सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण कहलाये।[7]

एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों में स्व० रायबहादुर महेश्वर प्र० ना० सिंह, स्व० रा० ब० राम प्रसाद ना० शाही, रा० ब० शत्रुघ्न प्र० शाही, स्व० श्री वीरेश्वर प्र० ना० शाही, श्री जयदेव ना० सिंह, पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह, श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह, डा० रामकरण शर्मा आदि प्रमुख व्यक्ति रहे हैं।

सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों में स्व० पं० राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, स्व० प्रो० जगन्नाथ प्र० मिश्र, पं० जानकी रमण मिश्र, पं० राम नन्दन मिश्र, श्री देवनारायण सिंह, पं० शुकदेव शर्मा कर्मकांडी, पं० शिव सागर मिश्र

---

6. दशविध ब्राह्मण संहिता (लेखक पं० जयनारायण शर्मा) के अनुसार।
7. एकसरिया और सहदौलिया ब्राह्मणों की वंशावली में पं० जगन्नाथ दीक्षित के समय और पुत्रों की संख्या में मतविभिन्नता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० योगेन्द्र मिश्र तथा डा० मधुसूदन मिश्र आदि प्रमुख व्यक्ति रहे हैं।

पं० वासुदेव तिवारी

लगभग चार सौ वर्ष पूर्व दिल्ली के निकट शेरपुर से कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण पं० वासुदेव तिवारी मुगल सेना में मनसबदार होकर बिहार में आये और यहीं बस गये। प्रारंभ में पूर्व ग्राम के अनुरूप गांव का नाम शेरपुर रखकर बसे। फिर वहां से हटकर बेलांव में गढ़ बनवाया और उसे भी छोड़कर माऊर (मुंगेर) में बस गये। दिनकर जी के शब्दों में—

"ता दिन माऊर आज को रह्यो मुसलमां ग्राम
तिन ब्राह्मण और यवन में ठन्यो तहां संग्राम।
कान्यकुब्ज रणधीर को सहैं यवन किमिवार
समरजीति भूसुर भये माऊर के सरदार॥"

आपके छठे पुश्त में श्री प्राण राय हुए, जिन्होंने 12 गांव दमामी बन्दोबस्त लिया। श्री प्राणाराय के चौथे पुश्त में जीवन सिंह हुए। श्री जीवन सिंह के पुत्र श्री हरिहर सिंह और श्री हरिहर सिंह के पुत्र श्री देवकी नन्दन सिंह तथा डाक्टर श्री कृष्ण सिंह आदि हुए। आपके वंशज शिरिमार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण कहलाते हैं।

पं० पूरण मिश्र

17वीं शताब्दी के अन्त में आपका जन्म देवरिया जिले के पिपरा में गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप ज्योतिष के अद्वितीय विद्वान थे। 1744 ई० में बाबा विश्वनाथ के दर्शनार्थ आप काशी आये। उस समय काशी नरेश महाराजा बलवन्त सिंह थे। दिल्ली के बादशाह की तरफ से इलाहाबाद के नवाब अली कुली खां युद्ध की तैयारी करने लगा। महाराजा के पूछने पर युद्ध में महाराजा के विजयी होने की भविष्यवाणी मिश्र जी ने की। 1747 ई० के वसंत पंचमी के दिन काशी नरेश विजयी हुए। मिश्र जी की भविष्यवाणी ठीक निकलने पर गाजीपुर के करंडा परगना में जमनिया के निकट 2200 बीघा भूमि काशी नरेश ने मिश्र जी को दी। वहां मिश्र जी ने अपने नाम पर गांव का नाम पूरणायन रखा, जो अब बिगड़कर पुरैना हो गया है। राजा ने आपके पुत्र का नाम पुरन्दर राय रखा। आपके ही वंश में श्री दंडी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती हो गये हैं, जिन्होंने भूमिहार ब्राह्मणों के उत्थान का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

पं० पुराण पांडेय[8]

भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण पं० पुराण पांडेय वर्तमान उन्नाव जिले के हीरापुर

8. गोस्वामी तुलसीदास (पं० कुलदीप ना० राय झड़प) पृष्ठ 381 की टिप्पणी 3 के अनुसार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नामक स्थान से 15वीं शती विक्रमी में आकर प्रयाग के निकट पुराण वासपुर बसाकर निवास किया। बाद में यह स्थान पुरामसपुर और फिर पनासा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वरांव और वीरपुर का ब्राह्मण राज वंश, पनासा, रायगढ़, लोहनपुर, चौवारा, कल्याणपुर, महसडीह, इस्माइलपुर, हरीराम की सराय भोगीपुर आदि के भू० ब्रा० इसी वंश परंपरा में हैं और अब हीरापुरी मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण (भू० ब्रा०) कहलाते हैं।

श्री अनिरुद्ध ठाकुर

नोनैतवार मूल के भारद्वाज[9] गोत्रीय ब्राह्मण 1670 ई० में मडुआडीह (वाराणसी) से रोठुआ (समस्तीपुर) में आकर वसे। अभी रोठुआ में 14वीं पुश्त बीत रही है। रोठुआ से विष्णुपुर, मोहद्दीपुर, जखड़ा, सागरपुर, कलना, पंचरन्न, कलुआही, भालपट्टी, महीनाथपुर आदि गांवों ने भी इनका विस्तार हुआ।

श्री दुर्गाराय

कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण श्री दुर्गाराय ने जहूराबाद परगना से आकर गोधनी नदी से उत्तर और छोटी सरयू (टोंस) से एक मील की दूरी पर दुर्गापुर नाम से गांव का नाम रखकर निवास किया। बादशाह की तरफ से आपको शाह की उपाधि मिली। आपके चार पुत्र (1) बलिशाह (2) बहादुरशाह (3) झाऊ शाह और (4) अच्छे शाह थे। बलिशाह के वंशज आजमगढ़ और बलिया जिले में बसे हुए हैं। झाऊशाह और अच्छे शाह के वंशज गोरखपुर जिले में बसे हुए हैं। बहादुर शाह के वंशज अपने मूल स्थान पर रह गये। इन्हीं के वंशज मोहनियां (गाजीपुर) में बसे-पाली में रहे तथा बिहार के भी कुछ भागों में फैले।

आपके ही वंश में लालगोला (मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल) के महाराजा सर योगेन्द्र नारायणराय तथा श्री ब्रजनन्दन सिंह (भू० पू० विकास कमिश्नर) हो गये हैं तथा श्री शिवकुमार सिंह (भू० पू० जिला एवं सत्रन्यायाधीश) और श्री विपिन विहारी सिंह आई० ए० एस० आदि हैं।

श्री देवनारायण चौधरी

मंगरौनी (मधुवनी) निवासी ज्योतिष के विद्वान् पं० देवनारायण चौधरी मुंगेर राजघाट में गंगा स्नान के लिए सपरिवार गये। लौटते समय रहीमपुर (अब खगड़िया जिला) में बस गये। आपके दो पुत्र हुए—(1) श्री उत्तम चौधरी और (2) श्री लक्ष्मण चौधरी। श्री उत्तम चौधरी की वंश शाखा में श्री चौधरी अवध बिहारी सिंह हुए, जिन्होंने लाखों की संपत्ति देकर अवध बिहारी संस्कृत महा विद्यालय की स्थापना की तथा काशी में भूमिहार ब्राह्मण छात्रावास का निर्माण

---

9. मैथिल पंजी में नोनैतवार का गोत्र कश्यप और कात्यायन लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कराया। श्री लक्ष्मण चौधरी की वंश शाखा के लोग चौधरी टोला पटना में निवास करते हैं। श्री देवनारायण चौधरी के भाई के वंशज दुर्गापुर, सोनवर्षा, नया टोला आदि में निवास करते हैं और सभी मरैमंगरौनी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण (भू० ब्रा०) कहलाते हैं।

साधु-संन्यासी

श्री स्वामी रामानन्द[10]

स्वामी रामानन्द का जन्म गाजीपुर जिले में औंड़ीहार के निकट पटनद में अप्रतिग्राहक ब्राह्मण वंश में हुआ था। पुराने समय में काशी का विस्तार पटनद तक माना जाता था। यह भूमिहार ब्राह्मणों का केन्द्र है। सावर्ण्य गोत्र के देवल मुनि (देवल तिवारी) की इस वंश परंपरा के लोग सर्वणियां, प्रयाग में छप्पन गाईं (कान्यकुब्ज) और बलिया, गाजीपुर में वेमुआर (भूमिहार ब्राह्मण) कहलाते हैं। इसी वंश परंपरा में स्वामी रामानन्द का जन्म हुआ था। इन्होंने अपना संप्रदाय रामानुज संप्रदाय से अलग कर लिया था। इनके प्रमुख शिष्य स्वामी नरहर्यानन्द (नरहरिदास) तथा कबीर थे। इन्होंने सभी जाति को शिष्य बनाया! अयोध्या के जो लोग मुसलमान हो गये थे, पुनः उन्हें हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया। इन्हें कोई सूर्य का अवतार और कोई रामचन्द्र का अवतार मानते हैं। 120 वर्ष की आयु में 1521 ई० में आपका देहान्त हो गया।

अ० भा० विरक्त महामंडल के अध्यक्ष स्वामी वासुदेवाचार्य ने कहा था :— "भूमिहार ब्राह्मण अपने जनों को देकर रामानन्द संप्रदाय को आवाद किये हुए हैं।"

स्वामी नरहर्यानन्द (नरहरिदास)

स्वामी रामानन्द के शिष्य और गोस्वामी तुलसीदास के गुरु स्वामी नरहर्यानन्द का जन्म 1468 ई० में बलिया जिले के हथौज में नैनीजोर के तिवारी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। श्री शिवशंकर देव और

---

10. स्वामी रामानन्द, स्वामी नरहर्यानन्द, गोस्वामी तुलसीदास तथा नन्ददास के सम्बन्ध में पं० कुलदीप नारायणराय 'झड़प' लिखित शोधपूर्ण ग्रन्थ 'गोस्वामी तुलसीदास' के आधार पर लिखे गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री हरिशंकर देव दो भाई नैनीजोर में रहते थे, जिसमें श्री शिवशंकर देव गंगा के उत्तर में चले गये, जिनके वंशज नेवारी में हैं। इन्हीं शिवशंकर देव के पुत्र झोंटू कुमर (मुख्य नाम नरहरि देव) नरहर्यानन्द या नरहरिदास के नाम से 1494 ई० में साधु हो गये, श्री रामानन्द के शरणापन्न हुए। बलिया जिले के बिगही, बहुआरा नामक स्थान में भी नैनीजोर[11] के तिवारी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण पुराने समय से ही निवास करते हैं। 104 वर्ष की आयु में 1571 ई० में आपने काशी में शरीर त्यागा। गोस्वामी तुलसीदास ने अन्त्येष्टि की।

गोस्वामी तुलसीदास

रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1600 संवत में बलिया शहर से 9 मील पूर्व गंगा किनारे राजापुर (बलिया) में विशिष्ट गोत्रीय कस्तूवार मूल के ब्राह्मण (भू० ब्रा) वंश परंपरा में हुआ था। उनका ननिहाल वररमिया मूल के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार (जिला सारण) में था। जन्म स्थान से 14 मील उत्तर सरयूतट पर सूकर खेत (सुअरहा) है। सूकर खेत का वट वृक्ष गभिरार (सीवान) में है। गोस्वामी तुलसीदास का विवाह प्रयाग जिले में हीरापुरी पांडेय[12] मूल के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। साधु होने के बाद गोस्वामी तुलसीदास ने बांदा जिले के राजापुर में भी निवास किया था। उनकी पत्नी का नाम यमुना था, जिसके नाम पर राजापुर में माफीनामा मिला है।

गोस्वामी जी राम के परम उपासक थे। उन्होंने आदर्श चरित्र के रूप में राम का रूप चित्रित कर समाज के सामने रखा।

तुलसी के मित्र श्री टोडर (मदैनी, काशी के जमींदार तथा कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण) ने उन्हें बुलाकर अस्सी घाट पर रखा था।

तुलसीदास ने ईश्वर के अतिरिक्त मनुष्य मात्र में श्री टोडर का गुणगान किया है। गोस्वामी तुलसीदास का देहान्त काशी के अस्सीघाट पर श्रावण कृष्ण तृतीया सं० 1680 को हो गया।*

रामायण, राम गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, कृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, गोस्वामी तुलसीदास रचित पुस्तकें हैं।

---

11. नैनीजोर के तिवारी शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण सरयू पारीण और भूमिहार दोनों ब्राह्मणों में गिने जाते हैं।
12. प्रयाग जिले में हीरापुरी पांडेय मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण सरयूपारीण और भूमिहार दोनों ब्राह्मणों में गिने जाते हैं।

* कई जगह श्रावण शुक्ल सप्तमी मृत्यु तिथि लिखी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री नन्ददास

अष्टछाप के कवि, भ्रमरगीत के रचयिता और श्री कृष्ण भक्त नन्ददास जी का जन्म काशी के निकट कसवार परगना में गंगातट पर प्रसिद्ध गांव बरैनी के पास रमापुर में हुआ था। श्री नन्द दास बड़े घराने और जमींदार ब्राह्मण वंश परंपरा में उत्पन्न हुए थे। उनके पूर्वज कन्नौज से आकर यहां बसे थे। रमापुर का एक भाग पड़ेरी कहलाता है। आज भी यहां नन्ददास की परंपरा के कश्यप गोत्रीय चौधरी लोग रहते हैं। इनके पूर्वज कमलापति और वामदेव सगे भाई थे। वामदेव को काशी और प्रयाग के मध्य यत्रतत्र फैली भूमि मिली। इस परंपरा के लोग सुरही आदि ग्रामों में निवास करते हैं। इसी परंपरा में नन्ददास जी का जन्म हुआ था। श्री कमलापति की वंश परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास के मित्र मदैनी (काशी) के जमींदार श्री टोडर ठाकुर थे। बरैनी के पास गठौली निवासी गौतम गोत्रीय ब्राह्मण पं० श्री कृष्णदत्त मिश्र लिखित 'गौतम चन्द्रिका' के अनुसार भी श्री नन्ददास भूमिहार ब्राह्मण थे—जयचन्दहु विनशिगेजवहिं। भूमिहार कनउज केतवहिं॥ तजि निज ग्राम रमापुर छाये। गौतम कुल सम्बन्ध बढ़ाये॥"

श्री जीवन गोसाईं

आपका जन्म समस्तीपुर जिले के पूसा प्रखंड स्थित धर्मागतपुर बथुआ गांव में सहस्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1785 ई० में हुआ था। आप रामायण के विशेष ज्ञाता, कथा वाचक तथा संत थे। आपके यहां साधु-संतों का समागम होता रहता था। आपका मुख्य नाम श्री राम जीवन ठाकुर गौण हो गया और जीवन गोसाईं के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। प्रसिद्ध 'बथुआ आम' के किस्म का प्रारंभ आपके यहां से ही हुआ। इसलिए उक्त आम का नाम बथुआ आम हो गया। एक साधु ने आम की एक गुठली देकर कहा "इसे रोप दो, यह आम फलेगा और कार्तिक तक रहेगा। तुम्हारा परिवार संपन्न हो जायगा।" इस आम की उत्पत्ति आपकी कृपा का फल है। इस आम से बथुआ तथा आस पास के ग्रामों में लाखों रुपये की आमदनी होती है।

108 वर्ष की आयु में आपकी मृत्यु 1893 ई० में हो गयी।

श्री दर्लसिंह राय[13]

समस्तीपुर जिले के गढ़ सिरसई में निवास करने वाले द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री दलसिंह राय वैराग्य धारण कर अपने निवास ग्राम से कुछ दूर पूर्व बलान नदी के किनारे एक कुटी बनाकर भगवद्भजन करने लगे।

---

13. श्री रमाकान्त चौधरी लिखित 'समस्तीपुर जिला दर्शन' के अनुसार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन गढ़ सिरसई ग्राम में ही लूटपाट कर यवन लूट का सामान एक नाव पर लाद कर जा रहे थे। नदी किनारे स्थित उक्त साधु ने धुनी के लिए लकड़ी की मांग की। लकड़ी तो मिली नहीं, उल्टे कठोर बोली सुननी पड़ी। साधु के ध्यानस्थ होते ही लकड़ी नाव पर से खिसक कर स्वयं साधु की धुनी के निकट आ लगी। यवन लुटेरे भयभीत होकर नाव छोड़ भाग गये। साधु ने लकड़ी को वहीं गाड़ दिया। इस चमत्कारिक घटना की खबर चारों ओर फैल गयी। दूर-दूर से लोग उस लकड़ी को देखने आने लगे। भीड़ ने जब मेले का रूप धारण कर लिया तो दूकानें बस गयीं। बाद में एक अच्छे बाजार का रूप धारण कर लिया और उक्त साधु के नाम पर उसका नाम 'दलसिंह सराय' प्रसिद्ध हो गया।

वह ऐतिहासिक लकड़ी दलसिंहसराय (समस्तीपुर) में नदी किनारे के सीढ़ी घाट स्थित मन्दिर में आज भी सुरक्षित है।

श्री दंडी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती

आपका जन्म गाजीपुर जिले के पुरैना गामक ग्राम में 1834 ई० में हुआ था। आप गौतम गोत्रीय ब्राह्मण श्री श्याम नारायण मिश्र के पुत्र थे। बचपन में सारस्वत आदि पढ़े तथा मल्ल विद्या का खूब अभ्यास किया। 23 वर्ष की उम्र में पंजाब चले गए और वहां दस वर्ष रहे—कुश्ती में ख्याति हो गयी। फिर काशी आये और 1891 ई० में श्री दंडी स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती के शिष्य होकर दंड ग्रहण किया।

भूमिहार ब्राह्मणों के उत्थान का आपने सदा प्रयत्न किया और जीवन पर्यन्त समाज सेवा में लगे रहे। आपकी डायरी के आधार पर ही पं० रासबिहारी राय शर्मा ने कलकत्ता से प्रकाशित 'भूमिहार ब्राह्मण' में भूमिहार ब्राह्मण महासभा का इतिहास कई अंकों में लिखा था।

आपका देहान्त 120 वर्ष की आयु में 1954 ई० में काशी में हो गया।

श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती

आपका जन्म गाजीपुर जिले के देवा ग्राम में जिझोतिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1888 ई० के महाशिवरात्रि के दिन हुआ था। काशी के दंडी स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती से 1911 ई० में दंड ग्रहण कर संन्यासी हो गये। आप संस्कृत के प्रकांड विद्वान हुए। सोये हुए भूमिहार ब्राह्मणों को जगाया तथा ब्राह्मणों की एकता और उत्थान के लिए भारी प्रयत्न किया। संपूर्ण भारत का भ्रमण कर ऐतिहासिक सामग्रियां एकत्रित कर ब्राह्मणों की एकता प्रदर्शित करते हुए 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तार' नामक ग्रंथ लिखा। जन्म से मरण तक के सभी संस्कारों से युक्त हिन्दी विधि सहित एक बड़े ग्रन्थ 'कर्म कलाप' की रचना की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन भर देश तथा समाज सेवा में लगे रहे।

गाजीपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, पटना जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य तथा अ० भा० कांग्रेस के सदस्य रहे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

किसानों के एकछत्र नेता के रूप में आपने किसान सभा का संगठन किया और किसानों के लिए लड़ते रहे। कई बार अ० भा० किसान सभा के अध्यक्ष तथा महामंत्री चुने गये।

सुभाष बाबू की अध्यक्षता में संपन्न अ० भा० समझौता विरोधी सम्मेलन (रामगढ़) के स्वागताध्यक्ष तथा अ० भा० विरक्त महामंडल के अध्यक्ष भी रह चुके थे।

'लोक संग्रह' निकालकर उसका संपादन भी किया था।

बिहार में कार्य क्षेत्र होने पर प्रारंभ में सिमरी (भोजपुर) में और समस्तीपुर में रहे। बाद में श्री सीतारामाश्रम बिहटा (पटना) में रहने लगे—वहां संस्कृत विद्यालय की स्थापना की तथा जगह-जगह संस्कृत पढ़ाने के लिए संस्कृत विद्यालयों की स्थापना भी करायी। आपका देहान्त 26 जून 1950 को मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध वकील पं० मुचकुन्द के निवास स्थान पर हो गया। शव को 27 जून को पटना लाया गया। लाखों व्यक्ति आपके अन्तिम दर्शन के लिए उपस्थित थे—श्री बाबू रो पड़े। बिहटा (पटना) स्थित श्री सीतारामाश्रम में समाधि दी गयी।

आपकी मृत्यु पर राष्ट्रपति ने शोक प्रकट करते हुए कहा—'स्वामी जी एक शक्तिशाली व्यक्ति थे। उन्होंने जनता की बड़ी भलाई की। उनकी मृत्यु से बिहार का जन जीवन रिक्त पड़ गया।'

देश के अन्य नेताओं ने भी शोक प्रकट किया। 30/6/50 को पटना की शोक सभा में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन भी विशेष रूप से श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए उपस्थित थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पं० राजनाथ पांडेय सुलतानपुर (उ० प्र०) के अनुसार "महर्षि दयानन्द के पश्चात् दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के समान दीप शिखा जैसी प्रखर बुद्धि, प्रचंड मेधा तड़ितवत्, अखंड ब्रह्मचर्य, अग्नि समान प्रज्वलित स्वभाव एवं महासागर सदृश अगाध पांडित्य वाला क्रांतिकारी समाजवादी तथा मौलिक चिन्तन वाला संन्यासी दूसरा आज तक भारत में हुआ ही नहीं है।" ('त्रिकालजयी' से)

आपके नाम पर बिहार और उत्तर प्रदेश में 8 महाविद्यालय, 3 उच्च विद्यालय तथा अनेक संस्थाएं स्थापित और संचालित हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक प्रेस भी बिहटा आश्रम में संस्थापित है। गाजीपुर, बलिया, पटना तथा कानपुर से आपके नाम पर स्मारिका भी निकल चुकी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी रचित पुस्तकें ये हैं—ब्रह्मर्षि वंश विस्तर, कर्मकलाप, गीता हृदय, ब्राह्मण समाज की स्थिति, झूठा भय मिथ्या अभिमान, मेरा जीवन संघर्ष, किसान सभा के संस्मरण, क्रांति और संयुक्त मोर्चा, किसान कैसे लड़ते हैं, झारखंड के किसान आदि।

वर्षों पूर्व एक अमेरिकी विद्वान ने श्री सीता रामाश्रम विहटा में आकर आपके संबंध में शोध करने का काम किया था। 26/2/87 को पटना स्थित स्वामी सहजानन्द स्मारक भवन में आयोजित जयन्ती समारोह में अमेरिका के एक विद्वान विलियम आर पीच ने भी भाग लिया और कहा कि वर्जिनिया विश्व विद्यालय में स्वामी जी की कृतियों पर शोध हो रहे हैं।

श्री दंडी परमानन्द सरस्वती

आपका जन्म रामपुर (गाजीपुर) में फतुहावादी मिश्र मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 1913 ई० में काशी में दंडी स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती के शिष्य हुए और दंड ग्रहण किया। जीवन पर्यन्त भूमिहार ब्राह्मणों के उत्थान में लगे रहे। श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के 'ब्रह्मर्षि वंश विस्तर', 'कर्मकलाप' आदि के प्रकाशन में धन एकत्र कर आपने बड़ी सहायता की थी। अन्त समय में काशी के औसानगंज मुहल्ले में गज्जू राजा के मन्दिर में निवास करते थे। वहीं 1953 ई० की आषाढ़ शुक्ल दशवीं तिथि को आपका देहान्त हो गया।

श्री दंडी स्वामी हंसानन्द सरस्वती

आपका जन्म भोजपुर जिले के नवरंगा में मचियावां मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पूर्वज पं० हरसू पांडेय राजा शालिवाहन के गुरु थे।

आपका नाम राजरोशन पांडेय तथा पिता का नाम श्री सोहवत पांडेय था। आपके पिता वेदान्ती तथा आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे। उन्होंने आपको शादी न करने का आदेश दिया था, जिसका पालन आपने किया।

22-23 वर्ष की अवस्था में आप 1914 ई० में सेना में भर्ती हो गये तथा वारसा के युद्ध में विदेश भेज दिये गये। वारसा युद्ध में संधि हो जाने के बाद 1918 ई० में स्वदेश लौटकर एक वर्ष बारकपुर छावनी में रहने के बाद फैजाबाद छावनी में रहे। आप सर्वत्र स्नान, संध्या, भजन आदि करने के बाद ही भोजन करते थे। फैजाबाद की छावनी में रहते समय एक सिद्ध संत (जिनकी उम्र 152 वर्ष की थी) का दर्शन और आशीर्वाद आपने प्राप्त किया तथा अनुष्ठान कर स्वप्न में हनुमान जी का दर्शन कर उनसे भी 'हर संकट में तुम्हारे साथ रहूंगा' आशीर्वाद प्राप्त किया। तब तक आप तरक्की कर हवलदार मेजर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन चुके थे।

एक दिन 9 वजे रात्रि में सबकी हाजिरी लेनी थी और ड्यूटी भी वांटनी थी —पर संत की सेवा में लगे रहकर पहुंच नहीं पाये। सेना में समय की बड़ी पावन्दी है। राजरोशन पांडेय 1 बजे रात में पहुंचकर अपने सहायक श्री राम शवदसिंह को जगाकर पूछा क्या गिननी हो गयी? इस पर उसने कहा स्वयं आपने हाजिरी ली और ड्यूटी वांट कर हस्ताक्षर किया और अब पूछते हैं। उन्हें आश्चर्य हुआ और समझ गये कि हनुमान जी की कृपा और सिद्ध महात्मा के आशीर्वाद और चमत्कारी प्रभाव से यह हुआ।

आप सेना से मुक्ति चाहते थे, लेकिन फिर आप मेसोपोटिया (विदेश) भेज दिये गये। वहां भी भजन पूजन में लीन रहते थे—एक दिन वहां भी समय पर न पहुंचने पर कर्नल ने फटकार सुनायी और कहा कि फौजी कानून के अनुसार कठोर दंड दिया जायगा। इन्हें नजर वन्द कर लिया गया और इन्हें गोली मारने का परामर्श कर ही रहा था कि उसकी कुर्सी उलट गयी और वह वेहोश हो गया। होश आने पर उसने श्री पांडेय को निर्दोष मान कर छोड़ दिया। इच्छानुसार फौजी सेवा से मुक्त हुए और वापस आ गये।

1934 ई० में वाराणसी में वैशाख शुक्ल तृतीया को श्री दंडी राघवानन्द सरस्वती (दंडी स्वामी अद्वैतानन्द के शिष्य) से दीक्षा ग्रहण कर संन्यासी हुए तथा नाम दंडी स्वामी हंसानन्द सरस्वती पड़ा। कुछ दिनों तक वाराणसी में रहने के समय चित्रकूट जाने पर वहां के वीहड़ जंगल में ब्रह्मचारी के रूप में भगवान का दर्शन भी आपने किया था।

1936 से प्रयाग में कुंभ पर आपका दंडीवाड़ा भी लगता था। प्रयाग के करछना तहसील में रहकर सामाजिक सेवा करते रहे। पुनः काशी आने पर शिवासा घाट पर महाराजा विभूति ना० सिंह ने इन्हें राजगुरु मठ दे दिया। आपका देहान्त 4 मई 1971 को वलिया जिले के अंजोरपुर में हो गया।

आपके शिष्य श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती राजगुरु मठ के अध्यक्ष हैं।

स्वामी वासुदेवाचार्य

आप तरेतपाली (पटना) के भू० पू० महंत, निष्ठावान समाज सेवक तथा सामाजिक गौरव के प्रतीक थे। भोरी (गया) में सांगदर्शन विद्यालय, मानपुर (गया) में राजेन्द्र संस्कृत उच्च विद्यालय तथा तरेतपाली में संस्कृत विद्यालय की स्थापना कर उसमें पठन-पाठन के लिए भूमिहार ब्राह्मण छात्रों के भोजन आदि की व्यवस्था भी आप करते रहे। भोरी में लक्ष्मी नारायण मन्दिर का निर्माण भी कराया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1947 ई० में टिकारी (गया) में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के स्वागताध्यक्ष आप ही थे। आप दिवंगत हो चुके हैं।

आपके शिष्य स्वामी धरणीधराचार्य इस समय तरेत स्थान के महंत हैं।

श्री स्वामी परांकुशाचार्य

आपका जन्म पटना जिला के महम्मतपुर में 1864 ई० में कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप श्रुति, स्मृति, ज्योतिष, कर्मकांड, उपनिषद तथा आयुर्वेद के विद्वान संत तथा समाज सेवाव्रती थे। साधु होने के बाद सरौती मठ (गया) के मठाधीश बने। आपने संस्कृत शिक्षा का विशेष प्रचार किया। सरौती (गया), वाराणसी, वृन्दावन तथा अन्य स्थानों में संस्कृत संस्थाओं की स्थापना आपने की। संस्कृत पढ़ने के लिए भूमिहार ब्राह्मण छात्रों को विशेष सुविधा देकर आकृष्ट किया, जिससे अनेक संस्कृत विद्वान तैयार हुए। कई मन्दिरों का निर्माण भी आपने कराया। 116 वर्ष की आयु में 12 फरवरी 1980 को आपका देहान्त हो गया। लक्ष्मीनारायण मन्दिर हुलासगंज (गया) में आपका श्राद्ध संपन्न हुआ।

श्री स्वामी विष्वक् सेनाचार्य

आपका जन्म गया जिले के अम्वारी में हुआ था। आप स्वामी वासुदेवाचार्य के शिष्य तथा संस्कृत के प्रकांड विद्वान तथा कवि थे। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी। कांची (मद्रास) में उच्च न्यायालय से जीतकर मठाधीश बने थे। हृदयगति रुक जाने से 8 जनवरी 1945 को पटना में आपका देहान्त हो गया।

महंत श्री दर्शनदास

मनियारी (मुजफ्फरपुर) के भू० पू० मठाधीश, शिक्षा प्रेमी, उदार तथा समाजसेवी व्यक्ति थे।

मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष, बिहार-उड़ीसा विधान परिषद के सदस्य के रूप में अपनी क्षमता और जनसेवा का अच्छा परिचय आपने दिया था।

मनियारी में संस्कृत विद्यालय, उच्च विद्यालय, अस्पताल तथा मुजफ्फरपुर में महंत दर्शनदास महिला महाविद्यालय और रामदयालु सिंह महाविद्यालय की स्थापना आपने की। लक्खीसराय (मुंगेर) बालिका विद्यापीठ के लिए आपने 30 हजार की सहायता दी थी। कई मन्दिरों का निर्माण भी आपने कराया था।

1945-46 में अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष भी रह चुके थे। फरवरी 1962 में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

आपका जन्म भोजपुर जिले के मंगरांव में शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1920 ई० के लगभग हुआ था। आप संस्कृत, हिन्दी और भोजपुरी के विशिष्ट विद्वान तथा अंग्रेजी के भी ज्ञाता हैं।

आपने श्री दंडी स्वामी हंसानन्द सरस्वती से दीक्षा लेकर दंड ग्रहण किया और संन्यासी हुए। वाराणसी के शिवाला घाट स्थित राजगुरु मठ के आप मठाधीश हैं।

आप भोजपुरी के महाकवि तथा प्रथम कहानीकार हैं। 1979 में भोजपुरी अकादमी, बिहार द्वारा आप सम्मानित किये जा चुके हैं। आपका 'वउधायन' महाकाव्य (जिसमें काव्य, इतिहास और दर्शन तीनों समाहित है) भोजपुरी अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया है। 'जिनमीक टेढ़ राह', 'जेहलक सनदि' व उधामन बोध दीपक, 'धर्माचार्य ब्राह्मण' तथा 'ब्राह्मण कौन' पुस्तक भी आपने लिखी है। समाजोत्थान तथा कल्याण कार्य में आप सदा संलग्न रहे हैं। आप सामाजिक गौरव के रक्षक हैं। अयोध्या के सामाजिक क्षेत्र में आपका पूरा प्रयत्न रहा, जिससे सामाजिक गौरव की रक्षा हो सकी।

आप अ० भा० ब्राह्मण परिषद् के अध्यक्ष, स्वामी सहजानन्द स्मारक न्यास, बक्सर के अध्यक्ष, स्वामी सहजानन्द प्रकाशन मंडल के अध्यक्ष तथा भोजपुरी प्रकाशन मंडल के संरक्षक हैं।

श्री स्वामी हरिनारायणानन्द

आप नालन्दा जिले के बड़ी मठ के मठाधीश तथा जनसेवा व्रती हैं। अ० भा० साधु समाज के मंत्री, अ० भा० भारत सेवक समाज के अध्यक्ष, भ्रष्टाचार विरोध बोर्ड के अध्यक्ष, रेल सुधार समिति के सदस्य, केन्द्रीय सदाचार समिति के अध्यक्ष, बिहार सतर्कता परिषद् के उपाध्यक्ष आदि रहकर देश की सेवा करते रहे हैं। अन्य अनेक संगठनों तथा सामाजिक कार्यों में भी आप संलग्न रहे हैं।

आपके नाम पर स्वामी हरिनारायणानन्द महाविद्यालय बड़ी मठ पो० परवलपुर (नालन्दा) में खुल गया है।

महामंडलेश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि सर्वदर्शनाचार्य

आप 1969 ई० से ऋषिकेश स्थित कैलाश आश्रम के महामंडलेश्वर हैं। 104 वर्ष पूर्व संस्थापित यह संन्यास आश्रम अत्यन्त व्यवस्थित है। इसमें वैदिक साहित्य विशेषतः दर्शनों के पठन-पाठन की प्राचीन परंपरा कायम है।

आप उद्भट विद्वान तथा वीत राग संन्यासी हैं।

1983 में आपके यहां श्री रामचरित मानस महायज्ञ संपन्न हुआ था, जिसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज के दो मूर्धन्य विद्वान श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती और डा० रामकरण शर्मा भी सम्मिलित हुए थे।

श्री स्वामी धरणीधराचार्य

आप स्व० स्वामी वासुदेवाचार्य के शिष्य तथा तरेतपाली (पटना) के मठाधीश, संस्कृत के विद्वान तथा प्रवचन पटु हैं। अपने गुरु के समान समाज सेवाव्रती भी हैं। पूर्व में संस्थापित कई संस्कृत विद्यालयों का संचालन आप करते हैं। आपके नाम पर खुश डिहरा (गया) में एक महाविद्यालय की स्थापना हुई है।

श्री मिथिला शरण महाराज

पंच भैया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में नवादा जिले में जन्म। इस समय अयोध्या स्थित सियाराम किला के महंत हैं।

श्री शौनक ब्रह्मचारी एम० ए०, एल० एल० बी०, पी० एच० डी०, दर्शनाचार्य

आपका जन्म गाजीपुर जिले के शेरपुर में शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। नैमिषारण्य के स्वामी नारदानन्द के आप प्रमुख शिष्य हैं। आप संस्कृत, अंग्रेजी और कानून के विद्वान तथा समाज सेवाव्रती हैं। ऋषि आश्रम, शुक्लागंज, उन्नाव के प्रेरक निरीक्षक, उद्बोधन समिति, नेहरू नगर, कानपुर के महामंत्री तथा स्वामी सहजानन्द प्रकाशन मंडल के सदस्य हैं।

1983 तथा 1984 में बक्सर (भोजपुर) में आयोजित स्वामी सहजानन्द सरस्वती जयन्ती, स्मारक भवन शिलान्यास समारोह तथा ब्राह्मण परिषद् की अध्यक्षता आप कर चुके हैं। 107/247, उद्बोधन समिति, नेहरू नगर, कानपुर में आप निवास करते हैं।

साहित्यकार

श्री सेनापति[14]

गोस्वामी तुलसीदास के समय सिकन्दरपुर (बलिया) में सरयू तट पर महात्मा गंगाधर दीक्षित तप करते थे—उनकी तपोभूमि गंगहरा है। इन्हीं

---

14. पं० कुलदीप ना० रामझड़प लिखित गोस्वामी तुलसीदास के आधार पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मा गंगाधर दीक्षित के छः पुत्रों में एक झोंटिल दीक्षित ही सेनापति उपनाम से विख्यात हुए। इनके पितामह का नाम परशुराम दीक्षित था। गंगाधर की वंश परंपरा के ब्राह्मण वर्तमान कानपुर जिले के नोन्ह नदी के आस-पास गोगोमऊ से दिठुर तक निवास करते थे। मुसलमानी आक्रमण के समय वहां से हटकर कड़ा मणिकपुर (प्रयाग) में अग्रहार में प्राप्तभूमि में निवास किया। कुछ दिनों के बाद वहां से भी हटकर सिकन्दरपुर में बसे। नोन्ह नदी के कारण नोन्ह कुलिया कहलाये। इसी का अपभ्रंश अब नोन्ह उलिया हो गया है। सिकन्दरपुर से तीन मील उत्तर श्री सेनापति की जन्मभूमि नोन्हुल नाम से प्रसिद्ध है। तुलसीदास के निधन काल में श्री सेनापति की आयु लगभग 34 वर्ष की थी। वे कवि थे तथा कवित्त रत्नाकर के प्रणेता थे।

श्री कालीचरणसिंह[15]

आपका जन्म 1855 ई० में अमहरा (पटना) में हुआ था। आप सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री श्याम नारायणसिंह के सुपुत्र थे। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और फारसी के ज्ञाता तथा गद्य और पद्य दोनों के साहित्यकार थे।

बिहार बन्धु प्रेस, बांकीपुर, पटना के व्यवस्थापक, बंगरहटा और नरहन (समस्तीपुर) में अध्यापक और समस्तीपुर कचहरी में लिपिक के पद पर भी आपने काम किया था। महामहोपाध्याय पं० चित्रधर मिश्र और पं० चन्दा झा आदि के संपर्क में भी आप रहे।

'मगधदेश' और 'अमहरा' तथा 'वाभन' पुस्तकें लिखकर आपने प्रकाशित की। सन् 1939 ई० में पटना मेडिकल अस्पताल में आपका देहान्त हो गया।

पं० शिव संपत्ति सुजान मिश्र

आपका 1863 ई० में जन्म आजमगढ़ जिले के उदियावा (लाल गंज तहसील) में हुआ था। आप हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पं० रामनरेश त्रिपाठी के गुरु तथा कवि थे। लगभग तीन दर्जन पुस्तकों की रचना आपने की। कुछ पुस्तकें प्रकाशित तथा कुछ अप्रकाशित हैं। पुस्तकों के नाम ये हैं:—कविता सरस मनोहर, कलियुगोपकार, ब्रह्महत्या, भूमिहार भूसुर भूषण, शतमुख प्रकाशिका, शकत शिक्षावली, शिव संपत्ति सर्वस्व, नीतिशतक, शिव संपत्ति संवाद, नीति चन्द्रिका, आर्य धर्म चन्द्रिका, वास्तव चन्द्रिका, चौतलि चन्द्रिका, मनमोहिनी, पचरा प्रकाश, भरत विलाप, प्रेम प्रकाश, व्रजचन्द्र विलास, प्रयाग प्रपंच, सावन विरह विलाप, राधिका उराहनों, ऋतु विनोद, कजली चन्द्रिका, स्वर्ण कुवरी विनय, शिव संपत्ति विजय, शत्रु संहार, शिव संपत्ति साठा, प्राण प्यारी, कलि-काल कौतुक, उपा-

15. प्रो० रामनाथ शर्मा लिखित 'अमहरा' के आधार पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घ्यायी उपद्रव, चित्त चुरावने, स्वार्थी संसार, नये बाबू, पुराने लकीर के फकीर आदि।

आप समाजव्रती शिक्षक थे। 12 अप्रैल 1935 को लालगंज तहसील (आजमगढ़) के 8 ग्रामों के द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मणों की सभा की अध्यक्षता आपने की थी।

आप दिवंगत हो चुके हैं।

श्री महेश राय महेश

डुमराव (भोजपुर) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण पं० राम नरेश राय के आप सुपुत्र थे। 1877 ई० में आपका जन्म हुआ था। आप हिन्दी के कवि थे। वीर रस से युक्त 'वीरोल्लास' भारत जीवन प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी। आप संस्कृत के भी ज्ञाता थे। योगाभ्यास की ओर आपकी प्रवृत्ति हो गयी थी। (आपके पिता भी तांत्रिक तथा योगाभ्यासी थे)।

फेफड़े की बीमारी से 35 वर्ष की आयु में ही 1912 ई० में आपका देहांत हो गया।

राजकुमार शिवेन्द्र शाही (लाल साहब)

आप मांझा (छपरा) के राजकुमार तथा एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण थे। आप बेतिया महाराजा के दामाद थे। आप कवि थे—समस्यापूर्ति में काफी निपुण थे। आपकी हिन्दी चुटीली और स्निग्ध होती थी। आपके कई काव्य अपूर्ण पड़े रह गये।

1908 ई० में छपरा में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के स्वागताध्यक्ष आप ही थे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री अम्बिका प्र० सिंह शर्मा

आप 1908 में छपरा से प्रकाशित 'भूमिहार ब्राह्मण' के संपादक थे। आप कवि भी थे। भूमिहार ब्राह्मण तथा अन्य पत्रों में कविताएं निकलती थीं। आपके संपादन में निकलने वाले उक्त जातीय पत्र पर निम्नांकित संस्कृत तथा हिन्दी पद्य छपे रहते थे—

"सजातो येन जाते न याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते॥"
"वे जन्मे जेहि जन्म से जाती उन्नति होय।
परवर्ती संसार में जनमत मरत न कोय।"
"पढ़ि कमाय कीन्हौं कहा हरयो न जाति क्लेश।
जैसे कन्ता घर रहे तैसे रहे विदेश॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राघव प्र० सिंह 'महंत'

आपका जन्म 1888 ई० में समस्तीपुर जिले के ओइनी (वैनी) ग्राम में द्रोण मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप हिन्दी, उर्दू फारसी के अच्छे विद्वान तथा संस्कृत के भी ज्ञाता थे।

1919 में ई० में संस्थापित प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में एक आप भी थे। आप उसके मंत्री भी रहे।

1921 ई० में विदेशी वस्तुओं का आपने बहिष्कार किया।

1908 से ही आपने कविता लिखना प्रारंभ किया। 1918 ई० में 'राष्ट्रीय संगीत' का प्रकाशन हुआ। 'बालक' भूमिहार ब्राह्मण आदि पत्रों में बराबर आपकी कवितायें प्रकाशित होती रहती थी। आय व्यंग चित्रकार भी थे।

आपका देहांत असमय में ही एक साइकिल दुर्घटना में 1931 में हो गया। आपकी पत्नि का देहांत आपकी मृत्यु के 42 वर्ष बाद 29/12/73 को हुआ।

श्री पारस नाथ सिंह

अमनौर (छपरा) निवासी, विधि स्नातक और साहित्यिक प्रतिभा से युक्त थे। आपने चिड़ियों पर अच्छा साहित्य लिखा। 'पद्म पराग' की भूमिका आपने ही लिखी। बिड़ला द्वारा संचालित पत्रों के संचालक तथा व्यवस्थापक रहे। आपके निधन के बाद आपके पुत्र श्री चन्द्र माधव प्र० सिंह भू० पू० विधायक बोचहा (मुजफ्फरपुर) में निवास करते हैं।

प्रो० रामदास राय

आपका जन्म सुहवल (गाजीपुर) में फतुहाबादी मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप हिन्दी और संस्कृत के विद्वान तथा साहित्यकार थे। अंग्रेजी राज्यकाल में आप मुजफ्फरपुर स्थित भूमिहार ब्राह्मण कालेज (अब लंगर सिंह कालेज) में पहले हिन्दी के तथा बाद में संस्कृत के प्राध्यापक रहे।

हितोपदेश, भर्त्तहरि नीति शतक, उत्तर राम चरित्र, औषधीय चरितम् आदि ग्रन्थों का गद्य-पद्मय हिन्दी अनुवाद कर संस्कृत साहित्य के रसास्वादन का लाभ हिन्दी वालों को भी दिया।

श्री वीरेश्वर नाथ राय

शेरपुर (गाजीपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण।

आप गाजीपुर के प्रमुख अधिवक्ता तथा प्रमुख साहित्यकार थे। आप हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी के विद्वान थे। गंगा तथा अन्य मासिक पत्रों में आपकी रचनायें प्रकाशित होती रहती थी। प्रो० रामदास राय के साथ मिल कर कई संस्कृत ग्रन्थों का हिन्दी रूपान्तर भी किया था। आप गाजीपुर जिला बोर्ड के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्ष तथा रॉयल एसियाटिक सोसाइटी के सदस्य भी रह चुके थे।

पं० बटुक देव शर्मा

1890 में आपका जन्म मनसा (गाजीपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मिडल की परीक्षा में संपूर्ण उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान आपने प्राप्त किया था। उच्च विद्यालयों में जहां-तहां अध्ययन किया। आपने विवाह वन्धन में बंधना अस्वीकार कर दिया, क्योंकि रहीम का यह दोहा आपको स्मरण था—

'रहीमन ब्याह वियाधि है, सकहु तो जाहु वचाई।
पायन वेरी पड़त है, ढोल वजाई वजाई।"

आपने कमला (भागलपुर), प्रताप (कानपुर) वेंकटेश्वर (वंबई), देश (पटना) तरुण भारत, प्रणवीर, राष्ट्रबन्धु, कामधेनु आदि मासिक सामूहिक तथा दैनिक पत्रों का संपादन किया।

जीवन पर्यन्त साहित्य तथा समाज में संलग्न रहे। आप दिवंगत हो चुके हैं।

पं० श्याम नारायण शर्मा

आपका जन्म मढूपुर (चन्दौली) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1891 ई० में हुआ था। सराय गोवर्धन काशी में मातामह (नाना) के यहां रहकर अध्ययन किया तथा वाद में उसी मोहल्ले के निवासी हो गये।

आप 1914 ई० में हरिश्चन्द्र विद्यालय में कला के अध्यापक नियुक्त होकर जीवन पर्यन्त उस पद पर रहे। आपके छात्रों में श्री लाल वहादुर शास्त्री, ब्रिगेडियर उस्मान, श्री टी० एन० सिंह (भू० पू० मुख्यमंत्री), श्री राजा राम शास्त्री, श्री ऋषि नारायण शास्त्री तथा श्री राज नारायण आदि प्रमुख व्यक्ति रहे हैं।

1916 में आपने 'भूमिहार ब्राह्मण' प्रेस की स्थापना की तथा 'भूमिहार' ब्राह्मण पत्र निकाल कर वर्षों उसका संपादन किया। आपके समय उक्त पत्र पर निम्नांकित संस्कृत तथा हिन्दी पद्य छपे रहते थे—

"ब्राह्मणः द्विविधा राजन् धर्मश्च द्विविधः स्मृतः।
प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहम् प्रतिग्रहात्।"
"विप्रवर! अव भी विचारो, कौन थे क्या हो गये।
क्यों पड़े पीछे भला जव हैं सभी आगे गये।"

समाज पर किये गये द्वेषपूर्ण आक्षेपों का मुंह तोड़ उत्तर अपने लेखों द्वारा आप देते रहते थे।

आप काशी राज्य के दरवारी तथा डिप्लोमा होल्डर भी थे।

7/12/1951 को आपका देहांत हो गया। आपके पुत्र श्री उमाशंकर शर्मा भी समाज सेवी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री महादेव राय

आप उजियार (बलिया) निवासी वेनुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण थे। आप सहज किसान थे। स्वतंत्रता संग्राम में 1921 से ही अभिरुचि थी। आपके यहां 1942 के आन्दोलन में संलग्न स्वतंत्रता सेनानियों के छिपने का अड्डा वना हुआ था। आप कविता भी करते थे। स्वतंत्रता सेनानियों की गोष्ठी में आप अपनी रचित 'कांग्रेसायन' से कविता सुनाया करते थे। उक्त कविताओं का उद्धरण डा० विवेकी राय द्वारा लिखित उपन्यास 'श्वेत पत्र' में उल्लिखित है। कांग्रेसायन दोहा, चौपाई और सोरठा में है।

"गांधी हृदय भये दुख भरी। वृटिश जात सव करत चिकारी ।।
मास अगस्त आई गै भाई। मेघ सकल देसन रहे छाई ।।
मोर पांख निज घुघुट वनाई। नाचहिं मेघ देखि हरखाई ।।
जुगनू झुंड झुंड होई धावे। जनु मसाल लेइ नाच दिखावे ।।

इत्यादि।

आपके पुत्र श्री सिद्धिनाथ राय अधिवक्ता हैं तथा पौत्र डा० अनिल कुमार राय 'आंजनेय' हिन्दी तथा भोजपुरी के प्रमुख साहित्यकार हैं।

पं० मथुरा प्र० दीक्षित

आपका जन्म छपरा जिले के पिरारी में 1895 ई० में हुआ था। आप एक-सरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण थे।

1915 ई० में भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर से आई० ए० पास कर भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुर में शिक्षक रहे। 1919 ई० में अध्यापन छोड़ 'तरुण भारत' तथा 'नवयुवक' का संपादन किया। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए। 1923 से 1926 तक दरभंगा महा-राज के व्यक्तिगत सहकारी रहे। 1942 के स्वतंत्रता संग्राम में चार वर्षों तक जेल में रहे।

प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में एक आप भी थे। 1956 में प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 25 वें अधिवेशन की अध्यक्षता आपने की थी तथा विहार राष्ट्रभाषा परिषद् के सामान्य समिति के सदस्य भी रह चुके थे। हिन्दी सेवा के लिए विहार सरकार द्वारा सम्मानित भी किये गये थे।

सेवा क्षेत्र, कुंवरसिंह, वैशाली, चाणक्य, नादिरशाह, सर गणेशदत्त, गीतावली आदि पुस्तकों की रचना आपने की थी। पंजाब के शास्त्री वंश का इतिहास तथा वर्णरत्नाकर का संपादन भी आपने किया था। 27 मार्च 1976 को अपने गांव पिरारी (छपरा) में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० रामानन्द शर्मा

आपका जन्म पुनास (समस्तीपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1897 ई० में हुआ था। 35 वर्षों तक मद्रास में हिन्दी प्रसार-प्रचार में लगे रहे। (आपके भ्राता श्री ब्रजनन्दन शर्मा भी हिन्दी प्रचारक थे।) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के लिए आपने अनेक पाठ्य पुस्तकें तैयार की। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 'मराठी-हिन्दी शब्द कोश' के मंडल के सदस्य भी रहे। आपकी पत्नी श्रीमती श्रद्धा देवी (जो जीवित हैं) मद्रास में कन्याकुमारी प्रकाशन संस्था का संचालन मद्रास में करती थी।

मद्रास से विहार लौटने पर 10-12 वर्षों तक शिक्षा विभाग में कार्यरत रहे।

आपने मानस की महिलायें, महाकाव्य मंथन, पुनर्मिलन, पिया चाहे प्रेम रस, वन्दनीया, तोरण के पर्ण, कीर्त्तिराका कौशल्या, कैकेयी की कुटिलता, रामायण का रसास्वादन, वजा रहा क्यों फूटा ढोल, कनकात्मा, पंचाली का चीर हरण, सपनों की संगिनी, अज्ञान का वरदान, कन्याकुमारी के पुनीत पथ पर, श्रद्धापथ के झिलमिल प्रदीप, साहित्यकारों का सौजन्य तथा खंडहर नामक पुस्तकों की रचना की। इसमें से प्रथम आठ पुस्तकें प्रकाशित तथा शेष अप्रकाशित हैं।

1981 में विहार राष्ट्रभाषा परिषद की ओर से वयोवृद्ध साहित्य सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किये गये।

10 अक्तूबर 1981 को जन्मस्थान पुनास में आपका देहान्त हो गया। आपके पुत्र प्रियदर्शन को मद्रास वालों ने बुला लिया है।

पं० जगन्नाथ राय शर्मा एम० ए० (द्वय स्वर्ण पदक प्राप्त)

आपका जन्म भोजपुर जिले के डिहरी में 1 दिसम्बर 1899 ई० को हुआ था। आप हिन्दी, संस्कृत, अपभ्रंश, उर्दू तथा अंग्रेजी के विद्वान तथा संस्कृत और हिन्दी के कवि थे। आप वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ तथा सदाचार और सादगी की प्रतिमूर्ति थे।

शिक्षा समाप्ति के बाद पाटलिपुत्र हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। बाद में पटना वि० वि० के हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंगला प्रसाद पारितोषिक के काव्य विषयक परीक्षक भी रहे।

विक्रम विजय (काव्य), अपभ्रंश दर्पण, व्रजमाधुरी साहित्य सौरभ, तुलसीदास आदि पुस्तकों के प्रणेता तथा रामायण के टीकाकार थे। 1945 ई० में वेतिया (विहार) में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण विद्वत्सम्मेलन की अध्यक्षता भी आपने की थी। आप सामाजिक गौरव की भावना से युक्त थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1974 ई० में विशेष अस्वस्थ्य हो जाने पर पटना मेडिकल अस्पताल के के साधारण वार्ड में आपके भर्ती किये जाने पर 5/3/74 के 'आर्यावर्त' ने अपने संपादकीय में आपके सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा था—"विहार का साहित्यिक और हिन्दी जगत आचार्य जगन्नाथ राय शर्मा की मरणासन्न अवस्था से उद्विग्न हो उठा है। राय जी अपनी सादगी और विद्वता के लिए उन सबों के बीच श्रद्धा के पात्र रहे हैं, जो कभी किसी प्रकार उनके संपर्क में आये। ···उन्हें अचेतावस्था में पटना मेडिकल कालेज अस्पताल में भर्ती किया गया। वे राजनीतिक साहित्यकार नहीं रहे। इसलिए राजनीतिक जगत में उनके लिए कोई हलचल नहीं मच सकी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की और भारतीय संस्कृति की सेवा में इस तपोनिष्ठ साधक ने जो श्रम और समय लगाया, उसका छोटा-सा अंश भी यदि राजनीतिक तिकड़म में लगाया होता (यद्यपि यह उनकी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल था), तो वे एक विधायक और मंत्री अवश्य बने होते और बीमार पड़ते ही उनके लिए अस्पताल में विशेष कक्ष और विशेष चिकित्सा की व्यवस्था अनायास हो गयी होती।"

आपका देहान्त 1978 ई० में हो गया।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

आपका जन्म बेनीपुर (मुजफ्फरपुर) में 13/12/1899 ई० में हुआ था। आपके पिता पं० फूलसिंह शर्मा दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण थे।

प्रारम्भ में सामाजिक आन्दोलन में आप स्वामी जी के अनुयायी रहे। राजनीति में समाजवादी पार्टी के सदस्य तथा श्री जयप्रकाश के अनुयायी रहे। प्रसिद्ध लेखक, कवि तथा संपादक के रूप में आपने ख्याति प्राप्त की। दर्जनों पुस्तकों के लेखक तथा दर्जनों पत्रों के संपादक रहे। आपकी लेखनी में जादू का असर था। आपकी लिखी पुस्तकें एम० ए० तक के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं।

विहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष तथा महामंत्री, अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचार मंत्री, अ० भा० कांग्रेस के सदस्य, अ० भा० समाजवादी पार्टी की कार्य समिति के सदस्य, प्रान्तीय किसान सभा के अध्यक्ष, विहार विधानसभा के सदस्य भी रह चुके थे।

7/9/66 को अपने पुत्र प्रो० महेन्द्रकुमार बेनीपुरी के मुजफ्फरपुर स्थित निवास स्थान पर आपका देहान्त हो गया। समाधि मकान के सामने है। आपके नाम पर मुजफ्फरपुर में रामवृक्ष बेनीपुरी महिला महाविद्यालय संचालित है।

श्री ज्वाला प्र० सिंह (एम० ए०, एल-एल० बी०)

आपका जन्म 1903 ई० में मिर्जापुर (उ० प्र०) जिले के बरैनी में बेलहरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मिर्जापुर जिला कांग्रेस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे। बाद में निवास और कार्यक्षेत्र बेतिया (बिहार) में हो गया। 1940-42 के स्वतन्त्रता संग्राम में जेल भी गये थे। चम्पारण जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष चम्पारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्री तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थायी समिति के सदस्य भी रह चुके थे।

मैथिलीशरण एक अध्ययन, कवीन्द्र रवीन्द्र आदि आपकी लिखित पुस्तकें हैं।

आचार्य जयकिशोर नारायण सिंह साहित्याचार्य

आपका जन्म 6/4/1905 को पकरी (सीतामढ़ी) में एक संपन्न शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। विवाह चैनपुर (छपरा) के बाबू विश्वनाथ नारायण सिंह की बहन से हुआ था।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आदि कई भाषाओं के आप विद्वान थे। 14 वर्ष की उम्र से ही आपने कविता लिखना प्रारंभ किया। आपकी रचनायें सुधा, माधुरी वैशाली आदि मासिक पत्रों में निकलती रहीं। आपने कई पुस्तकें लिखीं तथा मेघदूत, पद्मपुराण और अंग्रेजी पुस्तक 'मैन द अननोन' का हिन्दी में अनुवाद किया।

आपके 65वें जन्म दिवस पर आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री ने आपके संबंध में इस प्रकार कहा था—"आचार्य जयकिशोर जी ने संस्कृत और हिन्दी में चौथे दशक से अब तक जीवानुभूति की अपूर्व कवितायें लिखी। ललित निबन्ध की विधा का हिन्दी में प्रवर्तन किया और कालीदास शरत्चन्द्र मैथिलीशरण, प्रसाद, प्रेमचन्द और निराला के बहुत निकट संपर्क में रहे हैं तथा बहु भाषाविद् एवं प्रथम श्रेणी के कीर्तिकार हैं।"

आपने विदेशों का भ्रमण भी किया था। 26/3/80 को मुजफ्फरपुर स्थित श्रीकृष्ण मेडिकल कालेज अस्पताल में आपका देहान्त हो गया।

पं० जटाधर शर्मा 'विकल'

आपका जन्म वाजित पुर (वैशाली) में 1905 ई० में हुआ। सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री योगेश्वर मिश्र के आप सुपुत्र थे। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी का अध्ययन आपने किया। 1924 ई० में दरभंगा में अध्यापन किया। बाद में पुस्तक भंडार लहेरिया सराय के साहित्य विभाग में कार्यरत हुए। 1922 ई० से ही आपकी कवितायें चांद, धर्मवीर, माधुरी, हिन्दू पंच, बालक आदि पत्रों में छपा करती थीं। योगमाया, धर्मवती, अहल्या, दमयन्ती सीता, प्रेम पंथ आपकी प्रकाशित रचनायें हैं। छाया, कांटा, कूक, धनुर्भंग एवं मुक्तद्वार अप्रकाशित हैं। 1928 में 23 वर्ष की अल्पायु में ही आपका देहान्त हो गया। वाजितपुर में आपके नाम पर बालिका उच्च विद्यालय संचालित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपक पुत्र श्री ब्रजमोहन मिश्र बेगूसराय में पशुपालन विभाग में तकनीकी पदाधिकारी हैं।

प्रो० जगन्नाथ प्र० मिश्र

आपका जन्म पतोर (दरभंगा) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप अधिवक्ता, प्राध्यापक तथा प्रसिद्ध साहित्यकार थे। वकालत छोड़ कर मासिक 'विश्वमित्र' (कलकत्ता) का संपादन किया। वाद में चन्द्रधारी मिथिला कालेज में प्राध्यापक रहे। आपने कई पुस्तकें लिखीं तथा 'दिक्पाल मिश्र वंश परिचय' का संपादन भी किया। आपके लेख मासिक पत्रों में निकलते रहते थे। 1948 ई० में विहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रहे तथा वर्षों विहार विधान परिषद के सदस्य रहे। 1970 ई० में आपका देहान्त हो गया।

आपके पुत्र श्री राजेश्वर मिश्र विहार की प्रशासकीय सेवा में कार्यरत हैं।

विद्यावाचस्सति, साहित्य चूड़ामणि
पद्म विभूषण डा० रामधारीसिंह 'दिनकर'

आपका जन्म सिमरिया (वेगूसराय) में 1908 में सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था—सिमरिया गांव का परिचय दिनकर जी के शब्दों में इस प्रकार हैं—

"सुकाश तृण संकुल रम्य सैकते
वहुत्य मावल्लभ मौलिवासिनी।
तस्योत्तरे भाति सुशस्य श्यामला
नाम्ना सिमरियेति सुषमान्विता पुरी॥"

आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, बंगला आदि भाषाओं के विद्वान तथा राष्ट्र कवि के रूप में ख्याति प्राप्त थे। आपके मस्तिष्क में हिन्दी भाषा का हित सर्वोपरि था। बी० ए० तक अध्ययन करने के वाद 1932 में उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक वने। 1933 में अवर निवन्धक पद पर नियुक्त होकर 1943 तक उस पद पर रहे। 1943 से 1945 तक संगीत प्रकाशन अधिकारी, 1946 से 1950 के अगस्त तक विहार सरकार के जन-संपर्क विभाग के उपनिदेशक, 1950 से 1952 तक लंगर सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। 1952 में राज्य सभा के सदस्य वने। वाद में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार आदि पदों पर रहे। 1945 में अ० भा० कवि सम्मेलन उदयपुर (राजस्थान) के अध्यक्ष रहे।

विदेश की यात्रा भी आपने की थी। 1957 में चीन, 1961 में रूस, 1967 में मौरीशस, 1968 में पश्चिम जर्मनी तथा 1971 में इंग्लैंड गये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपने वारदोली विजय, प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र सामधानी, द्वन्द्व-गीत, रसवन्ती, रश्मिरथी, धूप-छांह, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय आदि ग्रंथों की रचना की। लगभग 32 काव्य तथा 27 गद्य पुस्तकें प्रकाशित हैं। कुरुक्षेत्र पर साहित्यकार संसद, काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा उ० प्र० और केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत है। रश्मिरथी भी पुरस्कृत है। उर्वशी महाकाव्य पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला तथा उर्वशी को दस वर्षों के अन्दर भारतीय साहित्य में सर्वश्रेष्ठ काव्य घोषित किया गया। संस्कृति के चार अध्याय भी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है।

आपकी कविताओं ने देश-प्रेम और स्वाधीनता का मंत्र फूंका, राष्ट्रीयता की भावना को जगाया।

श्री कृष्ण अभिनन्दन ग्रन्थ तथा श्री अनुग्रह अभिनन्दन ग्रन्थ का संपादन भी आपने किया।

श्री देवकीनन्दन सिंह (श्री बाबू के अग्रज) लिखित 'ज्योतिष रत्नाकर' में ग्रन्थकार परिचय में ब्राह्मणत्व के गौरव को दर्शाया।

1938 ई० में पटना में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा में आप द्वारा रचित स्वागत गान पढ़ा गया था, जिसमें समाज के धनी, राजनेता तथा सभा करने वाले को भी लक्ष्य कर कहा गया था। उक्त स्वागत गान का तत्सम्बन्धी उल्लेख इस प्रकार है—

"कौम कौम का शोर मचा है लेकिन कहो असल में,
कौन मर्द है जिसको इससे सच्ची लगी लगन है।
भूखे अपढ़ नग्न बच्चे क्या नहीं तुम्हारे घर में?
कहना धनी कुबेर! किन्तु क्या आती तुम्हें शरम है?
आग लगे उस धन में जो दुखियों के काम न आये
लाख लानतें उस पर जिसका फटता नहीं मरम है?
दूह दूहकर जाति गाय को निज तन धन तुम पालो
दो न कभी आंसू भी उसको यह भी कोई धरम है?
देख रही है कौम अपने वैभव वालों की,
मगर फिक्र क्या उन्हें सोच तो अपना ही हरदम है।
हंसते हैं सब लोग जिन्हें गैरत हो वे शरमायें,
यह महफिल कहने वालों की करना बड़ा विषम है।
सेवा धर्म शूल का पथ है गद्दी नहीं कुसुम की
घर बैठो चुपचाप न जो इस पर चलने का दम है।
जाति नहीं मिटनेवाली धनियों की कायरता से
निभ जाती सब का ईश्वर का एक समान नियम है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप ब्राह्मणों की एकता और अन्यब्राह्मण विवाह के समर्थक थे। आपकी भतीजी की शादी श्री विन्दा प्र० राय वीरेन्द्र भू० पू० एम० एल० सी० (भिरहा, समस्तीपुर) के भाई डा० राजेन्द्रराय मै० ब्रा० से तथा एक पौत्री की शादी इटावा (उ० प्र०) निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० विद्याधर निवासी के पुत्र श्री नरेन्द्र प्रकाश तिवारी से हुई।

आपका निधन 24 अप्रैल 1974 ई० में मद्रास में हो गया। आपके ग्यारहवें स्मृतिपर्व में पटना में आयोजित सभा में 2 मई को उर्जामंत्री प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद ने कहा कि "उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी था। एकबारगी विश्वास नहीं होता कि 'कुरुक्षेत्र', 'हिमालय' और 'हुंकार', के रचयिता ने 'उर्वशी' भी लिखी है। आलोचनात्मक निबन्ध लिखने वाला यह व्यक्ति 'भारतीय संस्कृति के चार अध्याय' भी लिख डालेगा ऐसा किसी ने नहीं सोचा था। बुद्ध, गांधी और नेहरू में अगाध श्रद्धा होने के बावजूद देश की रक्षा के लिए उन्होंने अर्जुन, भीम और गदा की जरूरत महसूस की।"

पं० चन्द्रदेव शर्मा शांडिल्य, साहित्य रत्न

गया जिले के देहुनी (जहानाबाद मंडल) में आपका जन्म शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। लेखक, कवि तथा समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध रहे। 'गुरुचेला' निकालकर उसका संपादन किया। गुरुओं की हजामत, बापू के सपूतों का राज,[16] दु:शासन राज्य, पवित्र पापी, परख, मंत्री महिमा, चर्खीस्तान, वीर बन्दा, बालक, श्रीराम, तुलसी, नेहरू नन्दिनी आदि लिखकर आपने निर्भीकता का परिचय दिया। कर्मकांड संबंधी भी कई पुस्तकें आपने लिखी। जहानाबाद में 'चांद प्रेस' का संचालन भी करते रहे।

1982 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री रामरीझन रसूलपुरी

1913 ई० में आपका जन्म रसूलपुर (मुजफ्फरपुर) में हुआ था। आप कवि तथा संपादक के रूप में प्रसिद्ध थे।

तिरहुत समाचार, योगी, राष्ट्रदूत तथा उत्तर बिहार का संपादन आपने किया था। घाटशिला (सिंह भूमि) में आपने राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की

---

16. बापू के सपूतों का राज (नाटक) तथा पवित्र पापी डा० राजेन्द्र प्र० पर आधारित, परख (एकांकी नाटक) श्री जयप्रकाश नारायण पर आधारित तथा नेहरू नन्दिनी (नाटक) श्रीमती इन्दिरा गांधी पर आधारित हैं। 'बापू के सपूतों का राज' को बिहार सरकार ने जब्त कर लिया था, जिसे उच्च न्यायालय, पटना ने मुक्त कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थापना की थी। आपका देहान्त अक्टूबर 1981 में हो गया।

श्री रामप्रसादसिंह पुंडरीक

1909 ई० में आपका जन्म गोपालपुर (पटना) में हुआ। मध्य और माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक रहे। अध्यापन छोड़कर 1949 से साहित्य सेवा में संलग्न हुए। गीता का अनुवाद, भारत नाटक, पुंडरीक रत्नमालिका, मेघदूत, भारतीय इतिहास की पद्यात्मक झलक, स्वामी वासुदेवाचार्य आदि आपकी लिखित पुस्तकें हैं। आप कई वर्षों से वृन्दावन में निवास कर रहे थे। आपका निधन कुछ दिन पहले हो गया है।

पं० रासविहारी राय शर्मा एम० ए० (द्वय) साहित्य रत्न

आपका जन्म डुमरांव (भोजपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप हिन्दी, भोजपुरी तथा संस्कृत के विशिष्ट विद्वान हैं।

शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए उपनिदेशक पद से अवकाश ग्रहण किया।

आपके लेख गंगा, सरस्वती, सुधा, भूमिहार ब्राह्मण, ज्ञान तरंगिनी आदि में निकलते रहे। आपकी हिन्दी तथा संस्कृत में लिखी कई पुस्तकें पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती है।

भूमिहार ब्राह्मण महासभा का इतिहास धारावाहिक रूप से 'भूमिहार ब्राह्मण' में निकलता रहा। 'द्रोणवार वंशावली' भी आपने लिखी है।

आप समाज प्रेमी तथा स्वामी जी के भक्त थे। स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मारक समिति (पटना) के आजीवन सदस्य भी थे। 1986 में आपका निधन हो गया।

श्री बैकुंठ राय शर्मा

मनसा (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण पं० बटुकदेव शर्मा (प्रसिद्ध साहित्यकार) के आप भतीजे थे। आप कवि तथा समाज सेवी थे। आपकी कवितायें विभिन्न पत्रों में निकलती थी। कलकत्ता से प्रकाशित 'कामधेनु' के सहायक संपादक भी रह चुके थे। सामाजिक सभाओं में भी शामिल हुआ करते थे। आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके पुत्र श्री कुबेर नाथ राय स्वामी सहजानन्द कालेज के प्राचार्य हैं।

डा० रामस्वार्थ चौधरी एम० ए० डी० लिट्

आपका जन्म दोम्हारपट्टी (सीतामढ़ी) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। शिक्षा समाप्ति के बाद मुजफ्फरपुर स्थित लंगरसिंह कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए और बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप कबीर विषयक हिन्दी के विशिष्ट विद्वान थे। साहित्य की सभी विधाओं पर आपने रचना की थी। जय परशुराम, धरती की बेटी, धर्मचक्र आदि आपकी रचित पुस्तकें हैं। 15/1/81 को हृदयगति रुक जाने से मुजफ्फरपुर में आपका देहान्त हो गया।

पं० जगदम्बाशरण राय शर्मा एम० ए० (द्वय) साहित्य रत्न

आपका जन्म 1901 ई० में डुमरिया खुर्द (खगड़िया) में पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के विद्वान तथा साहित्यकार और सामाजिक गौरव से युक्त थे।

जिला विद्यालय निरीक्षक, सहायक अधीक्षक संस्कृत शिक्षा, वयस्क शिक्षा पदाधिकारी बिहार, प्रधानाचार्य जिला स्कूल, प्रधानाचार्य शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, प्राध्यापक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (भागलपुर एवं रांची) तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सचिव आदि पदों पर रहकर आपने 1961 में अवकाश ग्रहण किया।

छपरा जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री तथा भागलपुर जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं। हिन्दी सेवा के लिए बिहार सरकार द्वारा 10/8/81 को सम्मानित किये गये।

बिहार शिक्षक सहयोग संघ के संस्थापक सदस्य तथा 1950 से 1954 तक अध्यक्ष, खादी केन्द्रित सहयोग संघ के संस्थापक, संस्कृतोच्च विद्यालय (डुमरिया खुर्द) के संचालक तथा कई अन्य संस्थाओं के अध्यक्ष रहे।

वयस्क शिक्षा सोपान, व्यवहार पत्रावली, वयस्क शिक्षा समाधान, वाणी सुधार, बुद्धि परीक्षा, संस्कृत लोकोक्ति सुधा, सदाचार शिक्षा, हिन्दी शिक्षण विधि, मानस सूक्तियां और मेरी जीवन यात्रा आदि आपकी रचित पुस्तकें हैं।

आप धर्म, समाज तथा हिन्दी सेवा में सदा संलग्न रहे।

आपकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी (जिनका देहान्त 1963 में ही हो गया) गांव की सरपंच तथा बिहार विधान सभा की सदस्या रह चुकी थीं। आपका निधन भी 1984 में हो चुका है।

बाबू गंगाशरणसिंह, साहित्य रत्न

खड़गपुर अमहरा (पटना) में 1904 ई० में आपका जन्म हुआ था। आप सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामप्रसाद सिंह के सुपुत्र हैं।

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, भारतीय संसद के सदस्य, भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके हैं। अ० भा० हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष तथा हिन्दी विद्यापीठ, देवघार के कुलाधिपति हैं।

विचार प्रवाह, पद्य प्रवाह, साहित्य प्रवाह आदि आपकी रचित पुस्तकें हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1979 में हिन्दी सेवा के लिए बिहार सरकार द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) ने वाचस्पति उपाधि दी। श्री जय प्रकाश नारायण को प्रतिष्ठा प्राप्त करने में आपका योगदान महत्वपूर्ण रहा।

श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह

वीरसिंहपुर ड्योढ़ी (समस्तीपुर) के स्व० बाबू सरयू प्र० ना० सिंह एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण के सुपुत्र तथा रा० ब० महेश्वर प्र० ना० सिंह तथा पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह के अनुज और दीवान बहादुर कामेश्वर ना० सिंह (नरहन) के दामाद।

प्रसिद्ध लेखक तथा कांग्रेस नेता के रूप में आप विख्यात रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम में जेल भी जा चुके हैं। बिहार विधान सभा तथा भारतीय संसद के सदस्य, पूसा (समस्तीपुर) उच्च विद्यालय के अध्यक्ष तथा सचिव आदि के रूप में भी आपने देश और समाज की सेवा की है।

रूस की हुतात्मा, बिहार गौरव, भारत के पक्षी (प्रस्तावना पं० नेहरू ने लिखी है), हमारे पक्षी (भूमिका श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लिखी है), पक्षी प्रसंग (संस्कृत साहित्य में आये पक्षियों की विशद विवेचना), चिड़ियों की दुनियां, वे दिन वे लोग (संस्मरण), वहारें फिर न आयेंगी (प्राचीन सामंत जीवन संबंधी उपन्यास), महाराजा संसार चन्द्र (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत), राधाकृष्ण (काव्य संकलन—भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत), तथा आम्रपाली (काव्य) आपकी रचित हिन्दी पुस्तकें हैं। अंग्रेजी में भी आधा दर्जन पुस्तकों की रचना आपने की है।

मासिक तथा पाक्षिक पत्रों में भी आपके महत्वपूर्ण लेख निकलते रहते हैं।

आप ब्राह्मणों की एकता और अन्तःब्राह्मण विवाह के समर्थक रहे हैं। आपकी बड़ी पुत्री की शादी कानपुर के सरहर गोविन्द मिश्र मैथिल ब्राह्मण के पुत्र से तथा छोटी पुत्री की शादी कलकत्ता के प्रसिद्ध चिकित्सक डा० कमला कान्त हजारी कान्यकुब्ज ब्राह्मण के पुत्र श्री शशिकान्त हजारी (कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति) के साथ हुई।

पं० रामजीवन शर्मा 'जीवन'

आपका जन्म 1904 (संवत् 1961 के अग्रहण) में मरवन (मुजफ्फरपुर) में जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप हास्यरस के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक हैं। विश्वमित्र, किसान मित्र, महारथी, बालक, भविष्य, भूमिहार ब्राह्मण, आर्यावर्त आदि में आपकी कवितायें निकलती रही हैं। युवक, महारथी आदि पत्रों का संपादन भी आप कर चुके हैं।*

* 1930 में स्वतंत्रता संग्राम में 14/11/30 को नौ माह की सजा दी गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1935 में मुजफ्फरपुर जिला कांग्रेस के मंत्री, 1935 से 37 तक प्रादेशिक कांग्रेस सदस्य रह चुके हैं तथा ताम्रपत्र प्राप्त स्वतंत्रता सेनानी हैं। विहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष तथा अ० भा० साठा तव पाठा के अध्यक्ष भी हैं। अट्टहास, ठहाका, गांव की बातें, विस्फोट, छींटाकसी, जिनको जानता हूं, रामदयालु सिंह आदि दो दर्जन आपकी लिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं।

साहित्य वाचस्पति पं० कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

लिलकर (वलिया) निवासी, तरीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। अध्यापक लेखक, संपादक तथा समाज सेवी के रूप में आप प्रसिद्ध रहे हैं। आपने हिन्दी और भोजपुरी में गद्य-पद्य की महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। विभूति सतसई उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हैं। विकास की एक धारा (भाग 1 और भाग 2), बातक बात और गोस्वामी तुलसीदास (शोधपूर्ण ग्रन्थ) आदि पुस्तकों के प्रणेता हैं। 'चतुर्मुख' निकालकर उसका संपादन करते रहे हैं। आपने भोजपुरी कोश का संपादन भी किया है।

आप अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। 2/5/82 को भोजपुरी अकादमी, पटना द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं। 16/1/83 को बक्सर में एक समारोह में आपका अभिनन्दन किया गया है। विक्रमशिला विद्यापीठ ने विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि से आपको विभूषित किया है।

आपने अपने शोध द्वारा स्वामी रामानन्द, श्री नरहरिदास, गोस्वामी तुलसीदास, श्री नन्ददास तथा कवि सेनापति को अप्रतिग्राही ब्राह्मण सिद्ध किया है।

आप सदा समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं। अयोध्या वाले सामाजिक केश में विशेष योगदान देकर सामाजिक गौरव की रक्षा में सफल रहे।

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० राजनाथ पांडेय ने अपनी पुस्तक 'त्रिकाल-जयी' के पृष्ठ 52 पर सभी ब्राह्मणों के सखा और गौरव के रूप में आपके नाम का उल्लेख किया है।

आप अ० भा० जनपदीय परिषद के महामंत्री, अ० भा० ब्राह्मण परिषद के महामंत्री तथा स्वामी सहजानन्द प्रकाशन मंडल के महामंत्री और विश्व ब्राह्मण संगठन के संरक्षक तथा 'कृषिवाणी' के संपादक भी हैं।

प्रतिवर्ष आपका जन्मोत्सव मनाया जाता है, जिसमें दूर-दूर के विशिष्ट साहित्यकार तथा समाज सेवी आपके घर पर पहुंचते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रो० विन्ध्याचल राय 'अचल'

हरिहरपुर (गाजीपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। आप महम्मदाबाद (गाजीपुर) इन्टर कालेज के प्राध्यापक तथा हिन्दी और भोजपुरी के साहित्यकार हैं।

सुन्नर काका, माया मिलनि न राम, को बड़ छोट कहत अपराधू, कारी लउरिया चित कावरि, सौभद्र, गांगेय, युगप्रदीप, विधाता, प्रकृतिपुत्र आपकी लिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं।

पं० शिव सागर मिश्र

श्री रामपुर अयोध्या (समस्तीपुर) निवासी सहदोलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण।

आप प्रसिद्ध कथाशिल्पी के रूप में प्रख्यात साहित्यकार हैं। समाचार प्रसारण, रूपक लेखन, संपादन एवं निदेशन आपकी विशेष योग्यता है। छात्र जीवन से ही आप स्वतंत्रता आन्दोलन से संबद्ध रहे। 1942 की अगस्त क्रान्ति में 14 माह समस्तीपुर, दरभंगा, मुजफ्फरपुर तथा भागलपुर की जेलों में रहे। 15 बेंत की सजा भी हुई और 22 वर्षों की सजा दी गयी थी।

1949 ई० में दैनिक 'विश्वमित्र' के उप संपादक तथा 1950 में 'आजाद हिन्द' के संपादक रह चुके हैं। आकाशवाणी के चीफ प्रोड्यूसर तथा निदेशक रहने के बाद लगभग 12 वर्षों से रेल मंत्रालय में राज भाषा निदेशक पद पर प्रतिष्ठित हैं। आकाशवाणी तथा रेलों में आपने हिन्दी के कामों को काफी आगे बढ़ा दिया। रेल में हिन्दी की प्रगति के लिए स्व० श्री केदार पांडेय (भू० पू० मंत्री) ने आपकी प्रशंसा भी की थी।

चांद के घब्बे, पत्ते गिर पड़े, नाव की मिट्टी, दूब जनम आयी, अंधेरे का सूरज, अक्षत, दुर्दिन की धूप, राजतिलक, मगध की जय, बहादुर लड़का, लड़ाई एक रोशनी की, रेखाएं और रंग, वही आग वही गंगा जल, भारतीय एकता के प्रतीक, वे लड़ेंगे हजार साल, जन्मेजय जागो, कहे गांव की गाथा, दिनकर—एक सहज पुरुष, एक बीज, अजन्मा वह आदि आपकी रचित पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त दर्जनों कहानियां, सैंकड़ों रेडियो रूपक और रेडियो वार्ता के रचयिता हैं। कादम्बिनी, धर्मयुग, हिन्दुस्तान आदि में भी आपकी रचनायें निकलती रहती हैं।

'उपन्यासकार शिव सागर मिश्र' नामक समीक्षात्मक पुस्तक (संपादक डाक्टर बलदेव वंशी) में हिन्दी के विद्वानों ने आपकी बहुमुखी प्रतिभा का उल्लेख किया है।

चौधरी राजनारायण शर्मा लिखित 'ब्रह्मर्षिवंश' की भूमिका आपने ही लिखी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको 30/4/81 को अजमेर (राजस्थान) में प्रदत्त अभिनन्दन पत्र में विप्र कुल श्रेष्ठ और हिन्दी हितैषी के रूप में उल्लिखित किया गया है—

"विप्र कुल श्रेष्ठ, शिव सागर सुनागर हैं
हिन्दी हित जाहिर जहान जनता में है।"

पांच विश्वविद्यालयों में आपकी पुस्तकों पर शोध कर लोग पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर रहे हैं।

अभी हाल ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) ने साहित्य महोपाध्याय की उपाधि (हिन्दी वि० वि० की सर्वोच्च उपाधि) से आपको विभूषित किया है।

डा० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, एम० ए० पी-एच० डी०, व्याकरणाचार्य

आपका जन्म वेरई (मुजफ्फरपुर) में विजलपुरिया मूल के कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण यदुवंश बाबू के पुत्र के रूप में हुआ।

लंगर सिंह कॉलेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए और स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के प्राध्यापक के पद से 31/10/81 को अवकाश ग्रहण किया। भारत और भारतीय नाट्यकला (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत), अमिताभ बुद्ध, चारु-दत्त, वासवदत्ता, कालीदास—मेघदूत (अनुवाद एवं समीक्षा) आपकी रचित प्रकाशित पुस्तकें हैं। मासिक साप्ताहिक पत्रों में भी आपके लेख निकलते रहते हैं।

वर्तमान में मुजफ्फरपुर के गन्नीपुर मोहल्ले में निवास करते हुए विश्व विद्यालय आयोग की ओर से प्रधान अनुसंधाता के रूप में 'हिन्दी के विकास में उत्तर बिहार का योगदान' पर अनुसंधान में संलग्न हैं।

श्री मदन वात्स्यायन (श्री लक्ष्मी निवास सिंह)

गढ़ सिरसई (समस्तीपुर) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण डा० श्री निवास के अनुज तथा उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद्मविभूषण सर चन्द्रशेखर प्र० ना० सिंह के भगिना। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन, तथा रूसी भाषा के विद्वान तथा कवि हैं। हिन्दी विश्व कोष में भी आपकी चर्चा है।

आपकी पत्नी श्रीमती ललिता सिंह बिहार विश्वविद्यालय की कुलपति हैं। आपके पुत्र श्री चन्द्रपीठ वात्स्यायन ने अमेरिका से अभियंत्रणा की उच्च शिक्षा प्राप्त है।

डा० विवेकी राय

आपका जन्म सोनवानी (गाजीपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप डिग्री कालेज (गाजीपुर) में प्राध्यापक तथा हिन्दी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

बबूल, रजनीगन्धा, के कहल चुनरी रंगाले, श्वेत पत्र आदि पुस्तकों के रचयिता हैं। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, काव्य तथा समीक्षात्मक 25 पुस्तकें आपकी प्रकाशित हैं।

डा० गोपाल राय के अनुसार : "डा० विवेकी राय प्रेमचन्द्र की खाई को पाटने वाले हिन्दी के रचनाकार हैं।"

6 मार्च 1983 को उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको हिन्दी सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

दिसम्बर 1983 में विलासपुर (मध्य प्रदेश) में संपन्न अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता आपने ही की।

डा० बमबम सिंह 'नील कमल', एम० ए० पी-एच० डी०, डी० लिट्

बडहिया (मुंगेर) निवासी दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री विन्देश्वरी प्र० सिंह प्रसिद्ध पहलवान के सुपुत्र। जन्म तिथि 2/8/1925 ई०। 1952 में पटना वि० वि० से एम० ए० (हिन्दी) करने के बाद 1953 में समस्तीपुर महाविद्यालय में व्याख्याता नियुक्त हुए। कुछ समय बाद ही हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बनाये गये। 1964 में वि० वि० से पी-एच० डी० तथा 1973 में पटना वि० वि० से डी० लिट् की उपाधि प्राप्त की। 1971 से 73 में उपप्रधानाचार्य भी रहे। 1980 में रीडर के पद पर तथा 1985 से प्रोफेसर के पद पर प्रोन्नत होकर कार्यरत हैं।

चंडाल चौखरी, शतदल, रश्मिश्री, निबन्ध पारिजात, रहीम साहित्य की भूमिका, तुलसी के प्रतिपाद्य विषय, कविरूपक, तुलसी कालीन संस्कृति, तुलसी की धर्म साधना, तुलसी के ब्रह्म श्रीराम, तुलसी की समन्वय साधना, शबनम (कविता संग्रह) आदि आपकी रचित पुस्तकें हैं।

आप पूर्वोत्तर रेलवे के समस्तीपुर मंडल के राज भाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य रह चुके हैं। आप राजनीति से अलग रहकर साहित्य और शिक्षा की सेवा में संलग्न रहे हैं।

डा० वचन देव कुमार एम० ए० (द्वय), पी-एच० डी०, डी० लिट्

आपका जन्म लगभग 50 वर्ष पूर्व मनियप्पा (वेगूसराय) में वेलौंचे सुदई मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के विद्वान तथा प्रमुख साहित्यकार हैं। पटना विश्वविद्यालय में वर्षों प्राध्यापक रहने के बाद 1976 के मार्च में रांची विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारिका के संपादक तथा अ० भा० दिनकर साहित्य सम्मेलन के मंत्री रह चुके हैं। 1980 में बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदस्य मनोनीत किये गये हैं।

कदाचार उन्मूलन पर सर्वोत्तम सुझाव देने के लिए बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा 500 रुपये से पुरस्कृत किये जा चुके हैं।

निबन्ध भास्कर, व्याकरण भास्कर, हमारे राष्ट्र निर्माता आदि आपकी लिखित पुस्तकें हैं।

डा० अनिल कुमार राय 'आंजनेय' एम० ए० (द्वय), बी० एड०, पी-एच० डी०, विद्यावाचस्पति

उजियार (बलिया) निवासी बेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री सिद्धिनाथ राय अधिवक्ता के सुपुत्र। आप हिन्दी तथा भोजपुरी के कवि, लेखक तथा समीक्षक और संपादक के रूप में साहित्य सेवा में संलग्न रहे हैं।

'आशा' (अलीगढ़) के सहायक संपादक तथा 'चतुर्मुख' और 'ज्ञान तरंगिनी' (भूमिहार ब्राह्मण उच्च विद्यालय बक्सर की पत्रिका) के संपादक रहे हैं। 'ज्ञान तरंगिनी' का दिनकर स्मृति अंक, तिलक अंक और जनपदीय अंक निकाल कर आपने सराहनीय कार्य किया है।

साहित्यिक, सांस्कृतिक और समाज सेवा ही आपका जीवन है तथा आतिथ्य सत्कार करना अपना धर्म बना लिया है। आपके यहां साहित्यकारों का सदा जमघट लगा रहता है। आपके संबंध में यह पंक्ति ठीक बैठती है—

"सरल-सुजन-भावुक-उदार, जन-मन-प्रिय, राग-विरागी।
साहित्यिक प्रतिभा के गौरव, बुध-जन-सेवी त्यागी।"

आप अ० भा० भोजपुरी सम्मेलन के प्रकाशन मंत्री, अ० भा० जनपदीय परिषद् के मंत्री तथा अन्य कई संस्थाओं के सदस्य हैं। विक्रमशिला विद्यापीठ (भागलपुर) द्वारा साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि से अलंकृत किये गये हैं। 16/1/83 को बक्सर (बिहार) में एक समारोह में आपका अभिनन्दन किया गया तथा 14/2/83 को मुहम्मदाबाद (गाजीपुर) इन्टर कालेज ने भी आपका अभिनन्दन किया।

संप्रति भूमिहार ब्राह्मण उच्च विद्यालय बक्सर में आप प्रध्यापक हैं।

प्रो० ब्रजकिशोर मिश्र

माधर (सीवान) निवासी। एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आप हिन्दी तथा भोजपुरी के साहित्यकार और पोलिटेकनिक महाविद्यालय, गुलजार बाग, पटना के प्राध्यापक हैं।

'भोजपुरी कहानियां' और 'योगीराज' के संपादक तथा देवराहा बाबा के भक्त हैं। देवराहा बाबा पर एक दर्जन से अधिक पुस्तकें आपने लिखी हैं।

धुआं (कहानी), जोत कुहासा (कविता), योगिराज देवराहा बाबा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमत्कार, योगिराज देवराहा बाबा, योगिराज लीलामृत, योगिराज शतवार नमन, श्री देवराहा चालीसा, सद्गुरु श्री बाबा, आधुनिक भारत के महान योगी, आधुनिक भारत के महान तांत्रिक आदि आपकी लिखित पुस्तकें हैं।

श्री कुबेरनाथ राय

गाजीपुर जिले के मतसा निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री बैकुंठनाथ राय के सुपुत्र। आप नलवारी (आसाम) डिग्री कालेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहने के बाद इस समय स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर के प्रधानाचार्य हैं। आप हिन्दी के कवि, लेखक तथा समीक्षक हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। आपकी प्रथम पुस्तक 'प्रिया नीलकंठी' की प्रशंसा दिनकर जी ने भी की थी। दिनकर जी की 'उर्वशी' पर समीक्षात्मक 'उर्वशी एक अध्ययन' भी प्रकाशित है। 'निषाद बांसुरी' आदि भी आपकी लिखित पुस्तकें है।

प्रो० रामनाथ शर्मा

अमहरा (पटना) निवासी सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। जन्मतिथि 8/1/33 ई०। 1957 में एम० ए०। 18 जून 58 से जी० जे० कालेज बिहटा (पटना) में प्राध्यापक तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष। गद्य गौरव, गद्य सरोवर, अमहरा आदि पुस्तकों की रचना आपने की है। मगध वि० वि० सीनेट तथा कला संकाय के सदस्य रहे हैं।

पं० शीलभद्र साहित्य रत्न, विद्यावाचस्पति

आपका जन्म पतोर (दरभंगा) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 11/10/ 1918 ई० को हुआ। शिक्षा समाप्त कर आपने अध्यापन और साहित्य सेवा में जीवन व्यतीत किया है।

साहित्य महाविद्यालय, लाड़नू (जोधपुर, राजस्थान) संगरियामंडी (बीकानेर), श्री हरि साहित्य महाविद्यालय तथा उच्च विद्यालय में अध्यापक रहे। 'जैन भारती' (कलकत्ता) 'भूदानयज्ञ विहार' (पटना), 'योगी' (पटना), 'शिवशक्ति' (पटना) आदि पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। अ० भा० हिन्दी सेवी सहायक संघ के अध्यक्ष रहे।

कामायनी मीमांसा, निर्झर प्रकाश, दोहा मानसरोवर की टीका तथा भारतीय संस्कृति की एक झांकी आपकी लिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं।

व्रजपालि, कुसुमायुध, कोदण्डराव शास्त्री, दीनबन्धु मुखोपाध्याय, दीपंकर साहित्य रत्न आदि छद्म नामों से भी आप लिखते रहे हैं।

आप 'झड़प' जी के 'गोस्वामी तुलसीदास' पर आकाशवाणी के दरभंगा केन्द्र से अगस्त 86 को समीक्षा भी प्रस्तुत कर चुके हैं।

आप इस समय घर पर ही निवास करते हैं। आपकी एक पुत्री श्रीमती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिभा ठाकुर मिथिला कालेज दरभंगा की प्राध्यापिका हैं।

श्री रवि निवास सिंह

गढ़ सिरसई (समस्तीपुर) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण डा० श्री निवास तथा श्री मदन वात्स्यायन के अनुज।

मासिक 'महादेश' तथा 'कोशा' का संपादन कर चुके हैं। दर्शन पर 'कथा-निकायें' पुस्तक आपने लिखी है। आप आकाशवाणी के हास्य व्यंग्य नाटककार भी हैं।

आप आयुर्वेदिक दवाओं पर अनुसंधान भी करते हैं। आपकी निर्मित्त 'रेचन एक्स' और 'फूड रेचन' दवा प्रभावशाली है।

श्री जीवछ ठाकुर 'जीवन'

कमतौल (दरभंगा) निवासी आप मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण हैं। प्रारंभ में आप श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में रहे। बाद में विहार प्रशासकीय सेवा में नियुक्त होकर इस समय दरभंगा में उप समाहर्त्ता पद पर प्रतिष्ठित हैं। 'अजेय भारत' तथा अन्य पुस्तकों के आप लेखक हैं।

श्री रामकिशोर ठाकुर

कमतौल (दरभंगा) निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार द्वारा प्रकाशित 'अब्दकोश' के संपादक तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रकाशन पदाधिकारी हैं।

श्री प्रेम कुमार शर्मा

कमतौल (दरभंगा) निवासी।

इलाहाबाद से प्रकाशित 'नूतन कहानियां' और उसके सह प्रकाशन के संपादक रह चुके हैं।

श्री रामेश्वर पांडेय 'पतंग' साहित्यालंकार

बघारी (सीतामढ़ी) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। हिन्दी के कवि तथा 'संकेत' के संपादक हैं। 'झिलमिल' तथा अन्य कई पुस्तकों के आप लेखक है। राजकीय सेवा में रहते हुए साहित्य सेवा में भी संलग्न हैं।

श्रीमती कमला देवी

देवपार (पूसा), समस्तीपुर निवासी, प्रसिद्ध किसान नेता स्व० पं० यमुना कार्यी की सुपुत्री। अजमा, (पटना) में ससुराल। बिहार की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में 'हुंकार' की आप सम्पादिका हैं।

श्री उमेश कुमार कार्यी

देवपार, पूसा (समस्तीपुर) निवासी, कुमितवार मूल के कृष्णात्रय गोत्रीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण स्व० पं० यमुना कार्यी के सुपुत्र। आप 'हुंकार' के संपादक, हुंकार प्रेस के संचालक तथा बिहार पत्रकार संघ के कोषाध्यक्ष हैं। महम्मदा (समस्तीपुर) पंचायत के मुखिया तथा पं० यमुना कार्यी जयन्ती महाविद्यालय, खरौनावगाही (मुजफ्फरपुर) के सचिव भी हैं।

श्रीमती छाया ठाकुर

श्रीरामपुर अयोध्या (समस्तीपुर) निवासी प्रसिद्ध साहित्यकार पं० शिवसागर मिश्र (निदेशक, राजभाषा, रेलमंत्रालय) की सुपुत्री तथा बलुआ ड्योढ़ी (पूर्णिया) निवासी सलहेरिया मूल के उपमन्यु गोत्रीय ब्राह्मण श्री मायानन्द ठाकुर भू० पू० विधायक की पुत्रवधू। 'दशा दिशा' की संपादिका रह चुकी हैं। वर्तमान में यूनी-वार्ता में उपसंपादिका हैं।

श्री सत्येन्द्र त्रिवेदी

मतलूपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, आरेमूल के कुत्स गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी के सुपुत्र। बी० एस-सी० करने के बाद आप बिहार सचिवालय के शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। आप हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त उर्दू, मराठी, नेपाली और गुजराती भाषाओं के ज्ञाता हैं तथा इन भाषाओं के अनुवाद भी करते हैं। अनुवाद 'नवनीत' आदि पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। अनुवाद से ही आपने साहित्य सेवा प्रारम्भ की है।

कलाकार

श्री रामायण तिवारी

मनेर (पटना) निवासी, सिनेमा जगत के प्रख्यात कलाकार श्री रामायण तिवारी का विवाह अमहरा (पटना) निवासी स्व० श्रीतीर्थराज सिंह की पुत्री श्रीमती शिवरतन देवी से हुआ था। 1937 में आपने सिनेमा क्षेत्र में प्रवेश किया था और मात्र 300/ रु० मासिक पर पूना में काम करने लगे थे। 'प्रेम संगीत' में 'पृथ्वीराज चौहान' बने, लेकिन ख्याति 'मन के जीत' के कारण हुई। आपने कई भोजपुरी फिल्मों का निर्माण किया। प्रथम फिल्म 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' निकली। यह खूब चली। बाद में बनी 'लागि नाहीं छूटे राम'।

आपका निधन 65 वर्ष की उम्र में 9/3/80 को बम्बई में हो गया। आपके पुत्र श्री भूषण तिवारी भी फिल्मी कलाकार हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती शारदा सिन्हा

बी० एड० (प्रथम श्रेणी में प्रथम), एम० म्यूज (प्रथम श्रेणी में प्रथम), नृत्य विशारद (प्रथम श्रेणी में प्रथम), संगीत प्रवीण (प्रथम श्रेणी में प्रथम)

जन्मतिथि 1/10/1953 ई०।

हुलास (सहर्षा) निवासी कटेश मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री शुकदेव ठाकुर भू० पू० संयुक्त शिक्षा निदेशक, बिहार की सुपुत्री तथा सिहमा (बेगूसराय) निवासी सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण डा० ब्रजकिशोर सिंह एम० ए०, पी-एच० डी०, शिक्षा समायोजक, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रांची की पत्नी और मरवन (मुजफ्फरपुर) निवासी प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री स्व० पं० जगदीश चन्द्र शास्त्री की भगिनी। आप भारत प्रसिद्ध गायिका हैं और हिन्दी, मैथिली, भोजपुरी तथा वज्जिका में भाषिक त्रुटियों से रहित गीत गाती हैं।

1971 से अब तक एच० एम० वी० कम्पनी आपके गानों के एक सौ से अधिक रेकार्ड बना चुकी है। उक्त कम्पनी ने कुछ दिन पहले आपकी विद्यापति संगीत का लौंग रेकार्डिंग कैसेट 'श्रद्धांजलि' किया है, जिसका उद्घाटन पटना में 6 जुलाई 1983 को हुआ।

1979 में एच० एम० वी० ने आपको उत्कृष्ट कलाकार एवार्ड से विभूषित किया है। आपके गीत विश्व के विभिन्न रेडियो स्टेशनों से प्रसारित होते रहते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक मंचों और कैसेट रेकार्ड के माध्यम से संगीत प्रेमियों की सेवा करने के बाद अब आपने फिल्म जगत में प्रवेश किया है। शिव गंगा प्रोडक्शन की भोजपुरी फिल्म के तीन गीतों की तथा इसी प्रोडक्शन द्वारा बनाये जा रहे वृत्त चित्र 'बोलवम' के पांच गीतों की रिकार्डिंग भी आपकी आवाज में हुई है। राजश्री प्रोडक्शन की निर्माणाधीन हिन्दी फिल्म 'प्यार का वरदान' में गीत गाने के लिए पहली बार अनुबंधित किया गया। कई और हिन्दी एवं भोजपुरी फिल्मों के पार्श्व गायन का प्रस्ताव आपको मिला है।

सितम्बर 1986 में, कैसेटों एवं रिकार्डों की लोकप्रियता के कारण, सुपर कैसेट इन्डस्ट्रीज ने बम्बई में 'गोल्डेन डिस्क' से सम्मानित किया है। यह डिस्क प्रसिद्ध संगीतकार बप्पी लाहिड़ी ने प्रदान किया है। इससे पूर्व दो ही व्यक्ति लता मंगेशकर तथा बप्पी लाहिड़ी इस डिस्क से सम्मानित हैं।

1973 से आप पटना और दरभंगा आकाशवाणी केन्द्र की सुगम संगीत एवं लोक संगीत कलाकार हैं। आप बिहार राज्य कला अकादमी की सदस्या भी हैं।

आपके दो बच्चे (1 पुत्री और 1 पुत्र) हैं। संप्रति आप समस्तीपुर के काशीपुर मुहल्ले में निवास करती हैं तथा समस्तीपुर महिला महाविद्यालय में संगीत की प्राध्यापिका हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाजसेवी

बाबू लंगट सिंह

धरहरा (वैशाली) में गोआइत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। परिवार गरीबी से त्रस्त था। घर से मात्र 5 पैसे लेकर आप नौकरी की खोज में चल पड़े। समस्तीपुर रेलवे में प्वायन्ट्स मैन (पैटमैन) की नौकरी मिली। कुछ दिनों के बाद मालगाड़ी से आपका पैर कट गया। अस्पताल से निकलने पर वैशाखी के सहारे चलने लगे। एक परिचित अंग्रेज अभियन्ता की सलाह और उसी के रुपये से आप ठेकेदारी करने लगे। रेलवे के बड़े-बड़े ठेके आपको ही मिलने लगे।

एक बार एक अंग्रेज अभियन्ता को विलायत जाना था। उसे कुछ रुपये की आवश्यकता थी। मांगने पर आपने तुरंत दे दिया। जाते समय उसने कहा—"बाबू लंगट सिंह! लौटकर मैं तुम्हें राजा बना दूंगा।" सचमुच वह अंग्रेज लौटा। हावड़ा का पुल बन रहा था, उसी ने आपके नाम पर ठेका करवा दिया—लाखों रु० की बचत हुई। ठेकेदारी से आपने अतुल संपत्ति और सम्मान का अर्जन किया।

आपने बच्चों की शिक्षा और समाज सेवा की ओर भी रुचि दिखायी। मुजफ्फरपुर में 'भूमिहार ब्राह्मण कालेज' की स्थापना की—उस समय मुजफ्फरपुर का वह प्रथम कालेज था। इस कालेज में डा० राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी आदि ने प्राध्यापक पद को सुशोभित किया था।

जगह-जगह भूमिहार ब्राह्मण सभा के माध्यम से समाज में चेतना जागृत कर शिक्षा प्रसार, ब्राह्मण धर्म और ब्रह्म विवाह आदि पर जोर डालते रहे। 1908 ई० में छपरा में 17 से 19 अप्रैल तक संपन्न आ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा में बच्चों की शिक्षा, रक्षा तथा अनाथालय खोलने पर बल दिया और ब्रह्म विवाह (बिना तिलक दहेज के विवाह) पर बोलते हुए आपने कहा था—"शादी अर्थात् खुशी का दिन, किन्तु दहेज न मिलने के कारण लोग इसे गमी बना देते हैं। महावामन की तरह अति दक्षिणा रूपी रुपया बिना भात नहीं खाते। ऐसे लड़के वाले को इस लंगड़े के कहने का मजा तब मालूम होगी जब उनको अपनी लड़की की शादी करनी पड़ेगी।"

उन्होंने ब्रह्म विवाह की रीति से असहाय कन्या के प्रत्येक विवाह में 51 रु० सहायता देने की घोषणा की थी।

आप अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के उपाध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष थे।

इलाहाबाद में 1910 ई० में संपन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 28वें अधिवेशन में बिहार से प्रतिनिधि के रूप में आप सम्मिलित हुए थे।

जीवन पर्यन्त आपने शिक्षा प्रसार, समाज तथा देश सेवा का महत्वपूर्ण कार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया।

आपकी मृत्यु पर बंगाल के राज्यपाल ने भी शोक प्रकट किया था। आपके पौत्र श्री दिग्विजय नारायणसिंह भारतीय संसद के भू० पू० सदस्य तथा देश के एक प्रख्यात नेता हैं।

श्री सरयू प्र० मिश्र

रघुनाथपुर पतोर (दरभंगा) निवासी सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। आप धार्मिक तथा सामाजिक गौरव की भावना से युक्त रहे। श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती को व्यवस्था पत्र, दरभंगा राज परिवार से हुए पत्राचार आदि देकर 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' लिखने में आपने सहायता की थी।

दरभंगा महाराज, पं० लूटन झा और महामहोपाध्याय पं० चित्रधर मिश्र आदि आपके साथ बराबरी दर्जा का व्यवहार करते थे। आपके दोनों अनुज पं० राजेन्द्र प्र० मिश्र और पं० त्रिवेणी प्र० मिश्र भी ब्राह्मणत्व के गौरव और संस्कृति के रक्षक थे।

आपका देहान्त आश्विन कृष्ण एकादशी को 1337 साख (ई० सन् 1929) में हो गया।

श्री प्रदीप नारायणसिंह

वलिगांव (वैशाली) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण।

प्रारंभ में आप बाबू लंगटसिंह के आप्त सचिव रहे। बाद में अवर पुलिस निरीक्षक नियुक्त हुए। कुछ दिनों के बाद त्यागपत्र देकर समाजोत्थान तथा देश सेवा में संलग्न हुए। जगह-जगह भूमिहार ब्राह्मण सभाओं द्वारा समाज में चेतना जगाते रहे। 1914 ई० में 'ब्राह्मण जगत' लिखकर ब्राह्मणों की एकता प्रदर्शित कर एकत्व भाव को जगाया। आपकी पुस्तक ने बहुतों की गौरव की भावना को जगाया।

श्री राम बहादुरसिंह

गंगापुर (समस्तीपुर) के भू० पू० जमींदार तथा राय गंगाराम के वंशज। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण, सामाजिक कार्य में आप लंगटसिंह के सहयोगी थे। आपने उपदेशांक मंडली द्वारा गांव-गांव में सामाजिक चेतना जगायी तथा 22 प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना कराकर शिक्षा का प्रचार किया। युवावस्था में ही 14/7/1920 ई० को आपका देहान्त हो गया।

श्री चौधरी रघुनन्दन प्र० सिंह

सुस्ता महम्मदपुर (मुज़फ्फरपुर) निवासी कोदरिये मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप पटना विश्वविद्यालय तथा बंगाल एण्ड नौर्थ वेस्टर्न रेलवे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदस्य, दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह के आप्त सचिव तथा भूमिहार ब्राह्मण कालेज मुजफ्फरपुर के संयुक्त सचिव रह चुके थे। भूमिहार ब्राह्मणों में जागृति लाकर भी समाज सेवा करते रहे। 1935 ई० में आपका देहान्त हो गया।

पं० रामकरण राय

1848 ई० में दिघरा (समस्तीपुर) में सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। समाज सेवा का व्रत ही आपने धारण कर रखा था। गांव में माध्यमिक विद्यालय तथा कन्यापाठशाला खोल कर शिक्षा प्रचार किया। जातीय सभाओं में शिक्षित होने और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का उपदेश देते रहते थे। जीवन पर्यन्त समाज सेवा में संलग्न रहे। 28 अगस्त 1936 ई० को आपका देहान्त हो गया।

आपके एक पौत्र श्री हरिनारायण शर्मा घाटशिला (सिंहभूमि) में अनुमंडल पदाधिकारी हैं।

राय साहब रासधारी प्र० सिंह

11/4/1956 को छितरौर (बेगूसराय) में चकवार मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आप भूमिहार ब्राह्मण सभाओं और गोष्ठियों द्वारा समाज में चेतना जागृत करते रहे। सभी दल के ब्राह्मण विद्वानों की गोष्ठियां बुलाकर भी एकत्व और समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया। आपका देहान्त 21/11/1937 ई० को हो गया। आपके पुत्र श्री राजेन्द्रनारायण सिंह भू० पू० जिला निबन्धक भी समाज प्रेमी व्यक्ति हैं।

पं० सन्त प्र० शर्मा

1871 ई० में वैकुंठपुर (वैशाली) में भूपाली मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म।

1891 से 1901 तक विभिन्न सेवा में रहने के बाद 1902 में रेलवे में सेवा प्रारंभ कर 1933 ई० में स्टेशन मास्टर पद से अवकाश ग्रहण किया।

श्री प्रदीप नारायण सिंह लिखित 'ब्राह्मण जगत' पढ़कर आप में ब्राह्मणत्व के गौरव की भावना जगी तथा स्वामी जी लिखित 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' पढ़कर समाज सेवा की रुचि बढ़ी। तभी से तन, मन और धन से समाज सेवा में प्रवृत्त होकर जीवन पर्यन्त समाज की गौरव-गरिमा की रक्षा तथा सेवा में संलग्न रहे। पुरोहित वर्गीय या कुछ ब्राह्मणों द्वारा किये गये द्वेष पूर्ण आक्षेपों का समुचित उत्तर आपने पुस्तकें लिख कर दिया।

आप अ० भा० कर्मकांडी सम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे। आपका देहान्त 22/8/57 को हो गया।

आपके चार पुत्रों में प्रथम पुत्र श्री सत्यनारायण शर्मा भू० पू० स्टेशन मास्टर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृतीय पुत्र श्री रामेश्वर मिश्र भू० पू० बुकिंग क्लर्क तथा चतुर्थ पुत्र श्री वागीश्वर मिश्र भू० पू० स्टेशन मास्टर का निधन हो चुका है। द्वितीय पुत्र पं० कपिलेश्वर शर्मा भू० पू० रेलवे गार्ड वर्तमान हैं।

श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा

गोही (समस्तीपुर) में गंभरिया मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री भागवत ठाकुर के सुपुत्र।

विद्यालय में कुछ दिनों तक शिक्षक रहने के बाद जूट और कोयले का व्यवसाय प्रारंभ किया और धीरे-धीरे अन्य अनेकों उद्योगों की स्थापना देश और विदेश में की। अपने अध्यवसाय, परिश्रम और सूझबूझ से अतुल संपत्ति और सम्मान का अर्जन किया। समस्तीपुर में जितवारपुर कोठी खरीद कर कागज का कारखाना (ठाकुर पेपर मिल) तथा नये ढंग से बीजोत्पादन कर किसानों को भी प्रोत्साहन देते रहे।

अपने पिता के नाम पर किशनपुर में भागवत उच्च विद्यालय की स्थापना आपने की। समस्तीपुर कालेज की स्थापना में सहयोग देकर तथा कालेज की शासी निकाय के अध्यक्ष के रूप में शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण सेवा आपने की। 1955 ई० में आपका देहान्त हो गया।

आपके बड़े पुत्र श्री मदन मोहन शर्मा दिल्ली में रहकर व्यवसायों का संचालन करते हैं तथा छोटे पुत्र श्री राम विनोद शर्मा का निधन हो चुका है।

आपके पौत्र की शादी औसान गंज, वाराणसी के राजा त्रिविक्रम नारायणसिंह की पुत्री से हुई है।

श्री विश्वनाथसिंह शर्मा

हररखकोठी (बेगूसराय) में जन्म। आपने बेगूसराय में गणेशदत्त कालेज की स्थापना की तथा उसके सचिव रहे। कोआपरेटिव कालेज बेगूसराय तथा अयोध्या प्र० सिंह स्मारक कालेज बरौनी की स्थापना भी आपने की। अनुमंडलीय भू० ब्रा० सभा के मंत्री भी रहे। 1956 से मृत्यु पर्यन्त (1973 तक) बेगूसराय सहकारिता बैंक के मंत्री रहे। भागलपुर वि० वि० के अभिषद के सदस्य भी रह चुके थे। इस प्रकार आप जीवन भर शिक्षा और समाज की सेवा में लगे रहे। आपकी पत्नी श्रीमती दिनेश्वरी शर्मा एक समाज सेविका हैं तथा दो दो बार बेगूसराय सहकारिता बैंक की मंत्री रह चुकी हैं। आपके एक दामाद श्री ज्योति कुमारसिंह उप पुलिस महानिरीक्षक तथा एक दामाद श्री जगदीश चन्द्र सिंह मुख्य अभियन्ता (क्षे० वि० प्रा० पटना) हैं।

कुंवर सूर्यनारायण सिंह

वाराणसी निवासी कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण। 1944 ई० में आपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बक्सर (भोजपुर) में अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा का आयोजन किया था तथा उसके स्वागताध्यक्ष आप ही थे। आपने संपूर्ण अयाचक ब्राह्मणों का एक संगठन 'ब्रह्मर्षि सेवा समिति' के नाम से बनाया था तथा उसके प्रथम अध्यक्ष आप ही थे। रोहिणिया (वाराणसी) में आयोजित उक्त सेवा समिति के अधिवेशन की अध्यक्षता पं० अनन्य शास्त्री पुराणाचार्य (चित्यावन ब्राह्मण) ने की थी। आपका देहान्त 1972 ई० में हो गया।

रायबहादुर जगदेव राय

सुहवल (गाजीपुर) निवासी। प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा समाज सेवी थे। वर्षों उत्तर प्रदेश विधान परिषद के अध्यक्ष तथा गाजीपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके थे। त्यागी ब्राह्मण सभा की अध्यक्षता भी आपने की थी। आप वर्षों पूर्व दिवंगत हो चुके हैं।

श्री सिद्धेश्वर प्र० सिंह मोहनपुर जिला गाजीपुर

श्री महादेव प्र० सिंह, सुपुत्र श्री सिद्धेश्वर प्र० सिंह, मोहनपुरा जि० गाजीपुर के मूल वासी हैं। इनके पूर्वज भागलपुर जिले में शाहकुंड प्रखंड के ग्राम कोदंड़ा में बसे हैं। यहां देवसिंह भागलपुर के सर्वोच्च व्यवसायी एवं भागलपुर विश्वविद्यालय सिंडीकेट के सदस्य हैं।

श्री सिंह महादेव सिंह कालेज, महादेव सिंह विधि कालेज के संस्थापक भी हैं।

भागलपुर शहर में महादेव चित्र मन्दिर, महादेव मेडिकल, शारदा चित्र मन्दिर, सप्लाई एम्पोरियम सहित कई एजेन्सियों, ट्रकों के स्वामी हैं, साथ ही फिल्म का निर्माण एवं उसमें अदाकारी भी करते रहे हैं।

अपने बन्धु बान्धवों सहित अपने कर्मचारियों की भी मुक्त हाथ से सहायता करते रहते हैं।

श्री अयोध्या प्र० सिंह

नाव कोठी, बेगूसराय के भू० पू० जमींदार तथा सुरौरे कांटी मूल के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण। आपने हजारों एकड़ जमीन तथा रुपये देकर बेगूसराय में अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेदिक कालेज की स्थापना की। आज भी बेगूसराय का वह महाविद्यालय औषधि विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा देकर संस्कृति और स्वास्थ्य की रक्षा कर रहा है। इस प्रकार शिक्षाक्षेत्र में महत्वपूर्ण सेवा आपने की। आप दिवंगत हो चुके हैं।

अभी हाल ही में आपके नाम पर अयोध्या शिवकुमारी विधि महाविद्यालय की स्थापना हुई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चौधरी अवधविहारी सिंह

रहीमपुर (खगड़िया) के भू० पू० जमींदार तथा मरें मंगरौनी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। आपने 1035 एकड़ जमीन तथा प्रचुर संपत्ति लगाकर अवध विहारी संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की तथा वाराणसी के लक्ष्मीकुंड मुहल्ले में भूमिहार ब्राह्मण छात्रावास का निर्माण कराया। आपकी मृत्यु के बाद भी वह महाविद्यालय संस्कृत और संस्कृति के रक्षक के रूप में संचालित है।

डा० रामप्रकाश शर्मा

आपका जन्म धर्मागतपुर बथुआ (समस्तीपुर) में 1896 ई० में गंभरिया मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप साहित्यकार, चिकित्सक और नेता के रूप में प्रसिद्ध रहे। 21 वर्षों तक दरभंगा जिला बोर्ड के सदस्य रह कर तथा हाफ टाइम इंडस्ट्रियल मिडिल स्कूल, दिघरा (समस्तीपुर), उच्च विद्यालय, ताजपुर (समस्तीपुर), सर्वोदय उच्च विद्यालय, वैनी (समस्तीपुर) के सचिव तथा समस्तीपुर कालेज, समस्तीपुर, राम निरीक्षण कालेज, (समस्तीपुर) तथा महिला कालेज समस्तीपुर के शासीनिकाय के सदस्य रह कर आपने अपूर्व सेवा की।

ग्रामीण शिक्षा का उच्च प्रतिष्ठान विरौली (समस्तीपुर) की स्थापना में विशेष रुचि लेकर स्थापना करायी तथा उसके शासीनिकाय के विशिष्ट सदस्य रहे। पूसा में राजेन्द्र कृषि वि० वि० की स्थापना में भी आपका प्रयत्न रहा।

आप गद्य तथा पद्य दोनों के साहित्यकार थे। आपकी कविताओ के उद्धरण 'विहार के नवयुवक हृदय' में अंकित हैं।

गिरिराज व्रजराज, खुदीराम बोस, तथा मिथिला का इतिहास (वृहद शोध पूर्ण ग्रंथ—जो दरभंगा संस्कृत वि० वि० द्वारा प्रकाशित है) आपकी लिखित पुस्तकें हैं।

9/1/1983 को आपका देहान्त हो गया। आपके एकमात्र पुत्र मेजर डा० ओमप्रकाश शर्मा चिकित्सा सेवा से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री बच्चू नारायण सिंह

वारिसपुर (वैशाली) में ववनडीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। प्रारंभ में राष्ट्रीय विद्यालय के शिक्षक रहे और आपका कार्य क्षेत्र समस्तीपुर ही रहा। जीवन पर्यन्त वैनी (समस्तीपुर) में निवास किया। समस्तीपुर लोकल बोर्ड के चेयरमैन दरभंगा जिला बोर्ड के वाइस चेयरमैन और चेयर-मैन रहकर तथा पूसा और वैनी उच्च विद्यालय तथा अनेकों संस्थाओं के सचिव तथा सदस्य रहकर सेवा करते रहे। 1978 में आपका देहान्त हो गया।

आपके पुत्र डा० मायाशंकर श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय में अध्यापक हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० गिरिजाशंकर शर्मा

वाणापुर (मीर्जापुर) में गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। बेतिया राज्य में तहसीलदार रहते हुए समाज सेवा में भी आप संलग्न रहे। मोतीहारी जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री तथा डा० वी० एस० मुंजे (चित्पावन ब्राह्मण) की अध्यक्षता में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा (बेतिया) के स्वागत मंत्री रह चुके थे। काशीवास करते हुए आपका देहान्त वर्षों पहले ह गया।

पं० राम प्रताप मिश्र वैद्य भूषण

पाली (मधुबनी) में कोथवैत मूल के विष्णु वृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आपने आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय प्रारंभ कर लहेरिया सराय में शांतिनिकेतन नाम से चिकित्सालय खोल कर दवा का व्यवसाय प्रारंभ किया।

1934 ई० की भूकम्प पीड़ित जनता की सेवा के लिए महात्मा गांधी द्वारा 'पद्मनाभ पदक' से आप सम्मानित किये गये। दरभंगा जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री के रूप में भी आपने समाज की सेवा की थी। 1947 में आपका देहान्त हो गया। आपके पुत्र श्री नरेन्द्र नारायण मिश्र शांति निकेतन डिस्पेन्सरी (दवा का थोक व्यवसाय) का संचालन करते हैं।

पं० बांके बिहारी शर्मा वैद्यशास्त्री

जटमलपुर (समस्तीपुर) में दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1907 में आपका जन्म हुआ था। विश्वंभरपुर लोहछा (छपरा) में संस्कृत पाठशाला के अध्यापक रहे तथा आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय में भी संलग्न रहे। लेखन और सभा द्वारा और कर्मकांड कराकर भी समाज सेवा में संलग्न रहे।

छपरा जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री भी रह चुके थे। 8/4/1968 को आपका देहान्त हो गया।

श्री अयोध्या प्र० मिश्र कर्मकांडी

कन्हैयाचक (खगड़िया) निवासी, सुरौरे कांटी मूल के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण। मारवाड़ी विद्यालय दुमका से 1944 में अवकाश ग्रहण किया। समाज में जागरण उत्पन्न कर तथा कर्मकांड द्वारा जीवन भर समाज सेवा में लगे रहे। दिवंगत हो चुके हैं।

पं० ब्रजनन्दन शर्मा

1910 ई० में आपका जन्म पुनास (समस्तीपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वर्षों दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। गांधी जी की प्रेरणा से नारी शिक्षा के लिए जन सहयोग तथा सरकारी अनुदान से लक्खी सराय (मुंगेर) की बालू भरी निर्जन स्थान (जहां जाने का कोई साहस नही कर सकता था) में बालिका विद्यापीठ की स्थापना कर विशाल भवन निर्माण कराकर 33 वर्षों तक अपने मूल ग्राम को छोड़ कर विद्यापीठ का संचालन करते रहे। 69 वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने से 1969 में आपका देहान्त हो गया। अब आपकी पत्नी श्रीमती विद्यादेवी विद्यापीठ का संचालन कर रही हैं।

डा० शालिग्राम मिश्र

मदनपुर (समस्तीपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। भू० पू० चिकित्सा पदाधिकारी। अवकाश ग्रहण के बाद पूसा में रहकर निःशुल्क चिकित्सा सेवा करते रहे। समाज सुधारक थे तथा कई शिक्षण संस्थाओं से संबद्ध थे। आपका देहान्त 12/5/79 को हो गया। आपके दो पुत्र चिकित्सक तथा एक प्राध्यापक है। आपके नाम पर ध्रुवगामा (समस्तीपुर) में महाविद्यालय संचालित है तथा पूसा में आपके नाम पर सड़क का नाम है।

पं० मुनीश्वर राय शर्मा

रामपुर (भोजपुर) में शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। बैंकटेश्वर समाचार तथा अन्य कई पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। वंग प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री तथा अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा (1928) के स्वागत मंत्री तथा अन्य प्रकार से समाज सेवा में संलग्न रहे। दिवंगत हो चुके हैं।

पं० रघुनाथ मिश्र

1901 ई० में पतोर (दरभंगा) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय परिवार में आपका जन्म हुआ था। सादगी और सदाचार की आप प्रतिमूर्ति हैं। स्वतंत्रता सेनानी जिला किसान सभा के भू० पू० अध्यक्ष तथा ग्राम पंचायत के भू० पू० सरपंच हैं। आपने तीन पुस्तकें भी लिखी है—(1) जाति, धर्म और ईश्वर (2) गांधी मार्ग से स्वराज्य, तथा (3) किसान संगठन ही क्यों?

आप समाज की गौरव-गरिमा की रक्षा में भी संलग्न रहे हैं। आपके पुत्र पं० रामसखा शर्मा संस्कृत के विद्वान हैं।

श्री राम नगीना राय

सोहांव (बलिया) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। नेताजी के नाम से प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी तथा समाजसेवी हैं। आप भाषण देने की कला में निपुण है। कई सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं से संबद्ध रह कर समाज सेवा में संलग्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। राजनीति में भी सक्रिय रहे हैं।

पं० शुकदेव शर्मा कर्मकांडी

आपका जन्म 1906 ई० में सिलौत (मुजफ्फरपुर) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। स्वामी जी के सामाजिक आन्दोलन में आगे बढ़ कर आपने महत्वपूर्ण कार्य किया। 16 वर्ष की उम्र में ही 'कलियुगी ब्राह्मण' (नाटक) की रचना आपने की। पद्यमय महाभारत, कृष्णामशा (रामायण की तरह पद्य में श्रीकृष्ण कथा का वर्णन), विचित्र जंगल (उपन्यास), खादी का प्रेमी (नाटक), कर्मकांड शिक्षक, ज्योतिष शिक्षक आदि की रचना भी आपने की। 1927 में ब्राह्मण बन्धु का संपादन किया। उक्त पत्र पर निम्न पद्य लिखा रहता था :—

"गिरी हुई निज जाति दशा का जो रखता कुछ ध्यान नहीं।
जाति धर्म अभिमान न जिसमें वह ब्राह्मण सन्तान नहीं।।"

भूमिहार ब्राह्मण समाज के नाम खुली चिट्ठियां, भूमिहार ब्राह्मण चेतावनी आदि समय-समय पर निकालते रहे हैं। वीर सावरकर, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, डा० सर गणेशदत्त सिंह, डा० श्रीकृष्ण सिंह बाबू रामदयाल सिंह पर भी आपकी कवितायें निकल चुकी है।

अ० भा० कर्मकांडी सम्मेलन के मंत्री तथा अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के कार्यकारी मंत्री भी रह चुके हैं।

औद्योगिक सहयोग समिति लि० (सिलौत) के सचिव तथा खादी संस्थान संघ विहार के सचिव के रूप में खादी सेवा में संलग्न हैं।

पं० कपिलेश्वर शर्मा

वैकुंठपुर (वैशाली) निवासी भूपाली मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण, प्रख्यात समाज सेवी स्व० पं० सन्त शर्मा के सुपुत्र। संस्कृत और कर्मकांड के विद्वान। अ० भा० सारस्वत ब्राह्मण सभा ने आपको अपनी सभा का प्रतिनिधि बनाया था और आप प्रतिनिधि के रूप में उसमें सम्मिलित हुए थे। अपने पिता की तरह आप भी सामाजिक गौरव की रक्षा के लिए समाज सेवा में संलग्न रहे हैं। पूर्वोत्तर रेलवे के गार्ड पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री दामोदर राय

बेटावर (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। इन्टर कालेज के उप प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के संपर्क में आकर सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर समाज सेवा में संलग्न रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चौधरी राजनारायण शर्मा विशारद

श्रीरामपुर अयोध्या (समस्तीपुर) में सहस्त्रामे के मूल कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 3-12- 1916 को जन्म। शिक्षण काल से ही समाज सेवा में संलग्न रहे हैं। प्रारंभ में विहार तथा उ० प्र० के जिलों में भूमिहार ब्राह्मण सभाओं की स्थापना तथा कई अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभाओं को सफल बनाने में योगदान दिया। 'भूमिहार ब्राह्मण' (कलकत्ता) साकेत (अयोध्या), त्यागी बन्धु, (हरिद्वार) 'त्यागी ब्राह्मण' (मेरठ) मुख्याल सेवक (दिल्ली) महान शहीद (दिल्ली) 'ब्रह्मर्षि सन्देश' (कानपुर) 'त्यागी ब्राह्मण समाज' (मेरठ) तथा 'भूमेश्वर सन्देश' (गाजीपुर) आदि पत्रों में नियमित रूप से लेख-समाचार भेजकर समाज को जाग्रत करते रहे हैं। अन्य लेख 'बालक' निवेदिता आदि में निकल चुके हैं।

उपर्युक्त पत्रों में अधिकांश ने अपने संपादकीय या पत्रों में आपकी समाज सेवा की सराहना की है। कई सभा के स्वागताध्यक्षों ने अपने भाषण में विशिष्ट समाज सेवक के रूप में आपके नाम का उल्लेख किया है।

प्रो० राजनाथ पांडेय (सुल्तानपुर उ० प्र०) ने अपनी पुस्तक 'त्रिकालजयी' में सभी ब्राह्मणों के सखा के रूप में तथा श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने 'ब्राह्मण कौम' के पृष्ठ 23 पर संगठन संबन्धी महत्व के कार्य में सर्वोपरि कर्म-योगी के रूप में उल्लिखित किया है।

आप ब्राह्मणों की एकता के समर्थक हैं तथा इसी दृष्टिकोण से समाज सेवा करते हैं।

आप अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के प्रचारमंत्री विहार राज्य वु० वि० स० शिक्षक संघ के संस्थापक सचिव, भूमंडलीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा प्रमंडलीय रेल यात्री परामर्श दातृ समिति समस्तीपुर के सदस्य रह चुके हैं। अ० भा० ब्राह्मण परिषद के मंत्री तथा विश्व ब्राह्मण संगठन की कार्य समिति के सदस्य तथा राज्य शाखा के संयोजक है।

आपने 'भूमिहार ब्राह्मण समाज (खंड 1) 'ब्रह्मर्षि वंश' भूमिहार ब्राह्मण, समाज (खंड 2) तथा प्रद्युम्न चौधरी वंश परिचय नामक पुस्तकें लिखी हैं।

श्री मधुसूदन चौधरी

श्रीरामपुर अयोध्या (समस्तीपुर) निवासी सहस्त्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। आप मल्लविद्या में प्रवीण अध्यवसायी, धार्मिक और सामाजिक व्यक्ति हैं। आप ग्राम पंचायत के निर्विरोध निर्वाचित मुखिया हैं। आपने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से ठेके के व्यवसाय से काफी संपत्ति एवं यश का अर्जन किया है।

प्रति वर्ष सुलतानपुर गंज से पैदल चलकर बाबा वैद्यनाथ पर गंगा जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ाते हैं तथा वैद्यनाथ धाम में और अपने गांव में लखासिरी महादेव की पूजा करते हैं। महिला महाविद्यालय पूसा तथा अन्य कई संस्थाओं की सहायता आपने की है। अपने गांव श्रीरामपुर अयोध्या में शिवसागर मधुसूदन महाविद्यालय की स्थापना शीघ्र ही करने वाले हैं। आप जगदीश स्मारक महाविद्यालय जमशेदपुर के अध्यक्ष भी हैं।

आपने भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों की यात्रा भी की है। तथा छठ के अवसर पर गरीबों के बीच धोती-साड़ी भी वितरित करते हैं।

पं० विष्णुशर्मा चतुर्वेद

मलिकौड़ (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत के विद्वान। अविभाजित भारत में लाहौर में हाईस्कूल में संस्कृत शिक्षक तथा स्वामी सहजानन्द हीरक जयन्ती समारोह (पटना) के सचिव रह चुके हैं। अमरपुर में अभ्युदय आश्रम की स्थापना कर संस्कृत महा० का संचालन तथा कर्मकांड द्वारा समाज सेवा करते रहे हैं।

पं० जयनारायण शर्मा

हेमदापुर (भोजपुर) निवासी, कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। अधिक समय बंगाल में रहकर ब्राह्मणों की एकता के लिए कार्य किया तथा विभिन्न ब्राह्मण दलों में वैवाहिक सम्बन्ध कराने में योगदान किया। पंचगौड़, दशविध ब्राह्मण संहिता आदि लिखकर भी अपने समाज की सेवा की है। अब घर पर रहकर अध्यात्म चिन्तन करते हुए समय व्यतीत करते हैं।

पं० राजबहादुर पांडेय

बबुरा (प्रयाग) निवासी, हीरापुरी पांडेय मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। स्वामी हंसानन्द सरस्वती के संपर्क में आने के बाद से आप सामाजिक चेतना जाग्रत करते हुए समाज सेवा में संलग्न रहे हैं।

श्री जयनन्दन ठाकुर

ढोल वज्जा (पूर्णियां) निवासी, शिरसियत मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। ग्राम पंचायत मुखिया रह चुके हैं। विभिन्न प्रकार से समाज सेवा में संलग्न रहे हैं। कई शिक्षण संस्थाओं से भी संबद्ध हैं।

पं० उपेन्द्र शर्मा मालवीय

वारा (कुर्था, गया) निवासी। श्री गौड़ मालवीय मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। 12/9/36 को जन्म। शिक्षक पद पर कार्यरत रहते हुए सामाजिक गौरव की भावना से समाज को जाग्रत करते रहते हैं। वेद, पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र आदि का विशेष अध्ययन आपने किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० ओम प्रकाश राय (एम० एस-सी०, पी-एच० डी०)

डुमरैला (गोरखपुर) निवासी, भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। डी० ए० वी० कालेज, गोरखपुर में वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष हैं तथा भूमिहार ब्राह्मण समाज गोरखपुर के महामंत्री के रूप में समाज सेवा में संलग्न हैं।

डा० जगदीश्वर प्र० राय (एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० पी० ए०)

चित्राखोर जिला बस्ती निवासी, पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री केदारनाथ पांडेय के सुपुत्र। 1972 में स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय गाजीपुर में अध्यापक नियुक्त हुए और इस समय भूगोल विभागाध्यक्ष हैं। भूगोल सम्बन्धी पुस्तकों के लेखक भी हैं। सामाजिक सभाओं तथा गतिविधियों में सम्मिलित होकर समाज सेवा की ओर भी प्रवृत्त हैं।

श्री कुंजविहारी शर्मा

मलिकौंड (समस्ती) निवासी, सावर्ण्यगोत्रीय ब्राह्मण। शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर काम करने के बाद जिला शिक्षा अधीक्षक पद से 1958 ई० में अवकाश ग्रहण किया और बाद में सीतामढ़ी स्थित कमला कन्या उच्च विद्यालय में निःशुल्क अध्यापन और उसका संचालन किया। निःशुल्क सेवा के लिए राज्य सरकार द्वारा पांच हजार की राशि से आप पुरस्कृत किये जा चुके हैं। आप शिक्षा क्षेत्र में सेवा करते रहे हैं। आपके पुत्र भी आनन्द विहारी शर्मा राम दयालु सिंह महाविद्यालय मुज़फ्फरपुर के प्राध्यापक हैं।

श्री राम चरित्र मिश्र

कवर गामा (समस्तीपुर) निवासी। एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत प्राथमिक विद्यालय के भू० पू० प्रधानाध्यापक। प्रारंभ से ही सामाजिक सभाओं में योगदान देते हुए सामाजिक सेवा में संलग्न रहे हैं।

डा० उदय नारायण राय

वनकठा (गोरखपुर) निवासी, वरुआ के तिवारी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पं० रामवली राय के सुपुत्र। इलाहाबाद वि० वि० में प्राचीन इतिहास एवं संस्कृत विभाग के रीडर पद पर कार्यरत हैं। अयोध्या के सामाजिक केश में साक्ष्य देकर आपने सामाजिक गौरव गरिमा की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप अपने पिता और चाचा की तरह समाज सेवी एवं गौरव रक्षक है।

डा० विश्वेश्वर प्र० सिंह

सदानन्दपुर (बेगूसराय) निवासी चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिन्दरी स्थित अभियंत्रण महा० के प्राध्यापक तथा स्वामी सहजानन्द सरस्वती परिषद के अध्यक्ष हैं। परिषद तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर सामाजिक सेवा भी करते रहते हैं।

श्रीविन्ध्यवासिनी सिंह

नन्देसर (वाराणसी) निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी स्व० बाबू बटुक दयाल सिंह के वंशज श्री शिवशंकर सिंह के सुपुत्र। आयकर अधिकारी (भारतीय वित्त सेवा) पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं तथा कानपुर के आजाद नगर में निवास करते हुए 'ब्रह्मर्षि सन्देश' का संपादन करते हुए समाज सेवा में संलग्न हैं। सन्देश का दिनकर अंक, त्यागी सहजानन्द अंक और स्वतंत्रता सेनानी अंक निकालकर सराहनीय कार्य किया है।

प्रो० रघुनाथ प्र० शर्मा

चेरो (नालन्दा) निवासी। अस्थानां से निर्वाचित बिहार विधान सभा के सदस्य तथा ठाकुर प्र० सिंह कालेज, पटना के उपप्रधानाचार्य हैं। आपने शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण सेवा की है। आप द्वारा संस्थापित और संचालित संस्थायें ये हैं।

(1) आर० पी० एस० कालेज, नया टोला, पटना
(2) पटना इन्स्टीच्यूट ऑफ टेकनौलौजी
(3) रघुनाथ बच्ची उच्च विद्यालय, कदमकुआँ, पटना
(4) आर० पी० एस० महिला कालेज, कदमकुआं पटना
(5) आर० पी० एस० आवासीय स्कूल, वेली रोड, पटना
(6) सोना-बलदेव उच्च विद्यालय, चेरो (नालन्दा)
(7) रंका देवी उच्च विद्यालय, कदमकुआं, पटना
(8) महाराजा मेडिकल कालेज, काठमांडो, नेपाल
(9) आर० पी० एस० लॉ कालेज, नया टोला, पटना इत्यादि।

आपकी जयन्ती के अवसर पर आपको अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया गया है।

श्री भोला ठाकुर

गोपालपुर (बलिया) निवासी जिला कांग्रेस के भू० पू० अध्यक्ष। वाराणसी, गाजीपुर, बलिया आदि की सभी सामाजिक सभाओं में सम्मिलित होते रहते हैं तथा सामाजिक सेवा करते रहते हैं।

श्री पुरुषोत्तम राय

पुलिस अधीक्षक पद से अवकाश ग्रहण कर बी० 80, सूर्यकुंड कालोनी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोरखपुर में निवास करते हुए समाज सेवा में संलग्न हैं। जिला भूमिहार ब्राह्मण समाज के आप अध्यक्ष भी है।

श्री मुनीश्वर प्र० सिंह

उजांय (सीवान) निवासी अभियन्ता होते हुए भी देवघर में निजी व्यवसाय में संलग्न रहते हुए समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं।

पं० जयराम पांडेय

जनारी (बलिया) निवासी। ब्रह्मपुर (भोजपुर में बाढ़ नियंत्रण अनुमंडलाधिकारी के पद पर पदस्थापित हैं। आप कर्मकांड और ज्योतिष के विशेष ज्ञाता होने के कारण कर्मकांड और ज्योतिष द्वारा समाज की सेवा भी करते रहते हैं।

पं० बदरीनारायण शर्मा

शेरपुर (गाजीपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। कर्मकांड के आप विशेष ज्ञाता हैं। कर्मकांड द्वारा समाज की विशेष सेवा करते रहते हैं।

श्री भुवनेश्वर प्र० भास्कर

सुलतानपुर (पटना) के निवासी। नया टोला, पटना 4 में अवस्थित प्रकाशन संस्था 'भारती भवन' के स्वामी तथा संचालक हैं। इस प्रकाशन संस्था के माध्यम से विद्यालय तथा महाविद्यालय के छात्रोपयोगी कई दर्जन पुस्तकों का प्रकाशन कर तथा नया टोला, पटना में ही 'भुवनेश्वर प्रसाद भास्कर कालेज' 'स्थापित कर शिक्षा क्षेत्र में आप महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं।

आपके पुत्र श्री विमलेश कुमार की शादी पटना वि० वि के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० रामखेलावन राय की पुत्री से हुई है।

श्री अशर्फी राय शर्मा

मलिकौंड (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। तरुण भारत प्रेस, वी० एम० दास रोड; पटना 4 के स्वामी तथा संचालक हैं। शिक्षण तथा सामाजिक क्रियाकलापों में भाग लेकर समाज सेवा भी करते रहे हैं।

श्रीराम नन्दन ठाकुर

धर्मागतपुर वथुआ (समस्तीपुर) निवासी स्व० श्री उदित ठाकुर के सुपुत्र तथा स्व० डा० रामाशीष ठाकुर भू० पू० विधायक के अनुज। गंभरिया मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। सीतामढ़ी स्थित लक्ष्मी उच्च विद्यालय के शिक्षक पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। वर्तमान में आप सीतामढ़ी में ही निवास करते हैं। वर्षों से आर्यावर्त के स्थानीय संवाददाता हैं। आप सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर विभिन्न प्रकार से समाज सेवा करते रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० मान्धाता राय

एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट—नई सकलेचावाद (गाजीपुर) निवासी। स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर में हिन्दी के रीडर हैं। आप सामाजिक इतिहास के ज्ञाता तथा समाज सेवी हैं।

शिक्षा-शास्त्री

श्री अवधबिहारी शाही

1866 ई० में बतरा (सीतामढ़ी) में दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आप अरबी-फारसी के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान, सूफी संत तथा कवि थे। मुजफ्फर के भूमिहार ब्राह्मण कॉलेज में आप अरबी-फारसी के अध्यापक थे। कुरान आदि की व्याख्या में विवाद होने पर आपका निर्णय ही मान्य होता था। आप संस्कृत के ज्ञाता भी थे। उपनाम 'बे दिल' के नाम से कविता (शायरी) करते थे। आप नवाज भी पढ़ते थे। आप हिन्दू को हिन्दू और मुसलमान को मुसलमान दीखते थे। 1930 ई० में आपका देहान्त हो गया। उस समय कबीर जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी—हिन्दू जलाना चाहते थे और मुसलमान दफनाना। अन्त में प्रशासनिक हस्तक्षेप से परिवार को जलाने के लिए लाश दे दी गयी।

श्री शुकदेव ठाकुर

हुलास (सहरसा) में कटेश मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1905 में जन्म। उच्च विद्यालय बक्सर तथा मनियारी में प्रधानाध्यापक, जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रमंडलीय विद्यालय निरीक्षक तथा संयुक्त शिक्षा निदेशक आदि पदों पर रहकर 1963 में अवकाश ग्रहण किया था। 5-8-81 को आपका निधन हो गया। आपके 8 पुत्र तथा एक पुत्री (प्रो० श्रीमती शारदा सिन्हा, भारत प्रसिद्ध संगीत गायिका) हैं।

डा० बैजनाथ सिंह

सराय गोवर्द्धन (वाराणसी) में सन् 1913 ई० में आपका जन्म हुआ था। 1936 में प्रयाग वि० वि० से एम० एस-सी०, 1938 में डबलिन वि० वि० से पी-एच० डी०, 1940 में लंदन वि० वि० से पी-एच० डी० तथा 1947 में लंदन वि० वि० से डी० एस०सी० डिग्री प्राप्त कर यूरोप के विभिन्न नगरों में 1952 तक माइक्रोबायोलाजी में शोध कार्य किया। 1952 में ही केन्द्रीय औषधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुसन्धान संस्थान में नियुक्त हुए और निदेशक पद से 1972 में अवकाश ग्रहण किया, किन्तु सरकार के अनुरोध पर मृत्यु पर्यन्त विशिष्ट वैज्ञानिक के रूप में संस्थान से जुड़े रहे। 31 दिसम्बर 1985 को आपका निधन हो गया।

डा० तिलेश्वर राय

शेरपुर (गाजीपुर) में शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। जे० पी० मेहता इन्टर कालेज वाराणसी के प्रधानाचार्य तथा स्वामी सहजानन्द महा-विद्यालय गाजीपुर के शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष रह चुके थे। आप गणित के विशिष्ट विद्वान थे। 1981 में आपका देहान्त हो गया।

पं० राम लक्ष्मणाचार्य नव्य न्याय, नव्य व्याकरण, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा (वेदान्त) तथा साहित्याचार्य, षड्दर्शन पोष्टाचार्य

चाकशाम्हो (वेगूसराय) में चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। आप संस्कृत के प्रकांड विद्वान तथा वेदान्ताचार्य में स्वर्ण-पदक प्राप्त थे।

आप काशी के मिश्र पोखरा मोहल्ले में रहकर शिक्षार्थियों को संस्कृत की शिक्षा देते रहते थे। चूड़ाकरण मीमांसा तथा अन्य कई पुस्तकों के लेखक भी आप थे। 1979 में काशी में आपका निधन हो गया।

पं० रामनारायण शर्मा एम० ए०, साहित्याचार्य, न्यायशास्त्री

आपका जन्म चकगढ़ो (वैशाली) में मनछियामूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप संस्कृत के विशिष्ट विद्वान तथा समाज के गौरव थे।

विहार संस्कृत शिक्षा के अधीक्षक तथा संस्कृत समिति के सचिव के रूप में वर्षों संस्कृत शिक्षा का संचालन किया। पटना कालेज तथा लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में संस्कृत के प्राध्यापक तथा विहार विश्वविद्याय में संस्कृत विभागाध्यक्ष पद पर पदस्थापित रहे। सेवा काल में ही अपका देहान्त 1954 में हो गया।

पं० राम निरीक्षण सिंह एम० ए० काव्यतीर्थ

आपका जन्म समर्था (समस्तीपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। राष्ट्रीय विद्यापीठ, पटना तथा समस्तीपुर कालेज, समस्तीपुर में संस्कृत के प्राध्यापक तथा समस्तीपुर लोकल बोर्ड के वर्षों चेयरमैन रहे।

आप संस्कृत के कवि भी थे—आपकी काव्य पुस्तक 'स्वाधीन भारतम्' प्रकाशित है। आप धार्मिक और संस्कृति के रक्षक तथा प्रतीक थे। आपका जीवन ऋषि तुल्य था। वर्षों पहले आपका देहान्त हो गया।

आपके पांचों पुत्र सुशिक्षित तथा उच्च पदों पर रहे हैं और आपकी पुत्री भी एम० ए० है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपके नाम पर आपके पुत्रों ने महाविद्यालय की स्थापना समस्तीपुर में की जो आज भी संचालित है।

पं० परमेश्वर प्र० शर्मा एम० ए० (द्वय-स्वर्णपदक प्राप्त) बी० एल०, साहित्याचार्य व्याकरण तीर्थ, साहित्यवाचस्पति, विद्यालंकार- विद्यारत्न

आपका जन्म शिवकुंड (मुंगेर) में फतुहाबादी मिश्र मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा दर्शन शास्त्र के विशिष्ट विद्वान तथा ब्राह्मणों के इतिहास के ज्ञाता थे। सेंट कोलम्बस कालेज, हजारीबाग में हिन्दी तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष और ठाकुर प्र० सिंह कालेज, पटना के प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण किया था।

टिकारी (गया) में 1947 ई० में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अवसर पर संपन्न विद्वत्सम्मेन की अध्यक्षता आपने ही की थी तथा अनेकों सामाजिक सभाओं में सम्मिलित होते रहते थे।

अयोध्या के सामाजिक केश में प्रत्येक तारीख पर उपस्थित रहकर, प्रमाण एकत्रित कर और साक्ष्य देकर सामाजिक गौरव की रक्षा में सफल रहे। सामाजिक आक्षेपों का उत्तर देकर द्वेषियों का मुंह बन्द करने में भी आप अग्रगण्य थे। आप जीवन-भर समाज में चेतना भरने और ब्राह्मणत्व की गौरव रक्षा में संलग्न रहे।

6/4/77 को 82 वर्ष की आयु में अपने घर पर आपका देहान्त हो गया। तीन दिन पहले आपकी पत्नी श्रीमती वैदेही देवी दिवंगत हो चुकीं थीं।

पं० रामदेव शर्मा अग्निहोत्री, एम० ए० (अंग्रेजी और प्राकृत) वेदतीर्थ

वलिगांव (वैशाली) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। वर्षों मुजफ्फर स्थित भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल में अध्यापक रहने के बाद सामाजिक आन्दोलन में नौकरी छोड़ संस्कृत का अध्ययन किया और वेद तीर्थ की उपाधि प्राप्त की तथा समाज सेवा में संलग्न रहे। फिर स्वामी सहजानन्द सरस्वती विहटा आश्रम में संस्कृत के अध्यापक रहे। बाद में पातेपुर (वैशाली) उच्च विद्यालय में शिक्षक रहकर अवकाश ग्रहण किया। आप बिहार के एकमात्र क्रियाशील अग्निहोत्री थे। 29/5/81 को आपका देहान्त हो गया।

पं० रुक्मिणी रमण सिंह साहित्यचार्य, विद्यारत्न

रीगा (सीतामढ़ी) के भू० पू० जमींदार तथा दंशीवालमूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। आप संस्कृत के विशिष्ट विद्वान, ब्राह्मणों की एकता के प्रतीक तथा ब्राह्मणत्व के गौरव थे। आपके पूर्वजों को सम्राट जहांगीर ने उपाधि सहित मिहिला परगना ताम्रपत्र पर लिखकर दिया था। ताम्रपत्र रेकसी (सीतामढ़ी) में रखा हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप मिथिला देशीय श्री पंचांगम् के निर्माता तथा प्रकाशक भी थे। 'व्याकरण कौतुकम्' आदि कई अन्य संस्कृत पुस्तकों का प्रकाशन भी आपने किया था। आपके यहां संस्कृत विद्वानों (मैथिल और भूमिहार ब्राह्मणों) का जमघट लगा रहता था। आप ब्राह्मणों की एकता के समर्थक थे।

आप समाज के उन्नयन कार्य में सदा लगे रहते थे। भू० पू० प्रतिरक्षा मंत्री श्री महावीर त्यागी की अध्यक्षता में 1970 में गया में संपन्न अ० भा० अयाचक ब्राह्मण सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष आप ही थे।

आप तीर्थ यात्रा में अमरनाथ के दर्शनार्थ कश्मीर गये थे—वहीं आपका देहान्त 1972 ई० में हो गया।

आपके 5 पुत्रों में प्रथम पुत्र प्रो० नलिनी रंजन सिंह रामदयाल सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक तथा बिहार विधान सभा के सदस्य हैं तथा तृतीय पुत्र श्री राजीव रंजन सिंह पिता के समान संस्कृत विद्या के प्रेमी तथा चन्दोना कालेज में संस्कृत के प्राध्यापक हैं।

जनकपुर (नेपाल) स्थित राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा दर्जनों संस्कृत, हिन्दी और मैथिली तथा नेपाली काव्य, नाटक आदि ग्रंथों के रचयिता पं० जीवनाथ झा मै० ब्रा० ने 'व्याकरण कौतुकम' (1966 में प्रकाशित) में आपके चित्र के नीचे इस प्रकार उल्लेखित किया था :—

"पाल्यमानतम विप्रधर्मणो ज्ञात सर्वविद्य—काव्यमर्मणः।
संस्कृतोन्नयन मुख्य कर्मणो रुक्मिणी रमण सिंह शर्मणः॥"

ज्योतिष दिवाकर पं० मुनीन्द्र झा मै० ब्रा०, (सरिसवयाही, मधुबनी) में 'आपके सन्बन्ध में मिथिलां देशीय श्री पंचागम्' (1966/67) में इस प्रकार उल्लिखित किया था :—

"जगत विदित मिथिलास्थ मुजफ्फरपुर मंडल नहि ठाम।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रजन विलसत रीगा ग्राम॥
विप्रवंश अवतंश ततय गररत्न सकल गुणधाम।
दंशीवाल पवित्र मूल, ओ सिंह सहित शुभ नाम॥
नामजनिक रुक्मिणी रमण थिक गुणबल बुद्धि निधान।
सब विधि नव पुराण विद्या पढ़ि लहि पदवी आचार्य॥
कार्य अलौकिक कय दरसौलनि निजयावन औदार्य॥
त्यागि सहज सापत्न्य शारदा, लक्ष्मी जनिक समीप।
दुहुं मिलि नित्य बढ़ावथि अनुखन धन ओ ज्ञान प्रदीप॥
गुण युत पुत्र पौत्र पौत्री पुनि दुहिता और दौहित्र।
आदि सकल सं घर अछि जनिक पवित्र॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० राघव प्र० पांडेय व्याकरणाचार्य, साहित्यशास्त्री

महोत्तरी, पो० पीपरा (नेपाल) निवासी, समाज प्रेमी विद्वान थे। वृत्ति में जमीन मिली थी, जिसकी मालगुजारी नहीं लगती थी। 1979 में डकैतों द्वारा मारे गये। आपके पुत्र श्री राजेन्द्र पांडेय संस्कृतोच्च विद्यालय में विज्ञान शिक्षक हैं।

पं० राम पदार्थ शर्मा-वेद, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा तीर्थ, धर्मशास्त्राचार्य हिन्दी भूषण, बी० ए० बी० ओ० एल०

आपका जन्म 1910 ई० में कमलपुरा (मुजफ्फरपुर) में जैथरियामूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण बाबू राधामोहन सिंह के पुत्र के रूप में हुआ था।

जिला स्कूल के हेडपंडित, संस्कृत शिक्षा, बिहार के सहायक निदेशक तथा बिहार संस्कृत शिक्षा परिषद् के सचिव के रूप में आपने संस्कृत की महत्वपूर्ण सेवा की।

दरभंगा संस्कृत विश्व विद्यालय का ढांचा बनाने का श्रेय आपको ही प्राप्त था।

स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति के सचिव भी रह चुके थे तथा स्वयं समिति को धन से मदद की थी।

आप सामाजिक और सांस्कृतिक गौरव की रक्षा में सदा प्रयत्नशील रहे। 72 वर्ष की आयु में आपका देहान्त 2 फरवरी 1982 को हो गया। आपके अनुज श्री कुलपति शर्मा आई० ए० एस० उत्पाद विभाग के संयुक्त सचिव हैं।

पं० रामनारायण शास्त्री

24/1/25 को चिन्तामणिचक (मोकामा, पटना) में आपका जन्म हुआ था। आपने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त की। श्री प्रकाशवीर शास्त्री आपके सहपाठी थे। आप संस्कृत और हिन्दी के विद्वान तथा आर्य-समाजी थे। 1952 से बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् में पदाधिकारी के रूप में कार्यरत रहते हुए 16/1/78 को बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् के निदेशक पद का कार्यभार संभाला। 23/1/71 को ही राजेन्द्र नगर, पटना में आपका देहान्त हो गया।

पं० जगदीश चन्द्र शास्त्री एम० ए०, काव्य तीर्थ, शास्त्री

मरवन (मुजफ्फरपुर) में जैथरियामूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म 1904 में हुआ था। आप संस्कृत, हिन्दी के विद्वान थे। आप दार्जिलिंग और दिल्ली में संस्कृत के प्राध्यापक तथा बड़ौदा में पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य और विद्या बिहार, मुजफ्फरपुर के निर्देशक रहे। 18 जनवरी 1983 को आपका निधन हो गया।

भारत प्रसिद्ध संगीत गायिका श्रीमती शारदा सिन्हा आपकी भगिनी तथा डा० अंजनिकुमार सिंह (प्राध्यापक दिल्ली वि० वि०) आपके दामाद हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० चन्द्रशेखर शास्त्री

विभूतिपुर (नरहन) (समस्तीपुर) में द्रोणवारमूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। आप संस्कृत के विद्वान थे। ऋषिकुल विद्या पीठ हरिद्वार के आप कुल सचिव थे तथा प्रमंडलीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, समस्तीपुर के सदस्य भी रह चुके थे। आप समाज सेवा में भी संलग्न रहे। आपका निधन हरिद्वार में ही अक्टूबर 1980 में हो गया। आपके उत्तराधिकारी भतीजा आचार्य रामशंकर प्र० सिंह नरहन कालेज के प्राध्यापक हैं।

पं० ब्रह्मदेव मिश्र शास्त्री, व्याकरण तथा साहित्याचार्य, काव्य, स्मृति, वेद, तथा वेदान्त तीर्थ, साहित्यालंकार

वघनगरी (मुजफ्फरपुर) में आपका जन्म कोथवैतमूल के विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप संस्कृत के विशिष्ट विद्वान थे। 'ब्रह्मर्षि', 'साकेत' (संस्कृत) के संपादक तथा हिन्दी और संस्कृत परीक्षाओं के संचालक भी रहे। अयोध्या में ही किसी आततायी ने गोली मारकर आपकी हत्या 12/10/58 को कर दी। आपने संस्कृत और समाज की बड़ी सेवा की थी। आपकी स्मृति में अयोध्या में श्री ब्रह्मदेव प्रेस संचालित है। तालवेहर (झांसी) संस्कृत विद्यालय योगाश्रम के पं० समावतार शास्त्री 'अमर' ने श्रद्धांजलि अर्पण में जो कविता लिखी (साकेत के 30/10/67 के पृष्ट 4 पर प्रकाशित) वह इस प्रकार है :—

"संस्कृते संस्कृतस्यासीत् सर्वदः सर्वदा स्वयम्।
सुधी श्री ब्रह्मदेवो ऽसौ शास्त्रिवर्यो महामतिः ॥1॥
दुष्टेन निर्दये नैवं हतो हा ! हा ! दिवंगतः।
साम्प्रतं संस्कृतज्ञानां नास्ति तादृक सहायक : ॥2॥
सुरभाषा स्वदेशे स्मिन् संस्कृतज्ञैः निपीड्यते।
संकटे पतिता दीना रक्षको नैव दृश्यते ॥3॥
विशाला पाठशाला ऽयि दुःखशालेव भासते।
त्रास्यतेऽधिकृतैर्मों को ब्रह्मदेवे दिवंगते ॥4॥
ब्रह्मदेव नमस्तुभ्यं शास्त्रिवर्य महामते।
रक्षयास्मान् सदाशीभिर्देव तुल्यं दयानिधे ॥5॥
सादरं ब्रह्मदैवाय शास्त्रिणे सुखतो ऽञ्जलि :।
दत्वा स्वान्ते सुखं शान्ति लब्ध्वा देवामतने नमः ॥6॥

आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री

महादेवपुर (अमरपुर, भागलपुर) में जन्म। संस्कृत के आप प्रसिद्ध विद्वान तथा कवि थे। अखंड भारत में लाहौर में आपने अध्यापन किया था। बाद में बिहार राष्ट्र भाषा परिषद में अनुसंधान पदाधिकारी रहे और पं० रामनारायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्त्री के निधन के बाद आप राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक भी रह चुके थे। हिन्दू वि० वि० (काशी) ने विद्यावाचस्पति की उपाधि से आपको विभूषित किया था। 29/11/83 को पटना अस्पताल में आपका देहान्त हो गया। आपका झंझावात (काव्य) प्रकाशित है।

पं० रामसुन्दर राय शर्मा

गढ़नी (गाजीपुर) में जन्म। बिहार के छोटा-नागपुर कमिश्नरी में उच्च विद्यालय में संस्कृत शिक्षक रहे। संस्कृत रचना प्रणाली, संस्कृतसुधा आदि कई पुस्तकें लिखकर आपने प्रकाशित की तथा सुबोध ग्रन्थमाला कार्यालय नाम से प्रकाशन संस्थान की स्थापना भी रांची में की। आपके पुत्र श्रीचन्द्रदेव शर्मा सुबोध ग्रन्थमाला कार्यालय तथा वेनीमाधव प्रेस का संचालन करते है और पटना में ग्रन्थलोक का।

पं० कन्हैयालाल शर्मा साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, व्याकरण शास्त्री

राघवपुर बिहार (पटना) निवासी। संस्कृत के कवि तथा अध्यापक रहे। श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती के आप परम भक्त थे। कुछ दिन पूर्व प्रकाशित मासिक पत्र 'निवेदिता' में स्वामी जी पर संस्कृत में कविता प्रकाशित हुई थी। अभी हाल ही में आप दिवंगत हो चुके हैं।

पं० रामसेवक शर्मा व्याकरण तथा पुराणाचार्य

82 वर्ष पूर्व आपका जन्म मधुबनी जिले के पंचरत्न (पो० छोरवंकी) ग्राम में शकरैत मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपने संस्कृत का अध्ययन कर लगभग 40 वर्षों तक संस्कृत का विशेष प्रचार प्रसार किया। पंचरत्न में प्रायः प्रत्येक भू० ब्रा० परिवार में एक दो संस्कृत विद्वान तथा कर्मकांडी तैयार करने का श्रेय आपको है। आपने अपने चारों पुत्रों (पं० वेदानन्द शर्मा, प० रामानन्द शर्मा, डा शारदानन्द शर्मा तथा पं० जगदानन्द शर्मा) तथा चारों पुत्र वधुओं (श्रीमती गंगा देवी साहित्याचार्य, श्रीमती मिथिलेश देवी व्याकरण शास्त्री, श्रीमती शैल शर्मा साहित्याचार्य (नवीन) तथा श्रीमती रजनी शर्मा व्याकरणाचार्य) को संस्कृत का विद्वान बनाया और तीन पौत्रियों श्रीमती मंजुला कुमारी, श्रीमती इन्दु पांडेय तथा श्रीमती बिन्दु कुमारी को आचार्य परीक्षोत्तीर्ण कराया और परिवार के अन्य बच्चे-बच्चियां भी संस्कृत शिक्षा पा रही हैं। आपके चारों पुत्र सपत्नीक शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। आपने 'गोदावरी रामसेवक संस्कृतोच्च विद्यालय' की स्थापना अपने गांव में कर संस्कृत शिक्षा प्रचार में और विशिष्ट योगदान दिया।

तीन वर्षों तक पक्षाघात से पीड़ित रहकर अगस्त 1985 में आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके अधूरे कार्य को आपके पुत्रगण पूरा कर रहे हैं।

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के सहायक निरीक्षक पं० गोविन्दमणि त्रिपाठी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

24/11/80 को गोदावरी रामसेवक सं० उच्च विद्यालय की निरीक्षण टिप्पणी में आपके संबन्ध में इस प्रकार लिखा :—"पं० राम सेवक शर्मा जी इस विद्यालय की स्थिरता के लिए बड़े ही सचेष्ट हैं। श्री शर्मा जी ने विगत 40 वर्षों की अपनी सेवावधि में संस्कृत शिक्षा प्रचार प्रसार हेतु जो कार्य किये हैं—वह इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। उन्होंने असंख्य संस्कृत के विद्वानों को पैदा किया और आज भी अपनी वृद्धावस्था में भी इसके लिए सतत सचेष्ट हैं। समाज के लिय ऐसे पुरुष वन्दनीय महापुरुष माने जाते हैं। इनके परिवार के प्राय: प्रत्येक सदस्य (पुत्र और पुत्र वधुएं) आचार्य परीक्षोत्तीर्ण हैं और शिक्षा में सेवारत है। वस्तुत: श्री रामसेवक शर्मा जी ने संस्कृत प्रचार के लिए जो कार्य किया है वह इस क्षेत्र के लिए वन्दनीय है ही, विभाग के लिए भी गौरवास्पद है।"

श्री हरिनन्दन चौधरी एम० ए० डिप० इन० एड० साहित्य रत्न

13/10/1918 ई० को वररी वेहट (सीतामढ़ी) में जन्म। लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक तथा तिरहुत प्रमंडल के क्षेत्रीय शिक्षोपनिदेशक रह चुके थे। 'हिन्दी काव्य में साहित्यिक चेतना' पुस्तक के लेखक भी थे। 1978 ई० में आपका देहान्त हो गया।

पं० सूर्यवली राय

वनकठा (गोरखपुर) निवासी, वरूआ के तिवारी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (लखनऊ) के उप प्रधानाचार्य रह चुके थे। समाज सेवाव्रती भी थे। दिवंगत हो चुके हैं।

पं० योगेवरानन्द शर्मा

कोइली नानपुर (सीतामढ़ी) निवासी सोन महरिवा मूल के वत्सगोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। राजकीय उच्चतर विद्यालय के प्रधानाध्यापक, बुनियादी शिक्षा के प्रमंडलीय अधीक्षक तथा जिला शिक्षा पदाधिकारी आदि पदों पर रहे। जिला शिक्षा पदाधिकारी (भागलपुर) पद पर रहते समय 16/4/77 को कार दुर्घटना में आपका देहान्त हो गया।

श्री ब्रह्मदेव राय शर्मा

मलिकौंड़, समस्तीपुर निवासी। सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। पूसा उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक तथा तीन वर्षों तक उमा पाण्डेय महाविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर) में प्रधानाचार्य रहे 1973 में राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किये गये थे। 5/2/83 को आपका देहान्त हो गया। आपके नाम पर पूसा महिला महा० संचालित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० गोबर्द्धन राय शर्मा

आप हरिहरपुर (गाजीपुर) निवासी शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण थे। शिक्षा समाप्ति के बाद इलाहबाद वि० वि० में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए और प्राचीन भारतीय इतिहास तथा पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष रह कर अवकाश ग्रहण कर लिया। अभी हाल ही नवम्बर 86 में आपका निधन हो गया है।

आप वरिष्ठ विद्वान तथा समाज सेवी थे। अयोध्या के सामाजिक केश में विद्वतापूर्ण साक्ष्य देकर सामाजिक गौरव की रक्षा में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। आपके वि० वि० में कार्य पर 4/12/81 के दैनिक 'आज' ने अपनी संपादकीय टिप्पणी में इस प्रकार लिखा था : "प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग का जो उत्कृष्ट कार्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान तथा विशेषज्ञ श्री गोबर्द्धन राय शर्मा के निर्देशन में हो रहा है, जिस पर न केवल प्रयाग वि० वि० तथा प्रयागवासियों को गर्व है, बल्कि समस्त भारतवासियों को गर्व है।"

श्री गण प्रसाद सिंह

मटिहानी, बेगूसराय निवासी। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। रामदयालु सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर के 25 वर्षों तक प्रधानाचार्य तथा बाद में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके थे फरवरी 1987 में आपकी मृत्यु दरभंगा में अपने पुत्र के निवास स्थान पर हो गयी। आपकी पत्नी श्रीमती रमा सिंह श्री कृष्ण महिला महाविद्यालय मोतीहारी में प्राध्यापिका हैं।

डा० सुदर्शन प्र० सिंह एम० एस-सी०, पी-एच० डी०
(पटना) पी-एच० डी०(लदंन) डी० आई० सी०

उदा बथुआ, समस्तीपुर निवासी। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में भौतिकी विभागाध्यक्ष तथा डीन, टी० एन० बी० कालेज, भागलपुर के प्रधानाचार्य, बिहार वि० वि० के विशेष पदाधिकारी, बिहार राज्य वि० वि० समन्वय समिति के उपाध्यक्ष, अन्तर्विश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष तथा पटना वि० वि० के कुलपति, विश्वविद्यालय जांच समिति के सचिव रह चुके हैं और 15/9/83 से बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त होकर जून 1985 तक उक्त पद पर रहकर त्याग पत्र दे दिया। विज्ञान की कई पुस्तकों के आप लेखक हैं।

डा० भृगुनाथ नारायण सिंह

बभना (घोसी,गया) निवासी प्रसिद्ध वैज्ञानिक। पटना वि० वि० के भौतिकी विभागाध्यक्ष, लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर के प्रधानाचार्य तथा भागलपुर वि० वि० के कुलपति रह चुके है। आप प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री ललन प्र० सिंह

लंगट सिंह कालेज, मुज़फ्फरपुर के राजनीतिविभागाध्यक्ष तथा बिहार वि० वि० के प्रति कुलपति रहने के बाद हिमाचल वि० वि० शिमला के कुलपति रहे। वर्तमान में अपने पुराने पद पर कार्यरत हैं।

डा० कपिलदेव प्रसाद सिंह

मंझोल, बेगूसराय निवासी। जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार विश्वविद्यालय के गणित विभागाध्यक्ष, लंगटसिंह कालेज, मुज़फ्फरपुर के प्रधानाचार्य, बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति तथा बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री गणेश प्र० सिंह

छपरा जिले के निवासी। पटना वि० वि० में समाज-शास्त्र विभाग के प्राध्यापक रहे हैं। पटना वि० वि० के कुलपति भी रह चुके हैं।

डा० जे० एन० राय

शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। रूहेलखण्ड वि० वि० के कुलपति रह चुके हैं। बी० 142, महानगर, लखनऊ में निवास करते हैं।

श्रीमती ललितासिंह

ब्रह्मपुर (दरभंगा) से आकर रजवाड़ा मुज़फ्फरपुर में बस जाने वाले प्रसिद्ध समाज सेवक, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण स्व० बापू भारतेन्द शर्मा की पुत्री तथा गढ़ सिरसई निवासी श्री मदन वात्स्यायन की पत्नी।

वर्षों मुज़फ्फरपुर स्थित महंत दर्शनदास महिला महाविद्यालय की प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुकी हैं और इस समय बिहार विश्व विद्यालय के कुलपति पद पर प्रतिष्ठित हैं। शिक्षा और अनुशासन पर आपका विशेष ध्यान रहता है। आपके चार भाइयों में श्री चितरंजन शर्मा हवाई सेना में विंगकमांडर, श्री प्रियरंजन शर्मा हवाई सेना में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट, श्री मनोरंजन शर्मा अमेरिका में निजी व्यवसाय में तथा श्री नीलमणि शर्मा राजकीय सेवा में हैं। आपके पुत्र श्री चन्द्रपीठ वात्स्यायन अभियंत्रण की शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

डा० रामशरण शर्मा

बेगूसराय जिले के निवासी। 1958 ई० में पटना वि० वि० में इतिहास विभागाध्यक्ष तथा डीन और 1959 में विश्वविद्यालय प्राध्यापक बने। 1970 में नेहरू फेलोशिप प्राप्त किया। 1973 में दिल्ली वि० वि० के इतिहास विभागाध्यक्ष तथा कला संकाय के डीन पद पर नियुक्त हुए। केन्द्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य बनाये गये। लन्दन वि० वि० में 'भारत में शूद्र' विषय पर शोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। लगभग एक दर्जन पुस्तकें तथा 100 अनुसंधान पत्र आपके प्रकाशित हैं। सेवा से कई वर्ष पूर्व अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। 1985 में अ० भा० इतिहास कांग्रेस के उपाध्यक्ष चुने गये हैं।

डा० योगेन्द्र मिश्र

वाजितपुर (वैशाली) निवासी, सहदोलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। पटना वि० वि० से मैट्रिक में बिहार में प्रथम स्थान आपने प्राप्त किया था। शिक्षा समाप्ति के बाद पटना वि० वि० में प्राध्यापक नियुक्त हुए। 1973 में पटना वि० वि० के इतिहास विभागाध्यक्ष तथा डीन बने। 'ऐन अर्ली हिस्ट्री वैशाली' शोध पूर्ण ग्रंथ लिखने पर मेरठ प्रमंडलीय जैन समाज में 2/10/73 को सार्वजनिक रूप से आपका अभिनन्दन कर 25 हजार का पुरस्कार भी दिया। अपाने 'खेतपुर' का पता लगाया है। विश्वविद्यालय सेवा से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० रामपरीक्षण राय एम० एस-सी०,
पी-एच० डी० (कैम्ब्रिज)

भगवानपुर गंगापुर (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। पटना विज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा पटना वि० वि० के वनस्पति विभागाध्यक्ष पद पर कार्य कर चुके हैं। 1944 में वीरबल साहनी स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले आप प्रथम बिहारी हैं। आपने 1975 में नेहरू फेलोशिप प्राप्त किया। 1977 ई० में अ० भा० वनस्पति विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। जुलाई 1980 में अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस में निमंत्रित होकर अमेरिका गये और वहां कनाडा तथा कैम्ब्रिज वि० वि० में व्याख्यान दिया। अ० भा० विज्ञान (वनस्पति) शास्त्रियों के 1982 के मार्च में संपन्न पटना सम्मेलन में आपका अभिनन्दन किया गया। साइटो जमैटिक्स विभाग के निदेशक तथा बिहार विज्ञान अकादमी के सचिव भी रहे।

आपकी पुत्री श्रीमती सरला एम० ए०, बी० एड०, श्रीमती प्रीति कुमारी एम० एस-सी० (प्रथम श्रेणी में प्रथम) है तथा पुत्र श्री राजेश रंजन एम० ए० (अंग्रेजी में प्रथम श्रेणी में प्रथम) करने के बाद आई० पी० एस० में चुने जाकर पुलिस विभाग में कार्यरत हैं।

डा० रामतवक्या शर्मा एम० ए०, पी-एच-डी० (हिन्दी)
डी० लिट (हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत)

चांढ (मखदुमपुर गया) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। आप हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के महाविद्वान, कालेज के प्राध्यापक तथा तुलसी साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान हैं। इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, हालैंड, स्विटजरलैंड, बेलजियम, मलाया, कम्बोडिया आदि सत्तर देशों में रामायण पर प्रवचन देकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय विद्या की पताका फहरा चुके हैं।

श्री कपिलदेव ना० सिंह (प्राचार्य कपिल)

चौकी (मुंगेर) निवासी, जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। आर० डी० एन्ड डी० जे० कालेज मुंगेर के प्रधानाचार्य तथा विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष रह चुके हैं।

डा० शुकदेव सिंह शर्मा

लंगटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक तथा बिहार वि० वि० के प्रति कुलपति रह चुके हैं।

डा० रामचन्द्र प्रसाद एम० ए०, पी-एच० डी० (इंगलैंड), डी० लिट्

गोरखरी (विक्रम, पटना) निवासी।

पटना विश्वविद्यालय में आप अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहने के वाद भागलपुर वि० वि० के प्रति कुलपति पद पर दिसम्बर 1982 तक रहकर पुनः अपने पुराने पद पर पटना वि० वि० में कार्यरत हैं।

श्री राजमंगल प्रसाद

कोहरामुजौना (छपरा) निवासी। महारानी जानकी कुंवर महाविद्यालय, वेतिया के प्रधानाचार्य, मिथिला तथा भागलपुर वि० वि० के प्रतिकुलपति रहने के वाद पुनः वेतिया महारानी जानकी कुंवर महाविद्यालय में प्रधानाचार्य रहे। वर्तमान में डी० ए० वी० कालेज सीवान के प्रधानाचार्य हैं।

श्री रामसागर सिंह

गंगया (मुजफ्फरपुर) निवासी, मलितवार मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। कालेज के प्राध्यापक तथा विहार वि० वि० के कुलसचिव रह चुके हैं। वर्तमान में अन्तर्विश्वविद्यालय वोर्ड के विशेष पदाधिकारी हैं।

श्री रमेशचन्द्र प्र० सिंह

वलिगांव (वैशाली) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री चतुर्भुज सिंह के सुपुत्र। हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में कुलसचिव पद पर पद-स्थापित हैं।

श्री अखिलेश्वर प्र० सिंह

चन्दौली (सीतामढ़ी) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० श्री वदरी ना० सिंह के सुपुत्र। कालेज के प्राध्यापक, राजेन्द्र कृपि वि० वि० पूसा के कुल सचिव तथा अस्थायी कुलपति रह चुके हैं। वर्तमान में विहार वि० वि० के कुल सचिव हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रघुनाथ झा

कोटबा बड़हरवा (चंपारण) निवासी। लंगटसिंह कालेज के प्राध्यापक तथा भूमिहार ब्राह्मण छात्रावास के अधीक्षक रहने के बाद बिहार वि० वि० के कालेजों के निरीक्षक तथा बिहार वि० वि० के कुल सचिव रहकर कुल सचिव पद से त्याग पत्र देकर पुनः इतिहास विभाग के प्राध्यापक एवं रीडर पद पर लंगटसिंह कालेज में कार्यरत हैं।

श्री देव नारायण सिंह एम० ए०, एम० एड०, साहित्यरत्न

पिलखी, मुजफ्फरपुर निवासी, सहदोलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। भारतीय संस्कृति के प्रतीक। लंगट सिंह कालेज में प्राध्यापक, प्रमंडलीय विद्यालय निरीक्षक, क्षेत्रीय शिक्षोपनिदेशक तथा प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। 'बिहार उड़ीसा टीचर्स जनरल' के संपादक तथा पटना विश्वविद्यालय हिन्दी समिति के छः वर्षों तक सदस्य भी रह चुके हैं। 'हिन्दी शिक्षणपद्धति' आपकी लिखी पुस्तक है।

श्री उमा प्र० सिंह

महमदा, समस्तीपुर निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। अध्यापन तथा प्रशासनिक दोनों क्षमता से युक्त रहे हैं। पूसा उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक रहते समय राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। जिला शिक्षा पदाधिकारी, शिक्षा संस्थान के निदेशक, क्षेत्रीय शिक्षोपनिदेशक, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य तथा ग्रामीण शिक्षा का उच्च प्रतिष्ठान (बिरौली, समस्तीपुर) के निदेशक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के आजीवन सदस्य हैं।

श्री जानकी प्र० सिंह

मोरसंड, सीतामढ़ी निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय के उपप्रधानाचार्य, प्रधानाचार्य, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य तथा क्षेत्रीय शिक्षोपनिदेशक आदि पदों पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपमें अध्यापक की विशिष्ट क्षमता रही है।

श्री बालमुकुन्द शर्मा

मघरा (नालन्दा) निवासी। शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए बुनियादी शिक्षा बोर्ड के सचिव तथा उप निदेशक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० राधा प्र० सिंह

चनरहठी, मुजफ्फरपुर निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रमुख शिक्षा शास्त्री तथा विधि स्नातक। बिहार के शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के वाद ग्रामीण शिक्षा का उच्च प्रतिष्ठान, विरौली, समस्तीपुर के निदेशक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्रीमती शकुन्तला सिंह

गोरैया कोठी, सीवान निवासी विहार के प्रसिद्ध नेता स्व० वावू नारायण प्र० सिंह की सुपुत्री तथा स्व० श्री रामचरित्र सिंह भू० पू० सिंचाई मंत्री (विहट, वेगुसराय) की पुत्रवधू और भू० पू० साम्यवादी नेता तथा भू० पू० मंत्री स्व० श्री चन्द्रशेखर सिंह की पत्नी। मगध महिला कालेज, पटना की प्रधानाचार्य तथा निदेशक (शोध एवं प्रशिक्षण) पद पर शिक्षा विभाग में रहकर अवकाश ग्रहण कर चुकी हैं 1985 के चुनाव में साम्यवादी दल के टिकट पर विहार विधान सभा की सदस्या चुनी गयी हैं।

डा० बबुएलाल ठाकुर एम० एस-सी०, पी-एच० डी०

आपका जन्म 3/12/1911 ई० को गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में समस्तीपुर जिले के गोही ग्राम में हुआ। 1939 ई० में एम० एस-सी० करने के वाद 1940 ई० में पटना विज्ञान महाविद्यालय में व्याख्याता नियुक्त हुए। 1945 में विदेश गये और बर्मिंघम में पी० एच-डी० की उपाधि प्रप्त की।

1960-62 में पटना वि० वि० के कुलसचिव, 1962-64 में टेक्स्ट बुक रिसर्च ब्यूरो के निदेशक पद पर रहे। 1964 में पुन: पटना विज्ञान महाविद्यालय में प्राध्यापक हुए और दिनांक 4/11/69 को अवकाश ग्रहण किया। वर्षों पटना वि० वि० सिंडिकेट के सदस्य भी रहे।

रसायन शास्त्र पर स्कूल से लेकर कालेज तक की 9-10 पुस्तकें आपने लिखी है।

हिन्दी में विज्ञान की पुस्तकें लिखने के कारण दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के के लिए वरिष्ठ हिन्दी सेवी के रूप में 10/8/81 को बिहार सरकार के राजभाषा विभाग ने आपको सम्मान पत्र प्रदान किया—इस पर श्री राजेश्वर प्र० सिंह आयुक्त सहसचिव, श्री योगेश्वर प्र० 'योगेश' मंत्री तथा डा० जगन्नाथ मिश्र (मुख्यमंत्री) के हस्ताक्षर है।

अवकाश ग्रहण करने के बाद घर पर निवास करते हुए कृषि कार्य में संलग्न हैं। समाज सेवा की भावना भी आपमें हैं।

डा० रामनरेश त्रिवेदी

उत्तराषाढ़ी (कल्याणपुर, समस्तीपुर) निवासी। छात्र जीवन से ही देश सेवा की अभिरुचि आपमें रही है। आप विदेश से ऊंची शिक्षा प्राप्त कर रांची वि० वि० में प्राध्यापक तथा राजनीति विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे हैं। 1976-77 में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० भा० राजनीति कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं। अपने गृहक्षेत्र कल्याणपुर से निर्वाचित होकर विहार विधान सभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

श्री रामसंजीवन सिंह

जिहुली, चंपारण निवासी, जैथरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार के शिक्षा विभाग में उपनिदेशक तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री विश्वनाथ सिंह

अमलोरी सरसर, छपरा निवासी। विहार की शिक्षा सेवा में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए निदेशक (शोध एवं प्रशिक्षण) पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० कामेश्वर ठाकुर

ओलापुर गंगौली (खगडिया) निवासी। प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा विहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के सचिव रह चुके हैं। विहार के शिक्षा सेवा के प्रथम श्रेणी के अधिकारी के रूप में दरभंगा में जिला शिक्षा पदाधिकारी-पद पर कार्यरत हैं।

श्री रामनरेश राय

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए विहार के शिक्षा विभाग में विशेष निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) पद पर कार्यरत हैं। आपके प्रतिभाशाली पुत्र श्री अनिलकुमार आई० पी० एस० मोतीहारी के आरक्षी अधीक्षक थे, जिनका दुखद निधन 30/1/84 को वस-जीप दुर्घटना में हो गया।

डा० रामसूरत ठाकुर एम० ए०, एम० एड०, पी-एच० डी०, डी० लिट्

आप समस्तीपुर जिले के मालीनगर (पूसा) के निवासी, भोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण है। विहार के शिक्षण विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय समस्तीपुर में प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपके भतीजा श्री राधेश्याम ठाकुर भूगर्भ रेलवे (कलकत्ता) के मुख्य यातायात अधीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री रामप्रसाद सिंह

छपरा निवासी। शिक्षा विभाग में जिला शिक्षा अधीक्षक, जिला शिक्षा पदाधिकारी आदि पदों पर रहने के बाद उपनिदेशक पद पर मुजफ्फरपुर में कार्यरत हैं।

श्री रामचन्द्र प्र० सिंह

चन्दौली (सीतामढ़ी) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्ययन काल में 1982 के स्वतंत्रता संग्राम में जेल में रहे—जेल में कोड़े की सजा भी दी गयी थी। जेल से निकलने के बाद शिक्षा समाप्त कर उत्तर बुनियादी विद्यालय के प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षण विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा जिला शिक्षा पदाधिकारी आदि पदों पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। संप्रति मझौलिया रोड, मुज़फ्फरपुर में निवास करते हैं।

श्री नवेन्दु शर्मा

मंगरावां (गया) निवासी। अनुमंडलीय शिक्षा पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक, प्रधानाचार्य प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महा० आदि पदों पर रहने के बाद जिला शिक्षा पदाधिकारी के पद पर मधुबनी में पद स्थापित हैं।

श्री दशरथ तिवारी

संस्कृत महा० के प्राध्यापक, अनुमंडलीय शिक्षा पदाधिकारी आदि पदों पर रहने के बाद मधुबनी में जिला शिक्षा पदाधिकारी पद पर रहे और अब स्थानान्तरित होकर भोजपुर में जिला शिक्षा पदाधिकारी हैं। स्व० पं० परमेश्वर प्र० शर्मा और स्व० पं० राम पदारथ शर्मा के साथ मिलकर 'सर्चलाइट' में लेख लिखकर —सामाजिक आक्षेपों का उत्तर देकर तथा अयोध्या के सामाजिक केश में सहयोग देकर और सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर सामाजिक सेवा भी करते रहे हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के आजीवन सदस्य भी हैं।

डा० अंगराज चौधरी एम० ए० (अंग्रेजी तथा पाली), पी-एच० डी०

देवघर जिला निवासी। आप भाषा शास्त्र के विशिष्ट विद्वान हैं। हिन्दी की विभिन्न विधाओं पर आपने रचना की है। संप्रति पाली प्रतिष्ठान (नव नालन्दा विहार) नालन्दा के प्रभारी निदेशक पद पर कार्यरत हैं।

डा० ऋषि नारायण सिंह एम० ए०, एम० एड०, पी-एच० डी०

सुधर्वे, वाराणसी निवासी। चेतसिंह शिक्षा संस्थान के निदेशक और अ० भा० तिलक सेवा केन्द्र, वाराणसी के महामंत्री हैं।

डा० गोकर्ण शर्मा

हरपुर (मुज़फ्फरपुर) निवासी, कटेश मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। लक्ष्मीनारायण दुबे कालेज, मोतीहारी के प्रधानाचार्य रहने के बाद वर्तमान में जैतपुर कालेज के प्रधानाचार्य हैं।

डा० इन्द्रदेव शर्मा

शिकारी चक मोकामा (पटना) निवासी, बलियासे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। समस्तीपुर स्थित राम निरीक्षण आत्माराम महाविद्यालय के प्रधानाचार्य हैं। धार्मिक विचार के तथा सामाजिक सेवा की भावना से युक्त हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री बालमुकुन्द सिंह

वीरगंज (नवादा) निवासी, भेलौरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। ग्रामीण शिक्षा का उच्च प्रतिष्ठान-विरौली के प्राध्यापक, शिक्षा समायोजक और जिला वयस्क शिक्षा पदाधिकारी तथा गिरडीह में जिला पदाधिकारी रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री भगवान प्र० सिंह

सदानन्द पुर (वेगूसराय) निवासी, चकवार मूल के भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। भगवानपुर (वैशाली) कालेज, जैतपुर कालेज (मुज़फ्फरपुर) तथा रामदयालुसिंह कालेज के प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। अ० भा० प्रधानाचार्य संघ के सचिव भी रह चुके हैं।

श्री बंगालीसिंह

मनसेरपुर (वेगूसराय) निवासी नौबतपुर (पटना) कालेज के प्रधानाचार्य रह चुके हैं। इस समय सर गणेश स्मारक कालेज, पटना के प्रधानाचार्य हैं।

डा० बीरबल शर्मा एम० ए० (पाली) पी-एच० डी०

पाली प्रतिष्ठान के कुल सचिव रह चुके हैं। संप्रति सहायक शिक्षा निदेशक पद पर कार्यरत हैं। भिक्षु जगदीश कश्यप के साथ मिलकर पाली त्रिपटिक का संपादन तथा हिन्दी अनुवाद किया है।

डा० आनन्दनारायण शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०

पटना सिटी में 15 अप्रैल 1930 को जन्म। पिता—स्व० श्री श्यामनारायण सिंह शर्मा। 1950 में एम० ए० करने के बाद 1 अगस्त 51 से गणेशदत्त कालेज, वेगूसराय में प्राध्यापक रहे। 17 अप्रैल 1974 से अयोध्या प्र० सिंह कालेज, बरौनी के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं। 1974 में ही पी-एच० डी० की उपाधि आपने प्राप्त की।

आप एक प्रमुख साहित्यकार हैं। आपके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी निकलते रहते हैं।

सुकवि समीक्षा, भारत धर्म के अवतार गोविन्दसिंह, राष्ट्रपुरुष और हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं।

श्री रामचरित्र अभिनन्दन ग्रंथ, (कविता संग्रह) कादम्बिनी (कविता संग्रह) और श्रेष्ठ कहानियां आप द्वारा संपादित ग्रंथ हैं।

डा० कपिलदेव राय एम० एस-सी०, पी-एच० डी०

तीरा महम्मदपुर (गोरखपुर) निवासी स्व० श्री त्रिवेणी राय के सुपुत्र।

आप स्वामी सहजानन्द महा विद्यालय, गाजीपुर के भू० पू० प्रधानाचार्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूडान सरकार (अफ्रीका) के चीफ केमिस्ट भी रह चुके हैं।

श्री मदनमोहन पांडेय

राजग्राम मधुबनी निवासी, कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। समस्तीपुर कालेज में प्राध्यापक रहने के बाद आचार्य नरेन्द्र देव कालेज, पटोरी (समस्तीपुर) के प्रधानाचार्य रहे। अब उमा पांडेय महा० पूसा (समस्तीपुर) के प्रधानाचार्य हैं। आप राजनीति और सामाजिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं।

डा० शिवशंकर दुबे

दुबे टोला कटहरिया (चंपारण) निवासी। जैतपुर कालेज के प्रधानाचार्य रहने के बाद वर्तमान में स्थानान्तरित होकर कालेज के प्रधानाचार्य हैं।

श्रीमती शारदा सिंह

जन्म स्थान सांढ़ा (मुज़फ्फरपुर) तथा ससुराल दयानगर (सीतामढ़ी)। सीतामढ़ी स्थित रामसेवक महिला महाविद्यालय की प्रधानाचार्या हैं।

श्रीमती शकुन्तला सिंह

मुज़फ्फरपुर स्थित रामवृक्ष बेनीपुरी महिला महाविद्यालय की प्रधानाचार्या हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति पटना को 500 रुपये की सहायता भी कर चुकी हैं।

श्रीमती सुधा सिंह

पिलखी (मुज़फ्फरपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री देवनारायण सिंह (भू० पू० प्रधानाचार्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय) की सुपुत्री। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, देवघर की प्राचार्या हैं। आप कहानीकार भी हैं।

डा० आशानारायण शर्मा

हरपुर कृष्ण (मुज़फ्फरपुर) निवासी, कटेश मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। आर० बी० महाविद्यालय, दलसिंह सराय, (समस्तीपुर) के प्रधानाचार्य पद पर स्थापित हैं।

डा० जनार्दन कुमर

शिरनियां (बेगूसराय) निवासी, बेलौंचे सुदई मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। लंगटसिंह कालेज, मुज़फ्फरपुर में इतिहास विभाग के प्राध्यापक हैं। बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य रह चुके हैं। बुद्ध और वैशाली, कम्पनी भारत, हिन्द-चीन व्यापार तथा भारतीय व्यापार—एक लेख आपकी रचित पुस्तकें हैं।

श्री विश्वेश्वर प्र० सिंह

लक्खीसराय (मुंगेर) स्थित कर्मानन्द शर्मा स्मारक महाविद्यालय के प्रधाना-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार्य हैं।

श्री जगदीश पांडेय

लक्ष्मीपुर (पंडौल, मधुबनी) निवासी, हस्तगामे मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। रास नारायण कालेज पंडौल (मधुबनी) के प्रधानाचार्य पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री नन्दकिशोर शर्मा

चकसलेम (समस्तीपुर) निवासी। चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। ब्रजमोहन दास महाविद्यालय, दयालपुर (वैशाली) के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं।

श्री भैरव मोहनसिंह

पोखरैरा (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। पटोरी कालेज में प्राध्यापक रहने के बाद उमा पांडेय महाविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर) तथा मोहनपुर (समस्तीपुर) कालेज में प्रधानाचार्य रहे। मई 1985 में बेगूसराय स्थित कोआपरेटिव कालेज के प्रधानाचार्य पद पर स्थानान्तरण हो गया है।

श्री मिथिलेश शर्मा

दिघरा (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री रमेशचन्द्र राय के सुपुत्र। गणेशदत्त कालेज, बेगूसराय तथा लंगटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में मनोविज्ञान के प्राध्यापक रहने के बाद सीतामढ़ी स्थित रामसकलसिंह विज्ञान महाविद्यालय के प्रधानाचार्य रहे। वर्तमान में नारायण महाविद्यालय, गोरैया कोठी (सीवान) के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं।

श्री जगदीशचन्द्र सिंह

जैंतीपुर (वैशाली) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। जगन्नाथसिंह महाविद्यालय चन्दौली (सीतामढ़ी) के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं।

डा० राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

मोहद्दीपुर, (वैशाली) निवासी। पटना वि० वि० के गणित विभाग के भू० पू० रीडर। 1983 में रामदयालु सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर के प्रधानचार्य नियुक्त होकर कार्यरत हैं।

डा० सियाराम तिवारी पी-एच० डी०, डी० लिट

आप विश्वभारती शान्ति निकेतन (पश्चिम बंगाल) में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० नन्दलाल सिंह

लंका, वाराणसी निवासी। आप प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा समाज सेवी हैं। हिन्दू वि० वि० में भौतिकी विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। अ० भा० तिलक सेवा केन्द्र तथा अ० भा० ब्राह्मण परिषद के माध्यम से समाज सेवा में प्रवृत्त हैं।

मेजर जनार्दन पांडेय

नायर (समस्तीपुर) निवासी। साहेबगंज कालेज के प्राध्यापक नियुक्त होकर इस समय भागलपुर वि० वि० के स्नातकोत्तर विभाग के प्राध्यापक तथा एन० सी० सी० के मेजर हैं। 1979 और 1981 के एन० सी० सी० रिफ्रेशर कोर्स में संपूर्ण भारत में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। कई वार निर्वाचित होकर भागलपुर वि० वि० सीनेट के सदस्य भी रह चुके हैं।

डा० अंजनि कुमार सिंह

कुवौली (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामहृदय सिंह के सुपुत्र तथा मरवन (मुजफ्फरपुर) निवासी स्व० पं० जगदीशचन्द्र शास्त्री के दामाद। पटना विज्ञान महाविद्यालय में प्राध्यापक रहने के वाद वर्षों विदेश में अध्यापन किया तथा अंग्रेजी उच्चारण पर भाषा शास्त्र में पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर अव पुनः भारत में आकर दिल्ली वि० वि० में भाषा विज्ञान के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

श्री कामेश्वर प्र० सिंह

सिलौत, मुजफ्फरपुर निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। रामदयालु सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक रहे। इस समय विहार विश्वविद्यालय में परीक्षा नियंत्रक पद पर पदस्थापित रहने के वाद विश्वविद्यालय के प्रोक्टर पद पर पदस्थापित हैं।

डा० रामसागर मिश्र एम० ए०, बी० एल०, पी-एच० डी०

7/1/ 1937 को कांटा (मुजफ्फरपुर) में कौथवैत मूल के विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। इस समय राम दयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर में राजनीति विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष हैं।

विहार बज्जिका परिषद् तथा जिला पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष, विहार पुस्तकालय संघ के उपाध्यक्ष, बिहार राजनीति विज्ञान संघ के महासचिव, भारतीय राजनीति विज्ञान संघ, भारतीय ग्रंथारिक संघ तथा राज्यपुस्तकालय योजना समिति के सदस्य तथा बिहार विश्वविद्यालय उपाचार्य (रीडर) संघ के महामंत्री भी हैं।

श्री रामलखन शुक्ल

लंगा पानापुर (वैशाली) निवासी, मामखोर के शुक्ल मूल के गर्ग गोत्रीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण। दिल्ली वि० वि० में इतिहास विभागाध्यक्ष तथा डीन पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपकी पत्नी श्रीमती कुमुदिनी शर्मा महंत दर्शनदास महा० मुजफ्फरपुर में अंग्रेजी की प्राध्यापिका हैं।

श्री रघुनाथ प्र० सिंह एम० ए० (प्रथम श्रेणी में प्रथम), डिप० एड० (प्रथम श्रेणी में प्रथम)

असोई (वैशाली) निवासी, भूपाली मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। ग्रामीण शिक्षा प्रतिष्ठान, विरौली (समस्तीपुर) के प्राध्यापक रहने के बाद इस समय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय तुरकी, मुजफ्फरपुर में उपप्रधानाचार्य पद पर कार्यरत हैं।

श्री भृगुनाथ राय

अमांव (बलिया) निवासी, वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। सेवासंघ इन्टर कालेज, सोहांव (बलिया) के प्रधानाचार्य हैं।

डा० अवध बिहारी राय

शेरपुर (गाजीपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। इन्टर कालेज महम्मदाबाद (गाजीपुर) के प्रधानाचार्य।

श्री धर्मवीर राय

सोहांव (बलिया) निवासी, वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप मौसम विशेषज्ञ हैं तथा अमेरिका के मेक्सिको वि० वि० में विज्ञान के प्राध्यापक हैं।

डा० रामजीसिंह

भखरीअली (पटना) निवासी। पटना वि० वि० में शिक्षा विभागाध्यक्ष तथा विश्वविद्यालय प्राध्यापक हैं। आपके भाई श्री लक्ष्मण शर्मा वीरपुर में अनुमंडल पदाधिकारी हैं।

श्रीमती शान्ति ओझा

कुरौली (समस्तीपुर) निवासी श्री रमाकान्त सिंह, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण की सुपुत्री। जिला विद्यालय निरीक्षिका, गर्दनीबाग कन्या उच्च विद्यालय की प्रधानाचार्य रहीं। फरवरी 1987 में राज्य सरकार ने आपकी नियुक्ति कला एवं संस्कृति विभाग के निदेशक पद पर की है। वैकल्पिक व्यवस्था होने तक प्रधानाचार्या भी आप रहेंगी।

श्री ब्रह्मेश्वर राय

अंजोर (बलिया) निवासी, मचियांवा मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मर्चेण्ट्स इन्टर कालेज चिटवरा (बलिया) के आप प्रधानाचार्य हैं।

श्री नागेश्वर प्रा० सिंह

मोकामा (पटना) निवासी। राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत उच्च विद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रधानाध्यापक हैं। आपके एक पुत्र जगतनाथ शर्मा अमेरिका में अभियन्ता हैं तथा एक पुत्र श्री बालेश्वरनाथ शर्मा अभियंत्रण महा० में प्राध्यापक हैं।

डा० योगेन्द्र प्र० सिंह एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्, ज्योतिषाचार्य

मोरसंड (सीतामढ़ी) निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं।

श्री रामविलास शर्मा

हांसोपुर (समस्तीपुर) निवासी, महिसौरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत राजकीय बुनियादी विद्यालय के भू० पू० प्रधानाध्यापक हैं।

डा० रामकरण शर्मा एम० ए० (त्रय), पी-एच० डी०
तथा कई विषयों के आचार्य

शिवपुर (छपरा) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के महाविद्वान।

उपसमाहर्त्ता पद पर कार्यारंभ कर कुछ दिनों के बाद ही त्यागपत्र देकर 1958 में लंगटसिंह कालेज मुजफ्फरपुर में संस्कृत के प्राध्यापक नियुक्त हुए 1961 तक उक्त पद पर रहे। फिर भारत सरकार के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक तथा शिक्षा मंत्रालय में संस्कृत शिक्षा के उपसलाहकार नियुक्त हुए। आपकी विद्वता से प्रभावित होकर बिहार सरकार से कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत वि० वि० के कुलपति पद पर नियुक्त किया। अप्रैल 1974 से 1981 के प्रारंभ तक उस पद पर रहे। इस बीच 1979 में अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन (रूस) में भी आपने भाग लिया।

1981 से अपने पुराने पद पर दिल्ली में 1984 के मार्च तक कार्यरत रहे। संस्कृत वि० वि० कार्य पर टिप्पणी करते हुए 'आर्यावर्त' (पटना) ने 16/3/83 के पृष्ठ तीन पर इस प्रकार लिखा है। "तथ्यों से पता चलता है कि डा० रामकरण शर्मा को छोड़ कोई भी कुलपति विश्वविद्यालय का विकास नहीं कर सके।"

"1975 और 9 जुलाई 1980 के बीच की अवधि संस्कृत विश्वविद्यालय के लिए पुनरुत्थान का समय रहा। देश के प्रख्यात संस्कृत विद्वान डा० रामकरण शर्मा इस काल में विश्वविद्यालय के कुलपति थे। डा० शर्मा के नेतृत्व में विश्वविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने नया जीवन प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के विकास, प्राचीन संस्कृत, संस्कृति और शिक्षा के अनुरक्षण के लिए उन्होंने विस्तृत योजना तैयार की। उन्होंने चोरी के सभी स्रोतों को बन्द कर दिया। शैक्षिक वातावरण निर्मल था और शीघ्र ही एक आदर्श विश्वविद्यालय बन गया।" डा० शर्मा के बहिर्गमन के साथ इस पर काले बादल मंडराने लगे।"

28/3/84 से आप संपूर्णानन्द संस्कृत वि० वि० वाराणसी के कुलपति पद पर रहे। 1986 में त्यागपत्र दे दिया और दिल्ली में ही रहते हैं।

डा० मधुसूदन मिश्र

वाजितपुर (वैशाली) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत और जर्मन भाषा के विशिष्ट विद्वान। गोयना कालेज, सीतामढ़ी में अध्यापन किया तथा जर्मनी में दो वर्षों तक संस्कृत के प्राध्यापक रहे। संप्रति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में उपनिदेशक हैं।

पं० महेश शर्मा पंच आचार्य

पताही (चंपारण) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। उच्च विद्यालयों में हेडपंडित, संस्कृत शिक्षा, बिहार के उपाधीक्षक तथा राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य आदि पदों पर रहकर 1980 में अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी है, जिनमें 'वाणस्यवंशो निवास स्थानं च' संस्कृत संस्थान, दरभंगा द्वारा प्रकाशित और बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत है।

आप स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति के आजीवन सदस्य भी हैं।

पं० गणेश शर्मा

कोलहन्टा पटोरी (दरभंगा) निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण रहीमपुर (रखगडिया) स्थित अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य रहकर संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा में छात्र कल्याण डीन के पद पर रहे। बाद में पुनः अपने पुराने पद पर लौट आये और अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। 1971 में अ० भा० संस्कृत शिक्षक संघ के महा सचिव भी रह चुके हैं।

अपने गांव में जमीन आदि देकर 'राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ' की स्थापना आपने की है, जिसका उद्घाटन 9/1/83 को डा० रामकरण शर्मा ने किया।

पं० शिवकुमार शर्मा एम० ए० (पाली और प्राकृत-प्रथम श्रेणी), धर्म शास्त्राचार्य (प्रथम श्रेणी में प्रथम), पुराणाचार्य (प्रथम श्रेणी में प्रथम), वेद व्याकरण, काव्य तथा पुराणतीर्थ, साहित्यालंकार, साहित्यरत्न

फतेहवाद (मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बाबू रामलखनसिंह के सुपुत्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हथुआ राज हाई स्कूल तथा जिला स्कूल के हेड पंडित, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उप प्रधानाचार्य तथा प्रधानाचार्य आदि पदों पर रहकर 1981 में आप अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

संस्कृत वि० वि० दरभंगा की शोध समिति के सदस्य तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के शोध परीक्षक रहे हैं। संस्कृत वि० वि० के अभिषद्, अधिषद् विद्वत्परिषद् तथा प्रोन्नति समिति के सदस्य रह चुके हैं।

अमर भारती, संस्कृत कलिका, सुरभारती, संस्कृत व्याकरण तथा संस्कृत रचना अनुवाद आदि पुस्तकों के आप लेखक हैं।

डा० राम किशोर शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्याचार्य

छपरामेघ (मुजफ्फरपुर) निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। आर० डी० एन्ड० डी० जे० कालेज, मुंगेर में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। संस्कृत में स्कूली पाठयक्रम की पुस्तकें भी आपने लिखी है।

डा० प्रभुनारायण शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०, षट्शास्त्री, व्याकरण, साहित्य, नव्य न्याय, अद्वैत वेदान्त, धर्मशास्त्र तथा पुराणाचार्य

रोहुआ, मुजफ्फरपुर निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय के धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष तथा रीडर हैं।

डा० देवनारायण शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०
पुराणाचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त)

रोहुआ, मुजफ्फरपुर निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। वैशाली स्थित प्राकृत संस्थान में प्राध्यापक तथा प्रभारी निदेशक हैं।

डा० रामजी राय

स्वामी सहजानन्द कालेज, आरा (भोजपुर) में संस्कृत एवं प्राकृत विभागाध्यक्ष हैं।

पं० हरिवल्लभ शास्त्री बी० ए०, डिप० इन एड०
साहित्य तथा पुराणाचार्य, काव्य तथा स्मृति तीर्थ

विष्णुपुरवधनगरी (मुजफ्फरपुर) निवासी, कोथवैत मूल के विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण। पातेपुर (वैशाली) उच्च विद्यालय में शिक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। विभिन्न रूपों में समाज सेवा करते रहे हैं।

पं० सदानन्द शास्त्री बी० ए०, डिप० इन० एड०, विद्यालंकार, वेद, स्मृति तथा काव्य तीर्थ और शास्त्री

पुरुषोत्तमपुर, मुजफ्फरपुर निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुर में संस्कृत शिक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

पं० सूर्य नारायण चौधरी एम० ए० (संस्कृत)

कठौतिया (पूर्णियां) निवासी। संस्कृत भवन कठौतिया के संस्थापक तथा पूर्णियां कालेज के भू० पू० संस्कृताध्यापक हैं। आपने बुद्ध चरित, सौन्दर नन्द, जातक कथा माला आदि बौद्ध साहित्य का हिन्दी में अनुवाद और संपादन किया है।

श्री सिद्देश्वर सिंह एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत तथा प्राकृत)

नालन्दा जिला निवासी, श्री कृष्ण रामरुचि कालेज, वर वीद्या (मुंगेर) तथा रांची स्थित राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के प्राध्यापक रह चुके हैं। संप्रति विहार संस्कृत शिक्षा परिषद में सहायक निरीक्षक हैं। हिन्दी नाटक तथा समालोचनात्मक कई पुस्तकों के लेखक भी आप हैं।

पं० राघव शर्मा एम० ए० (द्वय) वेदान्त शास्त्री,
ज्योतिष तथा कर्मकांड मर्मज्ञ, कथावाचक

नारायणपुर (गया) निवासी। राजकीय उच्च विद्यालय में शिक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। ज्योतिष, कर्मकांड, कथावाचन तथा लेख द्वारा समाज सेवा और सामाजिक गौरव की रक्षा में प्रयत्नशील रहे हैं।

पं० श्रीनिवास शर्मा

पाली (पटना (निवासी), संस्कृत के विशिष्ट विद्वान हैं। जायसवाल अनुसंधान संस्थान, पटना में उपनिदेशक पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० नन्दकिशोर शर्मा एम० ए० (सं०), पी-एच० डी०, डी० लिट

शिवपुर (बहलोलपुर), छपरा निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। छात्र जीवन से ही आप राजनीति में सक्रिय रहे। 1964-65 के लगभग ढाई वर्षों तक नजरबन्द रहे। अ० भा० प्रगतिशील छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। 1971 के 20 फरवरी को रामदयालु सिंह कालेज में संस्कृत के प्राध्यापक नियुक्त हुए और 1973 की जनवरी से लंगटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। 1983 से स्नातकोत्तर विभाग के विश्वविद्यालय प्राध्यापक पद पर आसीन हैं।

जे० पी० आन्दोलन में 15 महीने नजरबन्द रहे। बिहार वि० वि० सीजनेट के सदस्य भी रह चुके हैं।

आपकी लिखी 'तद्धित प्रत्ययों का समालोचनात्मद अध्ययन' तथा 'संस्कृत वाक्य रचना का रूपान्तरण परक विश्लेषण' आदि पुस्तकें हैं। आपके पुत्र विश्व-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नायकम एम० ए० (संस्कृत) के छात्र हैं जो बी० ए० (आनर्स सं०) में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हैं और पुत्री श्रीमती पुष्पम् शर्मा बी० ए० (आनर्स-संस्कृत) की छात्रा हैं।

डा० रामावतार शर्मा नव्य न्यायाचार्य, दर्शनाचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त) व्याकरणाचार्य एम० ए०, पी-एच० डी०

मूसी (टिकारी, गया) निवासी। संस्कृत के विशिष्ट विद्वान। राजकीय संस्कृत महा० में व्याख्याता तथा प्रधानाचार्य रहने के बाद संस्कृत शिक्षा, विहार के सं० शिक्षा निदेशक तथा संस्कृत शिक्षा परिषद् के सचिव रहकर मई 1985 में अवकाश ग्रहण आपने किया। बाद में आप राज्य सरकार द्वारा विहार संस्कृत शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष नियुक्त होकर 22/6/85 से उक्त पद पर कार्यरत हैं। अ० भा० पंडित परिषद् वाराणसी 1982 में 'विद्यारत्न' की विशिष्ट सम्मानोपाधि से सम्मानित किया। आपको कोई सन्तान नहीं है।

पं० रमाकान्त शास्त्री वेदाचार्य

रामपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, सुरगणे मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत के विशिष्ट विद्वान। अध्ययन काल से ही वेद तथा कर्मकांड द्वारा समाज सेवा में संलग्न रहे। प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

पं० शिवनारायण चौधरी वेदाचार्य

दोमहार पट्टी (सीतामढ़ी) निवासी।

संस्कृत विद्यालयों में शिक्षक रहे तथा संस्कृतोच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। वेद तथा कर्मकांड द्वारा सदा से समाज सेवा में संलग्न रहे हैं।

पं० रामसखा शर्मा व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, प्रभाकर

पतोर (दरभंगा) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण पं० रघुनाथ मिश्र के सुपुत्र। आप में सामाजिक गौरव और सेवा की भावना सदा से रही है। आप संस्कृत के शिक्षक (उच्च विद्यालय में) रहे। आपकी लिखी संस्कृत व्याकरण की पुस्तक उच्च विद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं। अब आप घर पर ही रहते हैं। आपके एक पुत्र श्री श्यामवदन मिश्र दरभंगा में अधिवक्ता हैं।

पं० रामजीवन शर्मा व्याकरणाचार्य

वर्री बेहट (सीतामढ़ी) निवासी। गढ़िया (मधुबनी) संस्कृत विद्यालय के प्रधानाध्यापक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपने अध्यापन तथा कर्मकांड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा समाज की पूरी सेवा की है। आपके पुत्र डा० राघव प्र० चौधरी एम० ए०, पी-एच० डी०, व्याकरण तथा साहित्याचार्य संस्कृत विद्यापीठ (कश्मीर) में प्राध्यापक हैं।

पं० रामलखन शर्मा व्याकरण तथा साहित्याचार्य, आयुर्वेद शास्त्री

बख्तियारपुर (समस्तीपुर) निवासी, शिरसियैत मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत विद्यालय पंचरत्न (मधुबनी) में प्रधानाध्यापक रहे तथा अब राजकीय मध्य-विद्यालय मालीनगर (पूसा) में स० शिक्षक हैं। कर्मकांड द्वारा सदा समाज सेवा में संलग्न रहे हैं। कर्मकांड प्रदीप, ज्ञान स्तवक आदि आपकी पुस्तकें प्रकाशित हैं तथा हिन्दी की एक पद्यात्मक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है।

पं० रामाधार शर्मा 'मिलिन्द'

मुरौल (मुजफ्फरपुर) निवासी, कोथवैत मूल के विष्णुवृद्ध गोत्री ब्राह्मण। संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वान। आपका 'अज्ञात प्रेयसी' काव्य 14 सर्गों में प्रकाशित है। भूमिका डा० हजारी प्र० द्विवेदी ने लिखी है। द्विवेदी जी के शब्दों में मिलिन्द जी विरक्त वैष्णव है। संस्कृत के विद्वान और वेदान्त दर्शन के निष्णात तथा भारतीय परम्परा के कवि हैं।

पं० उत्तम मिश्र कर्मकांडी व्याकरणाचार्य

पुरुषोत्तमपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, कोथवैत मूल के विष्णु वृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण। वैशाली और मुजफ्फरपुर जिले के संस्कृत विद्यालयों तथा मध्य विद्यालयों में संस्कृत शिक्षक रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके है। कर्मकांड द्वारा सदा समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं। आपके पुत्र पं० प्रह्लाद मिश्र भी संस्कृत के विद्वान और घटारो (वैशाली) में उच्च विद्यालय के संस्कृत शिक्षक हैं।

पं० जगदीश शर्मा साहित्य तथा पुराणाचार्य

धनछूहा (भोजपुर) निवासी। भूमिहार ब्राह्मण उच्च विद्यालय बक्सर में संस्कृत अध्यापक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्रीमती गीताकुमारी

छपरा मेघ (मुजफ्फपुर) निवासी, डा० रामकिशोर शर्मा (भू० पू० संस्कृत विभागाध्यक्ष आर० डी० एन्ड डी० जे० कालेज, मुंगेर) की सुपुत्री। मंझौल (वेगूसराय) में जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में ससुराल। नालन्दा स्थित महिला महाविद्यालय में संस्कृत विभाग की अध्यक्ष हैं।

श्रीमती पार्वती देवी साहित्यशास्त्री (१९४४ ई० में स्वर्णपदक प्राप्त)

केशरामा (वैशाली) में जन्म तथा वैजनाथपुर (वैशाली) में ससुराल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यालय में अध्यापिका के रूप में कार्यरत रही हैं। आपके पति दिवंगत हो चुके हैं।

डा० सूर्यदेव पांडेय एम० ए० (त्रय), पी-एच० डी०, व्याकरण तथा साहित्याचार्य, वेदान्त शास्त्री, काव्य, स्मृति तथा वेदान्त तीर्थ

भथंडी (वैशाली) निवासी करनावती मूल के गोत्रीय ब्राह्मण। भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल, मुजफ्फरपुर में अध्यापन कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। पाठयक्रम की कई पुस्तकों के आप प्रणेता हैं। आपको मात्र एक पुत्री है।

पं० कामेश्वर शर्मा 'नयन' साहित्याचार्य

मलाठी (कुर्था, गया) निवासी। संस्कृत, हिन्दी तथा मगही के विद्वान तथा कवि। सामाजिक गौरव के प्रति भी सजग। बिहार राष्ट्रीय परिषद में कार्यरत हैं।

पं० हरिदेव शर्मा व्याकरण-साहित्य तथा पुराणाचार्य

पंचरत्न (पो० घोरबंकी, मधुबनी) निवासी। राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालय मोतीहारी में कार्यरत हैं। कर्मकांड तथा अन्य कई प्रकार से समाज सेवा में भी संलग्न हैं।

श्रीमती शारदादेवी साहित्यशास्त्री

जन्म स्थान केशरामा (वैशाली)। फतेहाबाद (मुजफ्फरपुर) निवासी, जथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण बाबू रामलखनसिंह की पुत्रवधू एवं बिहार सरकार के राजस्व विभाग के उप सचिव श्री राजकुमार प्र० सिंह की पत्नी। संस्कृत की अच्छी विदुषी हैं।

पं० सीताराम शर्मा साहित्याचार्य, ज्योतिषरत्न

धनौर (मुजफ्फरपुर) निवासी, मनकौलिया मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। अपने घर पर निवास करते हुए ज्योतिष तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भाग लेकर सामाजिक सेवा करते रहे, हैं।

प० रामचन्द्र शर्मा एम० ए० (सं०) आचार्य

देवा (गाजीपुर) निवासी, जिझोतिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के खास भतीजा। आप संस्कृत के कवि तथा स्वामी सहजानन्द सरस्वती महाविद्यालय गाजीपुर में संस्कृत के प्राध्यापक हैं। समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं।

डा० शारदानन्द शर्मा एम० ए० (सं०) पी-एच० डी०, व्याकरण-साहित्य तथा नव्य न्यायाचार्य

पंचरत्न (मधुबनी) निवासी, शकरत मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण पं० राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवक शर्मा व्याकरण तथा पुराणाचार्य के सुपुत्र। संस्कृत अध्ययन के बाद कुछ दिनों तक अपने जिले में अध्यापन कार्य किया तथा वर्तमान में आर० एन० कालेज हाजीपुर में संस्कृत के प्राध्यापक हैं। आप पुराण पर शोध कार्य कर रहे हैं। आप सामाजिक गौरव की भावना से युक्त हैं। कर्मकांड तथा संस्कृत प्रचार द्वारा समाज सेवा में भी संलग्न हैं। आपकी पत्नी श्रीमती शैल शर्मा संस्कृत में साहित्याचार्य (नवीन) हैं।

पं० जगदानन्द शर्मा जी० ए० एम० एस०,
बी० ए० व्याकरण तथा आयुर्वेदाचार्य

पंचरत्न (मधुबनी) निवासी, पं० रामसेवक शर्मा व्याकरण तथा पुराणाचार्य के सुपुत्र। आप संस्कृत व्याकरण के अतिरिक्त वेगूसराय स्थित अयोध्या शिव-कुमारी आयुर्वेदिक कालेज से जी० ए० एम० एस० परीक्षोर्तीण तथा सम्पादक भी हैं। आप गोदावरी रामसेवक संस्कृतोच्च विद्यालय पंचरत्न के प्रधानाध्यापक रहते हुए समाज सेवा में भी संलग्न हैं। आपकी पत्नी श्रीमती रजनी शर्मा व्याकरणाचार्य हैं।

पं० अवधेश प्र० शर्मा व्याकरण तथा साहित्याचार्य

मोरसंड (समस्तीपुर) निवासी, याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० शिवनन्दन बाबू के सुपुत्र। आप राजकीय उच्च विद्यालय जगतसिंह पुर में संस्कृत के अध्यापक हैं तथा पं० श्री राम शर्मा के अनुयायी हैं। अपने घर पर आपने गायत्री मन्दिर का निर्माण कराया है। आपके अग्रज श्री कृष्ण देव प्र० सिंह आरक्षी अधीक्षक हैं।

पं० रामकिशोर शर्मा धर्मशास्त्र तथा साहित्याचार्य

छपरामेघ (मुजफ्फरपुर) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। इस समय शेखपुरा (मुंगेर) उच्च विद्यालय में संस्कृत शिक्षक हैं। कर्मकांड द्वारा आप समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं।

कुमारी रेणुराय

शेरपुर (गाजीपुर) निवासी श्री जयठाकुर राय चार्जमैन ग्रेड 1, आर्डिनेन्स फैक्टरी, अर्मापुर इस्टेट कानपुर की पुत्री। आर्डिनेन्स फैक्टरी इन्टर कालेज, अर्मापुर (उ० प्र०) की 10 वीं कक्षा की छात्रा। एन० सी० सी० एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आप विशेष प्रतिभाशाली छात्र हैं। सर्वोत्तम महिला एन० सी० सी० कैडेट के लिए राष्ट्रपति द्वारा एक हजार नगद तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है। सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्बन्धी प्रधान मंत्री स्वर्ण-पदक तथा चाँदी का वाउल और उ० प्र० सरकार द्वारा रजत पदक तथा 250 रुपये नगद पुरुस्कार से आप पुरस्कृत हो चुकी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भू० पू० जमींदार—राजा महाराजा

श्री टोडर[16]

आप काशी के भदैनी महल्ले के निवासी, कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण (भू०ब्रा०) थे। आप धर्मात्मा, वीर, बलवान, नम्र, सुशील, विद्वान कृतज्ञ तथा नीति निपुण थे। गो, ब्राह्मण तथा साधु सन्तों के हित चिन्तक थे। प्रसिद्ध संत गोस्वामी तुलसीदास के मित्र तथा सम्बन्धी थे।

आपके पूर्वज गहरवार राजाओं से अग्रहार प्राप्त कर काशी में आकर बसे थे। आपके पूर्वज दो भाई—कमलापति और वामदेव—थे, जिसमें कमलापति की वंश परंपरा में आप थे। इसी वंश परंपरा में तारापुर, ईश्वर गंगी (काशी) के भूमिहार ब्राह्मण हैं।

श्री टोडर ने ही गोस्वामी तुलसीदास को अस्सी घाट (काशी) पर बुला कर रखा था।

गोस्वामी तुलसीदास ने ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की स्तुति नहीं की। किन्तु मनुष्य मात्र में श्री टोडर का गुणगान किया था :—

"तुलसी राम स्नेह को सिर पर भारी भार।
टोडर कांधा ना दिये, सब कहि रहे उतार ॥1॥
चारि गांव के ठाकुरो, मन को महा महीप।
तुलसी यही कलितमी महं अधम टोडर दीप ॥2॥
तुलसी उर थाला विमल टोडर गुनगान बाग।
इन नयननि जल सींचिहौं समुझि समुझि अनुराग ॥3॥
राम धाम टोडर गये मोचन तुलसी सोच।
जियवोमीत पुनित विन यह जिय करत संकोच ॥4॥

श्री टोडर के पुत्र आनन्द राम और पौत्र कन्हाई (रामभद्र के पुत्र) में भूमि का बटवारा कराकर 1669 विक्रमाब्द में पंचनामा भी स्वयं अपने हाथ से स्वामीजी ने लिखा था।

---

16. कुछ लोग भ्रमवश गोस्वामी जी के मित्र श्री टोडर और अकबर के वित्त मंत्री राजा टोडर मल को एक ही मान लेते हैं। वस्तुतः गोस्वामी जी के मित्र श्री टोडर भदैनी, काशी के निवासी भूमिहार ब्राह्मण थे। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में उन्हें भूमिहार ब्राह्मण ही लिखा है। अकबर के वित्त मंत्री राजा टोडर मल खत्री थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस समय टोडर की वंश परंपरा में उत्तराधिकारी लड़की के वंशज हैं, जो गर्ग गोत्र के हैं।

श्री कृष्णदत्त मिश्र

काशी के समीप कसवार परगना में वरैनी गांव के निकट गढैला के आप निवास और गौतम गोत्रीय ब्राह्मण थे। आनन्द कानन ब्रह्माचारी के यहां गोस्वामी तुलसीदास के सहपाठी तथा गोस्वामी जी के संरक्षक-मित्र श्री टोडर के सम्बन्धी थे। गोस्वामी जी के निधन के बाद प्रथम वार्षिकी पर आपने 'गौतम चन्द्रिका' की रचना की। गौतम चन्द्रिका में उन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है :—

"पितु भगवान पार्वती माता। गौतम कासिवार विख्याता॥
गंगा तीर गढौली गाऊँ सामग कृष्णादत्त मम नाऊँ॥

श्री राजेन्द्र भट्ट

महाराष्ट्र से आकर पटना जिले के महावलीपुर में बस जाने वाले कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री न्याय भट्ट के प्रपौत्र श्री राजेन्द्र भट्ट हुए। सन् 1540 ई० में हुमायूं के साथ युद्ध में शेर खां (शेरशाह) को सहायता देकर दिल्ली की गद्दी पर आपने बैठाया था।

श्री कृष्ण चन्द्र भट्ट

कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री राजेन्द्र भट्ट के सुपुत्र। आप वीर तथा नीति निपुण थे। आप शेरशाह के प्रधान सेनापति तथा सलाहकार थे। आपके वंश में सेहरा, भरतपुरा तथा धरहरा (पटना) आदि के भूमिहार ब्राह्मण हैं, जिनमें श्री राम नन्दन प्र० ना० सिंह, श्री मदन धारी सिंह तथा श्री रजनधारी सिंह आदि विशिष्ट व्यक्ति हो गये हैं।

महाराजा कल्याणमल्ल

वगौछिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। आप निर्भीक, साहसी तथा योग्य सेना नायक थे। छपरा जिले के कुआरी परगना में जिस स्थान पर आप रहते थे, उस स्थान का नाम आपके नाम पर कल्याण पुर हो गया। अकबर के राज्य काल में पूर्वी भाग में अराजकता को दबाने के लिए पांच हजार पैदल तथा एक सौ घुड़ सवार सैनिकों को लेकर आपने अराजकता मिटा दी। आपकी वीरता और पराक्रम को देखकर उक्त भाग की व्यवस्था का पूर्ण भार आपको दे दिया गया। 1565 ई० के लगभग अकबर ने आपको महाराजा की उपाधि प्रदान की। आप के ही वंश में हथुआ (गोपाल गंज) और तमकुही (देवरिया) का ब्राह्मण राजवंश है। कल्याणपुर में किले के चिह्न अब भी मौजूद हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा अभिमान राय[17]

देवकुली के पांडेय वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री समुद्र पांडेय के पौत्र श्री साधो राम पांडेय के पौत्र तथा राय गणेश के पुत्र राजा अभिमान राय थे, जिन्होंने जन्दाहा (वैशाली) से नरहन (समस्तीपुर) तक लगभग एक हजार गांवों तथा पांच लाख बीघे से अधिक जमीन वाले सरैसा परगने का राजा अपने को घोषित कर दिया और उस पर अधिकार कर लिया। स्वर्ण भूमि सरैसा के लिए केन्द्रीय शाही सेना भेजी गयी—घोर युद्ध हुआ। राजा तथा उनके अनुचर मार डाले गये। गढ़ पर शत्रु का कब्जा हो गया। राजा का एक मात्र शिशु (राय गंगाराम) ही बच पाया, जिसे आक राउत (नौकर) और उसकी पत्नी मुनिया ने सुरंग के रास्ते निकाल लिया और सुदूर मुंगेर जिले के चाक साम्हो नामक स्थान पर गंगा किनारे ले जाकर रखा तथा कुछ दिनों तक पाला-पोसा। बाद में एक दिन चाक के राजा राजा सिंह (मैथिल ब्राह्मण) का ध्यानाकर्षित हुआ। वे उस बच्चे को अपने यहां लिवा गये। आगे चलकर वही बालक राय गंगा राम के नाम से विख्यात हुआ तथा उस घर का दामाद बना।

महाराजा क्षेमकरण शाही

कल्याण गढ़ के महाराजा कल्याण मल्ल के सुपुत्र। आप अपने पिता की ही भांति वीर और पराक्रमी थे। जहांगीर के शासन काल में भी पूर्वी भाग अशान्त रहा और उसे आपने शान्त किया। जहांगीर ने आपको 1625 ई० में महाराजा बहादुर और शाही की उपाधि तथा 'माहे मरातिब' का चिह्न प्रदान किया। तभी से आपके वंशज शाही की उपाधि धारण करते आ रहे हैं। कल्याणपुर गढ़ छोड़ कर 5 मील अलग हुसेपुर में आपने किले का निर्माण कराया और अपनी राज-

---

17. राजा अभिमान राय के संबंध में उपर्युक्त विवरण 'समस्तीपुर जिला दर्शन' के आधार पर उल्लिखित है। लेकिन राजा अभिमान राय के वंशज दीवान बहादुर कामेश्वर ना० सिंह द्वारा 6/2/70 को पं० रास बिहारी राय शर्मा डुमराव (भोजपुर) को लिखे पत्र (जो द्रोणवार ब्राह्मण वंशावली दीवान में प्रकाशित है) के अनुसार "राजा अभिमान राय सप्तरी (नेपाल) के अधिपति बने रहे। सप्तरी जिले के मोकमारी नामक गांव में आज भी इनके किले का अवशेष दीख पड़ता है। इसी गांव के झौरी पोखर में जहर मिलाकर नेपाल नरेश के द्वारा राजा अभिमान राय और उनके अनुचर मार डाले गये। इनके पुत्र राय गंगाराम को 5 वर्ष की अवस्था में राकू कमती ने बेगूसराय के समीपस्थ चाक साम्हो गांव में गंगातट पर दो चार वर्षों तक निर्वाह कराया। बाद में चाक राजा सिंह का ध्यानाकर्षित हुआ···।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धानी बनायी, जिसे अब हथुआ कहते हैं।

राय गंगाराम

राजा अभिमान राय की मृत्यु के बाद जब आप आक राउत और मुनिया द्वारा गंगा किनारे चाक सामहो में पाले-पोसे जा रहे थे तो चाक के राजा राजा सिंह अपने यहां लिवा गये और बड़े होने पर अपनी एकमात्र कन्या भागरानी से आपकी शादी कर दी। चाक राजा की सहायता से अपने पिता का हारा हुआ राज्य सरैसा जीत कर पुनः वापस ले लिया। आपकी दूसरी शादी भी मैथिल ब्राह्मण पं० गोपीनाथ ठाकुर (तिसवारा, समस्तीपुर) की कन्या मुक्तारानी से हुई। पहली पत्नी से तीन और दूसरी से छः पुत्र हुए, जिन्होंने नरहन, गंगापुर आदि में अपनी जमींदारी बसायी।

राय गंगाराम के नाम पर ही गंगापुर नामकरण हुआ। जहां मरणोपरान्त जलाये गये उस स्थान का नाम पड़ा गंगा सारा।

सरैसा की राजधानी मोरवा (समस्तीपुर) में बड़ी रानी भागीरानी की सती चौड़ा की पूजा आज भी समीपस्थ गांव के लोग किया करते हैं।

राय गंगाराम की छठी पीढ़ी में चौधरी केशव नारायण राय हुए, जिन्होंने सरैसा के बगल के चार परगनों का आधिपत्य प्राप्त किया। आपके वंशज द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण कहलाते हैं।

महाराजा युवराज शाही

महाराजा हर गोविन्द शाही के बाद आप हथुआ राज की गद्दी पर बैठे। बड़हरिया के राजा काबुल मोहम्मद को रामचन्द्रपुर के युद्ध में पराजित कर आपने उसकी राजधानी को ध्वस्त कर दिया और संपूर्ण सियाह परगना को अपने राज्य में मिला लिया था।

राजा केशव नारायण राय

द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण राय गंगाराम की छठी पीढ़ी में नरहन (समस्तीपुर) में आप उत्पन्न हुए थे। सरैसा के निकट के चार परगने का आधिपत्य आपने प्राप्त किया था। आपके दो पुत्र थे—(1) श्री फतह ना० सिंह तथा (2) श्री अजित नारायण सिंह।

श्री मनसाराम मिश्र

पं० श्री कृष्ण मिश्र के वंशज गौतम गोत्रीय ब्राह्मण श्री मनोरंजन मिश्र के बड़े पुत्र। दातूपुर (गंगापुर) वाराणसी के प्रभावशाली जमींदार तथा अस्त्र शस्त्र तथा फारसी विद्या में आप निपुण थे। 1730 ई० में मुगल सम्राट द्वारा काशी, गाजीपुर और चुनार के आप सुबेदार नियुक्त किये गये। सरकारी सनद मिली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही वर्तमान काशी राज्य के इतिहास का प्रारंभ समझना चाहिये। 1718 ई० से ही आपने अपनी जमींदारी तथा अपने अधीनस्थ क्षेत्रों का शासन किया। काशी के कानूनी राजा की उपाधि से विभूषित हुए। आपके समय टकसाल में जो रुपये बनते थे, उस पर लिखा रहता था—"शिव शिव जपत आठो याम। कहियत मिश्र मनसाराम ॥"

आपका देहान्त 1740 ई० में हो गया।

राजा बलवन्त सिंह

काशी राज्य प्राप्त कर्ता श्री मनसाराम मिश्र के आप पुत्र थे। 1714 ई० में जन्म तथा 1728 ई० में आपका विवाह हुआ। पिता की मृत्यु के बाद 1740 ई० में आप काशी की गद्दी पर बैठे। अवध के नवाब से लड़कर आपने काशी राज्य की सीमा का काफी विस्तार कर लिया। राजा की उपाधि मिली। राम नगर (वाराणसी) में गंगा किनारे किला बनवाया। आपके विवाह का कोहवर गंगापुर (वाराणसी) में अब तक सुरक्षित है। 22 अगस्त 1770 ई० को आपका देहान्त हो गया। आप अपने पीछे काशी, गाजीपुर, जौनपुर, चुनार आदि को मिला कर 96 परगनों का राज्य छोड़ गये।

राजा प्रेम नारायण सिंह

परसागढ़ (छपरा) के भू० पू० राजा प्रबलनारायण शाहीं, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण के सुपुत्र। आपको मुगल बादशाह की ओर से राजा की उपाधि मिली थी। मुगल बादशाह ने आपको स्वर्णपत्र पर लिखकर संपूर्ण सारण जिले का मालिक बना दिया था। आपकी नवीं पीढ़ी में पद्म विभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह तथा उनके भ्रातागण हैं।

महाराजा सुन्दर सिंह

दोमटिकार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री अजब मिश्र के वंश में गया जिले में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता मुगल बादशाह की ओर से चौधरी नियुक्त थे। आपने पठानों के अत्याचार के खिलाफ लड़ाई की और टिकारी राज्य की स्थापना की। आपको महाराजा की उपाधि मिली। आपके समय में ही राज्य का विस्तार 15 हजार वर्ग मील में हो गया था।

श्री उग्रसेन देव

आप जैथरियामूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री गंगेश्वर देव के वंशज थे। आपने ही बेतिया राज्य की स्थापना की तथा सिंह की उपाधि धारण की। आप श्री गंगेश्वर देव की 7वीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा गज सिंह

वेतिया राज्य के संस्थापक श्री उग्रसेन देव के सुपुत्र। संपूर्ण चंपारण को जीत कर आपने वेतिया राज्य की सीमा का काफी विस्तार कर लिया। आको शाहजहां के समय राजा की उपाधि मिली थी। आप श्री गंगेश्वर देव की 8वीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे।

महाराज सरदार शाही

वगौछिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण महाराजा करतल शाही के बाद आप हथुआ राज्य की गद्दी पर बैठे। आपने मझौली राज्य का किला ध्वस्त कर डंका तथा निशान (राज्य चिह्न) छीन लिया। यह निशान और डंका आज भी तमकुही (देवरिया) राजदरबार में मौजूद है।

राजा युगल किशोर ना० सिंह

काशी नरेश के पूर्व पुरुष पं० श्री कृष्ण मिश्र के द्वितीय पुत्र श्री देव मिश्र के वंशज तथा रघुनाथ सिंह के सुपुत्र। वेतिया के राजा ध्रुव सिंह (राजा गज सिंह के पौत्र) के उत्तराधिकारी (नाती) होने के कारण अपने पैतृक स्थान मीर्जापुर जिले से आकर 1763 ई० में वेतिया राज्य की गद्दी पर बैठे। आपने अंग्रेजों से युद्ध किया। परजित होकर बुन्देलखंड की ओर चले गये। लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए राज्य का शासन विकट समस्या वन गयी। फलतः कंपनी ने आपको बुलवाकर मझवा और सिमराओ परगना आपके साथ वन्दोबस्त कर दिया।

राजा किशुन सिंह

आप वेतिया के राजा ध्रुवसिंह के चाचा बाबू पृथ्वी सिंह के सुपुत्र तथा राजा गजसिंह के पौत्र, और जैथरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा वेतिया राज्य के दो परगनों का राजा युगल किशोर ना० सिंह के साथ बन्दोबस्त करने के बाद राज्य के शेष भाग में से $\frac{1}{2}$ का आपके साथ अंग्रेजों ने बन्दोबस्त किया। आपने शिवहर (सीतामढ़ी) राज्य की स्थापना की। श्री गंगेश्वर देव की 10वीं पीढ़ी में आप उत्पन्न हुए थे।

राजा अवधूत सिंह

आप वेतिया के राजा ध्रुवसिंह के चाचा बाबू सर्वजीत सिंह के सुपुत्र तथा राजा गजसिंह के पौत्र थे। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा वेतिया राज्य के दो परगनों का राजा युगल किशोर ना० सिंह के साथ बन्दोबस्त करने के बाद शेष भाग में से $\frac{1}{2}$ का आपके साथ बन्दोबस्त कर दिया। आपने मधुवन (चंपारण) राज्य की स्थापना की। श्री गंगेश्वर देव की 10वीं पीढ़ी में आप उत्पन्न हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराजा मित्रजीत सिंह

1763 ई० में महाराजा बुनियाद सिंह के कासीम अली द्वारा धोखा देकर मारे जाने के समय आप बहुत छोटे थे। आपकी जान टिकारी राज्य के प्रधान ऑफिसर श्री दवेल सिंह ने बचा ली थी। बक्सर युद्ध के बाद आप किले के कमांडिंग ऑफिसर बनाये गये। कोल्हान के बलवे को दबाने में आपने अंग्रेजों की सहायता की थी। आपको महाराजा की उपाधि दी गयी। आपने अपने राज्य (टिकारी) में सिंचाई की सुन्दर व्यवस्था की थी तथा राज्य की जनता की भलाई के लिए अन्य कई व्यवस्थायें की थी।

1840 ई० में आपका देहान्त हो गया।

1812 ई० में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा आपके संबन्ध में लंदन में प्रेषित रिपोर्ट में इस प्रकार उल्लेख किया हुआ है "दस परगने की जमींदारी मित्रजीत सिंह की है, जो टिकारी के निवासी ब्राह्मण हैं।"

महाराजा फतह बहादुर शाही

महाराजा सरदार शाही के बाद आप हथुआ राज्य की गद्दी पर बैठे। 1765 ई० में मुर्शिदाबाद के नवाब और दिल्ली के बादशाह की सहायता में अपनी सेना लेकर बक्सर (बिहार) के युद्ध में आप अंग्रेजों से लड़े थे। अंग्रेजों की वक्र दृष्ठि आप पर हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने आपको तंग करना प्रारंभ किया। मालगुजारी मांगने पर आपने देना अस्वीकार कर दिया और जीवन पर्यन्त अंग्रेजों से लड़ते रहे पर उनकी अधीनता स्वीकार न की। हथुआ का गढ़ टूट गया और उस पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। महाराजा बाक जोगनी जंगल में चले गये। अंग्रेजों से लड़ भी रहे थे और एक नये राज्य के निर्माण में भी लगे थे—वह राज्य बना तमकुही राज्य जो इस समय देवरिया जिले में है। यहीं से तमकुही राजवंश अलग हुआ। 1808 ई० में राज्य की व्यवस्था पुत्रों पर छोड़ आपने घर त्याग दिया और संन्यासी हो गये।

राजा महीप ना० सिंह

नरहन (समस्तीपुर) के द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री दुर्ग विजय सिंह (राय गंगाराम की 8वीं पीढ़ी में उत्पन्न) के सुपुत्र तथा काशीनरेश महाराजा बलवन सिंह के दौहित्र थे। उत्तराधिकारी होने के नाते 1781 में आप काशी की गद्दी पर बैठे। आपके समय में ईस्ट इंडिया कंपनी ने राज्य की सीमा को संकुचित कर दिया था। 1794 ई० में आपका देहान्त हो गया।

राजा उदित नारायण सिंह

काशी नरेश राजा महीप ना० सिंह के सुपुत्र थे। पिता की मृत्यु के बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1984 ई० में आप काशी की गद्दी पर बैठे। आपने ही रामनगर (काशी) में रामलीला की व्यवस्था प्रारंभ की जो आज तक वर्तमान है और भारत भर में प्रसिद्ध है। 1835 ई० में आपका देहान्त हो गया। आपकी स्मृति के रूप में रामनगर की रामलीला कायम है।

महाराजा क्षत्रधारी शाही

आपका जन्म 1796 ई० में हुआ था। महाराजा फतह बहादुर शाही से छीना हुआ हथुआ राज्य आपको 5 वर्ष की अवस्था में ही अंग्रेजों ने दिया। लेकिन महाराजा फतह बहादुर शाही (जिन्होंने नया राज्य निर्माण कर तमकुही में निवास किया था) की मृत्यु के बाद ही 1837 ई० में आपको अंग्रेजों ने महाराजा की उपाधि दी। आप महाराजा फतह बहादुर शाही के चचेरे भाई बाबू वसन्त शाही के पुत्र थे। 16 मार्च 1858 ई० को आपका देहान्त हो गया।

महाराजा ईश्वरी प्र० ना० सिंह

राजा उदित ना० सिंह के बाद आप भतीजा होने के कारण 1835 ई० में काशी राज्य की गद्दी पर बैठे। आपको ब्रिटिश सरकार से महाराजा और जी० सी० एस० आई० की उपाधि मिली। आप कला मर्मज्ञ तथा स्वयं कवि भी थे। बाल प्रबोध, अपूर्व कहानी तथा रस समुद्र के रचयिता आप थे।

श्री टोडर के वंशजों का गोस्वामी तुलसीदास द्वारा किया गया फैसला भदैनी (काशी) से निकलवाकर आपने अपने यहां सुरक्षित रखा।

आपके ही संबन्ध में तत्कालीन रीवां नरेश क्षत्रिय मूर्द्धन्य महाराजा रघुराज सिंह ने अपनी पुस्तक 'रामस्वयंवर' में इस प्रकार उल्लिखित किया था।

"गवने एक समय हम काशी। विश्वेश्वर के दर्शन आसी॥
तहं को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥
राम नगर गंगातट मांही। निवसत गौतम भूप तहांही॥
काशीराज महाराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अन्न मांही नारायण वादा॥ इत्यादि

3 जून 1889 को आपका देहान्त हो गया।

राजा रामेश्वर प्र० सिंह[17]

मकसूदपुर (गया) के राजा। आप प्रसिद्ध और कुशल शिकारी थे। आप शेर को गोली मारकर उससे हाथापाई भी करते थे तथा शेर को पकड़कर जीवित ले आने की कोशिश करते थे। इसमें स्वयं घायल भी हो जाते थे पर

17. श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह के लेख 'किस्से कुछ सनकियों के' आधार पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथापाई की आदत छूटती नहीं थी। एक बार छोटा नागपुर क्षेत्र में शेर नरभक्षी बन गये। आतंक से लोग गांव छोड़कर भाग खड़े हुए। उस समय बड़े लाट कर्जन कलकत्ता में रहते थे। फौज के अधिकारी और सैनिकों के आने पर भी शेर मारा नहीं जा सका। गया के जिलाधीश के सुझाव पर लार्ड कर्जन ने राजा रामेश्वर सिंह को एक पत्र भेजा। राजा साहब ने शिविर लगाया और तेरह शेरों को मारा तथा सात को जीवित पकड़कर मकसूदपुर ले आये।

महाराजा सर हरेन्द्र किशोर सिंह

अपने पिता राजा राजेन्द्र किशोर सिंह की मृत्यु के बाद आप बेतिया राज्य की गद्दी पर बैठे। आपको सर तथा महाराजा की उपाधि मिली। आप बेतिया के अन्तिम महाराजा थे। 1893 ई० में आपका देहान्त हो गया और बड़ी रानी गद्दी पर बैठीं। उनका देहान्त भी 1896 ई० में हो गया। राज्य कोर्ट्स ऑफ वार्डस में चला गया। उस समय छोटी रानी जीवित थी।

महाराजा सर कृष्ण प्रताप शाही

अपने पिता महाराजा राजेन्द्र प्रताप शाही की मृत्यु के बाद 15 वर्ष की आयु में 1871 ई० में आप हथुआ राज्य की गद्दी पर बैठे। आपने अपार संपत्ति और यश का अर्जन किया। दुर्भिक्ष के समय दस लाख रु० की सहायता आपने की थी। आपको सर और के० सी० आई० ई० की उपाधि अंग्रेजी सरकार ने दी थी। 1898 ई० में आपका देहान्त हो गया।

महाराजाधिराज द्विजराज डा० सर प्रभु ना० सिंह

जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई०ई०, एल० एल०डी०। महाराजा ईश्वरीय प्र० ना० सिंह के निधन के बाद 13 जून 1889 ई० को आप काशी की गद्दी पर बैठे। आप महाराजा के भतीजा थे। आपका जन्म 26 नवम्बर 1855 ई० को हुआ था। संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी के आप विद्वान थे। शिकारी, अद्भुत निशानेबाज तथा मल्लविद्या में भी पारंगत थे।

1911 में दिल्ली दरबार के समय हिज हाइनेस की उपाधि तथा राज्य के अन्दर शासन का पूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ। एक देशी स्वतंत्र राजा का दर्जा प्राप्त हुआ।

सर्वत्र जनता आपको आदर की दृष्टि से देखती थी। आप जिधर से निकल जाते थे, जनता 'हर-हर महादेव' के नारे लगाकर स्वागत करती थी। आपने कई संस्कृत नाटकों की रचना की। काशी हिन्दू वि० वि० के निर्माण और संचालन में पं० मदन मोहन मालवीय का अन्त तक साथ दिया। जीवन पर्यन्त हिन्दू वि० वि० के प्रोचान्सलर रहे। 22 ग्राम तथा एक लाख रु० का दान हिन्दू वि०वि० को दिया तथा 100 बीघा जमीन कालेज के लिए प्रदान किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्य अनेक संस्थाओं के साथ ही राजकीय संस्कृत कालेज, वाराणसी, सरस्वती पुस्तकालय, लखनऊ मेडिकल कालेज, शिल्प विद्यालय, कानपुर आदि संस्थाओं को मुक्तहस्त होकर दान दिया था। मुजफ्फरपुर में बाबू लंगट सिंह द्वारा संस्थापित भूमिहार ब्राह्मण कालेज (अब लंगट सिंह कालेज) में भी आपने सहायता दी थी।

अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रह चुके थे।

पंचांग निर्माताओं तथा अन्यों द्वारा महाराजाधिराज के साथ 'द्विजराज' का प्रयोग आपके नाम के साथ किया जाता रहा है।

अगस्त 1931 में आपका देहान्त हो गया।

महारानी जानकी कुंवर

बेतिया के महाराजा सर हरेन्द्र किशोर सिंह की मृत्यु के बाद 1893 ई० में बड़ी रानी शिवरतन कुंवर गद्दी पर बैठी। उनका निधन हो जाने के बाद 1896 में आप गद्दी पर बैठी। किन्तु आपके साथ षड्यंत्र किया गया तथा 1897 में आपको अदक्ष घोषित कर दिया गया और 1911 में विकृत चित्त घोषित कर दिया गया। इसी परिस्थिति में 26 नवम्बर 1954 को आपका देहान्त हो गया। आपके नाम पर बेतिया में एक महाविद्यालय संचालित है।

श्री सरयू प्र० ना० सिंह

परसागढ़ (सारण) के एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण राजा प्रेम नारायण सिंह की 8वीं पुश्त में श्री सरयू प्र० ना० सिंह (श्री देवी प्र० ना० सिंह के सुपुत्र) उत्पन्न हुए थे। आप साहसी, उद्यमी, प्रतापी, धार्मिक, बुद्धिमान और विद्वान पुरुष थे। आप ज्योतिष के भी ज्ञाता थे। आप काव्य रचना भी करते थे। आपकी रचनाएं अप्रकाशित पड़ी हैं।

आपने अपनी क्षमता और बुद्धि से परसागढ़ के अतिरिक्त मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर आदि जिलों में भी जमींदारी का विस्तार किया तथा समस्तीपुर की वीरसिंह ड्योढ़ी में निवास किया।

आपका निधन 1918 ई० में हो गया।

आपके चार पुत्रों में बड़े पुत्र रायबहादुर महेश्वर प्र० ना० सिंह (भू० पू० विधायक, भू० पू० सांसद) दिवंगत हो चुके हैं। शेष तीन पुत्र (1) श्री भुवनेश्वर प्र० ना० सिंह (2) पद्म विभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह (भू० पू० राजदूत तथा भू० पू० राज्यपाल पंजाब, उत्तर प्रदेश) और (3) श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह (प्रसिद्ध लेखक, भू० पू० विधायक तथा भू० पू० सांसद) वर्तमान हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराजाधिराज द्विजराज डा० सर आदित्य नारायण सिंह

के० सी० एस० आई०, डी० लिट्। आपका जन्म 17/11/1874 को हुआ था। हिन्दी, फारसी, संस्कृत और अंग्रेजी के ज्ञाता तथा अच्छे शिकारी थे। पिता महाराजा सर प्रभु ना० सिंह की मृत्यु के बाद 1931 में आप काशी राज्य की गद्दी पर बैठे। आपने अपने राज्य (भदोही, चकिया और रामनगर के जिले में) हाई स्कूल तक शिक्षा निःशुल्क कर दी थी। आपने राज्य में कई सुधारों की घोषणा भी की थी। आपने अनेकों संस्थाओं को दान भी दिया था। आप देशी (स्वतंत्र) राजाओं की संस्था नरेन्द्र परिषद् के मंत्री भी थे।

आपने 24/6/34 को दत्तक के रूप में वर्तमान महाराजा विभूति ना० सिंह को गोद लिया था।

4/4/39 को आपका देहान्त हो गया।

महाराजा गोपाल शरण सिंह

टिकरी (गया) के भू० पू० नरेश दोमटिकार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। संगीत प्रेमी तथा मोटर चलाने में अद्भुत क्षमता रखने वाले थे। युद्ध कला में भी प्रवीण थे। कहा जाता है कि आप संगीत सुनने के लिए अपनी कार से कलकत्ता जाते थे और चले आते थे। 1918 ई० के युद्ध में आपने अद्भुत मोटर चालन का परिचय दिया था। आपके मात्र एक पुत्री थी जिसकी शादी अमावा नरेश राजा हरिहर प्र० ना० सिंह के बड़े पुत्र कुमार श्री रघुवंश मणि प्र० ना० सिंह से हुई।

महाराजा गुरु महादेवाश्रम प्रसाद शाही

अपने पिता महाराजा सर कृष्ण प्रतापशाही की मृत्यु के बाद 1898 ई० में आप हथुआ राज्य की गद्दी पर बैठे। नाबालिग रहने के कारण राज्य का प्रबन्ध माता के हाथ में था। बालिग होने पर भी माता की राय से आप शासन करते थे। राज्य की ओर से कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भी आपने की थी। पटना मेडिकल कालेज हस्पताल को 65 हजार का दान आपने दिया था। सामाजिक गतिविधियों में भी आप सक्रिय रहते थे। 28 दिसम्बर 1913 ई० बलिया (उ० प्र०) में सम्पन्न अ० भा० भूमिहार महासभा के अध्यक्ष रह चुके थे। 8 जनवरी 1920 में कलकत्ता में संपन्न प्रथम बंग प्रान्तीय भूमिहार ब्राह्मण सभा की अध्यक्षता भी आपने ही की थी। आप अ० श० ब्राह्मण सभा के स्वागताध्यक्ष भी रह चुके थे। वर्षों बिहार उड़ीसा विधान परिषद के सदस्य भी रह चुके थे। आप अत्यन्त धार्मिक व्यक्ति थे। आपने कठौदा (लिलकर से 3 किलोमीटर पश्चिम) में 2 मन्दिर, अपने निवास के लिए एक कोठी तथा पूजा-पाठ के खर्चे के लिए वहां काफी जमीन खरीदी थी। जब तक आप जीवित थे वर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में 4 महीना वहां ही व्यतीत करते थे तथा अन्त में पूजा पाठ के लिए तो आपने गद्दी का ही त्याग कर दिया। उस समय पुत्र के नाबालिग रहने के कारण राज्य कोर्टस ऑफ वार्डस के अधीन चला गया था। 1948 ई० में आपका देहान्त हो गया।

पं० राजेन्द्र प्र० मिश्र

दरभंगा जिले के पतोर ग्राम में 1877 ई० (1285 साल) के श्रावण कृष्ण षष्ठी को सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। 1909 ई० (1317 साल) में पतोर से 5 मील पश्चिम रघुनाथपुर में आ बसे। रघुनाथपुर में एक विशाल विष्णु तथा शिव मन्दिर का निर्माण कराया। संस्कृत शिक्षा के लिए अपने घर पर संस्कृत विद्यालय खोल कर दर्जनों (मैथिल और भूमिहार ब्राह्मण) छात्रों को आवास और भोजन की सुविधा देकर पढ़ने को प्रेरित करते रहे। आपने चारों धाम की यात्रा की थी। आप नित्य घंटों पूजा पाठ किया करते थे। आप संस्कृत के विद्वान थे।

'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' (ब्रह्मर्षि वंश विस्तर) लिखने में कुछ मुख्य अभिलेख देकर श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती को आपने सहायता की थी।

61 वर्ष की आयु में 5 फरवरी 1938 ई० को काशी में आपका देहान्त हो गया।

आपके दोनों पुत्र स्व० पं० जानकी रमण मिश्र (भू० पू० राजस्व मंत्री) तथा पं० रामनन्दन मिश्र प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त एवं स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं।

काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज डा० विभूति ना० सिंह आपके दौहित्र हैं।

श्री गोपाल नारायण सिंह

भरतपुरा (पटना) के भू० पू० जमींदार। कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण। 1912 ई० में 'गोपाल नारायण सार्वजनिक पुस्तकालय' की स्थापना आपने की थी। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्राचीन ग्रन्थों एवं हस्त लिखित पुस्तकों के कारण पटना के पुस्तकालयों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। ताम्रपत्र पर लिखित पुस्तकें भी इस पुस्तकालय में है। आपके स्वर्गवास के बाद भी यह पुस्तकालय संचालित है।

श्री नन्दन प्र० ना० सिंह

छितौनी (छपरा) स्टेट के भू० पू० अधिपति। एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। 1928 ई० में आप छपरा जिला बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये। बिहार उड़ीसा विधान परिषद के वर्षों सदस्य रहे।

आपके निधन के बाद छपरा में 2/2/36 की श्री नन्दन स्मारक का शिला-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्यास डा० सर गणेश दत्त सिंह ने किया था। श्री नन्दन पुस्तकालय तथा नन्दन पथ भी छपरा में है।

श्री जगन्नाथ प्र० सिंह

महमदा के भू० पू० जमींदार। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। आप फूल पौधों तथा कला के विशेष प्रेमी थे। आपने अपने निवास पर महमदा (समस्तीपुर) में मिट्टी का कबूतर, मिट्टी का आदमी बनवा रखा था, जो हारमोनिया बजाता तथा कबूतर नाचने लगते थे। सैकड़ों प्रकार के फूल तथा पौधे लगाकर अलग बाग लगा रखा था। पौधों के बीमार पड़ने पर अलग घर में रखने की व्यवस्था थी। 'महमदा की फुलवारी' नाम से विख्यात इस फुलवारी को देखने दूर-दूर से लोग आते थे। आप समाज प्रेमी भी थे। 1908 की अ० भा० भू० ब्रा० महासभा के छपरा अधिवेशन तथा अन्य सभाओं में भी सम्मिलित होकर सामाजिक गतिविधि के प्रति सजग रहते थे।

आपके निधन के बाद आपके पौत्र भी कौशलेन्द्र प्र० सिंह फुलवारियों की देख-रेख करते थे जिनकी एकमात्र पुत्री की शादी काशी राजपरिवार के श्री पार्वती प्र० ना० सिंह के पुत्र श्री अश्विनी ल० ना० सिंह से हुई है।

श्री इन्द्र नारायण सिंह एम० ए०

वाराणसी स्थित जगत गंज के भू० पू० जमींदार तथा समाज प्रेमी। काशी राज्य प्राप्त कर्त्ता गौतम गोत्रीय ब्राह्मण श्री मनसाराम मिश्र के भाई श्री दसाराम की छठी पीढ़ी में आप उत्पन्न हुए थे। 17 अप्रैल से 19 अप्रैल 1908 तक छपरा में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा का सभापतित्व आपने ही किया था। आपके पुत्र राय बहादुर कुंवर कवीन्द्र ना० सिंह थे।

राजाधिराज राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही

अपने पिता बगौछिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण राजा शत्रुजीत प्रतापशाही की मृत्यु के बाद नाबालिग में ही तमकुही राज्य के उत्तराधिकारी हुए—नाबालिग रहने के कारण राज्य कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स के अधीन हो गया। 1913 में आपको राज्य मिला।

लगभग 23 वर्षों तक गोरखपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य थे।

1924 ई० में मुजफ्फरपुर में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा का सभापतित्व आपने ही किया था। समाज प्रेम की भावना आप में मौजूद थी। आपके चित्र के नीचे काशी से प्रकाशित 'भूमिहार ब्राह्मण' में यह लिखा हुआ था —"तमकुही के ये नराधिप, जाति प्राणाधार हैं।"

आपने कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भी की थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् 1947 ई० में आपका देहान्त हो गया और आपकी रानी साहिबा का देहान्त 1950 में हुआ।

महाराजा सर योगेन्द्र नारायण राय (के० टी० सी० आई०)

लालगोला (मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल) के भू० पू० महाराजा। कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। लालगोला के राय महेश नारायण ने पाली ग्राम (गाजीपुर) के अपने पूर्व पुरुष के वंशज श्री समुझावन राय के पुत्र श्री रामचरित राय को दत्तक ग्रहण किया, जिनका नाम पीछे श्री योगेन्द्र नारायण राय हुआ। आप संस्कृत और संगीत के विद्वान थे। 1909 में आपको राजा की उपाधि तथा 1936 में सर तथा महाराजा की उपाधि दी गयी। आपने करोड़ों रु० व्यय कर काली मन्दिर, शिव मन्दिर, अस्पताल, स्कूल, पार्क, छात्रावास आदि का निर्माण विभिन्न स्थानों में कराया तथा अनेकों अन्य संस्थाओं की सहायता की थी। आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके पौत्र राजा धीरेन्द्र ना० राय की पुत्रियों की शादी कान्यकुब्ज, सरयूपारीण, जुझौतिया तथा बंगाली ब्राह्मण परिवार में तथा पुत्र की शादी बंगाली परिवार में है।

राजा हरिहर प्र० ना० सिंह

अमावा तथा टिकारी के भू० पू० नरेश। रानी भुवनेश्वरी कुंवरी से ब्याह होने पर राज्य का 7 आना वाला हिस्सा तथा बड़े पुत्र की शादी महाराजा गोपाल शरण सिंह की कन्या से होने पर 9 आने का पूरा राज्य भी मिला। इस प्रकार आप अमाया और टिकारी दोनों के राजा हुए।

केन्द्रीय धारा सभा तथा बिहार, उड़ीसा विधान परिषद के वर्षों सदस्य रहे। अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रह चुके थे। पटना मेडिकल कालेज को एक लाख रु० का दान आपने दिया था।

सांग दर्शन विद्यालय भोरी (टिकारी, गया) को कई एकड़ जमीन दी थी तथा अन्य कई संस्थाओं की स्थापना भी आपने की थी। आज अपने पीछे 5 पुत्र तथा 5 पुत्रियां छोड़ कर मरे थे।

रायबहादुर चन्द्रधारी सिंह

श्री न्याय भट्ट के वंशज, अथर्ववेदी कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण। भरतपुरा (पटना) से घरहरा (पटना) में आकर निवास किया। पटना मेडिकल कालेज अस्पताल को पचास हजार का दान आपने दिया था। आपके पुत्र श्री रजनधारी सिंह बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के अध्यक्ष तथा पटना नगर निगम के मेयर भी रह चुके थे।

रायबहादुर ऐदल सिंह

रामीवीधा स्टेट (गया) के भू० पू० अधिपति। आपने लाखों रु० देकर नालन्दा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का उद्धार तथा नालन्दा कालेज की स्थापना की थी। इस कालेज को 85 हजार नगद तथा एक मौजा लिख दिया, किन्तु कालेज का नाम अपने नाम पर नहीं रखा। शिक्षा क्षेत्र में आपने महत्त्वपूर्ण सेवा की थी।

आपके एकमात्र पुत्र कुमार कृष्ण वल्लभ नारायण सिंह हैं, जिन्हें लोग रामीवीधा के बबुआ जी के नाम से जानते हैं।

श्री चौधरी कालिका प्र० राय

1877 ई० में आपका जन्म डुमरांव (भोजपुर) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पटियाला राज्य (पंजाब) में 1916 ई० में आपकी नियुक्ति छः हजार मासिक पर हुई थी, किन्तु आपने उसी वर्ष उसे छोड़ दिया। कृषि शिक्षा के विशेष समर्थक होने के कारण सबौर (भागलपुर) कृषि कालेज फार्म्स जांच समिति के सदस्य रहे। उत्तर प्रदेश और बिहार के संयुक्त चीनी नियंत्रण बोर्ड के 1940 ई० में सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य भी रहे। आप दिवंगत हो चुके हैं।

राजा महेश्वरी प्र० ना० देव

धनवार (गिरिडीह) राज्य के भू० पू० अधिपति। समाज प्रेमी, मिलनसार और सादा वेश में आप रहा करते थे। सभी ब्राह्मणों में परस्पर वैवाहिक सम्बन्धों के आप पक्षधर थे। आपकी एक पुत्री की शादी त्यागी ब्राह्मण परिवार में है। आचार्य विनोवा भावे को बिहार में सर्वप्रथम एक लाख एकड़ भूमि दान देकर आपने उदाहरण उपस्थित किया था। आपका देहान्त 11/4/69 को हो गया।

राजा केदारनाथ सिंह

पटना जिले में जन्म। आप कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री राजेन्द्रधारी सिंह के सुपुत्र थे। काशी स्थित औसान गंज राज्य के उत्तराधिकारी (नाती) होने के कारण आप औसान गंज के राजा हुए। आप समाजप्रेमी थे। वाराणसी जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के वर्षों अध्यक्ष रह चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

दीवान बहादुर कामेश्वर ना० सिंह

नरहन राज्य के भू० पू० अधिपति। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। आप अत्यन्त धार्मिक और सामाजिक गौरव से युक्त व्यक्ति थे। आप संस्कृत के विद्वान तथा नैष्ठिक कर्मकांडी थे। बारह भाषाओं के आप ज्ञाता थे।

समस्तीपुर कालेज, समस्तीपुर की स्थापना में लाखों की संपत्ति देकर आपने सहायता की थी। अन्य अनेक शिक्षण संस्थाओं की भी सहायता की थी।

समस्तीपुर कालेज तथा मॉडल हाई स्कूल समस्तीपुर के शासीनिकाय के अध्यक्ष भी रह चुके थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6 नवम्बर 1970 को आपका देहान्त हो गया। आपकी पत्नी रानी राज-किशोरी देवी का निधन जनवरी 1984 में हुआ है।

आपके निधन के बाद नरहन में आपके नाम पर महाविद्यालय तथा आपकी माता के नाम पर कन्या उच्च विद्यालय संस्थापित होकर संचालित हैं।

आपके दो दामाद (1) चैनपुर (छपरा) के श्री जयदेव ना० सिंह बी० ए० बी०एल० साहित्याचार्य (भू० पू० चेयरमैन सारण जिला बोर्ड), तथा (2) वीर-सिंहपुर (समस्तीपुर) निवासी, प्रसिद्ध लेखक श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह बी० ए० (भू० पू० विधायक तथा भू० पू० सांसद हैं।)

राय बहादुर रामेश्वर प्र० सिंह

साम्बे (नवादा) के भू० पू० जमींदार। वर्षों गया जिला बोर्ड के तथा विहार विधान सभा के सदस्य रहे। बिहार विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष कुलपति तथा राज्य यातायात निगम के अध्यक्ष भी रहे। रेवरा (गया) किसान सत्याग्रह में आपकी हजारों एकड़ जमीन चली गयी। आप दिवंगत हो चुके हैं।

रायबहादुर कुंवर कवीन्द्र ना० सिंह

काशी राज्य प्राप्त कर्त्ता गौतम गोत्रीय ब्राह्मण श्री मनसाराम मिश्र के भाई श्री दसाराम के 7वें पुश्त में जगत गंज, वाराणसी में आपका जन्म हुआ था। आपके पूर्वज श्री जगतसिंह के नाम पर ही वाराणसी का जगतगंज मुहल्ला बसा हुआ है। आप प्रायः सभी सामाजिक सभाओं में सम्मिलित हुआ करते थे। 1938 में पटना में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता आपने ही की थी। 1944 ई० के बाद आपका देहान्त हो गया।

श्री रामनन्दन प्र० ना० सिंह

सेहरा रियासत (पटना) के भू० पू० अधिपति। कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री न्यायभट्ट की 18वीं पीढ़ी में आपका जन्म हुआ था। दानापुर लोकल बोर्ड के चेयरमैन तथा पटना जिला बोर्ड के वर्षों सदस्य रहे। आपके सरस्वती पुस्तकालय में चारों वेद, अठारहों पुराण, वेदान्त, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, न्याय तथा सांख्य की संस्कृत तथा हिन्दी पुस्तकें रही हैं। आप समाज प्रेमी थे। आपने अपने दत्तक पुत्र के उपनयन के समय अथर्व ब्राह्मण परिचय, सशिख वचनमत समीक्षा आदि छोटी-छोटी पुस्तकों का प्रकाशन भी किया था। आपकी शादी हथुआ महाराजा की बहन से हुई थी। आप दिवंगत हो चुके हैं।

श्री मदनधारी सिंह

धरहरा (पटना) के भू० पू० जमींदार, कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री लालधारी सिंह के सुपुत्र। आप श्री न्यायभट्ट की 20वीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केन्द्रीय धारा सभा और संविधान सभा के सदस्य, दानापुर सहयोग समिति के सचिव, सहकारिता बैंक के निदेशक, जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष तथा अनेक संस्थाओं के सदस्य के रूप में देश तथा समाज सेवा में आप संलग्न रहे। आप दिवंगत हो चुके हैं।

राजा चन्द्रेश्वर प्र० सिंह

चैनपुर (छपरा) के एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री विन्देश्वरी प्र० सिंह के सुपुत्र तथा मकसूदपुर (गया) के भू० पू० राजा। उत्तराधिकार में पहले बड़े भाई श्री राजेश्वरी प्र० ना० सिंह राजा हुए थे—बाद में आप राजा हुए। 1925 ई० में खलीलाबाद (बस्ती) में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता आपने ही की थी। 1937 ई० में अपने रैयतों को 98 हजार की छूट मालगुजारी में दी थी। आप समाज प्रेमी थे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री बदरी ना० सिंह घाटवाल

वमनगामा (देवधर) निवासी, विष्णु वर्द्धन गोत्रीय ब्राह्मण रायबहादुर जगदीश प्र० सिंह के सुपुत्र। आप श्री जालभट्ट की 15वीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे। जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा संस्थान परगना के अध्यक्ष तथा बिहार विधान सभा के सदस्य रहकर समाज तथा देश की सेवा में सक्रिय संलग्न थे। आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके नाम पर वमन गामा में इन्टर कालेज की स्थापना हुई है।

श्री राम सेवक सिंह

चक्का रसूलपुर (सीतामढ़ी) निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। सीतामढ़ी में जमीन और रुपये देकर आपने राम सेवक महिला महाविद्यालय की स्थापना की, जो आज भी संचालित है। आपके पुत्र श्री राम सकल सिंह विज्ञान महाविद्यालय (सीतामढ़ी) तथा संजय विधि महाविद्यालय के संस्थापक तथा संजय विधि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य हैं। पुत्री डा० रंगीला सिंह मुज़फ्फरपुर की प्रसिद्ध चिकित्सिका हैं।

श्री जयदेव नारायण सिंह बी० ए०, बी० एल०, साहित्याचार्य

चैनपुर (छपरा) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। छपरा के वरिष्ठ अधिवक्ता, संस्कृत के विद्वान तथा समाज सेवी के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। वर्षों छपरा जिला बोर्ड के अध्यक्ष तथा बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य रह चुके हैं। नरहन राज्याधिपति दीवान बहादुर कामेश्वर ना० सिंह के आप दामाद हैं। आप छपरा में ही निवास करते हैं।

महाराजाधिराज द्विजराज डा० विभूति ना० सिंह

25/11/27 को सूर्यपुरा (आजमगढ़) में जन्म। 24/6/34 को तत्कालीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी नरेश महाराजा सर आदित्य नारायण सिंह द्वारा दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिए गये। सर आदित्य ना० सिंह के निधन (4/4/39) के समय आप नाबालिग थे, इसलिए शासन कार्य एक परिषद् करती थी। 11/7/47 को आपने शासन अपने हाथ में लिया। 5/5/48 को छपरा में मांझा राज्य के श्री राघवेन्द्र सुरेन्द्र ना० शाही की पुत्री से आपकी शादी हुई। आपने राज्य में प्रतिनिधि मूलक सरकार की स्थापना की 15/10/49 को देश के व्यापक हित में पृथक अस्तित्व उ० प्र० में विलीन कर दिया। आप लोकप्रिय शासक रहे। आप स्वतंत्र काशी राज्य के अन्तिम शासक हुए।

आप संस्कृत के विद्वान तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। हिन्दू वि० वि० वाराणसी के कुलाधिपति तथा काशीस्थ विश्वनाथ मन्दिर के अध्यक्ष हैं।

आप जब काशी में निकलते हैं, सर्वत्र जनता 'हर-हर महादेव' के जयकार के साथ आपका स्वागत करती है। काशी के 'ऋषिकेश पंचांग' के मुख पृष्ठ पर आप के नाम के साथ 'द्विजराज' विशेषण का प्रयोग होता आ रहा है। आपके दोनों मामू (1) स्व० पं० जानकी रमण मिश्र (भू० पू० राजस्व मंत्री, बिहार) तथा (2) पं० रामनन्दन मिश्र पक्के राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता सेनानी तथा अध्यात्मवादी रहे हैं।

राजा त्रिविक्रम नारायण सिंह

औसान गंज (वाराणसी) राज्य के भू० पू० अधिपति कौंडिन्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण स्व० राजा केदारनाथ सिंह के सुपुत्र। अ० भा० तिलक सेवा केन्द्र के चार वर्षों तक अध्यक्ष रह चुके हैं। रोहिणिया (वाराणसी) में पं० अनन्त शास्त्री फड़के पुराणाचार्य की अध्यक्षता में संपन्न अ० भा० अयाचक ब्राह्मणों की सभा में स्वागताध्यक्ष भी रह चुके हैं। अन्य सामाजिक गतिविधियों में भी सम्मिलित होते रहते हैं। आप न्यायभट्ट के 18वें पुश्त में उत्पन्न हैं।

आपकी पुत्री की शादी गोही (समस्तीपुर) निवासी प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मदन मोहन शर्मा के पुत्र से है।

महारानी दुर्गेश्वरी शाही

जन्म स्थान—साम्बे (नवादा)। 1950 में महाराजा गोपेश्वर शाही (हथुआ) से आपकी शादी हुई। 29 वर्ष की अल्प-आयु में ही आपके पति का देहान्त हो गया। आप पर्दा प्रथा विरोधी रही हैं। पति की मृत्यु के बाद आप महारानी के रूप में स्वयं राज्य शासन निपुणता के साथ चलाने लगी। पटना में निवास करती हुई, हथुआ वनस्पति कारखाना, हथुआ; हथुआ मेन्टल्स एण्ड ट्यूब्स, जरतीडीह, हथुआ मार्केट छपरा, हथुआ मार्केट कदम कुआं पटना आदि अनेकों व्यवसायों का संचालन करती हैं। आपके एक पुत्र तथा एक पुत्री हैं। आपके पति के नाम पर हथुआ में कालेज संचालित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा खगेन्द्र प्रताप बहादुर शाही

तमकुही (देवरिया) के कुंवर जीतेन्द्र प्रतापशाही, वगौछिया मूल के वत्स गोत्रीय वाह्मण के सुपुत्र। तमकुही नरेश राजाधिराज राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही की मृत्यु के वाद आप राज्य के उत्तराधिकारी हुए। आप समाज प्रेमी तथा मिलनसार हैं।

आप अ० भा० तिलक सेवा केन्द्र (काशी) के संपादक और अध्यक्ष हैं तथा 'तिलक सन्देश' के प्रकाशक हैं।

जीतेन्द्र स्मारक इन्टरमीडियट कालेज नारायणपुर आर० के० पी० एस० विद्यालय गजिया, क्षत्रपति लघु माध्यमिक विद्यालय वरहन रामपुर तथा लोकेश्वरी कन्या विद्यालय रामपुर वरहन के संस्थापक तथा संचालक हैं। आप तमकुही के अतिरिक्त लक्सारोड, वाराणसी के तमकुटी भवन में भी निवास करते हैं।

कुमार कृष्ण वल्लभ ना० सिंह

रामीवीधा स्टेट (गया) के भू० पू० अधिपति राय वहादुर ऐदल सिंह के सुपुत्र। आप रामीवीधा के वबुआ जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्तीय सर संघ चालक, डा० हेडगेवार स्मारक समिति, पटना के अध्यक्ष और अशोक सिनेमा (पटना) के स्वामी हैं।

भागलपुर में अ० भा० हिन्दू महासभा की अध्यक्षता भी आपने की थी, जब अन्य हिन्दू नेताओं को नजरबन्द कर दिया गया था। उस समय आप अध्यक्षता करते हुए गिरफ्तार कर लिए गये थे।

नालन्दा कालेज के सचिव, अयोध्या से सीतामढ़ी जाते हुए बारात (राम बारात) की स्वागत के लिए वनी समिति के अध्यक्ष तथा 7/11/82 को पटना में संपन्न विराट हिन्दू सम्मेलन की स्वागत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप सामाजिक सभाओं में भी सम्मिलित होते रहते हैं। विश्व हिन्दू परिषद् की विहार शाखा के अध्यक्ष भी हैं।

राजा जगत किशोर नारायण सिंह

मकसूदपुर (गया) राज्य के अधिपति। आचार्य विनोवा के भूदान आन्दोलन में सात हजार एकड़ जमीन आपने दी। वर्षों भारतीय संसद के सदस्य रह कर 1984 ई० में अवकाश ग्रहण किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज्यपाल तथा राजदूत

पद्म विभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह० एम० ए० (प्रथम श्रेणी में प्रथम).

बीरसिंहपुर ड्योढ़ी (समस्तीपुर) के प्रसिद्ध रईस श्री सरयू प्र० ना० सिंह एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण के सुपुत्र तथा 24 व० महेश्वर प्रा० ना० सिंह के अनुज। दत्तक पुत्र के रूप में आप सुरसंड (सीतामढ़ी) राज्याधिपति बने।

मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष, बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य, विधान सभा के सदस्य, पटना विश्वविद्यालय के कुलपति, नेपाल में भारत के राजदूत, पंजाब के राज्यपाल, भाखड़ा नांगल बोर्ड के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आदि विभिन्न पदों पर रहकर अपनी विद्वता, नीतिज्ञता तथा जन सेवा का असाधारण परिचय दे चुके हैं।

आप ब्राह्मणों की एकता तथा अन्तर्ब्राह्मण विवाह के समर्थक रहे हैं।

आपकी पुत्रियों की शादी त्यागी और सरयू पारीण ब्राह्मण परिवारों में है तथा एक पुत्र की शादी सारस्वत ब्राह्मण (राजा पशुपति नाथ मल्लिया, सिरसौल, वर्दवान) परिवार में है।

पंजाब के राज्यपाल रहते समय महिपाल ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा ने 17/2/53 को दिल्ली के टाउनहाल में आपका स्वागत तथा अभिनन्दन किया था तथा प्रीति भोज दिया था, जिसमें दो पुत्रियों के साथ सम्मिलित होकर आपने एकता का परिचय दिया था।

1981 ई० के अप्रैल में उत्तर प्रदेश प्राच्य ब्रह्म परिषद्, लखनऊ के मुख्य अतिथि रहकर भी ब्राह्मणों की एकता का परिचय आपने दिया था। आपकी पुत्री श्रीमती प्रतिभासिंह संसद सदस्या रह चुकी हैं।

श्री मदनमोहन सिंह गजाधर बैरिस्टर

मॉरीशस (द० अफ्रीका) निवासी, प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० तिलक सिंह के वंशज। विधि विशेषज्ञ।

मॉरीशस ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन के अध्यक्ष तथा भारत में मॉरीशस के हाई कमिश्नर रह चुके हैं। अब न्यायालय में वकालत करते हैं।

आपकी पुत्री की शादी दिघरा (समस्तीपुर) निवासी श्री रमानाथ शर्मा भू० पू० संयुक्त श्रमायुक्त, बिहार के पुत्र अभय के साथ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेता-सर्वोदय

श्री रामदेव ठाकुर

भुस्कौल (समस्तीपुर) में भोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1897 ई० में जन्म। 1920 में भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर में बी० ए० में पढ़ना छोड़कर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। 1921, 1922 तथा 1942 में कई वर्षों तक स्वतंत्रता संग्राम में जेल में रहे। 1923 से ही आप खादी के काम में लग कर खादी और चर्खा का प्रचार-प्रसार करते रहे। कई वार विहार खादी ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष तथा मंत्री पद पर रहे। आचार्य विनोबाभावे के भूदान आन्दोलन में 27 महीने उनके साथ पैदल यात्रा में रहे। विनोवा जी ने आपको हनुमान की संज्ञा दी थी। अम्बर चर्खा संचालक रहने पर 1957 से 1959 के बीच तेरह हजार गामों में खादी कार्यक्रम का विस्तार किया। विहार राज्य बुनियादी शिक्षा परिषद के सदस्य तथा विहार खादी ग्रामोद्योग वोर्ड के भी सदस्य रहे। 'ग्रामोदय' के संपादक भी थे। स्पष्ट-वादिता, सत्यप्रियता, दया, साहस और आत्म त्याग आपके नैतिक गुण थे। आपकी श्रम में निष्ठा थी। आप किसी ऊंचे पद पर रहते हुए भी अपना सामान—विछावन-ओढ़ना तक किसी को ढोने न देकर स्वयं ले चलते थे और जलावन तक चीर डालते थे। अन्त समय तक सर्वोदय कार्य में लगे रहे। दिनांक 10 जून 1982 को पटना जनरल अस्पताल में हृदय गति रुक जाने से आपका देहान्त हो गया।

आपकी मृत्यु पर आचार्य विनोवाभावे, डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री जयप्रकाश नारायण, श्री वैकुंठलाल मेहता, श्री महेश प्र० सिंह तथा अन्य प्रमुख नेताओं ने शोक प्रकट किया। विहार खादी ग्रामोद्योग संघ ने 'रामदेव स्मृति ग्रंथ' नामक वृहत ग्रंथ प्रकाशित कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आपके एकमात्र पुत्र श्री जयनन्दन ठाकुर हैं।

श्री शिव नारायण मिश्र

सागरपुर (मधुवनी) में सहदोलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आप पक्के गांधीवादी तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। शोधपुर (बंगाल) में स्व० सतीचन्द्र दास गुप्त के अधीन आश्रम में आप काम कर चुके थे। वहां से आकर अपने गांव में भी आश्रम बनाकर काम करने लगे। गांव-गांव घूमकर गांधी सिद्धान्त का प्रचार करते रहे। 1932 के डंडी मार्च में कई सभाओं का आयोजन आपने किया था। 1942 के स्वतंत्रता संग्राम में उस समय के दरभंगा जिले में काम करते रहे। स्वतंत्रता संग्राम में जेल भी गये। जेल में आश्रम से फल आदि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाने पर पहले अपने भतीजे श्री श्याम और श्री रमाकान्त झा (बाद में प्राचार्य) आदि किशोरों को खिलाकर तभी आप खाते थे। 1943 में पटना कैम्प जेल से पेरौल पर रिहा होकर अपनी पुत्री शान्ति की शादी श्री इन्द्र दीप सिंह (अब कम्युनिस्ट पार्टी के अ० भा० नेता तथा भू० पू० सांसद) के साथ की थी।

आपका एक मिनट समय भी बेकार नहीं जाता था। आसन, स्वाध्याय, भाषण आदि में समय व्यतीत होता था। आप गांधी विचारधारा के राजनीतिज्ञ थे।

श्री वैद्यनाथ चौधरी

बरेटा (पूर्णियां) में जन्म। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, सर्वोदय नेता तथा कांग्रेसी नेता के रूप में आप विख्यात रहे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। टीका-पट्टी (पूर्णियां) में आश्रम स्थापित कर रचनात्मक कार्यों में लगे रहे। वर्षों प्रादेशिक कांग्रेस के सचिव, अ० भा० कांग्रेस के सदस्य तथा बिहार खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के सदस्य रहे। विनोबा जी के भूदान आन्दोलन में 1953-54 में आपने अपना छठा हिस्सा 85 एकड़ जमीन ग्राम दान में दिया। अन्त में आपने अपना पूरा हिस्सा भूदान में दे दिया। सिद्धान्त और अनुशासन पर आपने कभी किसी से समझौता नहीं किया—क्योंकि आपको पद का कोई मोह कभी नहीं रहा। 1976 में आपका देहान्त हो गया।

आपके नाम पर रानीपतरा (पूर्णियां) में आवासीय बालिका उच्च विद्यालय संचालित है।

श्री राम प्रवेश शास्त्री

सोहांव (बलिया) निवासी, वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप सुप्रसिद्ध सर्वोदय विचारक तथा मानस मर्मज्ञ विद्वान हैं। गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, लखनऊ के मंत्री तथा सोहांव (बलिया) स्थित सर्व जनकल्याण बालिका विद्यापीठ के अध्यक्ष हैं।

श्री नन्दकिशोर ठाकुर

पीअर (मुजफ्फरपुर) निवासी, पिलखिमैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। नरसिंहपुर खादी भंडार के सचिव रह चुके हैं और अब अध्यक्ष हैं। बिहार खादी संस्था संघ के अध्यक्ष भी हैं।

श्री जयलोक ठाकुर

भुस्कौल (समस्तीपुर) निवासी, भोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के सचिव तथा समस्तीपुर अनुमंडलीय खादी ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष के रूप में खादी की सेवा में संलग्न हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेता-क्रांतिकारी

श्री बैकुंठ शुक्ल

जलालपुर (वैशाली) में मामखोर के शुक्ल मूल के गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1912 ई० में आपका जन्म हुआ था। शिक्षा समाप्ति के बाद आप प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बने। आपका रहन-सहन साधारण तथा एक धार्मिक व्यक्ति जैसा था। प्रारंभ में देश की स्वतंत्रता के लिए गांधी जी की अहिंसात्मक नीति में विश्वास रखते थे। बाद में क्रांतिकारियों की नीति को ठीक मानकर उनके संपर्क में आये। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट आर्मी के सरदार भगत सिंह और श्री चन्द्रशेखर आजाद आदि के कट्टर समर्थक बन गये। लाहौर षड्यंत्र नाम से अंग्रेजी सरकार ने केस चलाया और सरदार भगत सिंह आदि गिरफ्तार कर लिए गये। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के केन्द्रीय समिति के सदस्य श्री फणीन्द्रनाथ घोष ने (जो बेतिया में एक दुकान चलाता था) मुखबिर बनकर सारा भंडा फोड़ दिया। सरदार भगत सिंह आदि को 22 मार्च, 1931 को फांसी हो गयी। अब क्रांतिकारियों ने फणीन्द्र घोष जैसे कलंक को मिटाने का निश्चय किया और यह भार आपको सौंपा गया। आपके गांव का गोपाल शुक्ल दरभंगा में पढ़ता था—वहीं से उसकी सायकिल और उसी की एक धोती लेकर बेतिया पहुंचे और 9 नवम्बर 1932 को आपने उसकी हत्या कर क्रांतिकारियों के कलंक को धो दिया। सायकिल और उस पर रखी धोती छोड़ आप भागने में सफल हो गये। धोती के चिह्न से पुलिस को गोपाल शुक्ल का पता चला—उसने सारा भंडा फोड़ दिया और पुलिस की सहायता की। आप गिरफ्तार कर लिए गये—केस चला और आपको 22 वर्ष की अवस्था में 14 मई, 1934 को गया जेल में फांसी दे दी गयी। पुरस्कार में गोपाल शुक्ल को अंग्रेजी सरकार ने दरोगा बना दिया।

आपकी पत्नी श्रीमती राधिका देवी 52 वर्षों से वैधव्य जीवन बिता रही हैं। इधर आकर उन्हें 610 रु० पेन्शन सरकार दे रही है और 1986 में सरकार द्वारा आवास देने की घोषणा की गयी है। 1984 में शाहादत का अर्द्ध शताब्दी समारोह हाजीपुर में बनाया गया।

श्री योगेन्द्र शुक्ल

1898 ई० में आपका जन्म जलालपुर, वैशाली में मामखोर के शुक्ल मूल के गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप बिहार के क्रांतिकारियों के सिरमौर थे। देश को दासता से मुक्ति के लिए क्रांतिकारी मार्ग को ही चुना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1920 में काशी में आचार्य कृपलानी के आश्रम में सम्मिलित हुए । प्रिंस आफ वेल्स के विरुद्ध पर्चा बांटने के अभियोग में श्री कृपलानी के साथ जेल गये। जेल से छूटने पर पुनः देश सेवा में लग गये ।

7/9/29 को हुए मौलनियां डकैती केस तथा मोतीहारी षड्यंत्र केस आपके विरुद्ध चलाया गया—आप फरार थे । इस बीच एक दिन गंड के पुल (हाजीपुर) पर दोनों ओर से घिर जाने पर भी आप सायकिल सहित गंडक में कूदकर निकल भागने में सफल हो गये और 11/6/30 तक फरार ही रहे। 11 जून 30 को मलखाचक (सारण) में सुप्तावस्था में आप गिरफ्तार कर लिये गये । आपकी गिरफ्तारी के लिए एक स्पेशल ट्रेन पर सवार होकर अधिकारियों का दल निकला और बिना स्टेशन के ही गाड़ी को खड़ी कर मलखाचक में आपको गिरफ्तार कर लिया गया। 22 वर्ष की कठोर कारावास की सजा देकर आपको अंडमान भेज दिया गया।

प्रान्तीय स्वराज्य होने और अपने प्रान्त की जेल में आ जाने पर डा० श्री कृष्ण सिंह की सरकार ने आपको जेल मुक्त किया। यद्यपि अंग्रेज गवर्नर ने इसमें बाधा डाली थी—पर डा० श्रीकृष्ण सिंह द्वारा इसी प्रश्न पर त्याग पत्र दे देने से अंग्रेज गवर्नर को झुक जाना पड़ा ।

1942 के स्वतंत्रता संग्राम में भी आपने भाग लिया और गिरफ्तार कर हजारीबाग जेल में रखे गये। उसी जेल में प्रसिद्ध समाजवादी नेता पं० रामनन्दन मिश्र और श्री जयप्रकाश नारायण भी थे । एक योजना के अनुसार आप लोग ठीक दीपावली के दिन ही जेल से निकल भागे। उपर्युक्त नेता द्वय को मीलों जंगल में कन्धे पर आप ले गये। बुढ़ापे में भी आपकी वीरता सराहनीय थी । बाद में आप पुनः बन्दी बना लिए गये और समय पर छूटे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आप बिहार विधान परिषद् के सदस्य बने। नवम्बर 1966 में आपका देहान्त पटना मेडिकल कालेज अस्पताल में हो गया ।

नेता (गैरविधायक)

श्री वैद्यनाथ सिंह

आप औरंगाबाद, वाराणसी निवासी गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण थे। 1888 ई० में आप कांग्रेस के सदस्य हुए और 1905 में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की स्थापना की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1911, 1921, 1930, 1932 तथा 1942 में देश की स्वतंत्रता के लिए जेल गये। पं० नेहरू आपको दादा कहा करते थे। 1955 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री विश्वनाथ सिंह

आप औरंगाबाद, वाराणसी निवासी थे। देश की स्वतंत्रता के लिए 1911, 1914 तथा 1930 में जेल गये। आपको एक बार दो गोली भी लगी थी। नमक सत्याग्रह के लिए आपने अपनी जमीन भी दी थी।

पं० रामचन्द्र शर्मा

गया जिले के निवासी, स्वतंत्रता सेनानी तथा किसान नेता और हिन्दी के आप विद्वान थे। वर्षों गया जिला बोर्ड में आप चेअरमैन रहे। वर्षों पूर्व आपका देहान्त हो गया। आपके पुत्र श्री राम सेवक शर्मा अपर समाहर्त्ता पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री दरोगा प्र० चौधरी

अमचूड़ा पूर्णियां के आप निवासी थे। पूर्णियां जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, प्रादेशिक कांग्रेस के महासचिव तथा अ० भा० कांग्रेस के सदस्य रह चुके थे। जनवरी 1944 में आपका देहान्त हो गया।

पं० श्री नारायण ठाकुर

बहेड़ा जाहीद, सीतामढ़ी निवासी, हिलसरिया मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण आप थे। आप प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। मुजफ्फरपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष तथा बिहार प्रादेशिक कांग्रेस के वर्षों महासचिव रहे। आप सर्वोदय विचारधारा के नेता थे। दिसम्बर 1969 में आपका देहान्त हो गया।

आपकी पौत्री श्रीमती सुदामा चौधरी बिहार विधान सभा की सदस्या रह चुकी हैं।

आपके नाम पर 'पं० श्री नारायण ठाकुर बालिका उच्च विद्यालय' बहेड़ा जाहीद में संचालित है।

डा० शिव पूजन राय

शेरपुर (गाजीपुर) में 1905 ई० जन्म। स्वतंत्रता संग्राम में 18 अगस्त, 1942 को गोली खाकर शहीद हो गये।

पं० रामनन्दन मिश्र

रघुनाथ पुर (दरभंगा) निवासी सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पंडित राजेन्द्र प्र० मिश्र के सुपुत्र तथा बिहार के भू० पू० राजस्व मंत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० जानकी रमण मिश्र के अनुज, 1905 ई० में जन्म। स्वतंत्रता संग्राम तथा पर्दा बहिष्कार आन्दोलन में अग्रगण्य तथा प्रमुख राष्ट्रीय नेता के रूप में विख्यात रहे हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में कई बार जेल गये। समाजवादी और सर्वोदय विचार धारा आपकी रही है। पर्दा बहिष्कार आन्दोलन के क्रम में मझौलिया (दरभंगा) में 'मगन आश्रम' तथा 'महिला विद्यापीठ' की स्थापना भी आपने की थी।

1942 के स्वतंत्रता संग्राम के समय आप हजारीबाग जेल में रखे गये थे—उसी जेल में प्रख्यात क्रांतिकारी पं० योगेन्द्र शुक्ल और श्री जय प्रकाश नारायण भी थे। एक योजना के अनुसार श्री योगेन्द्र शुक्ल और श्री जय प्रकाश ना० के साथ हजारी बाग जेल से निकल भागने में सफल हुए थे—लेकिन कुछ दिनों के बाद आप पुनः गिरफ्तार हो गये तथा इस बार आपको लाहौर फोर्ट जेल में रखा गया। वहां आपको काफी यातनाएं दी गयी। जेल से छूटने पर भी देश सेवा में लगे रहे।

राजनीतिक छल प्रपंचों से दूर रहकर वर्षों से बंगाली टोला, लहेरिया सराय में निवास करते हुए आध्यात्मिक चिन्तन में लीन रहते हुए सन्त का जीवन व्यतीत करते हैं। आपने कई आध्यात्मिक पुस्तकें भी लिखी हैं।

महाराजा विभूति नारायण सिंह (भू० पू० काशी नरेश) आपके भगिना हैं।

श्री केशव प्र० शर्मा

डेढ़गामा (गाजीपुर) निवासी। रोयाल सोशलिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी और लेनिनवादी) के महासचिव। छः वर्षों तक नजरबन्दी का जेल जीवन उत्तर प्रदेश, बंगाल, राजपुताना आदि में 1938 के आसपास व्यतीत कर चुके हैं। गाजीपुर स्थित स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ (महाविद्यालय) के आप संस्थापक हैं तथा वर्तमान में सचिव हैं।

नेता (मंत्री, विधायक, सांसद आदि)

डा०सर गणेशदत्त सिंह

13/1/68 को छतियाना (पटना) में याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। 20 वर्ष की उम्र में 5वां नामांकन हुआ। प्रतिभा संपन्न थे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1904 में वकालत पर कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत प्रारंभ किया। पटना उच्च न्यायालय की स्थापना होने पर पटना में वकालत करने लगे 1911 ई० में बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य चुने गये और 1923 में बिहार और उड़ीसा के स्वायत्त शासन मंत्री (प्रधान मंत्री) बने तथा लगातार 14 वर्षों तक उस पद पर रहे। विधान सभा की स्थापना होने पर विधान सभा के सदस्य भी चुने गये थे। मंत्री पद पर रहते हुए वेतन का 3/4 अंश विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को दान कर देते थे और 1/4 अंश ही अपने खर्च के लिए रखते थे। आप आधुनिक बिहार के निर्माताओं में एक थे।

आपने पटना विश्व विद्यालय को चार लाख रुपये का दान दिया था। 43 हजार रुपये अलग से भूमिहार ब्राह्मण छात्रों के लिए दिया था। मंत्रित्व काल में 1925 ई० में पटना मेडिकल कालेज की स्थापना, दरभंगा में मेडिकल स्कूल, रांची में मानसिक अस्पताल, पटना में आयुर्वेदिक और तिब्बती स्कूल तथा इटकी में यक्ष्मा सेन्टोरियम आदि खुलवाये।

बिहार उड़ीसा प्रदेश कांग्रेस की 1/7/1917 की बैठक में भी आपने भाग लिया था।

सामाजिक सभाओं में भी भाग लिया करते थे। 1927 में मेरठ में अयाचक ब्राह्मणों की सभा का सभापतित्व आपने किया था तथा मुंगेर में 1929 में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता भी आपने की थी।

1941 में पत्र लिखकर महात्मा गांधी ने आपकी सेवा की सराहना की थी।

प्रयाग से प्रकाशित मासिक 'चांद' ने अपने फरवरी 1936 के अंक में सरकारी पद और जन सेवा शीर्षक संपादकीय टिप्पणी में इस प्रकार आपकी सेवा के सम्बन्ध में लिखा था :—

"यदि किसी व्यक्ति के हृदय में जन सेवा की सच्ची भावना हो तो वह प्रत्येक परिस्थिति में अपनी अभिलाषा की पूर्ति कर सकता है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण बिहार सरकार के मंत्री सर गणेश दत्त सिंह के कार्यों से लग सकता है। आपने मंत्री पद स्वीकार करने के पश्चात् यह घोषणा कर दी कि जितना वेतन मिलेगा उसका केवल एक चौथाई आप लेंगे और शेष सर्व साधारण के हितकारी कार्यों में लगा देंगे। आपकी इस घोषणा ने जनता पर बड़ा प्रभाव डाला और विरोधी तथा पक्षपाती सभी प्रशंसा करने लगे। सर गणेश दत्त ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन पूर्ण रूप से किया और आज बिहार की बहुसंख्यक शिक्षा संस्थाएं आपकी उदारता का लाभ उठा रही हैं। पटना विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपये देकर आपने एक ट्रस्ट स्थापित कराया है, जिससे बिहार के निर्धन और कुशाग्र बुद्धि के छात्रों को इस शर्त पर छात्र वृति दी जाती है कि जब वे शिक्षा समाप्त कर धनोपार्जन करने लगें तो छात्र वृत्ति के रूप में पाये धन को पुन फंड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में वापस कर दें। हाल ही में आपने इस फंड में 43 हजार रुपये और जमा कराया है, जिसमें से केवल भूमिहार ब्राह्मण जाति के छात्रों को छात्रवृत्तियां दी जायेंगी। इस प्रकार सर गणेशदत्त सिंह ने सरकारी पद को देश सेवा का एक बड़ा साधन बना डाला है और अन्य उच्च पदस्थ सरकारी कर्मचारी भी इच्छा करें तो इसी तरह त्यागभाव का परिचय देकर जनता का बहुत कुछ हित साधन कर सकते हैं।"

12/1/42 को प्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिक 'नवशक्ति' (पटना) ने सर गणेशदत्त सिंह के 75वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी सेवाओं का उल्लेख इस प्रकार किया था :—"सर गणेश दत्त सिंह बिहार के उन नर रत्नों में हैं जिन्होंने अपने प्रान्त की उन्नति के लिए अत्यन्त अनुकरणीय कार्य किये हैं और उनका आदर्श जीवन और त्याग सर्वथा प्रशंसनीय है। आपका राजनैतिक विचार उग्र न होकर बराबर नरम रहा, परन्तु अपनी विचारधारा के अनुसार आप देश सेवा में सदा संलग्न रहे। शिक्षा के क्षेत्र में तो आपका कार्य और आपका दान अद्वितीय है।"

आपका देहान्त 1943 ई० में हो गया।

11/5/53 को पटना में आपके चित्र का अनावरण करते हुए भारत के भू० पू० गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी ने भाषण करते हुए कहा था—"आज बिहार के एक ऐसे महापुरुष के चित्र का अनावरण किया जा रहा है जिसने सादगी और सरलता का आदर्श जीवन बिताकर विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए चार लाख रुपये का दान दिया था। सर गणेश वस्तुतः एक सुयोग्य मंत्री, शासक, नेता, शिक्षा प्रेमी और मानवता के अखंड पुजारी थे।"

बिहार के तत्कालीन राज्यपाल तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री आर० आर० दिवाकर ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था :—सर गणेश ने अपनी प्रतिभा और अध्यवसाय से बिहार-उड़ीसा का मंत्रित्व प्राप्त किया था। पर सबसे बढ़कर उनके जीवन का उज्जवल पहलू यह है कि उन्होंने जनता की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था।"

15/1/84 को आपकी 117वीं जयन्ती के अवसर पर अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए बिहार के तत्कालीन शिक्षामंत्री प्रो० नागेन्द्र झा ने आपके सम्बन्ध में इस प्रकार कहा :—"सर गणेशदत्त बिहार की विभूति थे। उन पर जो जातिवादी होने का आरोप लगाते हैं वे अन्याय करते हैं क्योंकि वे विशुद्ध राष्ट्रवादी समाज सेवक थे।"

13/1/85 को 118वीं जयन्ती के अवसर पर भाषण करते हुए तत्कालीन बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री राधानन्दन झा ने कहा—"सर गणेश दत्त बिहार के ही नहीं अपितु देश के महान सपूत थे। यदि बिहार का संसदीय इति-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हास लिखा जायेगा तो सर गणेशदत्त का नाम सबसे ऊपर होगा। विहार की संसदीय प्रणाली जब शैशवावस्था में थी तो सर गणेश दत्त ने ही अपनी मेधा से उसे पल्लवित और पुष्पित किया था।"

आपकी स्मृति में सर गणेशदत्त कालेज, वेगूसराय; सर गणेश स्मारक कालेज पटना; गणेशदत्त महिला कालेज, सर गणेश पाठशाला, सर गणेश रोड, सर गणेश छात्रावास आदि संस्थाएं स्थापित हैं।

बाबू रामदयालु सिंह

गंगेया (मुज्जफ्फरपुर) निवासी, मलितवार मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री चन्द्रहास सिंह के सुपुत्र। 1889 ई० के कार्तिक कृष्ण द्वितीया को जन्म। कलकत्ता वि० वि० से बी० ए० तथा प्रयाग वि० वि० से एल० एल० बी० करने के बाद मुजफ्फरपुर में वकालत प्रारंभ कर वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। आप अत्यन्त धार्मिक तथा चरित्रवान व्यक्ति और नेता थे। आप भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा भाषण की कला में निपुण थे।

1923 में मुजफ्फरपुर नगरपालिका के उपाध्यक्ष तथा 1924 में मुजफ्फर पुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष और 1926 में विहार-उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य चुने गये।

1930 के नमक सत्याग्रह में जेल गये। 1932 में प्रान्तीय डिक्टेटर की हैसियत से जेल गये—इस बार आपकी पत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी (जिनका देहान्त 21/4/65 को हुआ) भी आपके साथ गिरफ्तार होकर हजारी बाग जेल में रहीं।

जेल से छूटने पर प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। 1934 के भूकम्प में मुजफ्फरपुर जिले के प्रभारी रहकर सहायता कार्य का संचालन किया। 1929 तथा 1935 में प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन की अध्यक्षता आपने की। मुजफ्फरपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। 1937 में विहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर 23/7/37 को विहार विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित होकर मृत्यु पर्यंत उक्त पद पर रहे।

आप किसी भी सभा में अपने भाषण से श्रोताओं को हंसा या रुला सकते थे। 1924 ई० में तुमकुही के राजाधिराज राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही की अध्यक्षता में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा (मुजफ्फरपुर) में विद्या-कोष के लिए अपील करते समय आप स्वयं रूमाल से अश्रु पोंछते थे और उधर सारी सभा आंसू पोंछ रही थी तथा अध्यक्ष भी। आप धोती, कुर्त्ता और गोल टोपी ही धारण करते थे। आप संस्कृति के रक्षक, समाज के गौरव तथा पूर्ण धार्मिक व्यक्ति थे। प्रयाग के झूसी में तथा हाजीपुर के गंगा-गंडक किनारे निवास कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यात्म चर्चा में ही लगे रहते थे।

आप ब्राह्मणत्व के गौरव थे। मुजफ्फरपुर में सर्व ब्राह्मण सम्मेलन का सभापतित्व भी आपने किया था।

गन्नीपुर (मुजफ्फरपुर) में ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना कर आपने संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था भी की थी। यह आपके संस्कृत शिक्षा प्रेम का उदाहरण था। इसी स्थान पर आपकी स्मृति में 'रामदयालु सिंह महाविद्यालय' संचालित है।

आपका देहान्त 55वर्ष की आयु में 28/11/44 को हो गया।

आपके नाम पर रामदयालु सिंह महाविद्यालय के निकट रामदयालु नगर स्टेशन भी है।

बिहारी केसरी डा० श्री कृष्ण सिंह

आपका जन्म माऊ (मुंगेर) में पं० वासुदेव तिवारी की 11वीं पीढ़ी में शिरियार मूल के कश्यप गोत्रीय श्री हरिहर सिंह के सुपुत्र के रूप में 20 अक्तूबर 1888 ई० को हुआ था।

बड़े भाई श्री देवकी नन्दन सिंह की छत्रछाया में शिक्षा मिली। एम०ए० बी० एल० कर मुंगेर में वकालत प्रारंभ किया। 1920 में असहयोग आन्दोलन छिड़ने पर वकालत छोड़कर देश की स्वाधीनता संग्राम में लग गये। स्वतंत्रता संग्राम में कुल मिलाकर दस वर्ष जेल में रहे।

1923 से जीवन पर्यन्त अ० भा० कांग्रेस के सदस्य चुने जाते रहे। 1927 में बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य तथा स्वराज्य पार्टी के नेता और 1936 में प्रादेशिक कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। 1937 में बिहार विधान सभा में कांग्रेस दल के नेता तथा बिहार के प्रधान मंत्री बने। 1946, 1952 तथा 1957 में पुनः बिहार कांग्रेस विधायक दल के नेता तथा मुख्य मंत्री निर्वाचित होते रहे। लगातार 23 वर्षों तक मृत्यु पर्यन्त बिहार के मुख्य मंत्री रहकर बिहार को आगे बढ़ाया।

1929 ई० में अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के मुंगेर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष आप ही थे।

आप अध्ययनशील, निर्भीक और प्रखर वक्ता थे।

आपकी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जो रुपये आपको दिये गये थे, वह आपने विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को दे दिये।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन द्वारा श्रीकृष्ण अभिनन्दन ग्रन्थ आपको समर्पित किया गया था। आपके नाम पर मुंगेर में बने श्रीकृष्ण सेवा सदन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने 31/10/53 को तथा उसकी महिला शाखा का उद्घाटन तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा गांधी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6/1/1956 को किया था।

आपकी मृत्यु 31/1/61 को पटना में हो गयी।

आपके नाम पर श्रीकृष्ण सेवा सदन (मुंगेर), रामरुचि श्रीकृष्ण महा-विद्यालय, वरवीघा, श्रीकृष्ण विधि महा० तथा श्रीकृष्ण चिकित्सा महा० (मुजफ्फरपुर), श्रीकृष्ण महिला महा० मोतीहारी, श्रीकृष्ण महिला महा विद्यालय, वेगूसराय, श्रीकृष्ण महिला महा० विहट (वेगूसराय), श्रीकृष्ण ज्ञान मन्दिर, श्रीकृष्ण आरक्षी केन्द्र तथा श्रीकृष्ण स्मारक भवन (पटना) आदि संस्थाएं तथा पटने के मुहल्ले का नाम श्रीकृष्ण नगर तथा श्रीकृष्ण पुरी है।

पटना सचिवालय के प्रांगण में आपकी प्रतिमा स्थापित है। आपके बड़े पुत्र श्री शिवशंकर सिंह (भू० पू० राज्य मंत्री) का 23/3/75 को देहान्त हो चुका है। कनिष्ट पुत्र श्री वन्दीशकर सिंह बिहार विधान सभा के सदस्य तथा राज्य सरकार के राज्य मंत्री हैं।

श्री रजनधारीसिंह

धरहरा (पटना) में 1893 ई० में कौंडिल्य गोत्रीय अथर्व ब्राह्मण श्री न्याय भट्ट की 19वीं पीढ़ी में उत्पन्न। शिक्षा समाप्ति के बाद पटना में वकालत प्रारंभ की। 1924 में पटना जिला बोर्ड के अध्यक्ष तथा बिहार-उड़ीसा विधान परिषद के अध्यक्ष चुने गये।

हथुआ राज्य (कोर्टस ऑफ वार्डस) के महा प्रबन्धक तथा वर्षों बिहार लोक सेवा आयोग के उपाध्यक्ष भी रहे।

1954 ई० से लगातार चार बार पटना नगर निगम के मेयर चुने जाते रहे। 1963 से 1970 तक बिहार विधान परिषद के सदस्य रहे। बिहार राज्य औद्योगिक निगम के अध्यक्ष भी रहे। दिनांक 20/12/1976 ई० को आपका देहान्त हो गया।

श्री रामचरित्रसिंह एम० एस-सी०, बी० एल०

बिहट (वेगूसराय) में जन्म। भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुर तथा सुरसंड (सीतामढ़ी) राज हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक और भूमिहार ब्राह्मण कालेज (अब लंगटसिंह कालेज) मुजफ्फरपुर में प्राध्यापक रहे।

1920 ई० में गांधी जी से भेंट के बाद प्राध्यापिकी त्याग असहयोगी बन गये। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। वर्षों बिहार के सिंचाई मंत्री रहे। आप प्रमुख देशभक्त एवं कर्मठ नेता थे। वर्षों पूर्व आपका देहान्त हो गया।

आपके बड़े पुत्र श्री चन्द्रशेखरसिंह (साम्यवादी नेता तथा भू० पू० मंत्री राज्य सरकार) का देहान्त भी हो चुका है।

आपके नाम पर एक महाविद्यालय मंझौल (वेगूसराय) में तथा एक महा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यालय विहट (वेगूसराय) में संचालित है।

श्री महेश प्र० सिंह

करनौती (वैशाली) में द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। शिक्षा समाप्ति के बाद मुजफ्फरपुर में वकालत प्रारंभ कर प्रसिद्ध अधिवक्ता के रूप में प्रख्यात हुए। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष, बिहार विधान सभा के सदस्य, राज्य के उद्योग तथा सिंचाई मंत्री, बिहार खादीबोर्ड के अध्यक्ष तथा बिहार कांग्रेस विधायक दल के नेता के रूप में देश तथा राज्य की जनता की आपने विशेष सेवा की। अ० भा० कांग्रेस के सदस्य प्रादेशिक कांग्रेस की कार्य समिति के सदस्य तथा विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के सदस्य, सचिव आदि रहकर भी सेवा करते रहे। अनेक विद्यालय तथा महाविद्यालयों की स्थापना आपने करायी तथा दान देकर सहायता करते रहे। लेकिन अपने नाम पर आपने कोई भी कालेज आदि की स्थापना न होने दी।

बिहार वि० वि० का मुख्यालय, मुजफ्फरपुर में तथा राजेन्द्र कृषि वि० वि० का मुख्यालय पूसा (समस्तीपुर) में स्थापित कराने में आपका विशेष प्रयत्न रहा।

स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना तथा अयोध्या के सामाजिक केश में भी आपने काफी सहायता की थी।

हृदयगति रुक जाने से दिल्ली में अपने पुत्र के निवास स्थान पर 9/8/71 को आपका देहान्त हो गया।

8 जून 85 को पटना में आपकी जयन्ती के उद्घाटन के अवसर पर भारत के शिक्षा मंत्री श्रीकृष्ण चन्द्र पन्त ने कहा—"महेश बाबू एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि प्रथम मिलन में ही लोग उनसे सम्मोहित हो जाते थे।"

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए बिहार के मुख्यमंत्री श्री विन्देश्वरी दुबे ने कहा—"वही समाज प्रगति करता है जो अपने महापुरुषों के बताये मार्ग पर चलता है और उपदेशों से शिक्षा ग्रहण करता है। महेश बाबू ऐसे नेताओं में अग्रणी पंक्ति के नेता थे। उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये।"

आपकी मृत्यु के बाद आपके नाम पर 'महेश प्र० सिंह विज्ञान महाविद्यालय' मुजफ्फरपुर में स्थापित होकर संचालित है।

आपकी एक पुत्री श्रीमती कृष्णा शाही संसद की सदस्या तथा शिक्षा राज्य मंत्री (केन्द्रीय) हैं। एक पुत्री श्रीमती उषा सिंह बिहार विधान सभा की सदस्या तथा एक पुत्री श्रीमती रेणुका शर्मा पटना उच्चन्यायालय की अधिवक्ता हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री तिलकसिंह

मॉरीशस के प्रमुख नागरिक। अपने परिश्रम और सूझबूझ से अनेकों उद्योगों की स्थापना तथा संचालन कर अपार संपत्ति और सम्मान का अर्जन आपने किया।

मॉरीशस में धर्मशाला बनवायी। 1914 ई० में गंगा के बाढ़ पीड़ितों को 40 हजार तथा 1934 में भूकम्प पीड़ितों को 40 हजार का दान दिया था।

मॉरीशस में रहते हुए आप भारतीय वेशभूषा धोती कुर्त्ता तथा द्विजातीय चिह्न शिखा सूत्र धारण करते हुए धर्मानुसार कार्य करते रहे। 1926 ई० में आप मॉरीशस कौंसिल के सदस्य चुने गये। इस पद पर चुने जाने वाले आप प्रथम भारतीय थे।

1941 ई० में कलकत्ता में आपका निधन हो गया। उस समय अपने पीछे अपनी विधवा तथा सात सुयोग्य, शिक्षित और व्यवसाय कुशल पुत्रों को छोड़कर मरे। आपकी मृत्यु से रिक्त मॉरीशस कौंसिल के उपचुनाव में आपके पुत्र श्री लक्ष्मी ना० सिंह गजाधर विजयी हुए थे।

श्री नारायण प्र० सिंह

गोरैया कोठी में जन्म। एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। आप बिहार कांग्रेस के प्रमुख नेता तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। सहकारी खेती का प्रारंभ आपने किया। पटना से साप्ताहिक 'योगी' निकाला। आप वर्षों बिहार विधान सभा के सदस्य भी रहे। आपने अपने पुत्र-पुत्रियों को ऊँची शिक्षा दी। आपके पुत्र श्रीकृष्ण कान्त सिंह भू० पू० विधायक, भू० पू० सांसद, भू० पू० मंत्री तथा बिहार लोकतांत्रिक कांग्रेस के भू० पू० अध्यक्ष हैं और आपकी पुत्री श्रीमती शकुन्तला सिंह (श्री रामचरित्र सिंह की पुत्रवधू) शिक्षा निदेशक रह चुकी हैं।

आपका निधन 1950 ई० में तथा पत्नी का निधन 1974 ई० में हुआ।

पं० यमुना कार्यी

देवपार पूसा (समस्तीपुर) निवासी। कुमितवार मूल के कृष्णात्रय गोत्रीय ब्राह्मण। प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त स्वतंत्रता सेनानी तथा किसान नेता के रूप में प्रसिद्ध रहे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

वर्षों दरभंगा लोकल बोर्ड के अध्यक्ष, बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य तथा बिहार विधान सभा के सदस्य रहे। प्रसिद्ध किसान नेता श्री दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के अनुयायी तथा प्रखर वक्ता थे।

'भारत मित्र' (कलकत्ता), 'लोक संग्रह' तथा 'हुंकार' के संपादक तथा मुजफ्फरपुर और पटना में दो प्रेसों के संस्थापक एवं संचालक भी रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई शिक्षण संस्थाओं के सदस्य तथा सचिव भी रहे।

आपका निधन 52 वर्ष की आयु में अक्टूबर 1953 ई० में हो गया। आपके नाम पर बगाही खरौना (मुजफ्फरपुर) में पं० यमुना कार्यी जयन्ती महाविद्यालय स्थापित होकर संचालित है। इस महाविद्यालय के सचिव आपके पुत्र श्री उमेश कुमार कार्यी हैं।

पं० अलगू राय शास्त्री

अमिला (आजमगढ़) निवासी। उत्तर प्रदेश कांग्रेस के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक तथा हिन्दी शॉर्ट हैंड प्रणाली के विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध रहे।

स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। उत्तर प्रदेश आर्य समाज तथा उत्तर प्रदेश कांग्रेस के वर्षों अध्यक्ष रहे। उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य, राज्य सरकार के मंत्री, संसद सदस्य तथा संसदीय कांग्रेस दल के मंत्री भी रह चुके थे।

आप अयाचक ब्राह्मणों की एकता के समर्थक थे।

आपका देहान्त वर्षों पूर्व हो चुका है।

श्री गेन्दासिंह

दुमही (देवरिया) में जन्म। उत्तर प्रदेश के प्रमुख कांग्रेसी नेता थे। स्वतंत्रता के बाद वर्षों उ० प्र० विधान सभा के सदस्य तथा कृषि मंत्री रहे। विधान सभा में विपक्ष के नेता भी रहे। वर्षों संसद के सदस्य भी रहे। 1973 में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा छितौनी-बगहा रेल लाइन शिलान्यास के अवसर पर आयोजित उत्सव के स्वागताध्यक्ष आप ही थे।

लंबी बीमारी के बाद 65 वर्ष की आयु में 15/11/77 को लखनऊ में आपका देहान्त हो गया तथा गांव में अन्तिम संस्कार हुआ। मात्र तीन पुत्रियां ही आपको हैं।

पं० कार्यानन्द शर्मा

सहुर (सूर्यगढ़ा, मुंगेर) में जन्म। कालेज की पढ़ाई छोड़—स्वतंत्रता के लिए क्षेत्र को जगाया। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

बिहार विधान सभा के सदस्य तथा प्रान्तीय और अ० भा० किसान सभा के अध्यक्ष भी रहे। साम्यवादी दल के आप प्रमुख नेता थे। आपका देहान्त रूस में हो गया था और शव भारत लाया गया था।

आपकी स्मृति में कार्यानन्द स्मारक महाविद्यालय लक्खीसराय (मुंगेर) में संचालित है।

आपकी पुत्रवधू श्रीमती सुनयना शर्मा कार्यानन्द स्मारक महाविद्यालय की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सचिव तथा बिहार विधान सभा की सदस्या रह चुकी हैं। आपके पुत्र श्री सच्चिदानन्द शर्मा (रूसी समाचार समिति 'तास' के प्रतिनिधि) का देहान्त 1976 में दिल्ली-पटना के बीच ट्रेन में ही हो गया।

डा० रामाशीष ठाकुर

धर्मागतपुर बथुआ (पूसा, समस्तीपुर) में जन्म। डाक्टरी पास कर सीतामढ़ी में चिकित्सा व्यवसाय प्रारंभ किया। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। सनातन धर्म पुस्तकालय तथा गोयनका कालेज सीतामढ़ी के सचिव; सीतामढ़ी लोकल बोर्ड के चेअरमैन तथा वर्षों बिहार विधान सभा के सदस्य रहे।

स्वास्थ्य खराब होने पर जन्म स्थान में ही निवास कर रहे थे। अप्रैल 1969 में आपका देहान्त हो गया।

आपके बड़े पुत्र डा० सत्य नारायण शर्मा पटना के भू० पू० सिविल सर्जन, एक पुत्र श्री सत्य देव शर्मा मुख्य अभियन्ता तथा एक पुत्र श्री सत्यरंजन शर्मा राजकीय उच्च विद्यालय के शिक्षक हैं।

रायबहादुर महेश्वर प्र० ना० सिंह

वीरसिंहपुर (समस्तीपुर) के भू० पू० जमींदार। एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण, बाबू सरयू प्र० ना० सिंह के सुपुत्र। आपका जन्म पं० जगन्नाथ दीक्षित की 14वीं पीढ़ी में हुआ था।

बिहार उड़ीसा विधान परिषद्, बिहार विधान सभा तथा संसद सदस्य के रूप में 30 वर्षों तक जनता की सेवा की। दरभंगा और मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। अनेकों उच्च विद्यालय तथा महा-विद्यालयों के शासीनिकाय के अध्यक्ष तथा सचिव रहे।

1944 ई० में वक्सर में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रहे। आप अन्तर ब्राह्मण विवाह के समर्थक थे। अतः अपने परिवार का वैवाहिक संबन्ध मैथिल, सारस्वत आदि ब्राह्मणों के साथ करके ब्राह्मणों की एकता को बढ़ाया।

84 वर्ष की आयु में 29/11/78 को मुजफ्फरपुर में आपका देहान्त हो गया।

आपके तीनों अनुज (1) श्री भुवनेश्वर प्र० ना० सिंह (2) पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह (राज्यपाल) तथा (3) श्री राजेश्वर प्र० ना० सिंह (प्रसिद्ध लेखक तथा भू० पू० सांसद) वर्तमान हैं।

पं० धनराज शर्मा

बेलछी (पटना) में जन्म। कांग्रेस तथा अग्रगामी दल के प्रसिद्ध नेता रहे। प्रारंभ में आपका कार्य क्षेत्र मधुबनी था। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुबनी लोकल बोर्ड के अध्यक्ष, दरभंगा जिला बोर्ड के सदस्य तथा बिहार विधान सभा के वर्षों सदस्य रहे। 1942 के बाद आपका कार्य क्षेत्र पटना हो गया। आप निर्भीक तथा प्रखर वक्ता थे। लगभग 85 वर्ष की उम्र में 1981 में आपका देहान्त हो गया।

श्री सुन्दर शर्मा

माघर (सीवान) में केशवरिया मूल के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। मध्य प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष, जबलपुर (मध्य प्रदेश) के मेयर तथा भारतीय संसद के सदस्य रहे। 'नई दुनिया' का संपादन किया। 1982 ई० में मध्यप्रदेश में ही आपका देहान्त हो गया।

पं० रामनारायण मिश्र

पिपरा (नेपाल) में वसमैत मूल के गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। आप नेपाली कांग्रेस के नेता थे—प्रजातंत्र के लिए कई बार जेल गये। नेपाल के उद्योग मंत्री भी रहे। अपने अग्रज पं० भद्रकाली मिश्र के साथ गांधी जी के सान्निध्य में भी रह चुके थे। अस्वस्थ होने पर बेलौर (मद्रास) से चिकित्सा कराकर लौटने के कुछ ही दिनों बाद आपका देहान्त हो गया।

श्री सियाराम सिंह

तिलकपुर (भागलपुर) जन्म स्थान। प्रदेश कांग्रेस के नेता तथा स्वतंत्रता सेनानी। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। भागलपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, प्रादेशिक कांग्रेस के सचिव तथा बिहार विधान सभा के सदस्य के रूप में देश और जन सेवा में संलग्न रहे। 1974 में आपका देहान्त हो गया। आपकी पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी भी बिहार विधानसभा की सदस्या रहीं।

श्री कपिलदेव नारायण सिंह

सिलौत (मुजफ्फरपुर) में सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1906 में जन्म। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। ग्राम पंचायत के मुखिया, केन ग्रोवर कोआपरेटिव सोसाइटी के सचिव, बिहार विधान सभा के सदस्य तथा बिहार कोआपरेटिव फेडरेशन के अध्यक्ष के रूप में आपने जनता की अच्छी सेवा की।

6/4/81 को आपका देहान्त हो गया।

श्री चन्द्रशेखर सिंह

बिहार (बेगूसराय) निवासी, प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्रीराम चरित्रसिंह के सुपुत्र। प्रसिद्ध साम्यवादी नेता तथा बरौनी तेल शोधक मजदूर संघ के उपाध्यक्ष रहे। साम्यवादी दल के उम्मीदवार के रूप में कई बार बिहार विधान सभा के सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुने गये। जब आपके पिता राज्य सरकार के मंत्री थे, उस समय भी आप विधान सभा के सदस्य थे। राज्य सरकार के मंत्री भी रहे। जिगर की बीमारी से आक्रान्त होने पर 20/6/76 को पटना जनरल अस्पताल में आपका देहान्त हो गया।

आपकी पत्नी श्रीमती शकुन्तला सिंह, शिक्षा विभाग (बिहार) के निदेशक पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद 1985 में निर्वाचित बिहार विधान सभा की सदस्या हैं।

श्रीमती मनोरमा देवी

1910 ई० में गया जिले में जन्म। 1925 ई० में बेलछी (पटना) के पं० पुण्यदेव शर्मा से शादी। 1928 में आपने पर्दा प्रथा का बहिष्कार किया। 1930 ई० में प्रयाग में श्रीमती कमला नेहरू के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह में तीन बार जेल गयीं। 1952 और 1957 में बिहार विधान सभा की सदस्या चुनी गयीं। बाद में वर्षों बिहार विधान परिषद की सदस्या रहीं। 4/9/83 को आपका देहांत हो गया। आपके पति स्व० पंडित पुण्यदेव शर्मा भी स्वतंत्रता सेनानी तथा विधायक रह चुके थे।

श्री मथुरा प्र० सिंह

कुशाहन (नवादा) में 22/9/12 ई० को जन्म। अमादा राज्य के भू० पू० तहसीलदार स्व० श्री मंगलसिंह के सुपुत्र। 20 वर्ष की उम्र में गया कांग्रेस के सचिव बने। 1938 में एक वर्ष नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस के साथ रहे। 1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन में जेल गये। बिहार विधान परिषद के सदस्य तथा वर्षों बिहार सहकारिता बैंक के निर्वाचित अध्यक्ष रहे। बिहार कोआपरेटिव फेडरेशन के अध्यक्ष भी रह चुके थे। 14/12/83 को आपका निधन हो गया।

श्री झारखण्डे राय

अमिलां (आजमगढ़)में जन्म। प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रमुख साम्यवादी नेता। उ० प्र० विधान सभा के सदस्य, राज्य सरकार के मंत्री तथा भारतीय संसद के सदस्य रह चुके थे। कुछ दिनों से पक्षाघात से पीड़ित थे। पुनः आक्रमण होने पर दिल्ली अस्पताल में भर्ती किया गया था किन्तु मार्च 1987 में आपका देहान्त हो गया।

श्री किशोरी प्रसन्न सिंह

जागोडीह, वैशाली में बवनडीहा मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रसिद्ध साम्यवादी नेता और बिहार विधान सभा के भू० पू० सदस्य। बुढ़ापे में भी सक्रिय रहकर देश सेवा करते रहे। 18/6/84 को जमशेदपुर में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राजेन्द्र नारायण चौधरी

खिरहर, मधुबनी में दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। दरभंगा के भू० पू० अधिवक्ता तता बिहार विधान सभा के भू० पू० सदस्य 82 वर्ष की आयु में पटना स्थित बोरिंग रोड निवास स्थान पर आपका देहान्त 20/12/84 को हो गया। आपके बड़े पुत्र श्री श्रीधर नारायण चौधरी संयुक्त कृषि निदेशक हैं।

पं० जानकीरमण मिश्र एम० ए० (संस्कृत)

रघुनाथपुर पतोर, दरभंगा निवासी, सहदौलिया मूल के पाराशर गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पं० राजेन्द्र प्रसाद मिश्र के सुपुत्र। 1901 में जन्म।

1942 के स्वतंत्रता संग्राम में आपने प्रमुख रूप से भाग लिया—जेल गये तथा अंग्रेजी सरकार ने आपको बड़ी क्षति पहुंचायी।

दरभंगा जिला बोर्ड के सदस्य, जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, बिहार विधानसभा के सदस्य तथा बिहार के राजस्व मंत्री के रूप में आपने जनता की महत्वपूर्ण सेवा की। आप सादा जीवन और धार्मिक विचार के व्यक्ति रहे।

प्रो० जगन्नाथ प्र० मिश्र के साथ मिलकर 'दिक्पाल मिश्र वंश परिचय' लिखकर प्रकाशित किया। 14/10/84 को आपका देहान्त हो गया।

आप ब्राह्मणों के विभिन्न दलों में परस्पर वैवाहिक सम्बन्धों के समर्थक थे। आपके एक पुत्र श्री राघवेश मिश्र की शादी नेहरा (दरभंगा) निवासी श्री गोविन्द चौधरी मै० ब्रा० की पुत्री एव भू० पू० रेलमंत्री स्व० श्री ललित नारायण मिश्र की पत्नी श्रीमती कामेश्वरी देवी की ममेरी बहन से हैं।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी तथा समाजवादी एवं आध्यात्मिक नेता पं० रामनंदन मिश्र आपके अनुज तथा काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज डा० विभूति नाथ सिंह आपके भगिना हैं।

पं० रामनारायण शर्मा

धनबाद निवासी, बिहार के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी तथा मजदूर नेता। बोकारो स्टील सिटी मजदूर यूनियन तथा इंटक के भू० पू० अध्यक्ष तथा बिहार कोयलियरी मजदूर संघ तथा इंटक के महासचिव भी रहे। 1957 से 67 तक बिहार विधान सभा के सदस्य और 1971 में निर्वाचित होकर भारतीय संसद के सदस्य भी रह चुके थे। 11/4/85 को धनबाद में अपने निवास स्थान पर देहान्त हो गया।

श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा शास्त्री

डेढ़गामा (गाजीपुर) में 6/2/1917 ई० को शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। संस्कृत की शास्त्री तक की शिक्षा स्वामी सहजानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कृत महा० विहटा, पटना में आपने पूरी की। स्वतंत्रता संग्राम में नजरबन्द हुए, जुर्माना लगा और जेल गये। 1952 में कांग्रेस टिकट पर प्रथम बार उ० प्र० विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1957 तथा 1962 में भी विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1957 तथा 1962 में भी विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा पुनः 1969 के उपचुनाव में विधान सभा के सदस्य चुने गये। इस प्रकार लगभग 18 वर्षों तक विधानसभा के सदस्य रहे। 1975 में बहुगुणा के मुख्यमंत्रित्व काल में—आपातकाल में—आपको जेल जाना पड़ा—नजरबन्द कर दिये गये। मधुमेह से पीड़ित हो गये और स्वास्थ्य काफी गिर गया। 25 अगस्त 1986 को डेढ़गामा में आपका देहान्त हो गया। आप जीवनभर समाज सेवा में संलग्न रहे।

श्री राजनारायण

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनांनी, प्रख्यात समाजवादी नेता श्री राजनारायण का जन्म 15/3/1917 को गंगापुर (वाराणसी) में गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप हिन्दू विश्वविद्यालय से विधि स्नातक थे। स्वतंत्रता संग्राम में 1942 में गिरफ्तार होकर तीन वर्ष जेल में रहे। मजदूर, छात्र आदि आन्दोलनों से संबद्ध रहने के कारण प्रति वर्ष जेल जाते रहे, कुल मिलाकर 58 बार जेल जा चुके थे। आप दलितों-शोषितों के मसीहा थे। डा० लोहिया के अनुयायी, जुझारू राजनेता थे। आपने अपनी जमींदारी पर किसानों का कब्जा करा दिया था। किसी भी विषम परिस्थिति को सक्षम बना देने में आप सक्षम थे। 1952 में आप उ० प्र० विधानसभा के सदस्य चुने गये। 1966 से राज्य सभा के सदस्य रहे। 1973 में रायबरेली लोकसभा चुनाव में श्रीमती इन्दिरा से हार जाने पर उच्च न्यायालय में आपने याचिका दायर की। श्रीमती गांधी का चुनाव अवैध घोषित हो गया। श्रीमती गांधी द्वारा त्यागपत्र न देने पर देश में सत्याग्रह प्रारंभ हो गया—देश में आपातस्थिति की घोषणा कर दी गयी। अन्य नेताओं के साथ आप भी गिरफ्तार होकर 19 माह जेल में रहे। चुनाव घोषणा होने पर 1977 में मनोनयन पत्र दाखिल करने के अवसर पर छूटे और पुनः इस बार भी श्रीमती इन्दिरा गांधी (प्रधानमंत्री) के विरुद्ध रायबरेली से खड़े होकर श्रीमती गांधी को पराजित कर संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। केन्द्र में श्री मोरार जी देसाई के प्रधानमंत्रित्व में जनता सरकार बनी। उसमें आप स्वास्थ्य मंत्री बनाये गये। यद्यपि आप सरकार से बाहर रहकर ही सेवा करना चाहते थे किन्तु दल के अनुरोध पर आप मंत्री बने। मतभेद होने पर 1978 में आपने पद त्याग कर दिया। आप कथनी करनी में एकरूपता के पक्षधर थे इसलिए ऐसे नेताओं से आपकी पटती न थी। मास्को, वियना आदि का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप भ्रमण कर चुके थे। आप हिन्दी के पक्षधर थे। आप अ०भा० किसान सभा के अध्यक्ष, लोकदल के कार्यकारी अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता पार्टी के अध्यक्ष रह चुके थे समाजवादी दल के अध्यक्ष थे।

30/12/86 की रात्रि में दिल्ली के राम मनोहर लोहिया हस्पताल में आपका देहान्त हो गया। 31/12/86 को सवेरे राष्ट्रपति जैल सिंह ने निवास पर पहुंच कर शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। भारत के सभी दल के नेताओं ने आपकी मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया। प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने शोक सन्देश में कहा—"देश ने एक दृढ़ निश्चय वाला नेता खो दिया, जिसने अपना सब कुछ सार्वजनिक जीवन में लगा दिया था।"

कांग्रेस के भू० पू० कार्यकारी अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी ने कहा—"देश ने एक महान नेता और देश भक्त खो दिया।"

श्री अटल विहारी वाजपेयी ने कहा—"राजनारायण की मृत्यु से देश ने एक संघर्षशील राजनेता को खो दिया है।"

श्री हेमवती नंदन बहुगुणा ने कहा—"उनके निधन से एक त्यागवीर अथक समाजसेवी हमारे बीच से उठ गया।"

बिहार विधान परिषद में कांग्रेस (इ) के मुख्य सचेतक श्री कृपानाथ पाठक ने कहा 'स्वतंत्रता सेनानी, निर्भीक नेता और गरीबों का मसीहा हमारे बीच से उठ गया।"

बिहार विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री शिवनन्दन पासवान ने उन्हें समाजवादी आन्दोलन का प्रखर प्रकाश स्तंभ और ऐतिहासिक पुरुष कहा।

दिल्ली से आपका शव विमान से वाराणसी लाया गया और 1/1/87 को हरिश्चन्द घाट पर (गंगा किनारे) राजकीय सम्मान के साथ आपकी अन्त्येष्टि हुई।

देश के समाचार पत्रों (नवभारत टाइम्स, आज, आर्यावर्त) आदि ने संपादकीय लिख कर अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की। श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, भू० पू० उपमंत्री केन्द्रीय सरकार ने लेख लिखकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आपके दो पुत्र हैं।

श्री सिद्धेश्वर प्र० सिंह

कुंडेसर (गाजीपुर) में 1911 ई० में जन्म। बी० एस-सी० तथा एल० एल० बी० दोनों में प्रयाग वि० वि० से प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान आपने प्राप्त किया था। स्वतंत्रता संग्राम में 1930, 1939 तथा 1942 में जेल गये। 1946 में उ० प्र० विधान सभा के सदस्य चुने गये। बाद में कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। 1962 से 67 तक तथा 1974 से 76 तक गाजीपुर जिला बोर्ड के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्ष रहे। 13/7/80 को काशी में निधन हो गया।

श्री नवल किशोर सिंह

धरफरी (मुजफ्फरपुर) में जन्म। जैथरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। वर्षों विधायक, बिहार के मंत्री, संसद सदस्य, बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष तथा विस्कोमान के अध्यक्ष रहे। बिहार विधान सभा के सदस्य रहते हुए 11/3/82 को आपका देहान्त हो गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद्मविभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० न० सिंह के आप भगिना थे।

श्री शत्रुघ्न शरण सिंह

गया जिले में 1907 ई० में जन्म। 1922 में आप कांग्रेस में शामिल हुए और 1942 तक 5 बार स्वतंत्रता संग्राम में जेल गये। 1942 में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध एक बमकांड में आप अभियुक्त थे। वर्षों गया जिला बोर्ड के अध्यक्ष, बिहार विधान सभा के सदस्य तथा राज्य मंत्री रह चुके थे। पुनः 1980 से 1985 तक बिहार विधान सभा के सदस्य रहे। गया क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष पद पर भी रहे। दिनांक 1/11/85 को पटना मेडिकल कालेज हस्पताल में आपका देहान्त हो गया। आपके कोई सन्तान नहीं थी। आपकी पत्नी श्रीमती राजकुमारी देवी भी विधायिका रह चुकी हैं।

आपकी शव यात्रा में मुख्यमंत्री दुबे भी सम्मिलित हुए थे।

प्रो० महंत श्याम सुन्दर दास

खोपी (सीतामढ़ी) में जन्म। शीतल पट्टी (सीतामढ़ी) के मठाधीश तथा लंगट सिंह कालेज के प्राध्यापक रहे। प्राध्यापक रहते समय मीसा में गिरफ्तार किये गये और आपकी सेवा भी समाप्त कर दी गयी। चुनाव घोषणा होने पर आप अन्य नेताओं की तरह जेल से छूटे और 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर संसद सदस्य चुने गये। पूर्व में बिहार विधान सभा के सदस्य भी रह चुके थे।

1981 में अस्वस्थ हो जाने पर चिकित्सार्थ दिल्ली गये—वहीं 1981 में आपका देहान्त हो गया। दाह संस्कार के लिए शव जन्म स्थान ले जाया गया।

आप प्रसिद्ध साहित्यकार पं० रामवृक्ष बेनीपुरी के दामाद थे।

पं० शीलभद्र याजी

पटना जिले के निवासी। याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। कांग्रेस तथा अग्रगामी दल के नेता के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन में कई बार जेल गये। वर्षों अ० भा० अग्रमामी दल के अध्यक्ष, बिहार विधान सभा के सदस्य तथा संसद सदस्य रहकर देश तथा जनता की सेवा की है। अ० भा०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतंत्रता सेनानी संघ के अध्यक्ष तथा स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति पटना के विशेष दानी सदस्य हैं। 1982 में 76 वीं जयन्ती के अवसर पर आपको एक लाख बीस हजार की राशि जयन्ती समिति की ओर से प्रदान किया गया।

श्रीमती तारकेश्वरी सिंह एम० ए० (अर्थशास्त्र)

पटना जिले में जन्म तथा छपरा जिले में ससुराल। वर्षों भारतीय संसद की सदस्या तथा केन्द्रीय वित्त उपमंत्री रहीं। कांग्रेस (अर्स) तथा अ० भा० लोक-कांग्रेस की महामंत्री रह चुकी हैं तथा अ० भा० दलित मजदूर किसान पार्टी की महामंत्री हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना की विशेष दानी सदस्य भी हैं। आप प्रखर वक्ता तथा प्रमुख नेतृ हैं।

श्री श्याम नन्दन मिश्र

पिपरा (नेपाल) में जन्म। उमगांव (मधुवनी) में पारिवारिक निवास गृह। वसमैत मूल के गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण। देश के स्वतंत्रता संग्राम में कई वार जेल गये। आप देश के एक प्रमुख नेता हैं। कांग्रेस विभाजन के वाद संगठन कांग्रेस में तथा वाद में जनता पार्टी में शामिल रहे। कुछ दिनों तक लोकदल में उसके महासचिव रहकर पुनः जनता पार्टी में आ गये हैं। नेहरूजी के मंत्रिमंडल में उपमंत्री संसद में विरोधी दल के नेता तथा जनता सरकार में भारत के विदेशी मंत्री भी रह चुके हैं।

पं० भद्रकाली मिश्र

पिपरा (नेपाल) निवासी, वसमैतमूल के गर्ग गोत्रीय ब्राह्मण। नेपाल कांग्रेस के नेता रहे हैं। देश सेवा में कई वार जेल गये। कुछ दिनों तक अपने अनुज स्व० पं० रामनारायण मिश्र के साथ गांधी जी के सान्निध्य में भी रह चुके हैं। नेपाल के उद्योग मंत्री भी रह चुके हैं।

नेपाल प्रवेश पर रोक होने के कारण आप पटना के श्रीकृष्ण नगर में निवास करते हैं। आप छपरा के प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा भू० पू० विधायक स्व० पं० विश्वनाथ प्र० मिश्र के दामाद हैं।

आपके अनुज पं० रामनारायण मिश्र भी नेपाल के उद्योग मंत्री रह चुके थे जो दिवंगत हो चुके हैं।

श्री कल्पनाथ राय

सिमरी (आजमगढ़) निवासी सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। उत्तर प्रदेश कांग्रेस नेता तथा ओजस्वी वक्ता रहे हैं। अनेक वर्षों से राज्य सभा के सदस्य हैं। संसदीय कांग्रेस दल के सचिव, अ० भा० कांग्रेस के महामंत्री तथा केन्द्रीय सरकार में उपमंत्री तथा राज्य मंत्री रह चुके हैं। संसदीय कांग्रेस दल की कार्य समिति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदस्य चुने गये हैं।

श्री इन्द्रदीप सिंह

छपरा जिले के निवासी। प्रसिद्ध साम्यवादी नेता। विहार विधान परिषद के सदस्य तथा राज्य सरकार के मंत्री रह चुके हैं। वर्षों राज्य सभा के सदस्य रहे। साम्यवादी दल के राष्ट्रीय सचिव तथा कार्य समिति के सदस्य रहे हैं। सागरपुर (मधुवनी) निवासी सुप्रसिद्ध सर्वोदय नेता स्व० श्री शिवनारायण मिश्र के आप दामाद हैं।

श्री वसावन सिंह

लंगाशुमई (वैशाली) निवासी। वयोवृद्ध नेता तथा प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी। कई वार जेल जा चुके हैं। अ० भा० मजदूर यूनियन के अध्यक्ष, बिहार विधान सभा के सदस्य, राज्य सरकार के मंत्री तथा विहार जनता पार्टी के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप अनेक मजदूर संघटनों से संबद्ध रहे हैं।

आपकी पत्नी श्रीमती कमला सिंह विहार विधान परिषद की सदस्या हैं।

श्री गौरी शंकर राय

करनई (वलिया) निवासी। उत्तर प्रदेश के विधायक तथा संसद सदस्य रह चुके हैं। भारतीय प्रतिनिधि मंडल में विदेश से भी हो आये हैं।

श्री रघुनाथ सिंह एम० ए०, एल० एल० बी०, पी-एच० डी०, डी० लिट् एफ० आर० ए० एस० (लंदन)

औरंगावाद, वाराणसी निवासी, गौतम गोत्रीय ब्राह्मण। आप संस्कृत तथा इतिहास के विशिष्ट विद्वान, स्वतंत्रता सेनानी तथा एक प्रमुख नेता रहे हैं।

1921, 1926, 1930, 1932, 1940 तथा 1942 में स्वतंत्रता संग्राम में आप जेल गये।

1952 से 1967 तक तीन वार लोक सभा के निर्वाचित सदस्य रहे। मझगांव (वम्वई) डक तथा यूनाइटेड वैंक के संचालक तथा हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड और राष्ट्रीय शिपिंग वोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं। आपने कल्हण की 'राज तरंगिनी' पर महत्त्वपूर्ण भाष्य लिखा है। 'ब्राह्मण कौन' की भूमिका भी आपने लिखी है। सामाजिक सेवा की प्रवृत्ति भी आपमें है तथा सामाजिक सभाओं में भी सम्मिलित होते रहते हैं। 55/197 औरंगावाद, वाराणसी में निवास करते हैं।

श्री दिग्विजय नारायण सिंह

धरहरा, वैशाली निवासी, गोआइत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। स्वनाम धन्य स्व० वावू लंगट सिंह के पौत्र। देश के एक विशिष्ट नेता तथा स्वतंत्रता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेनानी ।

1952, 1957, 1962, 1967, 1971 तथा 1977 में विभिन्न क्षेत्रों से निर्वाचित होकर भारतीय संसद के सदस्य रहे। प्रारंभ से कांग्रेस में रहे तथा 1975 में जनता पार्टी में शामिल हो गये। आपातकाल में श्री रवीन्द्र वर्मा की जेल यात्रा के बाद संघर्ष समिति के महामंत्री रहे तथा साइक्लोस्टाइल किये गये 'सत्य समाचार' का संचालन करते रहे। जनतापार्टी संसदीय दल के महामंत्री भी रह चुके हैं। अब कांग्रेस में शामिल हो गये हैं।

श्री कृष्णा कान्त सिंह

गोरैया कोठी (सीवान) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण स्व० नारायण बाबू के सुपुत्र। वर्षों विहार विधान सभा के सदस्य, राज्य सरकार के मंत्री, भारतीय संसद के सदस्य तथा बिहार विधान परिषद के सदस्य रह चुके हैं। कांग्रेस विभाजन के बाद संगठन कांग्रेस में फिर अर्स कांग्रेस में रहने के बाद संगठन कांग्रेस के प्रादेशिक अध्यक्ष रहे। अब पुनः कांग्रेस (इ) के नेता तथा विहार वित्त निगम के अध्यक्ष हैं।

डा० रामकृपाल सिंह

मटिहानी (सीतामढ़ी) निवासी महवरिया मूल के कश्यप गोत्रीय परिवार में जन्म। 1962 से रामदयालु सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक रहे हैं। 1977 ई० में निर्वाचित होकर भारतीय संसद के सदस्य तथा केन्द्रीय सरकार के राज्य मंत्री रह चुके हैं। आप भारतीय जनता पार्टी के एक प्रमुख नेता हैं।

श्री रामजीवन सिंह

मंझौल (बेगूसराय) निवासी, जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। विहार विधान सभा के सदस्य तथा राज्य सरकार के मंत्री तथा भारतीय संसद के सदस्य रह चुके हैं। विहार लोकदल के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री नगीना राय

गोपालपुर (गोपालगंज) निवासी। तीन बार कुचाय कोट से निर्वाचित होकर विहार विधान सभा के सदस्य, राज्य सरकार के राज्य मंत्री, विहार कांग्रेस के महामंत्री, विहार कोआपरेटिव बैंक के अध्यक्ष तथा 1980 से 1984 तक भारतीय संसद के सदस्य रहकर विभिन्न प्रकार से जनसेवा में लगे रहे। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति पटना के आजीवन सदस्य हैं।

श्री कमला मिश्र मधुकर

मदन सिरसिया (चंपारण) निवासी, पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। साम्यवादी दल के टिकट पर निर्वाचित होकर वर्षों संसद सदस्य रह चुके हैं। आपकी पत्नी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती कामना मिश्र राजकीय कन्या उच्च विद्यालय पूसा की प्रधानाध्यापिका हैं। आपकी पुत्री डा० नीलिमा एम० डी० (चेकोस्लावाकिया) शिक्षा प्राप्त हैं जिनकी शादी नौझील मथुरा के डा० अनिल पाठक से हुई है।

श्री योगेन्द्र शर्मा

वेगूसराय जिले के निवासी। स्वतंत्रता संग्राम में विशेष सक्रिय रहे। साम्यवादी दल के प्रतिवन्धित होने पर भूमिगत होकर कार्य करते रहे। विहार किसान सभा तथा साम्यवाद दल के सचिव रहे। 1962 में साम्यवादी दल की राष्ट्रीय समिति के सदस्य चुने गये। 1967 से 70 तक लोक सभा के सदस्य तथा 1972 से 1984 के प्रारंभ तक राज्य सभा के सदस्य रहे। साम्यवादी दल की केन्द्रीय कार्य समिति के सदस्य, राज्य सभा में दल के नेता और मुक्ति संघर्ष के संपादक रह चुके हैं। आपके एक पुत्र विधायक हैं।

श्री कैलाशपति मिश्र

दुधार चक्र (भोजपुर) में शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1926 ई० में जन्म। शिक्षा समाप्ति के वाद प्रारंभ में जनसंघ के संगठनात्मक कार्यों में संलग्न रहे। जनसंघ के जनता पार्टी में विलीन होने पर जनता पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर विहार के वित्तमंत्री रह चुके हैं। भारतीय जनता पार्टी के प्रादेशिक अध्यक्ष हैं। 29/3/84 से भारतीय संसद (राज्यसभा) के भी सदस्य हैं। आप अविवाहित हैं।

श्री राजकुमार राय

उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में घोसी, (आजमगढ़) से निर्वाचित संसद सदस्य हैं।

श्री ललितेश्वर प्र० शाही

1 अक्तूवर 1920 को साइन (वैशाली) में दिधवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। 1942 के स्वतंत्रता संग्राम में जेल गये। 1945 में वकालत प्रारंभ की। 1949 में मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष तथा 1952, 1957, 1967 तथा 1980 में बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

1957 में राज्य सरकार के उपमंत्री, 1963 में तकनीकी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, 1969, 1970 तथा 1972 में विभिन्न मंत्रिमंडलों में कैबिनेट स्तर के मंत्री तथा निर्माण विभाग के अध्यक्ष भी रहे। 1980 से 15/5/83 तक तथा 14/8/83 से दिसम्वर 84 तक भी राज्य सरकार के मंत्री रहे। मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित होकर 1985 से भारतीय संसद के सदस्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कृष्ण विधि महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर और श्रीकृष्ण ज्ञान मन्दिर पटना के सचिव भी हैं। पटना और मुजफ्फरपुर में आपके नाम पर महाविद्यालय संचालित है।

श्री महेन्द्र प्रसाद

गोविन्दपुर (गया) निवासी, दोमहिकार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण।

1980 में जहानाबाद (गया) से निर्वाचित होकर भारतीय संसद (लोकसभा) के सदस्य तथा रसायन एवं पेट्रोलियम मंत्रालय की स्थायी समिति के संयोजक रह चुके हैं। 1985 में विहार विधान सभा क्षेत्र से निर्विरोध निर्वाचित होकर राज्य सभा (संसद) के वर्तमान सदस्य हैं। ऐरेस्टोफर्मा नामक दवा बनाने का कारखाना (बम्बई) के स्वामी भी हैं।

श्रीमती कृष्णा शाही

गभिरार (सीवान) निवासी स्व० श्री वीरेश्वर प्र० ना० शाही भू० पू० उप-पुलिस महा निरीक्षक की पत्नी तथा विहार के प्रसिद्ध दिवंगत नेता श्री महेश प्र० सिंह की सुपुत्री। विहार विधान सभा की सदस्या तथा पटना क्षेत्रीय विकास प्राधिकार की अध्यक्षा रह चुकी हैं। 1980 से दो वार निर्वाचित होकर भारतीय संसद की सदस्या हैं और वर्तमान में केन्द्रीय शिक्षा और संस्कृति राज्य मंत्री भी हैं। 1981 में भारतीय प्रतिनिधि मंडल में विदेश से भी हो आयी हैं। आपके एकमात्र पुत्र श्री राजीव रंजन प्र० ना० शाही आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त कर आरक्षी अधीक्षक पद पर विहार में रहने के वाद 1986 से प्रधानमंत्री के सुरक्षा दल के अधीक्षक है।

श्री तिलकधारी सिंह

1980 में निर्वाचित होकर विहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। 1984 में कोडरमा से निर्वाचित होकर भारतीय संसद के सदस्य हैं। जिला परिपद के अध्यक्ष भी हैं।

श्रीमती चन्द्रभानु देवी

चेरिया वरियारपुर (वेगूसराय) निवासी श्रीराम नारायण चौधरी की पुत्र-वधू। वेगूसराय कोआपरेटिव कालेज की प्राध्यापिका तथा वेगूसराय नगरपालिका की उपाध्यक्षा रह चुकी हैं। 1984 में वलिया (वेगूसराय) से निर्वाचित भारतीय संसद की सदस्या हैं। नवम्वर 1986 में संसदीय कांग्रेस दल की कार्य समिति की सदस्या भी चुनी गयी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्मश्री डा० सी० पी० ठाकुर एम० डी०, एम० आर० सी० पी० (लंदन तथा एडिनवरा), एफ० आई० सी० आई० (अमेरिका)

दुवहा, मुजफ्फरपुर निवासी, मोहवरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री राधा मोहन ठाकुर के सुपुत्र। मेडिकल कालेज, पटना के औषधि विभाग के प्राध्यापक तथा विहार के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। आपके अनेक शोधों की प्रशंसा हुई है।

1982 में आप 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किये गये। 1983 में डा० वी० सी० राय राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किये गये। यह पुरस्कार पाने वाले आप प्रथम विहारी हैं। डा० वी० के० एकट राष्ट्रीय पुरस्कार से 1985 में पुरस्कृत किये हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अन्दर कालाजार शोध परिषद् के आप विशिष्ट सलाहकार हैं। आप न्यूयार्क स्थित विज्ञान अकादमी तथा भारतीय विज्ञान कांग्रेस से भी संवद्ध हैं।

आप श्री जयप्रकाश नारायण के निजी चिकित्सक रह चुके हैं। आप दिनकर स्मारक समिति के अध्यक्ष तथा अ० भा० कांग्रेस के मेडिकल सेल के अध्यक्ष भी हैं।

आपने चिकित्सा सेवा, समाज सेवा के साथ अव राजनीति में भी प्रवेश किया है और 1984 के दिसम्बर में हुए भारतीय संसद के चुनाव में पटना क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर संसद सदस्य निर्वाचित हुए हैं।

आपकी पत्नी श्रीमती उमाठाकुर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त हैं तथा एक पुत्री श्रीमती शवनम ने एम० ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आपके दोनों दामाद आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर चुके हैं, जिनमें श्री शिशिर कुमार सिंह अनुमंडलाधिकारी पटना में पदस्थापित और श्री विनय कुमार प्रशासकीय प्रशिक्षण समाप्त कर पदस्थापित हो गए हैं।

प्रो० डाक्टर सी० पी० ठाकुर

पताही (मुजफ्फरपुर) निवासी जवाहरलाल वि० वि० के प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहे हैं। 1986 में राज्यसभा (संसद) के सदस्य चुने गए हैं।

श्री रामायण राय

देवरिया जिले के निवासी, स्वतन्त्रता सेनानी श्री राजवंशी राय के सुपुत्र। उत्तर प्रदेश के विधायक, राज्यमंत्री तथा भारतीय संसद के सदस्य रह चुके हैं।

श्री राजविहारी सिंह

कवीर चौड़ा (वाराणसी) निवासी। प्राथमिक विद्यालय के भू० पू० अध्यापक तथा डा० संपूर्णानन्द के भू० पू० सचिव। उत्तर प्रदेश के शिक्षा राज्यमंत्री रह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुके हैं। वर्तमान में उ० प्र० विधान परिषद् के सदस्य हैं।

श्री कामदेव प्र० सिंह

सबैजोर (देवधर) निवासी, बिहार प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री, बिहार विधान सभा के सदस्य तथा आपूर्ति निगम के अध्यक्ष रह चुके हैं। बिहार विद्युत बोर्ड के सलाहकार भी रहे हैं।

श्री जीवत्स शर्मा 'हिमांशु'

काझा (पूर्णिया) निवासी। स्वतन्त्रता सेनानी, कवि तथा कांग्रेस के भू० पू० नेता। वर्षों बिहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। विधान सभा में कभी-कभी कविता में ही भाषण दिया करते थे। वर्तमान में घर पर ही अवकाश पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

महंत रामकिशोर दास

छपरा (मुजफ्फरपुर) के महंत। बिहार विधान सभा के सदस्य, राज्यमंत्री तथा मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं।

1980 में श्रीकृष्ण विधि महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के प्रांगण में आयोजित सर्वदलीय भूमिहार ब्राह्मण सभा की अध्यक्षता भी कर चुके हैं। अब भी देश तथा समाज सेवा में सक्रिय हैं।

श्री हरगुण प्र० शाही

चनायन बांध (बेतिया) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। वर्षों बेतिया लोकल बोर्ड के अध्यक्ष तथा राज्य सरकार के स्वास्थ्य अभियंत्रणा विभाग के मंत्री रह चुके हैं। 1945 ई० में डा० मुंजे (चित्पावन ब्राह्मण) की अध्यक्षता में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के स्वागताध्यक्ष तथा मोतीहारी जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री रामाधार पांडेय

उत्तर प्रदेश के विधायक तथा मंत्री रह चुके हैं।

श्री कपिल देव सिंह

बड़हिया (मुंगेर) निवासी, दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। स्वतन्त्रता संग्राम में कई बार जेल गये। वर्षों विधायक, राज्य सरकार के मंत्री तथा बिहार लोकदल के अध्यक्ष रह चुके हैं। अभी जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं।

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह

जैतपुर स्टेट (मुज०) के अधिपति। प्रसिद्ध दिवंगत नेता श्री महेश प्र० सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के दामाद। वर्षों विहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में प्रखंड प्रमुख हैं। आपकी पत्नी श्रीमती उषा सिंह विहार विधान सभा की सदस्या हैं।

प्रो० ठाकुर प्र० सिंह

धरभारा (मुजफ्फरपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण।

रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक तथा 1977 में निर्वाचित होकर विहार विधान सभा के सदस्य तथा शिक्षा मंत्री रह चुके हैं।

श्री रवीन्द्र किशोर शाही

उत्तर प्रदेश के विधायक तथा विद्युत मंत्री रह चुके हैं।

श्री सियाराम ठाकुर

चंपारण जिले के निवासी। 1977 के चुनाव में जनता पार्टी के टिकट पर विहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर राज्य सहकारिता मंत्री रह चुके हैं। अब कांग्रेस (इ) में सम्मिलित हो गये हैं। सामाजिक गतिविधियों में भी सम्मिलित होते हैं।

श्री शंभु शरण ठाकुर

कुशी (मुजफ्फरपुर) निवासी, मोहवरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री अम्बिका ठाकुर के सुपुत्र। राम दयालु सिंह कालेज के प्राध्यापक रहते हुए 'आर्यावर्त' के संवाददाता रह चुके हैं।

बिहार विधान सभा के सदस्य, बिहार कांग्रेस विधायक दल के सचिव, बिहार के राज्यमंत्री, आवास बोर्ड, बिहार के अध्यक्ष तथा बिहार कांग्रेस के महा सचिव भी रह चुके हैं।

श्रीमती किशोरी देवी

दरभंगा जिले के विभिन्न संस्थाओं से संबद्ध तथा महिला और अन्य सामाजिक कार्यों में भी आप संलग्न रही हैं। वर्षों विधान सभा परिषद् की सदस्या बिहार के राज्य मंत्री और बिहार राज्य समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा रह चुकी हैं।

श्रीमती कौशल्या देवी

मुंगेर जिले के निवासी श्री शशि भूषण प्र० सिंह की पत्नी। 1977 के चुनाव में जनता पार्टी के टिकट पर बिहार विधान सभा की सदस्या निर्वाचित होकर लोक निर्माण विभाग की उपमंत्री रह चुकी हैं। अब कांग्रेस (इ) में सम्मिलित हो गयी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती राम सुकुमारी देवी एम० एड० बी० एल०

विशैली (समस्तीपुर) के स्व० श्री जगन्नाथ पांडेय की पुत्री तथा महमदा (समस्तीपुर) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण, स्वतंत्रता सेनानी श्री रामश्रेष्ठ प्र० सिंह की पत्नी।

कई बार विहार विधान सभा की सदस्या निर्वाचित हुईं। विहार प्रादेशिक कांग्रेस (इ) की सचिव भी रह चुकी हैं। बिहार राज्य आवास बोर्ड की भू० पू० अध्यक्षा तथा पटना उच्च न्यायालय की अधिवक्ता हैं।

श्रीमती कमला सिंह

लंगाशुमई (वैशाली) निवासी प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री वसावन सिंह की पत्नी। विहार विधान परिषद् की सदस्या तथा विहार हिन्द मजदूर सभा की उपाध्यक्षा रह चुकी हैं।

पं सूर्य नारायण शर्मा

सिमरी (भोजपुर) निवासी। मनेरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। स्वामी जी के अनुयायी सामाजिक गौरव और सादगी के प्रतीक तथा सेनानी। 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम में गिरफ्तार होकर दो वर्ष तक जेल में रहे। दो बार निर्दलीय रूप में विहार विधान सभा के निर्वाचित सदस्य रह चुके हैं। राज्यमंत्री मनोनीत किये जाने पर भी आपने उसे अस्वीकार कर दिया। इस समय सिमरी (भोजपुर) के प्रखंड प्रमुख हैं।

आप सदा समाज सेवा में भी संलग्न रहे हैं। अयोध्या के सामाजिक केश में फैजाबाद से लखनऊ तक न्यायालय में सक्रिय उपस्थित रहकर पैसा और साक्ष्य जुटाकर आपने सामाजिक गौरव की रक्षा में सफलता प्राप्त की। आप ब्राह्मणत्व के गौरव हैं।

सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावतंश हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पं० राजनाथ पांडेय ने अपनी 'त्रिकालजयी' के पृष्ठ 52 में सभी ब्राह्मणों के सखा तथा गौरव के रूप में उल्लिखित किया है।

बदुपर (भोजपुर) में संपन्न अ० भा० अयाचक ब्राह्मण सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष आप ही थे। अ० भा० ब्राह्मण परिषद् के उपाध्यक्ष भी रहे हैं। 'सैनिक ब्राह्मण' तथा 'ब्राह्मण वंश विवेक' नामक दो ऐतिहासिक पुस्तकों की रचना आपने की है।

श्री भुवनेश्वर चौधरी

लोमा (वैशाली) निवासी। कोदरिये मूल के शांडिल्य ब्राह्मण। छात्र जीवन से ही देश तथा राजनीति में रुचि रही है। स्वतन्त्रता संग्राम में जेल गये। मुजफ्फर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुर जिला कांग्रेस के मंत्री, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष तथा अ० भा० कांग्रेस के सदस्य भी रहे। 1957 से 1962 तक बिहार विधान सभा के सदस्य, 1974 से 76 तक गंडक विकास अभिकरण के निदेशक, 1975 से 77 तक बिहार टेक्स्टबुक कमेटी के निदेशक, 1976 से 80 तक बिहार विद्यालय समिति तथा संस्कृत शिक्षा परिषद् के सदस्य रहकर देश तथा राज्य की जनता की महत्त्वपूर्ण सेवा आपने की है।

आपकी पत्नी श्रीमती सुदामा चौधरी भी बिहार विधान सभा की सदस्या रह चुकी हैं।

श्री मायानन्द ठाकुर

वलुआ ड्योढ़ी (पूर्णियां) निवासी, सल हेरिया मूल के उपमन्यु गोत्रीय ब्राह्मण। आप पुराने कांग्रेसी हैं। आप विधान परिषद और बिहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती छाया ठाकुर यूनीवार्ता में उप-संपादिका हैं।

श्री रामाश्रय प्र० सिंह

नेवारी (गया) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। 1962 से 1972 तक आरा स्नातक क्षेत्र से बिहार विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित होते रहे। 1972 में कुथा (गया) से तथा 1980 में मखदुमपुर (गया) से बिहार विधान सभा के सदस्य चुने गये। 1985 के 15 मार्च तक राज्य सरकार के आपूर्ति राज्य मंत्री, उद्योग, आपूर्ति, संसदीय कार्य, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा मंत्री और नगर विकास मंत्री रहे। पुनः 15/3/85 को श्री विन्देश्वरी दुवे के मंत्रिमंडल में उद्योग और संसदीय कार्य मंत्री बने। अप्रैल 85 में बिहार विधान परिषद् के सदस्य मनोनीत किये गये। बाद में संसदीय, उर्जा और सिंचाई मंत्री बनकर सेवा करते हैं। कोंच (गया) से नवम्बर 86 में हुए उपचुनाव में बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए है।

आप स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के अध्यक्ष हैं तथा मगही भाषा और अन्य कई संस्थाओं से भी संबद्ध हैं।

श्रीमती उमा पांडेय

जन्म स्थान कलवारी (मुजफ्फरपुर) हरपुर कराह (बनियापुर, छपरा) में ससुराल। कई बार विधान सभा की सदस्या चुनी जाती रही हैं। 1983 के प्रारम्भ तक बिहार की राज्य मंत्री तथा फरवरी 85 तक विधायिका रहीं। पुनः 1985 के मार्च में बनियापुर (छपरा) से निर्वाचित विधायिका होकर शिक्षा और संस्कृति मंत्री रहीं। वर्तमान में श्रम मंत्री के रूप में सेवारत हैं।

1982 में राष्ट्रीय और सामाजिक कार्य के लिए राज्यपाल की अध्यक्षता में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपका नागरिक अभिनन्दन कर सम्मानित किया जा चुका है।

श्री राजोसिंह

हथियावां (मुंगेर) निवासी, मालवे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। कई वार बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर विधायक तथा कांग्रेस विधायक दल के उपमुख्य सचेतक रह चुके हैं तथा 1980 में भी कांग्रेस टिकट पर निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य रहे और 15/2/83 तक राज्य सरकार के मंत्री भी रहे। 1985 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में शेखपुर से निर्वाचित बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

1980 से लगातार कई वर्षों तक बिहार कोआपरेटिव फेडरेशन के अध्यक्ष चुने जाते रहे। वर्तमान में सहकारिता भूमिविकास बैंक के अध्यक्ष तथा राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा की सीनेट के सदस्य भी हैं।

1985 में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन में विदेश गये और वाशिंगटन, लंदन, न्यूयार्क आदि का भ्रमण भी किया। अक्टूवर 86 में 36 सदस्यीय भारतीय सहकारिता अध्ययन दल के नेता के रूप में ब्रिटेन एवं मध्य पूर्व देशों का भ्रमण कर 16/10/86 को वापस आ गये।

डा० रामजतनसिंह

पुराण गांव (गया) निवासी तथा विज्ञान महाविद्यालय, पटना के प्राध्यापक हैं। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य, बिहार के राज्य मंत्री तथा प्रादेशिक जनता पार्टी के महासचिव भी रह चुके हैं। 1985 में (कांग्रेस इ) के टिकट पर निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री वन्दीशंकरसिंह

माऊर (मुंगेर) निवासी, शिरियार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण तथा विहार के भू० पू० मुख्य मंत्री डा० श्रीकृष्ण सिंह के सुपुत्र। वारसलीगंज (गया) 1980 तथा 1985 में विहार विधान सभा के सदस्य चुने गये। 27/10/83 से राज्य सरकार के राज्य मंत्री के रूप में सेवारत हैं।

श्री रघुनाथ पांडेय

वखरी (मुजफ्फरपुर) निवासी, शिवरैयां मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। मुजफ्फरपुर में एक साधारण व्यवसाय प्रारंभ कर अपने परिश्रम, अध्यवसाय और सूझबूझ से अनेकों व्यवसाय में संलग्न रहकर अपार संपत्ति और यश का अर्जन आपने किया है। लाखों रु० देकर मुजफ्फरपुर में श्रीकृष्ण चिकित्सा महा-विद्यालय, होमियो मेडिकल कालेज, वैशाली इन्स्टीच्यूट ऑफ टेकनोलौजी, उमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पांडेय महिला महाविद्यालय तथा पूसा में उमा पांडेय महाविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण सेवा की है। बाबू लंगटसिंह और महंत दर्शन दास के समान शिक्षा प्रचार में आपने सराहनीय कार्य किया है।

समय पर अपनी बसें चलाकर जनता को आवागमन की सुविधा प्रदान की है। आप पेट्रोल पम्प और सिनेमा के स्वामी भी हैं।

आप वर्षों नगरपालिका के चेअरमैन रहकर भी जनसेवा कर चुके हैं तथा 1980 से बिहार विधान सभा के निर्वाचित सदस्य हैं और राजेन्द्र कृषि वि०वि० पूसा की सीनेट के सदस्य और मुजफ्फरपुर सेन्ट्रल कोआपरेटिव बैंक के अवैतनिक सचिव के रूप में भी जनसेवा में संलग्न हैं।

श्री श्यामसुन्दर सिंह धीरज

मरांची (पटना) निवासी। आप छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे हैं। प्रादेशिक छात्रसंघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

1980 में प्रथम बार बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और 15/3/82 तक राज्य सरकार के उपमंत्री भी रहे। 1985 में भी बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। बिहार युवक कांग्रेस के अध्यक्ष भी हैं। 1984 के फरवरी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय युवक सम्मेलन में सम्मिलित होकर विदेश में भी घूम आये हैं।

श्रीगणेश शंकर विद्यार्थी

रजौली (नवादा) निवासी। बिहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं और मार्क्सवाद साम्यवादी दल के बिहार शाखा के सचिव हैं।

श्री विश्वमोहन शर्मा

वेला विलासपुर (बेतिया) निवासी, किनवार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री गोपाल राय अधिवक्ता के सुपुत्र तथा अभियंत्रणा डिग्री प्राप्त। लौरिया क्षेत्र से 1980 तथा 1985 में बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और इस समय राज्य के उद्योग राज्य मंत्री हैं।

श्री भोलासिंह

साम्यवादी दल के भू० पू० विधायक तथा बाद में दो बार कांग्रेस टिकट पर वेगूसराय से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और 15/3/85 तक राज्य के राज्य मंत्री भी रहे। बिहार कृषि निगम के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्तमान में विधान सभा के कांग्रेसी सदस्य तथा श्रीकृष्ण विचार मंच वेगूसराय के सचिव हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री ईश्वर शरणसिंह

निगुराकोट, वाराणसी निवासी। उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य, उ० प्र० विधान मंडल कांग्रेस दल के महामंत्री रह चुके हैं। अ० भा० कांग्रेस के सदस्य तथा उ० प्र० भूमिहार ब्राह्मण समाज के मंत्री भी रहे हैं।

श्री नरेन्द्र कुमार

कुशाहन (नवादा) निवासी, बिहार कोआपरेटिव बैंक के भू० पू० अध्यक्ष स्व० श्री मथुरा प्र० सिंह के सुपुत्र। नवादा से निर्वाचित बिहार विधान सभा के सदस्य हैं तथा बिहार कोआपरेटिव बैंक के दुबारा तीन वर्षों के लिए निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये हैं।

डा० पद्मदेव नारायण शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्

कामर्स कालेज, पटना के प्रधानाचार्य तथा पटना वि० वि० के वाणिज्य विभागाध्यक्ष हैं। पटना वि० वि० शिक्षक संघ के अध्यक्ष तथा विहार जनता पार्टी के अध्यक्ष रह चुके हैं। अब कांग्रेस (इ) के सदस्य हैं तथा वर्षों से विहार विधान परिषद् के सदस्य हैं।

श्री शत्रुघ्न प्र० सिंह

मुस्तफापुर (वेगूसराय) निवासी। उच्च विद्यालय के शिक्षक तथा माध्यमिक शिक्षक संघ विहार के सचिव और 1984 में दरभंगा शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित विहार विधान परिषद् के सदस्य हैं।

श्री परमानन्द सिंह 'मदन'

छतौना, समस्तीपुर निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। समस्तीपुर कालेज के प्राध्यापक, साम्यवादी नेता तथा शिक्षक नेता। विहार विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं तथा 1984 में निर्वाचित होकर विहार विधान परिषद् के सदस्य हैं। विश्व विद्यालय शिक्षक महासंघ के महासचिव भी हैं।

श्री वैद्यनाथ पांडेय

हरपुर कराह (छपरा) निवासी। लगभग नौ वर्षों तक विहार विधान परिषद् के सदस्य रह चुके हैं। विधान परिषद् में जनता पार्टी के मुख्य सचेतक भी रह चुके हैं। प्रसिद्ध किसान नेता स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के सचिव हैं।

कैप्टन रामनिवास सिंह

खैरवादर्य (शिवहर, सीतामढ़ी) निवासी, प्रसिद्ध मोख्तार श्री मथुरा प्र० सिंह के सुपुत्र। विहार विधान परिषद् के सदस्य रह चके हैं तथा 1985 में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बथनाहा (सीतामढ़ी) निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य चुने गये हैं। भारत स्काउट एन्ड गाइड के मुख्य राज्य आयुक्त भी हैं। भारत स्काउट एन्ड गाइड की नवमी जम्बूरी (बोध गया) में 31 दिसम्बर 1982 को राष्ट्रीय आयुक्त द्वारा स्काउट एवं गाइड के सर्वोत्तम पुरस्कार से आप पुरस्कृत किये जा चुके हैं। अन्य अनेक संस्थाओं के सदस्य तथा अध्यक्ष भी रहे हैं।

श्री मिथिलेश पांडेय

हिसार (मधुबनी) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। कांग्रेस टिकट पर कई बार बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर सदस्य रहते आये हैं। वर्तमान में भी निर्वाचित सदस्य हैं।

प्रो० नलिनी रंजन सिंह

रीगा (सीतामढ़ी) निवासी वंशीवाल मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पं० रुक्मिणी प्र० सिंह साहित्याचार्य के सुपुत्र। आप रामदयालु सिंह कालेज मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक तथा सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर के नेता हैं। 1980 से लगातार दो बार निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री राजेन्द्र प्र० शर्मा

विहपुर (भागलपुर) से 1980 से दो बार लगातार निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य हैं। बिहार खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री नवलकिशोर शाही

1939 ई० में जन्म। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर निर्वाचित होकर 1980 में चुनाव होने तक बिहार विधान सभा के सदस्य रहे। पुनः 1985 में रूनीसैदपुर (सीतामढ़ी) से निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य हैं। पटना वि० वि० के सीनेट के सदस्य भी रह चुके हैं।

श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'

कठौत (गाजीपुर) में गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1910 ई० में जन्म। आप कवि तथा स्वतंत्रता सेनानी हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में जेल गये। उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य तथा उ० प्र० कांग्रेस विधायक दल के सचिव रह चुके हैं। आप गाजीपुर नागरी प्रचारिणी सभा के महासचिव तथा एम० ए० उच्च विद्यालय के शिक्षक भी रह चुके हैं। 'लोक सेवक' तथा 'गाजीपुर समाचार' का संपादन भी कर चुके हैं। आपकी रचित 4 पुस्तकें 'युवक', 'हिमांशु', 'पथदीप' तथा 'सत्यासत्य' (महाकाव्य) है। आपके भाई श्री सूर्यदेव शर्मा मध्य प्रदेश के विधायक रह चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री सूर्यदेव शर्मा

कठौत (गाजीपुर) निवासी गौतम गोत्रीय ब्राह्मण श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' भू० पू० विधायक के भाई। आप पीताम्बर मठ दतिया (मध्य प्रदेश) के व्यवस्थापक तथा हिन्दू सभा के नेता हैं। आप मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं।

श्री अवधेश राय शास्त्री

शेरपुरकला (गाजीपुर) निवासी। दिलदार नगर (गाजीपुर से 1985 में निर्वाचित होकर उ० प्र० विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री कृष्णानन्द राय

आप उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री रह चुके हैं।

श्री विजयनारायण राय एम० ए०

लौआडीह (गाजीपुर) निवासी। आप मध्य प्रदेश के सतना जिले के मैहर में राय लाइम कम्पनी का संचालन करते हैं। मैहर से 1980 में निर्वाचित होकर मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। आपके भाई श्री रामस्वरूप राय उत्तर प्रदेश विधान सभा के भू० पू० सदस्य हैं।

श्री रेवतीरमण सिंह

बरांव (प्रयाग) निवासी। उत्तर प्रदेश के विधायक तथा मंत्री रह चुके हैं। 1985 में पुनः निर्वाचित होकर उ० प्र० विधान सभा के सदस्य हैं। जनता पार्टी विधायक दल के नेता भी हैं।

डा० जगदीश शर्मा

कोरी (गया) निवासी। घोसी (गया) से कांग्रेस टिकट पर दो दो बार निर्वाचित होकर 1980 से लगातार विहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री राय हरिशंकर शर्मा

केसरिया (चंपारण) क्षेत्र से दो दो बार निर्वाचित होकर 1980 से लगातार विहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री कृष्णनन्दन प्र० सिंह

अरिक्तयारपुर (पटना) निवासी। अरवल (गया) से दो दो बार निर्वाचित होकर 1980 से लगातार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री रामचन्द्र मिश्र

कन्हैयाचक (खगडिया) निवासी, सुरौरेकोटी मूल के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण। 1980 से दो दो बार निर्वाचित होकर विधान सभा के सदस्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री प्रमोदकुमार शर्मा

आप गणेश दत्त कालेज वेगूसराय के अध्यापक रहे हैं। मटिहानी (वेगूसराय) क्षेत्र से दो दो बार निर्वाचित होकर 1980 से लगातार बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री वीरबल शर्मा

चनपरिया (पं० चंपारण) क्षेत्र से साम्यवादी दल के टिकट पर दो दो बार निर्वाचित होकर 1980 से लगातार बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री आदित्यसिंह

नरहट (नवादा) निवासी। 1980 से दो दो बार निर्वाचित होकर बिहार विधान सभा के सदस्य हैं।

विधि विशेषज्ञ

पं० शिवनन्दन राय

सुहबल (गाजीपुर) निवासी।

पटना उच्च न्यायालय के आप प्रमुख अधिवक्ता तथा समाज प्रेमी व्यक्ति थे। भूमिहार ब्राह्मण समाज के निर्धन छात्रों को आर्थिक सहायता देकर शिक्षण सुविधा देते रहे। 1938 में पटना में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के स्वागताध्यक्ष भी आप रह चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री अरीक्षर्णसिंह

गहिलो (मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री द्रव्येश्वर सिंह के सुपुत्र। 5 अप्रैल 1872 ई० को जन्म। 1900 ई० में कलकत्ता वि० वि० से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक तथा 1905 में फोर्ट विलियम कालेज (कलकत्ता) से कानून की उपाधि प्राप्त कर मुजफ्फरपुर में वकालत प्रारंभ कर वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। 1910 ई० में इलाहाबाद में संपन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पचीसवें अधिवेशन में बिहार से प्रतिनिधि के रूप में आप सम्मिलित हुए थे तथा 1 जुलाई 1917 को डा० सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में हुई बिहार उड़ीसा कांग्रेस कमेटी की बैठक में भी भाग लिया था। 1920 में आप बिहार उड़ीसा किसान सभा के अध्यक्ष भी थे। भूमिहार ब्राह्मण सभा में भी सक्रिय भाग लेते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष तथा सचिव भी रह चुके थे। सामाजिक कार्यों में आप बाबू लंगटसिंह के सहयोगी थे।

बिहार उड़ीसा विधान परिषद् के एक बार निर्वाचित तथा एक बार मनोनीत सदस्य रह चुके थे। 24 मई 1945 को आपका देहान्त हो गया।

श्री युगेश्वर प्र० सिंह

परसौनी (मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। आप मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा समाज प्रेमी थे।

1916 ई० में अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के संयुक्त मंत्री रहे तथा बहुत दिनों तक 'भूमिहार ब्राह्मण' का संपादन भी किया था। सामाजिक कार्यों में आप तत्पर रहते थे।

श्री देवकीनन्दन सिंह

माऊर (मुंगेर) निवासी, शिरियार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री हरिहर सिंह के सुपुत्र तथा बिहार केसरी डा० श्रीकृष्ण सिंह के अग्रज। पं० वासुदेव तिवारी के ग्यारहवें पुश्त में आप उत्पन्न हुए थे।

कानून की डिग्री प्राप्त कर 1898 ई० में मुंगेर में मोख्तारी प्रारंभ की। वर्षों ज्योतिष शास्त्र का गहन अध्ययन भी किया। अमावा-टिकारी के राजकुमारों के अभिभावक भी रहे।

'ज्योतिष रत्नाकार' हिन्दी में लिखकर आपने अगाध पांडित्य का परिचय दिया। दिनकर जी के शब्दों में "कोमल मिष्ट स्वभाव को, प्रणयी साधु उदार। सात्विक विप्र सनातनी, सौम्य सुगुण भंडार। आप थे। भूमिहार ब्राह्मण सभाओं में भी आप सम्मिलित हुआ करते थे। 1944-45 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री अनूप लाल ठाकुर

ब्रह्मोत्तरा (मधुबनी) निवासी। मधुबनी के प्रसिद्ध मोख्तार तथा समाज सेवी थे। दरभंगा जिला बोर्ड के सदस्य भी रह चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री अयोध्या प्र० ठाकुर

रेपुरा (समस्तीपुर) निवासी, सहस्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। समस्तीपुर के प्रसिद्ध मोख्तार तथा समाज सेवी थे 1952 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री सहदेव सिंह

बखरी (मुजफ्फरपुर) के प्रसिद्ध मोख्तार तथा समाज सेवी थे। मुजफ्फरपुर लोकल बोर्ड के चेअरमैन भी रह चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री सूर्य नारायण त्रिवेदी

जोड़पुर मालपुर (समस्तीपुरा) निवासी, सिहोगिया मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप समस्तीपुर के प्रसिद्ध मोख्तार तथा समाज सेवी थे। दिघरा (पूसा) मिडल स्कूल के सचिव, समस्तीपुर लोकल बोर्ड तथा समस्तीपुर नगरपालिका के चेअरमैन भी रह चुके थे। 'गंवार मसला' नामक पुस्तक भी आपने लिखी थी। 1934 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री विश्वेश्वर दयाल सिंह

पल्टूहाता (छपरा) निवासी, गौतम गोत्रीय ब्राह्मण। छपरा के प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा समाज सेवी थे। दिवंगत हो चुके हैं। आपके परिवार के श्री निशि कान्त सिंह पथ निर्माण विभाग, बिहार के आयुक्त सह सचिव हैं।

श्रीहरेकृष्ण राय

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। आरा के प्रमुख अधिवक्ता तथा समाज प्रेमी व्यक्ति थे। भूमिहार ब्राह्मण सभाओं में भी भाग लेते थे।

आपके पुत्र श्री श्याम नारायण राय भू०पू० जिलाधीश का देहान्त भी 1970 में हो चुका है।

श्री रामचन्द्र प्र० सिंह

जोगियारा (दरभंगा) निवासी, सिहोगिया मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण, दरभंगा के प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा समाज प्रेमी थे। पटना उच्च न्यायालय में भी ख्याति प्राप्त अधिवक्ता थे।

आपके एक पुत्र श्री नरेन्द्र नारायण सिंह पुलिस महानिरीक्षक सह, महा समादेष्टा (होमगार्ड), एक पुत्र श्री सुरेन्द्र ना० सिंह मुन्सिफ मजिस्ट्रेट तथा एक पुत्र अभियन्ता हैं।

श्री विश्वनाथ प्र० सिंह

बड़हिया (मुंगेर) में 19/10/1907 ई० को दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। 1932 में वकालत पास कर 6/2/33 से मुंगेर में वकालत प्रारंभ कर वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में मुंगेर में प्रसिद्ध हुए। 1/9/42 से 29/11/42 तक स्वतंत्रता संग्राम में जेल में रहे। 1944 से 1962 तक पब्लिक प्रोस्क्यूटर रहे। आप अनेकों संस्थाओं के संस्थापक सदस्य तथा मंत्री थे। 1947 से 1971 तक श्री कृष्ण सेवा सदन, मुंगेर के मंत्री भी थे। आपने बड़हिया ग्राम के संबन्ध में 'मेरा गांव—मेरे लोग' लिख-कर दिघवे सन्दहपुर मूल के ब्राह्मणों (अपने वंश) का परिचय दिखलाया। आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिवंगत हो चुके हैं। आपके एक पुत्र श्री ललित विजय सिंह पुलिस महा निरीक्षक (विधि व्यवस्था) हैं।

पं० राम लखन मिश्र

मेहसी (चंपारण) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। मोतीहारी के वरिष्ठ अधिवक्ता थे। मुंशी सिंह कालेज, मोतीहारी के सचिव तथा चंपारण जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष भी रह चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री सरयूप्रसाद सिंह

साइन (मुजफ्फर) के मूल निवासी। सीतामढ़ी के वरिष्ठ अधिवक्ता थे। बहुत दिनों तक समस्तीपुर में अवैतनिक दंडाधिकारी भी थे। आपने समस्तीपुर जिले के भरथुआ में निवास बना लिया था। वहीं परिवार का निवास स्थान है। 24/4/82 को आपका देहान्त हो गया।

बिहार के भू०पू० मुख्य सचिव श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह आई०सी०एस आपके दामाद थे।

श्री रामचरित्र प्रसाद सिंह

पुनास (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। समस्तीपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा समस्तीपुर कालेज के सचिव भी थे। अनुमंडलीय भूमिहार ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष (1945-46 में) रह चुके थे। आपका देहान्त 1961 में हो गया।

श्री जलेश्वर प्र० सिंह

छतियाना (पटना) निवासी, याजीमूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण डा० सर गणेश दत्त सिंह के सुपुत्र। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता थे।

श्रीराम सुन्दर राय

वरजा (भोजपुर) निवासी। आरा के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा समाज सेवी थे। 1977 ई० में सरकारी अधिवक्ता नियुक्त हुए। 1980 में अधिवक्ता संघ की ओर से आपके वकालत की स्वर्ण जयन्ती मनायी गयी थी। 27 जनवरी 82 को हृदय गति रुक जाने से 76 वर्ष की आयु में आपका देहान्त हो गया।

पं० रामबली राय

वनकठा (गोरखपुर) निवासी, वरुआ के तिवारी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण प्रमुख अधिवक्ता तथा समाज सेवी थे। आपके पुत्र डा० उदय नारायण राय इलाहबाद वि०वि० में इतिहास और पुरातत्व विभाग के रीडर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शिव प्रसाद सिंह

अवथहीं गाजीपुर, उत्तर प्रदेश, से इनके पूर्वज बिहार के मुंगेर जिले के खगरौन गांव में आ बसे। बी० एच० यू० से वकालत पास कर समाजवादी क्रांतियों से जुड़े रहे, डा० राम मनोहर लोहिया के अत्यन्त निकट सहयोगी, एवं राजनारायण जी के विशिष्ट मित्र, पूर्व काल में 'चौखम्भा' संपादन संचालन भी किया। श्री कृष्ण सेवा सदन के अध्यक्ष, एवं मुंगेर जिला न्यायालय के लब्ध प्रतिष्ठित अधिवक्ता। आपके तीनों सुपुत्र अभियंता है।

श्री शिव पूजन राय

भोजपुर जिला में जन्म। राज्य सरकार की नैयायिक सेवा में प्रवेश कर जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर कार्य कर अवकाश ग्रहण किया था। अ०भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के उपाध्यक्ष रहे तथा समाज सेवा भी करते रहे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री वशिष्ठ नारायण राय

सुहवल (गाजीपुर) में जन्म। पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में कार्यारंभ कर वरीय अधिवक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त की। योगीराज अरविन्द के शिष्य बनकर परम आध्यात्मिक व्यक्ति बने।

वर्षों अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के महामंत्री तथा 1947 ई० में टिकारी (गया) में संपन्न अ०भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रहे। गरीब छात्रों को अध्ययनार्थ छात्रवृत्ति भी देते थे। 1949-50 में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त हुए। न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद पटना वि० वि० के कुलपति पद पर रहे। जीवन का अन्तिम समय अरविन्द आश्रम में बीता। 1964 में आपका निधन हो गया।

श्री त्रिविक्रम नारायण सिंह

छपरा जिला में जन्म। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर रहते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद पर कार्य कर अवकाश ग्रहण किया। बिहार विश्वविद्यालय के कोपाध्यक्ष पद पर भी रहे। दिवंगत हो चुके हैं। आपके पौत्र की शादी काशी नरेश महाराजाधिराज द्विजराज डा० विभूति ना० सिंह की पुत्री से है।

श्री हृदय नारायण सिंह

भवनाथ पुर (भागलपुर) निवासी, स्व० राय साहब भागवत प्र० सिंह के सुपुत्र तथा दरभंगा के भू० पू० चिकित्सक स्व० डा० शीतल प्र० सिंह के अग्रज। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य कर अवकाश ग्रहण कर चुके थे। 1980 में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपके एक पुत्र कोलम्बिया वि० वि० में प्राध्यापक तथा एक पुत्र मजिस्ट्रेट हैं।

श्री मुचकुन्द शर्मा एम० ए० एल० एल० बी०

पटना जिला में जन्म। पातेपुर (वैशाली) मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक तथा पातेपुर थाना कांग्रेस के अध्यक्ष रहने के बाद वकालत पास कर मुजफ्फरपुर में अपना वकालत प्रारंभ किया और कुछ ही दिनों में ख्याति प्राप्त अधिवक्ता हो गये। ओचहा (मुजफ्फरपुर) में जमीन खरीदकर फार्म स्थापित किया तथा नया टोला, मुजफ्फरपुर में कई भवन बनवाये। जुलाई 1974 में आपका देहान्त हो गया। आपकी मात्र दो पुत्रियां हैं, जिनमें एक डा० सत्यभामा ठाकुर मुजफ्फरपुर की प्रसिद्ध चिकित्सका हैं।

पं० रामबहादुर शर्मा

जन्म स्थान शीतल पुर (छपरा)। आपका जन्म पौष 16 विक्रमाब्द 1947 (ई० सन् 1890) में एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। शिक्षा समाप्ति के बाद पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में कार्यारंभ किया तथा समाज सेवा की ओर भी प्रवृत्त हुए। 1926 ई० में अ०भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के महामत्री तथा 1928 ई० में अ० भा० सारस्वत ब्राह्मण महासभा के अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। सामाजिक गौरव तथा ब्राह्मणों की एकता के लिए प्रयत्नशील रहे। बाद में हथुआ राज्य के विधि अधीक्षक और महाप्रबन्धक भी रहे। अवकाश ग्रहण के बाद वैशाली जिले में निवास करते रहे। दिनांक 14/2/86 को आपका देहान्त हो गया।

'ब्राह्मण परिचय' तथा 'ब्राह्मण सैनिक और शासक' नामक पुस्तक भी आपने लिखी थी।

श्री बलभद्र प्र० सिंह

वसंतपुर (मुजफ्फरपुर) में 10/2/16 को जन्म। 1940 ई० में कानून की पढ़ाई पूरी कर जिला कोर्ट में वकालत प्रारंभ कर पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता बने। आप कई भाषाओं के विद्वान तथा संवैधानिक मामलों के विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध रहे। 1/2/63 को बिहार के महाधिवक्ता नियुक्त हुए तथा 26/9/76 को त्यागपत्र दे दिया। अप्रैल 1986 में आपका देहान्त पटना में हो गया। आपको एक पुत्र श्री आशुतोष हैं।

श्री कौलेश्वर नाथ राय

जन्म स्थान—उजियार (बलिया)। वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण कर चुके थे। दिवंगत हो चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री श्याम नन्दन प्र० सिंह

आनन्दगढ़ (गया) निवासी। सन् 1914 ई० में जन्म। आप छात्र जीवन से ही मेधावी रहे हैं। कानून की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर 1943 ई० में पटना उच्च न्यायालय में वकालत प्रारंभ किया। 1951 में सरकारी वकील बने। 1959 के 1 दिसम्बर को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर नियुक्त हुए। 8/3/74 को कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश तथा 3/10/74 को स्थायी मुख्य न्यायाधीश पद पर नियुक्त हुए। 1 मई 1976 को मुख्य न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण किया। 8/6/78 को बिहार के लोकायुक्त नियुक्त होकर 8/6/83 तक उच्च पद पर रहकर सेवा निवृत्त हो चुके हैं।

श्री प्रभुनारायण राय

गेहुनी (आजमगढ़) निवासी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री रामरतन सिंह

हर्षपुरा थाना वनियापुर (छपरा) निवासी। बिहार की नैयायिक सेवा में जिला एवं सत्र न्यायाधीश रहने के बाद राज्य सरकार के विधि विभाग के सचिव रहे। बाद में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर कार्य कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और पटना के मन्दिरी मुहल्ले में निवास करते हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के सदस्य तथा कोषाध्यक्ष हैं।

श्री हरगोविन्द सिंह

छतियाना (पटना) निवासी, याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० डा० सर गणेश दत्त सिंह के सुपुत्र। बिहार की नैयायिक सेवा में प्रोन्नत होते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री शिवकुमार सिंह

मोहनपुर (गाजीपुर) निवासी, कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण बाबू ज्वाला प्र० सिंह के सुपुत्र। वर्तमान में ज्वाला बाबू वगैरह सभी बलुआही (असरगंज, मुंगेर) के निवासी हो गये हैं।

बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य कर जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। बिहार विद्युत् बोर्ड के कानूनी परामर्शदाता भी रह चुके हैं। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता के रूप में कार्यशील हैं। आपके पुत्र डा० रमेशचन्द्र सिंह पटना मेडिकल कालेज में प्लास्टिक सर्जरी विभागाध्यक्ष हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री बाल्मिकी प्र० सिंह

टेकनपुरा (वेगूसराय) निवासी बाबू हितो राय के सुपुत्र। पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपके पुत्र श्री मदन मोहन प्र० सिंह पूर्वोत्तर सीमान्त रेलवे के मुख्य वाणिज्य अधीक्षक पद पर पद-स्थापित हैं।

श्री जयमंगल शर्मा

कलवारी (मुजफ्फरपुर) निवासी, सुरगणे मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। शिक्षा समाप्ति के बाद मुजफ्फरपुर में अधिवक्ता के रूप में कार्यारंभ किया। बाद में बिहार की नैयायिक सेवा में नियुक्त होकर जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण कर पुनः मुजफ्फरपुर में वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। श्री कृष्ण विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक भी रह चुके हैं।

श्री सुरेन्द्र नारायण सिंह

बेलवा, वाराणसी निवासी, विधि विशेषज्ञ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहकर आप अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और 2 दयानन्द मार्ग इलाहाबाद में निवास करते है।

श्री चन्द्रिका प्र० सिंह

मोहनपुर (गाजीपुर) निवासी, पटना उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री नागेन्द्र प्र० सिंह

प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री बलदेव प्र० सिंह के सुपुत्र। वर्षों पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहने के बाद 1973 से पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर प्रतिष्ठित हैं।

श्री ललित मोहन शर्मा

मूसी (बेलागंज, गया) निवासी, भारत के भू० पू० सालिसिटर जनरल श्री लाल नारायण सिंह के सुपुत्र। अधिवक्ता रहने के बाद 1973 से पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर पदस्थापित हैं।

श्री उमेश चन्द्र शर्मा

नया गांव (खगड़िया) निवासी। वर्षों पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहने के बाद पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री अभिराम प्र० सिंह

मांची भंडारी (सीतामढ़ी) निवासी। राज्य सरकार की नैयायिक सेवा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विभिन्न पदों पर रहने के बाद रांची में जुडिशियल कमिश्नर रहे। नवम्बर 1982 में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त हुए तथा वर्तमान में उच्च न्यायालय के रांची बेंच में न्यायाधीश के रूप में कार्यरत हैं।

श्री हृदय नारायण सिंह

इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश पद पर पदस्थापित हैं।

श्री राम नरेश ठाकुर

जस्सो (मधुबनी) निवासी, कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद जिला एवं सत्र न्यायाधीश रहे। बिहार विधान सभा के सचिव के रूप में भी काम किया। 1982 से पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर पद स्थापित हैं। पटना उच्च न्यायालय सहकारिता भंडार के अध्यक्ष भी हैं।

श्री विमलेन्द्र नारायण सिंह

भवदेपुर, सीतामढ़ी निवासी। राज्य की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद बिहार विधान परिषद् के सचिव तथा उच्च न्यायालय पटना के निबंधक रहे। अक्टूबर 1986 से पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर कार्यरत हैं।

श्री केशव प्र० सिंह

बेलवा (वाराणसी) निवासी, विधि विशेषज्ञ, इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश पद पर कार्यरत हैं।

श्री पद्मदेव ना० सिंह

सेनुआरी (गया) निवासी। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद पर कार्यरत हैं।

श्री जानकी प्र० सिंह

पटना निवासी। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद जिला एवं न्यायाधीश पद पर कार्यरत हैं।

श्री विश्वनाथ त्रिवेदी

मतलूपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, आरे मूल के कुत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की नैयायिक सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद मोतीहारी में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद पर रहे। वर्त्तमान में उच्च न्यायालय (रांची बेंच) में अतिरिक्त निबन्धक पद पर कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामपक्ष सिंह

पवरा (वेगूसराय) निवासी, बेलौंचे सुदई मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की नैयायिक सेवा में डाल्टेनगंज (पलामू) में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद पर कार्यरत हैं।

श्री कृष्ण देव राय

नगसर (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। फर्रुखाबाद (उ० प्र०) में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं।

श्री लाल नारायण सिंह

12/7/1906 ई० को मूसी (गया) में जन्म। 1930 में बार० एट० लॉ० पास कर पटना उच्च न्यायालय में आपने वकालत प्रारंभ किया। 1947 से 1953 तक पटना उच्च न्यायालय में सरकारी वकील तथा 1953 से 1965 तक वरिष्ठ सरकारी वकील के रूप में कार्य किया। 1965 से 1972 के जनवरी तक बिहार के महाधिवक्ता तथा 1/7/72 से 5/4/77 तक भारत के सालिसिटर जनरल के रूप में कार्य किया। 1976 में अ० भा० वकील सम्मेलन की अध्यक्षता आपने की। जनता सरकार बनने पर सालिसिटर जनरल के पद से त्यागपत्र दे दिया। 9/7/79 को राष्ट्रपति द्वारा भारत के महान्यायवादी नियुक्त होकर उक्त पद पर काम किया। बाद में सरकारिया आयोग के संयुक्त सलाहकार बनाये गये हैं। आपके पुत्र श्री ललित मोहन शर्मा पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश हैं।

श्री दिलकिशोर प्र० सिंह, बार० एट० लॉ०

मुरगामा (पटना) निवासी, श्री केदारनाथ सिंह भू० पू० महाप्रबन्धक, अमावा—टिकारी राज्य के पुत्र। आप सर्वोच्च न्यायालय के बैरिस्टर हैं तथा वर्षों भारतीय संसद के सदस्य रह चुके हैं। बिहार सरकार के कामों को देखने वाली समिति के सदस्य भी आप रह चुके हैं।

श्री त्रिवेणी प्र० सिंह

ठाहर (सीतामढ़ी) निवासी, पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा नेता। वर्षों बिहार विधान सभा के सदस्य तथा भूमिहार ब्राह्मण कालेजियट स्कूल, मुजफ्फरपुर के सचिव रह चुके हैं तथा कई अन्य संस्थाओं से संबद्ध रहे हैं। वर्तमान में मुजफ्फरपुर क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष हैं। 1981 में मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी में बृहत भूमिहार ब्राह्मण सम्मेलन में आपने सक्रिय भाग लिया था। सामाजिक गतिविधि में भी सम्मिलित रहते हैं। वर्तमान निवास चक्कर मैदान, मुजफ्फरपुर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राम जन्म ओझा

चौमुख (मुजफ्फरपुर) निवासी। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता तथा इंका विधि कोषांग के सचिव हैं। विहार विधान सभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

श्री रमेश प्र० सिंह

पटना के अधिवक्ता तथा पटना स्नातक क्षेत्र से द्वितीय वार निर्वाचित विहार विधान परिषद् के सदस्य हैं।

श्री फौजदार राय

अमिला (आजमगढ़) निवासी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता। अयोध्या के सामाजिक केश में अयोध्या से लखनऊ की उच्च न्यायालय तक अपनी विद्वतापूर्ण वकालत द्वारा सामाजिक गौरव की रक्षा करने में आप सफल रहे। समाज सेवा की प्रवृत्ति से आप युक्त हैं।

श्री ब्रज किशोर ना० सिंह

अहियापुर (गया) निवासी, भू० पू० कमिश्नर रा० ब० श्याम नारायण सिंह के सुपुत्र तथा विश्व चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डा० अवध किशोर ना० सिंह के अग्रज। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता हैं। अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा के महामंत्री रह चुके हैं।

श्री ब्रजनन्दन प्र० सिंह

गोनामा छतियाना (पटना) निवासी, याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। पटना उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा सर गणेश फंड के निदेशक हैं।

श्री गुलाब प्र० सिंह

महमदा (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।

श्री नारायण शरण प्र० सिंह

रूखाय माधोपुरगढ़ (चंडी, नालन्दा) निवासी, पिलसवार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। 1928 ई० से समस्तीपुर में अधिवक्ता के रूप में कार्यरत वरिष्ठ अधिवक्ता तथा समाजसेवी हैं।

तिरहुत एकेडमी, मॉडल हाई स्कूल, महिला हाई स्कूल, महिला महाविद्यालय समस्तीपुर तथा किशोरी कन्या विद्यालय (नरहन) के संस्थापकों में एक तथा तिरहुत एकेडमी और मॉडल हाई स्कूल के सचिव भी रह चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री सिद्धिनाथ राय

उजियार (बलिया) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री महादेव राय के सुपुत्र। आप महम्मदाबाद (गाजीपुर) के प्रमुख अधिवक्ता हैं। आपकी उम्र 84 वर्ष की है। आपके पुत्र डा० अनिल कुमार राय आंजनेय प्रमुख साहित्यकार तथा समाजसेवी हैं।

श्री नागेश्वर ओझा

चौमुख (मुजफ्फरपुर) निवासी। मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता। श्री कृष्ण विधि महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के प्रधानाचार्य पद पर पर रह चुके हैं।

श्री हरिहर प्र० सिंह

सिलौत (मुजफ्फरपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। उपदंडाधिकारी के पद पर कुछ दिनों तक कार्य करने के बाद त्यागपत्र देकर मुजफ्फरपुर में वकालत प्रारंभ की और अब वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। ललितेश्वर प्र० शाही महाविद्यालय के सचिव तथा कई अन्य संस्थाओं के सदस्य भी हैं।

श्री गिरीश नन्दन सिंह

समर्था (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पं० राम निरीक्षण सिंह के सुपुत्र। कुछ दिनों तक नैयायिक पदाधिकारी रहने के बाद त्यागपत्र दे दिया। अब पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता हैं।

श्री शिवकुमार राय

नरही (बलिया) निवासी, बेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। बलिया के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं। जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री भी रह चुके हैं।

श्री हरिनारायण राय

नरही (बलिया) निवासी, बेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। बलिया के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।

श्री रामवदन शर्मा

छपरामेघ (मुजफ्फरपुर) निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। मुजफ्फरपुर के अधिवक्ता तथा श्रीकृष्ण विधि महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा भूमिहार ब्राह्मण छात्रावास मुजफ्फरपुर के सचिव रह चुके हैं।

1945 में बेतिया के अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण—महासभा की स्वागत-समिति के कार्यालय मंत्री के रूप में भी सेवा कर चुके हैं।

आपके एक पुत्र श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय के शिक्षक तथा एक पुत्र रडार इंजीनियर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामसकल सिंह

चक्का रसूलपुर, सीतामढ़ी निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री रामसेवक सिंह के सुपुत्र। प्रमुख विधिवेत्ता संजय विधि महाविद्यालय, सीतामढ़ी के संस्थापक तथा प्रधानाचार्य हैं। रामसकल सिंह विज्ञान महाविद्यालय, सीतामढ़ी के संस्थापक भी आप ही हैं।

श्री कृष्णचन्द्र राय

रेवती (गाजीपुर) निवासी, शकरवार मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। गाजीपुर के अधिवक्ता तथा स्वामी सहजानन्द सरस्वती महाविद्यालय के भू० पू० सचिव हैं। अ० भा० ब्राह्मण परिषद् की कार्य समिति के सदस्य भी रहे हैं। सामाजिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं।

श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह

चन्दौली (सीतामढ़ी) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण बाबू राम प्रसन्न सिंह के सुपुत्र। मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा समाज प्रेमी हैं। छात्र जीवन से ही सामाजिक सेवा की अभिरुचि रही है। छात्र रहते समय जिला भूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री रह चुके हैं। मुजफ्फरपुर के मझौलिया रोड में निवास करते हैं।

श्री जगन्नाथ प्र० सिंह

चनरहठी कमतौल (मुजफ्फरपुर) निवासी। मुजफ्फरपुर के अधिवक्ता, चन्द्रलोक मार्केट, मुजफ्फरपुर के स्वामी तथा जेम्स आवासीय विद्यालय के संचालक हैं।

श्री सियाशरण चौधरी

भवनाथपुर (भागलपुर) निवासी। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता हैं।

श्री विश्वंभर कुमार शर्मा

मनियारी (मुजफ्फरपुर) के महंत तथा पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रहे हैं। आपकी पत्नी श्रीमती रत्ना शर्मा मगध महिला कालेज पटना में हिन्दी विभाग की अध्यक्षा तथा पुत्र डा० विजय कुमार शर्मा अभियंत्रणा महाविद्यालय के प्राध्यापक हैं।

श्रीमती रेणुका शर्मा (1)

बिहार के प्रसिद्ध दिवंगत नेता श्री महेश प्र० सिंह की सुपुत्री तथा गोही (समस्तीपुर) निवासी, गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री ठाकुर प्र० शर्मा (प्रसिद्ध उद्योगपति) की पुत्रवधू और स्व० श्री राम विनोद शर्मा की पत्नी। पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कैलाश प्र० सिंह

कर्ण, मुजफ्फरपुर निवासी, विजलपुरिया मूल के कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण। मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं। समाज सेवा की भावना से युक्त है। जुरन छपरा रोड नं० 2, मुजफ्फरपुर में निवास करते हैं।

श्री मदन मुरारि प्र० सिंह

धनौर, मुजफ्फरपुर निवासी मनकौलिया मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं। समाज सेवा की भावना से युक्त हैं। मुजफ्फरपुर के नयाटोला मुहल्ले में निवास करते हैं।

श्री राजकुमार सिंह एम० ए०, साहित्य रत्न, एल० एल० बी०

बिक्रीकर अधिकारी पद से सेवा निवृत्त होकर अधिवक्ता के रूप में कार्यरत रहते हुए समाज सेवा में भी संलग्न हैं। कानपुर के रानीघाट पुराना बाजार में वर्तमान निवास है।

श्रीमती रेणुका शर्मा (2)

चौधरी टोला, पटना के श्री कुमार ना० शर्मा की पुत्री तथा खटांगी (गया) के समाज सेवी श्री उमेश्वर प्र० सिंह अधिवक्ता (गया) की पुत्रवधू। पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं।

श्री चन्द्र केतु ना० शर्मा

फतहपुर डुमरी (वैशाली) निवासी।

मुजफ्फरपुर के अधिवक्ता तथा समाज सेवी हैं। स्वामी सहजानन्द जयन्ती समारोह के संयोजक भी रह चुके हैं।

श्री नागेन्द्र राय अधिवक्ता

पइँ (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता हैं और कदमकुआं पटना में निवास करते हैं। आप श्री शिवकुमार सिंह भू० पू० जिला जज के दामाद हैं।

श्री जनार्दन राय अधिवक्ता

पइँ (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। पटना जिला न्यायालय में अधिवक्ता हैं। भू० पू० जिला जज श्री शिवकुमार सिंह के आप दामाद हैं।

श्री गयानन्दन सिंह

शिवहर, सीतामढ़ी निवासी श्री रत्नेश्वरी नन्दन सिंह के पौत्र। पटना उच्च-न्यायालय के अधिवक्ता हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशासकीय पदाधिकारी

रायबहादुर मेदिनी प्र० सिंह

साम्हो पिपरियाडीह (बेगूसराय) निवासी। चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण राजा भगवान सिंह के वंशज श्री दुल्ली सिंह के सुपुत्र। अंग्रेजी शासन में आप दंडाधिकारी थे। आपने एक केस में अपने दामाद को दोषी पाकर कारावास की सजा दी थी। ऐसा करके आपने न्याय का महान उदाहरण उपस्थित कर दिखाया। आप ब्राह्मण वंश के ही नहीं मनुष्य मात्र के गौरव थे। 1902 में आपका देहान्त हो गया।

पं० चन्द्रबली राय

बनकठा (गोरखपुर) निवासी, बरुआ के तिवारी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। भूमिहार ब्राह्मण कालेज (अब लंगटसिंह कालेज) मुजफ्फरपुर तथा कैनिंग कालेज के प्राध्यापक रहे तथा ब्रिटिश शासन में जिलाधीश तथा कमिश्नर पद पर रह कर अवकाश ग्रहण किया था तथा बाद में काशी राज्य की सेवा में भी रहे। आप सामाजिक गौरव के रक्षक तथा समाज सेवी भी थे। वर्षों पूर्व दिवंगत हो चुके हैं।

राय बहादुर श्याम नारायण सिंह

अहियापुर (गया) निवासी। ब्रिटिश शासन में जिलाधीश तथा कमिश्नर रहकर आपने अवकाश ग्रहण किया था। 'हिस्ट्री आफ तिरहुत' नामक पुस्तक आपने अंग्रेजी में लिखी। वर्षों पूर्व आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके बड़े पुत्र श्री ब्रजकिशोर ना० सिंह उच्च न्यायालय के अधिवक्ता तथा एक पुत्र डा० अवध किशोर ना० सिंह विश्व चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष हैं।

श्री विन्ध्येश्वरी प्र० सिंह

वाराणसी निवासी, कोल्हा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। स्वतंत्र काशी राज्य के मुख्य सचिव के रूप में आपने कार्य किया। 1919 ई० में आपको सी० आई० ई० की उपाधि मिली। आप सामाजिक भावना से युक्त थे। आपने भूमिहार ब्राह्मणों के पुरोहिती करने का समर्थन किया था।

आपके पूर्वज पं० हरिनाथ मिश्र के दो पुत्र (1) श्री देवांग मिश्र और (2) श्री देवशरण मिश्र थे। प्रथम पुत्र के वंशज आप हैं और दूसरे पुत्र के वंशज आपके पुरोहित हैं, जो सरयूपारी ब्राह्मण कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रायबहादुर राम प्रसाद ना० शाही

गभिरार (सीवान) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। विहार की प्रशासकीय सेवा में प्रवेश कर अनुमंडलाधिकारी, जिलाधीश, उत्पाद कमिश्नर, कमिश्नर आदि पदों पर कार्य कर अवकाश ग्रहण किया था। दिवंगत हो चुके हैं।

आपके उत्तराधिकारी भतीजा श्री वीरेश्वर प्र० ना० शाही (भू०पू पुलिस उप महानिरीक्षक) का देहान्त भी 1976 में हो चुका है।

श्री त्रिवेणी प्र० सिंह आई० सी० एस०

घटारो (वैशाली) निवासी, ववनडीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। छात्र जीवन से ही मेधावी रहे। एम० एस-सी० की परीक्षा में विहार के तत्कालीन एकमात्र विश्वविद्यालय पटना वि० वि० से प्रथम श्रेणी में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। आई० सी० एस० में सफलता प्राप्त कर अनुमंडलाधिकारी, जिलाधिकारी, कमिश्नर, मुख्य सचिव (विहार), केन्द्रीय सरकार के कृषि तथा शिक्षा विभाग के सचिव तथा विहार में राज्यपाल शासन में मुख्य सलाहकार भी रहे।

अय्यर आयोग ने आपकी प्रशासनिक क्षमता की प्रशंसा भी की थी। 31/1/76 को केन्द्रीय सरकार की सेवा से आपने अवकाश ग्रहण किया और 14/4/76 को राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा (समस्तीपुर) के कुलपति नियुक्त हुए तथा 1/11/76 को उस पद से त्यागपत्र दे दिया। जनवरी 1977 ई० में पटना में आपका देहान्त हो गया। आपके एक पुत्र श्री हर्षवर्द्धन अमेरिका में सेवारत हैं।

श्री श्याम नारायण राय

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण स्व० बाबू हरिकृष्ण राय बी० ए०, बी० एल० के सुपुत्र। भोजपुर जिले के डिप्टी कलक्टर नियुक्त होने वाले प्रथम भूमिहार ब्राह्मण। विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए जिलाधिकारी पद से 1955 ई० में अवकाश ग्रहण किया था। 26 दिसम्बर, 1970 को आपका देहान्त हो गया।

श्री ब्रजनन्दन सिंह आई० ए० एस०

मोहनपुर (गाजीपुर) निवासी, कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण श्री हरदेव ना० सिंह के सुपुत्र। 1918 ई० में जन्म। प्रथम श्रेणी में एम० ए० उत्तीर्ण होकर अनुमंडल पदाधिकारी, डिप्टी कमिश्नर, राज्य सरकार के उपसचिव, दामोदर घाटी निगम के प्रशासक, राज्य सरकार के सचिव, विकास कमिश्नर आदि पदों पर कार्य कर अवकाश ग्रहण किया था। 1980 में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रा० ब० सिंहेश्वर प्र० सिंह

जन्मस्थान—मोकामा (पटना)। राज्य सरकार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए उत्पाद आयुक्त के पद से अवकाश ग्रहण किया था। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री रामभजन सिंह

विक्रमपुर (बेगूसराय) निवासी। राज्य की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद मधुबनी में जिलाधिकारी रहते समय पुरस्कृत किये गये थे। बाद में भोजपुर में जिलाधिकारी थे और आपका स्थानान्तरण उद्योग विभाग के निदेशक पद पर हुआ था। किन्तु नये पद पर जाने से पूर्व ही आरा से पटना जाते समय कार दुर्घटना में 24/7/83 को 56 वर्ष की उम्र में आपका देहान्त हो गया।

श्री महेश प्र० ना० शर्मा आई०ए० एस०

गंगेया (मुगफ्फरपुर) निवासी, मलितवार मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। उप समाहर्त्ता नियुक्त होकर प्रोन्नत होते हुए शिक्षा विभाग के उपसचिव, टेक्स्टबुक कमिटी के निदेशक आदि पदों पर कार्य कर गोपालगंज (बिहार) में जिलाधिकारी पद पर पदस्थापित थे। प्रशासनिक व्यवस्था कड़ी करने के कारण 11/4/83 को कार्यालय कक्ष से बाहर निकलते समय बम मार कर अपराधकर्मियों ने आपकी हत्या कर दी। आपकी विधवा तथा मात्र दो पुत्रियां हैं। आपकी हत्या करने वालों को सर्वोच्च न्यायालय से भी फांसी की सजा बहाल रही और फांसी दी गयी।

श्री इकबाल ना० सिंह आई ए० एस०

सिद्धिबाग, वाराणसी निवासी। उत्तर प्रदेश की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए उत्पाद आयुक्त पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री राम सूचित मिश्र आई० ए० एस०

उघरा (भोजपुर, में तरीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 1905 में जन्म। 1928 में स्नातक हुए और 1930 में उपसमहर्त्ता नियुक्त हुए। 1941 में अनुमंडलाधिकारी, 1942 में अवर सचिव, 1946 में हथुआ राज के महा-प्रबन्धक, 1946 में उपसचिव, 1948 में जिलाधिकारी, 1949 में खान कल्याण आयुक्त (केन्द्रीय सरकार), 1953 में राज्य सरकार के सचिव पद पर प्रतिष्ठित हुए। 1960 के लगभग सेवा निवृत्त हुए। आपके पुत्र श्री प्रभात कुमार मिश्र आई० ए० एस० आयुक्त स्तर के अधिकारी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मुनेश्वर प्र० सिंह

कुबौली (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपदंडाधिकारी नियुक्त होकर अनुमंडलाधिकारी, अतिरिक्त जिलाधिकारी तथा उपायुक्त (जिलाधिकारी) के रूप में कार्य कर अवकाश ग्रहण कर रांची में निवास करते है।

वांका (भागलपुर) लोकलवोर्ड के चेअरमैन तथा रांची जिला वोर्ड के प्रशासक भी रह चुके हैं।

श्री उदय नारायण राय आई० ए० एस०

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। उपसमाहर्ता नियुक्त होकर विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए राज्य सरकार के उपसचिव, सचिव, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी तथा मंत्रिमंडल सचिवालय के विशेष सचिव के रूप में कार्य संपादन कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और पटना के शेखपुर मुहल्ले में निवास करते हैं।

श्री माधो सिंह

सूर्यगढ़ा, मुंगेर निवासी। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद मुख्य मंत्री के प्रधान सचिव रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। फरवरी 1985 से बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य बनाये गये हैं।

श्री शिवराज नन्दन शर्मा आई० ए० एस०

पासोपुर (बेगूसराय) निवासी, शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। राज्य सरकार की प्रशासकीय सेवा में उप समाहर्त्ता नियुक्त होकर प्रोन्नत होते हुए राज्य सरकार के सचिव, आपूर्ति निगम तथा जल विकास निगम के अध्यक्ष आदि पदों पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री कैलाश बिहारी शर्मा आई० ए० एस०

कफेन (मुजफ्फरपुर) निवासी, विजलपुरिया मूल के कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण। उप समाहर्ता नियुक्त होकर विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए सांख्यिकी निदेशक, शिक्षा निदेशक तथा राज्य सरकार के संयुक्त सचिव आदि पदों पर कार्य कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। संप्रति पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं।

श्री देवीशरण सिंह एम०ए० (संस्कृत)

कुबौली (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। छात्र जीवन से ही आप मेधावी तथा साहित्यिक और सामाजिक अभिरुचि वाले व्यक्ति रहे हैं।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में उप समाहर्त्ता, अनुमंडलीय पदाधिकारी, अति-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिक्त जिलाधिकारी, डिप्टी कमिश्नर (जिलाधीश), संयुक्त सचिव आदि पदों पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आप द्रोणवार ब्राह्मण वंशावली लिख रहे हैं।

श्री कपिल देव शर्मा

घरभारा (मुजफरपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। छात्र जीवन से ही सामाजिक सेवा की अभिरुचि होने से छात्र जीवन में ही जिलाभूमिहार ब्राह्मण सभा के मंत्री रह चुके हैं। विहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता नियुक्त होकर विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उपसचिव पद पर रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और पटना के श्रीकृष्ण नगर में निवास करते हैं।

श्री इन्द्रदेव नारायण राय

सुहवल (गाजीपुर) निवासी। उत्तर प्रदेश की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद जिलाधीश पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री नरसिंह नारायण सिंह

बहुअरवा (नेपाल) निवासी। नेपाल के केन्द्रीय सचिवालय में सचिव पद पर पदस्थापित हैं।

श्री प्रभात कुमार मिश्र आई०ए०एस०

उघरा (भोजपुर) निवासी तटीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्रीराम सूचित मिश्र भू० पू० आई० ए० एस० के सुपुत्र तथा स्व० रा० ब० महेश्वर प्र० ना० सिंह के दामाद। आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर प्रशासकीय सेवा में प्रविष्ट हुए। चंपारण के जिलाधिकारी, विकास आयुक्त (केन्द्रीय सरकार), सचिव डाकतार विभाग (केन्द्रीय सरकार), सहायता और पुनर्वास आयुक्त तथा स्वास्थ्य आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं और वर्तमान में बिहार राज्य चीनी निगम के अध्यक्ष पद पर पदस्थापित हैं।

श्री निशिकान्त सिंह आई० ए० एस०

पल्टूहाता (छपरा) निवासी। गौतम गोत्रीय ब्राह्मण, भू० पू० अधिवक्ता स्व० श्री विश्वेश्वर दयाल सिंह के परिवार में जन्म। शिक्षा समाप्ति के बाद प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद आयुक्त, वित्त आयुक्त, पद निर्माण विभाग में आयुक्त सह सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त आदि पदों पर रहने के बाद कृषि सचिव के पद पर पटना में पदस्थापित हैं।

श्री श्याम नन्दन प्र० सिंह आई० ए० एस०

चैनपुर (छपरा) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में प्रशासन के विभिन्न पदों पर रहने के बाद दरभंगा में प्रमंडलीय आयुक्त, राजस्व परिषद के अतिरिक्त सदस्य, बिहार राज्य जल एवं निस्सरण बोर्ड के अध्यक्ष, सह प्रबन्ध निदेशक आदि रहने के बाद बिहार सचिवालय में सचिव पद पर पदस्थापित हैं।

डा० आर० के० सिंह आई० ए० एस०

खबड़ा मुजफ्फरपुर निवासी, नेकतीवार मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। भारत सरकार के सचिवालय में संयुक्त सचिव हैं।

श्री कुलपति शर्मा आई० ए० एस०

कमलपुरा (मुजफ्फरपुर) निवासी जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण बाबू राधा मोहन सिंह के सुपुत्र तथा संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान भू० पू० सहायक शिक्षा निदेशक पं० राम पदार्थ शर्मा के अनुज। 1926 ई० में जन्म। पटना विश्वविद्यालय से मैट्रिक, आई० ए० तथा बी० ए० (आनर्स) तक सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर अर्थशास्त्र में एम० ए० की उपाधि आपने प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के बाद उप समाहर्ता नियुक्त हुए। भागलपुर, मोतीहारी, जमशेदपुर, सरायकेला और सीवान में अनुमंडलाधिकारी; छपरा में अतिरिक्त जिलाधिकारी; दरभंगा में चार्ज ऑफिसर; बिहार सचिवालय में अवर सचिव तथा मोतीहारी में जिलाधिकारी रह चुके हैं। इस समय उत्पाद विभाग के संयुक्त सचिव हैं।

श्री नन्दकिशोर प्र० सिंह आई० ए० एस०

घटारो (वैशाली) निवासी, बवनडीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। जिलाधिकारी रह चुके हैं। इस समय बिहार खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी हैं।

श्री के० के० पी० सिंह आई० ए० एस०

गोखुला सिंगाही (मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री रघुनाथ सिंह अधिवक्ता के सुपुत्र। प्रशासन में विभिन्न पदों पर रहने के बाद समस्तीपुर और हजारीबाग में जिलाधिकारी, बिहार राज्य क्रेडिट एन्ड इन्वेस्मेंट कार्पोरेशन के प्रबन्ध निदेशक, लघु सिंचाई विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग के विशेष सचिव, बिहार सहकारिता बैंक के प्रबन्ध निदेशक पद पर रहने के बाद अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री अशोक कुमार सिंह आई० ए० एस०

पिलखी, मुजफ्फरपुर निवासी श्री रघुनाथ सिंह, नियोजन पदाधिकारी के सुपुत्र। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद सीतामढ़ी के जिलाधिकारी के बाद बिहार सचिवालय में उर्जाविभाग के संयुक्त सचिव तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्तमान में मधुबनी में जिलाधिकारी पद पर कार्यरत हैं।

श्री विपिन बिहारी सिंह, आई० ए० एस०

मोहनपुर, गाजीपुर के पूर्व निवासी तथा बलुआही, मुंगेर के वर्तमान निवासी श्री श्रीनारायण सिंह कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण के सुपुत्र तथा श्री शिवकुमार सिंह भू० पू० जिला जज के भतीजा। उ० प्र० की प्रशासकीय सेवा में मुरादाबाद के जिलाधिकारी तथा लखनऊ में सहकारिता विभाग के रजिस्ट्रार पद पर रहने के बाद कमिश्नर पद पर पदस्थापित हैं।

श्री बालेश्वर राय, आई० ए० एस०

ढढ़नी, गाजीपुर निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। उ० प्र० में जिलाधिकारी रह चुके हैं। इस समय केन्द्रीय सरकार के गृह मंत्रालय में उप-सचिव हैं।

श्री राजदेव ना० सिंह, आई० ए० एस०

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद ग्राम पंचायत निदेशक के पद पर पदस्थापित हैं।

डा० शत्रुघ्न प्र० ठाकुर

मनियारी, मुजफ्फरपुर निवासी।

प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद नालन्दा के जिलाधिकारी रहकर जून 1985 से बिहार के ईख आयुक्त के पद पर पदस्थापित हैं। हिन्दी सेवा के लिए राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत किये गये हैं।

श्री वी० पी० एन० शाही, आई० ए० एस०

प्रशासन के विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए जिलाधिकारी, संयुक्त सचिव बिहार राज्य सहकारिता बैंक के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर रहने के बाद बिहार हाउसिंग कोआपरेटिव फेडरेशन के प्रशासक पद पर आसीन हैं।

श्री अवधेश कु० सिंह, आई० ए० एस०

उद्योग विभाग में हैंडलूम निदेशक रहने के बाद 1986 में जिलाधिकारी पद पर पूर्वी चंपारण में पदस्थापित किये गये हैं।

श्री वी० वी० सिंह, आई० ए० एस०

वित्त निगम कानपुर (उ० प्र०) के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री दिनेशराय, आई० ए० एस०

गोरखपुर (उ० प्र०) के जिलाधिकारी पद पर कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राजेन्द्र प्र० सिंह

वरैनी (मीर्जापुर) निवासी, वेलहरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री ज्वाला प्र० सिंह भू० पू० चेयरमैन मोतीहारी जिला बोर्ड) के भतीजा। प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्ता सह निदेशक विकास प्राधिकरण के पद पर मुजफ्फरपुर में पदस्थापित हैं। बेतिया के निवासी हो गये हैं।

श्री अरुण कुमार सिंह

सिकरौल (वेगूसराय) निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्ता के ग्रेड में पदस्थापित हैं।

श्री अशोक कुमार सिंह

सिकरौल (वेगूसराय) निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्ता।

श्री ए० पी० सिंह आई० ए० एस०

प्रताप आटो ट्रेक्टर, प्रतापगढ़ (उ० प्र०) के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री रत्नेश्वरी त्रिवेदी

सीतामढ़ी निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्ता।

श्री श्रीनिवास शास्त्री

लारी (गया) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में प्रखंड विकास पदाधिकारी, अनुमंडलाधिकारी, आयात निर्यात निगम के सचिव आदि पदों पर रहने के बाद गया क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष पद पर पदस्थापित हैं।

श्री ब्रजेश

उदा बथुआ (समस्तीपुर) निवासी डा० सुदर्शन प्र० सिंह भू० पू० अध्यक्ष, बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के दामाद। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद गोरौल चीनी मिल के प्रबन्ध निदेशक रह चुके हैं। वर्तमान में कटिहार के जिलाधिकारी पद पर पदस्थापित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कामदेव सिंह

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्ता के रूप में पथ परिवहन निगम में संयुक्त आयुक्त पद पर पदस्थापित हैं।

श्री यू० सी० ठाकुर

वर्तमान में मुख्य कार्मिक अधिकारी (उद्योग) पद पर पदस्थापित हैं। हिन्दी सेवा के लिए राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत भी किये गये हैं।

श्री नन्देश्वर प्र० सिंह

महमदा (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। उपविकास आयुक्त, सचिव क्षेत्रीय विकास प्राधिकारण आदि पदों पर रहने के बाद मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी (जिलापरिषद मोतीहारी) में पदस्थापित हैं।

श्री भानुप्रताप शर्मा

भागलपुर निवासी श्री उपेन्द्र शर्मा के सुपुत्र। प्रशासकीय सेवा में अपर समाहर्त्ता (उपविकास आयुक्त) के पद पर वैशाली में पदस्थापित हैं।

श्री राजकुमार प्र० सिंह

फतेहाबाद (पारू मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण बाबू राम लखन सिंह के सुपुत्र तथा राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य पं० शिवकुमार शर्मा के अनुज।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी आदि रहने के बाद वरीय अपर समाहर्त्ता के रूप में समस्तीपुर चीनी मिल के प्रबन्ध निदेशक पद पर रहे। अब बिहार सचिवालय में उपसचिव (राजस्व विभाग) के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री अमरेश नन्दन सिंह

समर्था (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण, स्वतंत्रता सेनानी एवं संस्कृत के भू० पू० प्राध्यापक स्व० पं० राम निरीक्षण सिंह के सुपुत्र। उपसमाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी आदि पदों पर रहने के बाद दुमका में अपर समाहर्त्ता पद पर पदस्थापित हैं।

श्री कृष्णदेव चौधरी

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद पूर्णिया में अपर समाहर्त्ता के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री ध्रुव देव शाही

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्त्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में प्रोन्नत होकर चकबन्दी के उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री भूपनारायण सिंह

बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्त्ता के रूप में बिहटा चीनी मिल के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री चन्द्रभूषण पांडेय

महुआवा, मोतीहारी निवासी, निकुतवार मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद पटना में अपर समाहर्त्ता पद पर पदस्थापित हैं।

श्री जनार्दन सिंह

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्त्ता के रूप में उद्योग विभाग में उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री ब्रजनन्दन सिंह

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्त्ता के रूप में बिहार टेक्स्टबुक कमिटी के निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

चन्द्रशेखर राय 'दिवाकर'

रामपुर रजवा (समस्तीपुर) निवासी, शनैवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अपर समाहर्त्ता के रूप में भू-लगान मानकीकरण के उपनिदेशक रहे। अब उत्तर बिहार परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री परमहंस प्र० सिंह

रेपुरा दामोदरपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी। बिहार की प्रशासकीय सेवा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद समस्तीपुर में जिला विकास पदाधिकारी के बाद दरभंगा में सर्वे के चार्ज ऑफिसर।

श्री विपिन तिवारी

बन्नी (छपरा) निवासी, दिघवेमूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में उप समाहर्त्ता, अनुमंडल पदाधिकारी आदि रहने के बाद अपर समाहर्त्ता।

श्री राजेश्वर मिश्र

पतारे (दरभंगा) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्ध साहित्यकार स्व० प्रो० जगन्नाथ प्र० मिश्र के सुपुत्र। बिहार की प्रशासकीय सेवा में उप समाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी, दक्षिण बिहार प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण के सचिव आदि पदों पर रह चुके हैं। वर्तमान में बिहार राज्य चीनी निगम लि० में प्रशासन प्रमुख के पद पर पद स्थापित हैं।

अर्जुन प्र० शर्मा

सोनमई (पटना) निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी आदि रहने के बाद समस्तीपुर में चकबन्दी के उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री रामाधार शर्मा

कोरलहिया (सीतामढ़ी) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी आदि पदों पर रहने के बाद मुजफ्फरपुर में फूड कार्पोरेशन के व्यवस्थापक हैं।

सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के दानी सदस्य भी हैं।

श्री हरि नारायण शर्मा

दिघरा (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण, प्रसिद्ध समाज सेवी स्व० बाबू रामकरण राय के पौत्र। बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता, अनुमंडलाधिकारी आदि पदों पर रहने के बाद हाजीपुर में फूड कार्पोरेशन के व्यवस्थापक हैं।

श्री लक्ष्मण शर्मा

भखरी अलीपुर (पटना) निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में उपसमाहर्त्ता रहने के बाद वीरपुर में अनुमंडलाधिकारी।

श्री कपिलदेव शर्मा

गया निवासी।

बिहार की प्रशासकीय सेवा में उप समाहर्त्ता तथा लक्खीसराय में अनुमंडलाधिकारी रह चुके हैं।

श्री रामेश्वर प्र० सिंह

भटौना (मुजफ्फरपुर) निवासी जैथरिया मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। उपसमाहर्त्ता अनुमंडलीय पदाधिकारी रहने के बाद बिहार राज्य हाउसिंग कोआपरेटिव फेडरेशन, (पटना) के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री शिशिर कुमार सिंह, आई० ए० एस०

लारी (गया) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण, श्री चितरंजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्र० सिंह भू० पू० आई० ए० एस० के सुपुत्र तथा दुवहा, मुजफ्फरपुर निवासी, पटना के प्रसिद्ध चिकित्सक तथा संसद सदस्य पद्मश्री डाक्टर चन्द्रेश्वर प्र० ठाकुर के दामाद। आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर बिहार शरीफ (नालन्दा) के अनुमंडलाधिकारी रहने के बाद वर्तमान में पटना सदर के अनुमंडलाधिकारी हैं। आपकी पत्नी श्रीमती शबनम एम० ए० (राजनीति) की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त हैं।

श्री विनय कुमार राय, आई० ए० एस०

नुआंव (भोजपुर) निवासी, वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण, बिहार के प्रसिद्ध हड्डीरोग विशेषज्ञ डा० एस० के० राय के सुपुत्र तथा पटना के प्रसिद्ध चिकित्सक पद्मश्री डा० चन्द्रेश्वर प्र० ठाकुर, संसद सदस्य के दामाद। आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर पदस्थापित हैं।

श्री राजीव रंजन, आई० ए० एस०

गंगापुर वैनी (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री प्रभु नारायण राय(अधीक्षक कोल रोलिंग मिल, बोकारो) के प्रथम सुपुत्र। बी० एस-सी० (आनर्स) तथा एम० बी० ए० करने के बाद आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर शासकीय प्रशिक्षण में हैं।

श्री संजीव रंजन; आई० ए० एस०

गंगापुर वैनी (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री प्रभुनारायण राय के द्वितीय सुपुत्र। अभियंत्रणा डिग्री प्राप्त करने के बाद आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर प्रशासकीय प्रशिक्षण में हैं।

श्री परिमल कुमार राय, आई० ए० एस०

देवरिया (गाजीपुर) निवासी श्री शिव प्र० राय (पोस्ट मास्टर जनरल, उ० प्र०) के सुपुत्र। आप आई० एस० में चुने गये हैं।

आरक्षी पदाधिकारी

रायबहादुर अवधकिशोर प्र० सिंह

छितरौर (बेगूसराय) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार के पुलिस विभाग में गुप्तचर शाखा के उपमहानिरीक्षक पद से अवकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रहण करने के बाद बिहार पुलिस सेवा आयोग के सदस्य तथा नेपाल सरकार के पुलिस परामर्शदाता रहे। 2 जनवरी 1965 को आपका देहान्त हो गया।

आपके कनिष्ट पुत्र श्री ज्योति कुमार पुलिस उप महानिरीक्षक पद पर प्रतिष्ठित हैं।

श्री वीरेश्वर प्र० ना० शाही

गभिरार (सीवान) में 6/10/1927 ई० को जन्म। भू० पू० कमिश्नर रा० ब० राम प्रसाद ना० सिंह के भतीजा तथा दिवंगत नेता श्री महेश प्र० सिंह के दामाद। 23 वर्ष की उम्र में ही भारतीय पुलिस सेवा (आई० पी० एस०) में चुने गये। 1961 से 64 तक लंदन में हाई कमिश्नर के आप सचिव रहे। बाद में पुलिस उप महानिरीक्षक, परिवहन कमिश्नर, फिर रेल पुलिस के उप महानिरीक्षक रहते हुए जिगर की खराबी के कारण चिकित्सा होने पर भी 2/9/76 को आपका देहान्त हो गया। आप मृदुभाषी थे। 3/9/76 को राजकीय सम्मान के साथ अन्त्येष्टि हुई। शवयात्रा में मुख्य मंत्री, विधानसभाध्यक्ष, उद्योग, श्रम, राजस्व मंत्री तथा राजनीतिक दलों के सदस्य भी शामिल थे। आपकी पत्नी श्रीमती कृष्णा शाही केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री हैं तथा एकमात्र पुत्र श्री राजीव रंजन प्र० ना० शाही आई० पी० एस० प्रधानमंत्री राजीव गांधी के सुरक्षा दल के अधीक्षक हैं।

श्री अनिलकुमार

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामनरेश राय (विशेष शिक्षा निदेशक) के सुपुत्र। आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त कर 1976 में आप पुलिस सेवा में आये। पूर्वी चंपारण के आरक्षी अधीक्षक पद पर रहते समय जीप-बस दुर्घटना में मात्र 30 वर्ष की आयु में दिनांक 30 जनवरी 84 को आपका निधन हो गया। आपको एक पुत्र है।

रायबहादुर दीपनारायण राय

उत्तर प्रदेश में पुलिस अधीक्षक तथा पुलिस महानिरीक्षक रहकर सेवा निवृत्त हुए। 1937 में आपको रायबहादुर की उपाधि मिली थी।

श्री शिवाजी सिंह

लखनचन्द, मोकामा (पटना) निवासी। पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए पुलिस महानिरीक्षक (निगरानी तथा होमगार्ड) रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। बाद में राजनीति में बिहार लोकतांत्रिक कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रह चुके हैं और अब लोकदल के सदस्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री उपेन्द्र शर्मा

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। विहार के पुलिस विभाग में उप महानिरीक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। पटना के हनुमान नगर (कंकड़बाग) में आप रश्मिरथी गैस एजेन्सी का संचालन करते हैं।

श्री विन्देश्वरी प्र० सिंह

मटिहानी (वेगूसराय) निवासी। बिहार के पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए उप महानिरीक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री नित्यानन्द सिंह

रहीमपुर (खगड़िया) निवासी, मर्रे मंगरौनी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के बाद गुप्तचर शाखा के महानिरीक्षक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री सुविष्ट नारायण सिंह

अथरी (सीतामढ़ी) निवासी, दंशीवाल मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार के पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के बाद अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस महानिरीक्षक (निगरानी और होमगार्ड) रहने के बाद पुलिस महानिदेशक के रूप में (पुलिस निर्माण निगम के अध्यक्ष) रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आप राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे।

श्री जगतानन्द सिंह

चिताव (शेरघाटी, गया) निवासी। बिहार के पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के बाद सेंट्रल कोल्ड फील्ड लि० में पुलिस महानिरीक्षक स्तर के अधिकारी रहने के बाद रेल पुलिस के महानिरीक्षक रहे। 1/1/85 से पुलिस विभाग के सर्वोच्च पद महानिदेशक, सह महानिरीक्षक रहकर 31 मार्च 86 में अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपके पुत्र श्री अभयानन्द पुलिस अधीक्षक हैं।

श्री हरिहर प्र० सिंह

गोजरगामा (वेगूसराय) निवासी। बिहार के पुलिस विभाग में प्रोन्नत होते हुए मगध क्षेत्र के आरक्षी महानिरीक्षक रहने के बाद विहार सैन्य पुलिस के महानिरीक्षक पद पर हैं।

आपके पुत्र श्री संजय कुमार सिंह दिल्ली वि० वि० से एम० एस-सी० (भौतिकी) की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

श्री ललित विजय सिंह

बड़हिया (मुंगेर) निवासी, दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं अधिवक्ता स्व० बाबू विश्वनाथ प्र० सिंह के सुपुत्र।

बिहार के पुलिस विभाग में प्रोन्नत होते हुए रांची प्रक्षेत्र के पुलिस महा-निरीक्षक रहने के बाद वर्तमान में पटना में पुलिस महानिरीक्षक (विधि-व्यवस्था), बिहार के पद पर पदस्थापित हैं।

आपके पुत्र श्री विपुल विजय आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त कर गुजरात कैडर में कार्यरत हैं।

आपकी बड़ी पुत्री अमृता विजय की शादी महियाल ब्राह्मण श्री जगजीत कुमार दत्त आई० ए० एस० के साथ है।

श्री नरेन्द्र ना० सिंह

जोगियारा (दरभंगा) निवासी, सिहोगिया मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्रीराम चन्द्र प्र० सिंह अधिवक्ता के सुपुत्र। पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के बाद आरक्षी महानिरीक्षक सह महासमादेष्टा (होमगार्ड) के बाद निगरानी महानिरीक्षक के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री ज्योति कुमार सिंह

छितरौर (बेगूसराय) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण स्व० रा० ब० अवध किशोर प्र० सिंह भू० पू० पुलिस उप महानिरीक्षक के सुपुत्र तथा हररख कोठी (बेगूसराय) निवासी श्री विश्वनाथ सिंह शर्मा, भू० पू० सचिव, गणेशदत्त कालेज, बेगूसराय के दामाद। 1945 में जन्म। पुलिस विभाग में आरक्षी अधीक्षक, सहायक आरक्षी महानिरीक्षक रहने के बाद चंपारण क्षेत्र के उप महानिरीक्षक रहे तथा बाद में पटना में उप महानिरीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री शिवमूर्ति राय

ताजपुर (गाजीपुर) निवासी। बिहार के पुलिस विभाग में आरक्षी अधीक्षक रह चुके हैं। वर्तमान में उप महानिरीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री वी० पी० सिंह

गोरखपुर (उ० प्र०) प्रक्षेत्र के आरक्षी महानिरीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री किशोर कुणाल

सांढ़ा (मुजफ्फरपुर) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। ख्याति प्राप्त पुलिस अधिकारी। आप गुजरात कैडर के पुलिस अधिकारी हैं। आप पटना के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं और वर्तमान में केन्द्रीय सरकार की सेवा में सहायक निदेशक पद पर पटना में पदस्थापित हैं। आप धार्मिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। पटना जंक्शन क निकट स्थित हनुमान मन्दिर के पुनर्निर्माण में आप घनिष्ठ रूप से संबद्ध रहे हैं और उक्त मन्दिर के संस्थापन महायज्ञ (मार्च 1985) में तीन ऋत्विजों में एक आप भी थे।

श्री जे० एन० राय

केन्द्रीय पुलिस उप महानिरीक्षक रहने के बाद इस समय अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक (सी० पी० आई०) के पद पर दिल्ली में पद स्थापित हैं।

श्री राजीव रंजन प्र० ना० शाही

गभिरार (सीवान) निवासी, एकसरिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री वीरेश्वर प्र० ना० शाही, भू०पू० पुलिस उप महानिरीक्षक तथा श्रीमती कृष्णा शाही केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री के सुपुत्र। आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त कर बिहार में पुलिस अधीक्षक पद पर पद स्थापित थे। वर्तमान में प्रधान मंत्री की सुरक्षा पुलिस के अधीक्षक हैं। अपने पिता के समान ही तेजस्वी और मिलनसार हैं।

श्रीकृष्ण देव प्र० सिंह

मोरसंड (समस्तीपुर) निवासी। याजी मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। पुलिस विभाग की गुप्तचर शाखा में विभिन्न पदों पर रहने के बाद मुजफ्फरपुर में रेल अधीक्षक रहे। गोपालगंज, पटना आदि में अधीक्षक रहने के बाद इस समय जमशेदपुर में अधीक्षक हैं। 26 जनवरी 85 को राष्ट्रपति पुलिस पदक प्राप्त कर चुके हैं।

श्री डी० पी० ओझा

कुम्हैला (छपरा) निवासी। ख्याति प्राप्त पुलिस अधिकारी। बिहार में पुलिस अधीक्षक तथा पथ परिवहन में सहायक सुरक्षा निदेशक रहने के बाद केन्द्रीय सरकार की सेवा में रहे। अब पुलिस उप महानिरीक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

श्री आनन्द शंकर

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्रीराम सकल सिंह के सुपुत्र। सीवान में आरक्षी अधीक्षक रहने के बाद सहायक पुलिस महानिरीक्षक (क्यू) के बाद भोजपुर के पुलिस अधीक्षक पद पर कार्यरत हैं।

श्री अभयानन्द

चिताव (गया) निवासी, बिहार के भू० पू० पुलिस महानिदेशक श्री जगतानन्द सिंह के सुपुत्र तथा गंगापुर वैनी (समस्तीपुर) के स्व० डा० त्रिवेणी राय के दामाद। पुलिस अधीक्षक पद पर बिहार में पदस्थापित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री के० एन० राय आई० पी० एस०

उत्तर प्रदेश में पद स्थापित हैं। आपको लंबी उत्कृष्ट सेवा के लिए 15 अगस्त 86 को राष्ट्रपति द्वारा पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

श्री रामचन्द्र शर्मा

केवला (खगड़िया) निवासी। उत्तर प्रदेश के पुलिस विभाग में पुलिस अधीक्षक (इन्टेलिजेन्स ब्यूरो) पद पर वाराणसी में पद स्थापित हैं।

श्री केशव प्र० सिंह

कफेन (मुजफ्फरपुर) निवासी, कौंडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। पुलिस अधीक्षक पद पर रहे हैं।

श्री राजेन्द्र शर्मा (1)

पुडारक (पटना) निवासी। पुलिस अधीक्षक पद पर कार्यरत हैं। 1982 में राष्ट्रपति द्वारा पुलिस पदक प्राप्त कर चुके हैं।

श्री राजेन्द्र शर्मा (2)

जयकिशुन विगहा (गया) निवासी। बिहार में पुलिस अधीक्षक रहे। अब केन्द्र सरकार की सेवा में हैं।

श्री विपुल विजय

बड़हिया (मुंगेर) निवासी, दिघवे सन्दहपुर मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण, श्री ललित विजय सिंह आरक्षी महानिरीक्षक के सुपुत्र। सेंट स्टीफेन्स कालेज, दिल्ली से एम० ए० करने के बाद आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त कर गुजरात कैडर में पद स्थापित हैं। आपकी शादी रामीवीघा स्टेट के अधिपति कुमार ब्राह्मण वल्लभ ना० सिंह की पौत्री से हुई है।

श्री राजेश रंजन

गंगापुर वैनी (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण, प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञान शास्त्री डा० रामपरीक्षण राय के सुपुत्र। पटना वि० वि० से एम० ए० (अंग्रेजी) में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद आई० पी० एस० में सफलता प्राप्त की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्य पदाधिकारी

श्री एन० के० पी० ठाकुर

भू० पू० उप मुख्य विद्युत् आभियन्ता। मुजफ्फरपुर रेल सेवा आयोग के अध्यक्ष पद पर विराजमान हैं।

श्री मदनमोहन प्र० सिंह

टेकनपुरा (वेगूसराय) निवासी, पटना उच्च न्यायालय के भू० पू० न्यायाधीश श्री बाल्मीकि प्र० सिंह के सुपुत्र। एन० एफ० रेलवे में मुख्य वाणिज्य अधीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री० के० के० पी० सिंह

सरमेरा, पटना निवासी। समस्तीपुर में मंडल रेल प्रबन्धक (वाणिज्य) पद पर रह चुके हैं।

श्री इन्द्रदेव सिंह

वेगूसराय निवासी। समस्तीपुर में मंडल रेल प्रबन्धक पद पर पदासीन हैं।

श्री राधेश्याम ठाकुर

माली नगर (समस्तीपुर) निवासी, मोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। पूर्व रेलवे में मुख्य परिचालन अधीक्षक रह चुके हैं और वर्तमान में भू-गर्भ रेलवे कलकत्ता में मुख्य परिचालन अधीक्षक पद पर पदस्थापित हैं। आपके पुत्र डा० मधुप ठाकुर की शादी उत्कल ब्राह्मण परिवार में है।

श्री कौशल किशोर चौधरी

रहीमपुर (खगडिया) निवासी, मर्रे मंगरौजी मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर में उपमुख्य दावाधिकारी पद पर पदस्थापित हैं।

श्री दिनेशचन्द्र

कोइलीनानपुर निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण स्व० पं० योगेश्वरानन्द शर्मा भू० पू० जिला शिक्षा पदाधिकारी के सुपुत्र। रेल इंजिन कारखाना में एक विभाग के अधीक्षक पद पर पद स्थापित हैं।

श्री नवंदेश्वर राय

मंगरांव (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। सहयोग समिति, बिहार के संयुक्त निबन्धक पद से अवकाश ग्रहण कर चित्रवन, बक्सर में निवास करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रमानाथ शर्मा

दिघरा (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। राज्य सरकार की सेवा में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए संयुक्त श्रमायुक्त पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपके पुत्र अभय की शादी मॉरिशस निवासी श्री मदन मोहन सिंह गजाधर (मॉरिशस के भारत स्थित भू० पू० उच्चायुक्त) की पुत्री से है।

डा० मंगलनाथ सिंह

बिहार निवासी। डाकतार में निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री सुरेश प्र० सिंह

मझौलिया (सीतामढ़ी) निवासी लाल बाबू के पौत्र। आयकर आयुक्त रहने के बाद भारत सरकार द्वारा फरवरी 86 में आयकर महानिदेशक पद पर कलकत्ता में पदस्थापित होकर कार्यरत हैं। देश-भर में मात्र दो ही पद महानिदेशक के हैं—एक कलकत्ता में और दूसरा दिल्ली में।

श्री पन्नालाल सिंह

पगड़ा (समस्तीपुर) निवासी श्री एकादश प्र० सिंह के सुपुत्र। बम्बई में आयकर आयुक्त के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री एम० एन० राय

उत्तर प्रदेश निवासी। लखनऊ में वाणिज्य कर आयुक्त पद पर पदस्थापित हैं।

आपके पुत्र श्री जे० एन० राय केन्द्रीय अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक तथा पुत्री श्रीमती नीलिमा बिहार के भू० पू० पुलिस महानिरीक्षक श्री शिवाजी सिंह की पुत्रवधू हैं।

श्री कृष्ण बिहारी शर्मा एम० ए० (संस्कृत)

कोहरा मुजौना (छपरा) निवासी। बिहार के उत्पाद विभाग में सहायक उत्पाद आयुक्त के पद पर गया में पद स्थापित हैं। आप संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान स्व० पं० राम पदारथ शर्मा के फुफेरे भाई हैं।

श्री जगदीश कुमार सिंह

छितरौर (वेगूसराय) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण स्व० राय बहादुर अवधकिशोर प्र० सिंह भू० पू० पुलिस उप महानिरीक्षक के सुपुत्र तथा भू० पू० राजस्व मंत्री स्व० पं० जानकी रमण मिश्र के दामाद हैं। आप कनाडा में पायलट के रूप में कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Fundlng IKS-MoE-Grant-2

श्री एस० पी० राय

देवरिया (गाजीपुर) निवासी। पोस्टमास्टर जनरल उत्तर प्रदेश के पद पर प्रतिष्ठित हैं।

श्री आनन्द नारायण राय

सुहवल (गाजीपुर) निवासी। कानपुर स्थित जिला कारागार के अधीक्षक पद पर कार्यरत हैं।

श्री गया प्र० त्रिवेदी एम० ए० (द्वय)

मतलूपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, आरे मूल के कुत्स गोत्रीय ब्राह्मण। प्रारंभ में सेना में कार्यरत रहे। बाद में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में काम करने के बाद सूचना एवं जन संपर्क विभाग के उपनिदेशक रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और स्थायी रूप से राजेन्द्र नगर, पटना में निवास करते हैं।

चिकित्सा शास्त्री

डा० शीतल प्र० सिंह

भवनाथपुर (भागलपुर) निवासी, सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण स्व० राय साहब भागवत प्र० सिंह के सुपुत्र। दरभंगा मेडिकल कालेज के प्राध्यापक तथा प्रख्यात चिकित्सक रहे। वर्षों पूर्व आप दिवंगत हो चुके हैं। आपके पिता, बड़े भाई (श्री हृदयनाथ सिंह भू०पू० जिला जज) का निधन बाद में हुआ। आपके नाम पर बिहार वि० वि० मेडिसिन में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले को डा० शीतल प्रसाद सिंह गोल्ड मेडलिस्ट एवार्ड देती है। प्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ डा० श्रीनिवास तथा डा० विन्ध्येश्वरी प्र० मिश्र (भू० पू०) प्रधानाचार्य श्री कृष्ण मेडिकल कालेज) आपके दामाद हैं।

डा० विजय नारायण सिंह

सागरपुर (गया) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। पटना मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य तथा प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक और फेफड़े के आपरेशन में विशेष दक्ष थे। वर्षों पूर्व दिवंगत हो चुके हैं। आपके पौत्र श्री ललित मोहनसिंह संजय विचार मंच बिहार के भू० पू० अध्यक्ष हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेफ्टिनेन्ट कर्नल डा० चन्द्रशेखर प्र० शर्मा

खवड़ा, मुजफ्फरपुर में 17/1/1913 को नेकतीवार मूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। डाक्टरी की परीक्षा पास करने के बाद 1942 से 1947 तक भारतीय सेना में मेडिकल कोर में बंगाल तथा बर्मा में कार्यरत रहकर मेजर के रूप में अवकाश ग्रहण किया। 1947 से 1949 तक मनियारी (मुजफ्फर पुर) अस्पताल में चिकित्सा पदाधिकारी तथा 1949 से 1953 तक पूसा (समस्तीपुर) में निजी चिकित्सा व्यवसाय, 1953 से 1962 तक रायल नेपाली आर्मी मेडिकल कोर त्रिचन्द मेडिकल अस्पताल के कमांडिंग ऑफिसर (लेफ्टिनेन्ट कर्नल) के रूप में कार्य किया तथा बाद में 1962 से 1974 तक नेपाल के मलेरिया विभाग में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, 1974 से 1976 तक पश्चिमी नेपाल में अस्पताल निर्माण में कार्यरत, 1976 से 1980 तक एक प्रमुख कन्स्ट्रक्शन इंजीनियरिंग कम्पनी में कश्मीर, कर्नाटक और गुजरात में रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर रहने के बाद पूसा, समस्तीपुर में निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न रहकर जन सेवा में संलग्न रहे। दिनांक 7/1/85 को पूसा में आपका देहान्त हो गया।

डा० रामानुज प्र० सिंह, एम० बी० बी० एस०, डी० ओ० (आक्सफोर्ड), डी० ओ० एम० एस० (लंडन)

ध्रुवगामा (समस्तीपुर) निवासी ध्रुवार मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। सिविल सर्जन रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आप नेत्र रोग विशेषज्ञ भी हैं। वर्तमान में दामूचक, मुजफ्फरपुर में निवास करते हैं।

डा० श्रीनिवास

गढ़ सिरसई (समस्तीपुर) निवासी द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० डा० शीतल प्र० सिंह के दामाद तथा सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह के भगिना। भारत प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ। पटना मेडिकल कालेज में इन्दिरा हृदय रोग संस्थान के निदेशक पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आप साहित्य-कार भी हैं—कई पुस्तकों की रचना आपने की है। आपकी पुस्तक 'मैं कहां हूं' का अनुवाद फ्रेंच भाषा में भी हुआ है। 'इस कछार से उस कछार तक' महान दर्शन ग्रंथ हैं। हाल ही में 'तृण वेणु' नामक काव्य प्रकाशित हुआ है, जिसमें काव्य और विज्ञान का अनोखा संगम है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पं० राजनाथ पांडेय ने अपनी 'त्रिकालजयी' पुस्तक आपको समर्पित करते हुए आपके लिए 'महामानव', 'महा मनीषी', 'महान कवि', 'हिन्दी साहित्य के विराट गौरव शृंग' विशेषण का प्रयोग किया है।

आप सर्वधारा चिकित्सा परिषद् के चार वर्षों के लिए अध्यक्ष चुने गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० योगेन्द्र किशोर सिंह

दरभंगा मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य, स्वास्थ्य विभाग, बिहार के संयुक्त निदेशक तथा स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक के पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपकी पुत्री की शादी 22/2/76 को मॉरिशस निवासी श्री चतुर्भुज सिंह के पुत्र श्री राम कुमार सिंह गजाधर के साथ हुई थी।

डा० विन्ध्येश्वरी प्र० मिश्र

वन्नी, छपरा निवासी, कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। श्रीकृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर के वर्षों प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं तथा मुजफ्फर पुर में निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं। आप दरभंगा के भू० पू० चिकित्सक स्व० डा० शीतल प्र० सिंह के दामाद हैं।

मेजर डा० स्वामी चरण प्र० सिंह

वलि गांव (वैशाली) निवासी। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। भारतीय सेना के मेडिकल कोर में कार्यरत रहने के बाद मेजर के रूप में अवकाश ग्रहण कर पटना मेडिकल कालेज अस्पताल में यौन और चर्मरोग विशेषज्ञ तथा उपाधीक्षक पद पर कार्यकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

मेजर डा० ओमप्रकाश शर्मा

धर्मागतपुर वथुआ (समस्तीपुर) निवासी प्रसिद्ध समाज सेवी स्व० डा० राम प्रकाश शर्मा के सुपुत्र। गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। भारतीय सेना के मेडिकल कोर में चिकित्सक रहकर मेजर के रूप में अवकाश ग्रहण करने के बाद दरभंगा मेडिकल कालेज अस्पताल के उपाधीक्षक पद पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० आर० एन० ठाकुर

जगन्नाथपुर (कांटी, मुजफ्फरपुर) निवासी, प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक। दरभंगा मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभागाध्यक्ष तथा श्रीकृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर के प्रधानाचार्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और मुजफ्फरपुर में निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न है।

श्री महेन्द्र प्र० सिंह एफ० आर० सी० एस०

गया निवासी। मगध मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। आपके दामाद श्री अनिल कुमार आरक्षी अधीक्षक मोतीहारी का निधन जीप-दुर्घटना में 31/1/84 को हो गया।

पदमभूषण डा० मदन मोहन प्र० सिंह

गया जिले के निवासी। इंगलैंड और अमेरिका में शिक्षा प्राप्त। संसार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ। कुछ दिन दिल्ली के इरविन अस्पताल में चिकित्सक रहने के वाद अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में हृदय रोग विभागाध्यक्ष हैं।

डा० श्रीकृष्णराय

नुआंव (भोजपुर) निवासी। वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। विहार के प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ चिकित्सक के रूप में विख्यात। विहार में हड्डी रोग विशेषज्ञ में दूसरा स्थान। विहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग के 'कृत्रिम अवयव निर्माण केन्द्र' कंकड़वाग, पटना के अवैतनिक निदेशक हैं। आपके पुत्र श्री विनय कुमार आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

डा० अवध किशोर ना० सिंह एफ० आर० सी० एस०

अहियापुर (गया) निवासी, भू० पू० कमिश्नर रा० ब० श्याम ना० सिंह के सुपुत्र। अमेरिका में डाक्टरी की ऊंची शिक्षा प्राप्त विहार के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। इंडियन मेडिकल एसोसियेशन तथा विश्व मेडिकल सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं। 1985 में भारतीय चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष वनाये गये हैं। अप्रैल 1985 में भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को डा० विधान चन्द्र राय पुरस्कार आपके हाथों से ही प्राप्त हुआ। आप अहियापुर कोठी, कदमकुआं पटना में निवास करते हैं।

डा० यू० एन० शाही

शाही मीनापुर(मुजफ्फरपुर) निवासी, विदेश में डाक्टरी की ऊंची शिक्षा प्राप्त। पटना मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभागाध्यक्ष रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति, पटना के आजीवन सदस्य हैं।

डा० राघवेन्द्र प्र० सिंह एफ० आर० सी० एस०

चेसी (पटना) निवासी। हड्डी रोग विशेषज्ञ तथा प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक। रांची मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

डा० राधाकान्त ओझा

चौमुख (मुजफ्फरपुर) निवासी। भू० पू० सिविल सर्जन तथा श्री कृष्ण मेडिकल कालेज अस्पताल के भू० पू० अधीक्षक हैं।

डा० शिव शंकर शाही

माची भंडारी (सीतामढ़ी) निवासी। दिघवेमूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा मेडिकल कालेज में एक्सरे विभागाध्यक्ष हैं।

डा० योगेन्द्र प्र० सिंह

भगवानपुर रत्ती (वैशाली) निवासी। पटना मेडिकल कालेज में एक्सरे विभागाध्यक्ष हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० ब्रह्मदेव ना० सिंह

वरबट्टा (समस्तीपुर) निवासी। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा मेडिकल कालेज में यौन तथा चर्म रोग विभागाध्यक्ष हैं। आपके दामाद श्री सच्चिदानन्द चौधरी (श्रीरामपुर अयोध्या, समस्तीपुर निवासी) मुजफ्फरपुर में स० कार्यपालक अभियन्ता हैं।

डा० आर० एन० तिवारी

मधुवनी जिले के निवासी। भागलपुर मेडिकल कालेज में एक्सरे विभाग अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

डा० जगदेव शर्मा एम० डी०, डी० सी० पी०

भखरी धनरूआ (पटना) निवासी श्री जयपाल सिंह के सुपुत्र। सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा मेडिकल कालेज में पैथोलौजी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। आपने कैंसर पर भी विशेष अनुसंधान किया है तथा नवम्बर 86 में दरभंगा आकाशवाणी से आपने कैंसर पर प्रांजल हिन्दी भाषा में भाषण दिया है। आपका पूरा परिवार स्वामी सहजानन्द सरस्वती का अनुयायी तथा समाज प्रेमी है। आपके पुत्र डा० विनय कुमार शर्मा ने श्री कृष्ण मेडिकल कालेज से वि०वि० की अन्तिम एम० बी० बी० एस० 1981 की परीक्षा में चार विषयों में विशिष्टता के साथ सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

आपकी पुत्रवधू तथा दोनों पुत्र मेडिकल के छात्र हैं।

आपकी पुत्री की शादी पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री राम नरेश ठाकुर, न्यायाधीश पटना उच्च न्यायालय के पुत्र से है।

डा० बदरी नारायण सिंह सी० सी० एच० एल० एम० (डबलिन)

करिहारा मधुवन (समस्तीपुर) निवासी। द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। विदेश से डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त। शिशु रोग विशेषज्ञ। इंग्लैंड स्थित चेशायर के भू० पू० चिकित्सक। समस्तीपुर में चिकित्सा व्यवसाय के साथ शिक्षा प्रसार और समाज सेवा में संलग्न हैं। स्त्री शिक्षा के विकास के लिए कन्या मध्य विद्यालय, कन्या उच्च विद्यालय तथा कन्या महाविद्यालय तक की स्थापना आपके प्रयास से ही हुई।

डा० अनिल कुमार एम० डी०

लोमा (वैशाली) निवासी, कोदरिये मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री भुवनेश्वर चौधरी भू०पू० विधायक तथा श्रीमती सुदामा चौधरी भू०पू० विधायक के सुपुत्र। भारत में हृदयरोग की सर्वोच्च डिग्री प्राप्त। संप्रति नायर होस्पीटल बम्बई में कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० सत्य नारायण शर्मा

धर्मागतपुर बथुआ (समस्तीपुर) निवासी, भू० पू० विधायक स्व० डा० रामाशीष ठाकुर के सुपुत्र। गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। स्वास्थ्य विभाग में हैल्थ ऑफिसर, मेक्सीन उपाधीक्षक तथा मधुबनी और पटना में सिविल सर्जन रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० कृष्ण स्वरूप शर्मा

धर्मागतपुर बथुआ (समस्तीपुर) निवासी, गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामस्वरूप शर्मा के सुपुत्र। स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सा पदाधिकारी, उपाधीक्षक तथा सिविल सर्जन, श्री कृष्ण मेडिकल कालेज के अधीक्षक तथा उपनिदेशक रहकर 1986 में अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० रमेशचन्द्र शर्मा

मंझौल (वेगूसराय) निवासी। जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। चिकित्सा पदाधिकारी, उपाधीक्षक तथा समस्तीपुर में सिविल सर्जन रहने के बाद इस समय वेतिया में सिविल सर्जन हैं।

डा० सुरेश चन्द्र राय एम ०बी० बी० एस०, डी०टी०एम० एंड एच० (इंग्लैंड)

स्व० डा० रामादर्श राय के सुपुत्र। स्टीमर घाट (गाजीपुर) में चिकित्सक हैं।

डा० ललित किशोर शर्मा एम०एस० (एनोटौमी), एफ०सी०जी० पी०(दिल्ली) डी० लिट् (मि० वि० विद्यापीठ), एम० ए० एम० एस० (दिल्ली)

विझरौली (वैशाली) निवासी। दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। प्रसिद्ध समाज सेवी स्व० पं० सन्त प्र० शर्मा की पौत्री के पुत्र। सतरह वर्षों से चिकित्सक। दरभंगा मेडिकल कालेज में एनोटौमी के एसोसियेट प्राध्यापक हैं।

इंडियन मेडिकल एसोसियेशन के सदस्य, जिला शाखा के सचिव, राज्य शाखा के संयुक्त सचिव, अ० भा० एनोटौमी सोसाइटी की कार्य समिति के सदस्य तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य हैं।

राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ कोल्हन्टा पटोरी (दरभंगा) तथा विद्यापति संस्कृत महाविद्यालय दरभंगा के अध्यक्ष तथा महावीर महा० के संस्थापक सदस्य हैं। अन्य कई शिक्षण संस्थाओं से संबद्ध हैं। आपमें समाज सेवा की भावना भी है।

आपकी पत्नी डा० श्रीमती प्रभारानी शर्मा भी दरभंगा में चिकित्सक हैं।

डा० रामदेव कुमार

झंडापुर (भागलपुर) निवासी। बेलौंचे सुदई मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कृष्ण मेडिकल कालेज मुजफ्फरपुर में आंख, कान, गला रोग के विभागाध्यक्ष हैं।

डा० रमेशचंद्र सिंह

बलुआही (मुंगेर) निवासी श्री शिवकुमार सिंह भू० पू० जिला एवं सत्र न्यायाधीश के सुपुत्र। कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। प्लास्टिक सर्जरी विभागाध्यक्ष पद पर पटना मेडिकल कालेज में पद स्थापित हैं। विदेश से डाक्टरी की विशेष शिक्षा भी प्राप्त कर चुके हैं।

डा०वीरेन्द्र किशोर एम० एस०, एफ० आर० सी० एस०

पकरी (सीतागढ़ी) निवासी। शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। भगवानपुर गंगापुर (समस्तीपुर) निवासी भारत के प्रख्यात वनस्पति शास्त्री डा० राम परीक्षण राय के दामाद। श्रीकृष्ण मेडिकल कालेज मुजफ्फरपुर में शल्य चिकित्सा विभाग के प्राध्यापक तथा मुजफ्फरपुर के ख्याति प्राप्त शल्य चिकित्सक हैं। आपकी पत्नी श्रीमती सरला किशोर एम० ए०, बी० एड० (शिक्षा शास्त्री) हैं।

डा० के० के० पी० सिंह

तेऊस (मुंगेर) निवासी। श्री कृष्ण मेडिकल कालेज मुजफ्फरपुर में शल्य चिकित्सा विभाग के प्राध्यापक तथा मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक हैं।

डा० विजयी सिंह

श्री ज्ञानधारी सिंह के सुपुत्र। पटना विश्व विद्यालय के मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी हैं। भारत के विख्यात विधि वेत्ता श्री लाल नारायण सिंह आपके बहनोई तथा पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री ललित मोहन शर्मा आपके भगिना हैं।

डा० धीरेन्द्र कुमार

मंझौल (बेगूसराय) निवासी। जलैवार मूल के वत्स गोगीय ब्राह्मण। हड्डी रोग विशेषज्ञ तथा श्री कृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक हैं। अभी हाल ही लंदन से डाक्टरी की ऊंची शिक्षा प्राप्त कर आये हैं।

डा० रामलला मिश्र

धुबौली (नेपाल) निवासी। सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामदयालु मिश्र के सुपुत्र। नेपाल में परामर्शी सर्जन के रूह में कार्यरत हैं। गन्नीपुर, मुजफ्फपुर निवासी श्री विश्व स्वरूप शर्मा के दामाद हैं।

डा० रामवल्ली सिंह एम० एस० एफ० आर० सी० एस०

रांची मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० हरिनन्दन द्विवेदी एम० एस० एफ० आर० सी० एस०

चंडीहा (सीतामढ़ी) निवासी। प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक तथा दरभंगा मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभाग के प्राध्यापक हैं।

डा० कृष्ण शंकर राय

मलसा (गाजीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बाबा राघव दास मेडिकल कालेज गोरखपुर के अधीक्षक तथा अध्यापक हैं।

डा० नंद किशोर विद्यार्थी एम० एस० एफ० ओ० जी० पी०

भखरी धनरूआ (पटना) निवासी, सोन भदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण डा० जगदेव शर्मा अध्यक्ष पैथोलौजी विभाग, दरभंगा मेडिकल कालेज के भतीजा। दरभंगा मेडिकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभाग के प्राध्यापक तथा विशेषज्ञ हैं।

डा० श्रीमती रंगीला सिंह

चक्का रसूलपुर (सीतामढ़ी) निवासी स्व० श्री राम सेवक सिंह की सुपुत्री तथा श्री राम सकल सिंह प्रधानाचार्य संजय विधि महा० की बहन। मुजफ्फरपुर की प्रख्यात चिकित्सिका तथा श्री कृष्ण मेडिकल कालेज की सह प्राध्यापिका हैं।

डा० श्रीमती सत्यभामा ठाकुर

मुजफ्फरपुर के भू० पू० अधिवक्ता स्व० श्री मुचकुन्द शर्मा की सुपुत्री तथा महम्मदपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी डा० चन्द्रेश्वर प्र०ना० ठाकुर की पत्नी। प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ तथा शल्य चिकित्सिका के रूप में विख्यात। नया टोला, मुजफ्फरपुर में निवास एव चिकित्सालय है।

डा० श्रीमती प्रभा रानी शर्मा एम० एस०, डी० ओ० जी०, एफ०सी०जी०पी०, डी० लिट्, एम० ए० एम० एस०

शीतलपुर (छपरा) के श्री श्याम बिहारी दीक्षित की सुपुत्री तथा विझरौली (वैशाली) निवासी दरभंगा मेडिकल कालेज के प्राध्यापक डा० ललित किशोर शर्मा की पत्नी। स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में दरभंगा में निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

डा० सत्येन्द्र नाथ राय

सुरही (बलिया) निवासी, वेमुआर मूल के सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप विदेश में सेवारत हैं।

डा० राम रणधीर प्र० मिश्र

रघुनाथपुर पतोर (दरभंगा) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण स्व० पं० जानकी रमण मिश्र भू० पू० राजस्व मंत्री, बिहार के सुपुत्र। इस समय अमेरिका के न्यूयार्क अस्पताल में कार्यरत हैं।

डा० आर० पी० एन० सिंह

सलेमगढ़, देवरिया निवासी। पटना मेडिकल कालेज में मानसिक रोग विभाग के प्राध्यापक तथा विशेषज्ञ हैं। आप भू० पू० सांसद तथा स्वनाम धन्य स्व० बाबू लंगट सिंह के पौत्र श्री दिग्विजय ना० सिंह के बहनोई हैं।

डा० बलराम मिश्र एम० डी०, एम० आर० सी० पी०

छपरा के प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा भू० पू० विधायक स्व० श्री विश्वनाथ प्र० मिश्र के दामाद। इंग्लैंड के चिकित्सा विभाग में कार्यरत हैं।

डा० विभूति तिवारी एम० बी० बी० एस०, एम० एस०

बन्नी (छपरा) निवासी, दिघवैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। आप सी० एम० सी० वेलौर में रेडियोलोजिस्ट रह चुके हैं तथा वर्तमान में श्री कृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर में सहायक प्राध्यापक तथा रेडियोलौजी विभाग अध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं।

डा० श्रीमती भारती तिवारी

बन्नी (छपरा) निवासी डा० विभूति तिवारी सहायक प्राध्यापक श्री कृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर की पत्नी। श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापिका तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं।

डा० कृष्ण कुमार मिश्र

बन्नी (छपरा) निवासी, कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री कृष्ण चिकित्सा महा विद्यालय, मुजफ्फरपुर में सहायक प्राध्यापक हैं। आप मनियारी (मुजफ्फरपुर) के महंत श्री विश्वभर कुमार शर्मा एडवोकेट तथा प्रो० श्रीमती रत्ना शर्मा के दामाद हैं।

डा० श्रीमती रंजना मिश्र एम० डी०

बन्नी (छपरा) निवासी डा० कृष्ण कुमार मिश्र सहायक प्राध्यापक श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय की पत्नी तथा महंत विश्वंभर कुमार शर्मा एडवोकेट (मनियारी मुजफ्फरपुर) की सुपुत्री। श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर की सहायक प्राध्यापिका तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं।

डा० देवी नंदन सिंह

शिवहर (सीतामढ़ी) निवासी, जैथरिया मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री रत्नेश्वरी नन्दन सिंह भू० पू० चेअरमैन जिला बोर्ड के पौत्र। मगध मेडिकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालेज गया में सहायक प्राध्यापक तथा हड्डी रोग विशेषज्ञ हैं।

डा० जगत मोहन सिंह

पोखरैरा (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार के विभिन्न स्थानों में चिकित्सा पदाधिकारी रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और अब शिवहर (सीतामढ़ी) में रहकर निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न है। शल्य चिकित्सा में भी आप निपुण हैं।

डा० माया शंकर एम० बी० बी० एस०, डी० सी० एच० (शिशुरोग) एम० आर० एच० (लन्दन)

वारिसपुर (वैशाली) निवासी स्व० श्री बच्चू नारायण सिंह (भू० पू० चेअरमैन जिला बोर्ड (दरभंगा) के सुपुत्र। बवनडीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। श्री कृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय मुजफ्फरपुर में सहायक प्राध्यापक तथा शिशु रोग विशेषज्ञ हैं।

डा० हरेन्द्र त्रिवेदी एम० एस०

चौसीमा (मुजफ्फरपुर) निवासी। आरे मूल के कुत्स गोत्रीय ब्राह्मण। दरभंगा मेडिकल कालेज से मिथिला वि० वि० की 1978 की एम० बी० बी० एस० (अन्तिम) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया तथा इन्डियन मेडिकल इन्स्टीच्युट दिल्ली से एम०एस० कर इस समय बम्बई स्थित भाभा अस्पताल में कार्यरत हैं।

डा० विनय कुमार शर्मा

भखरी धनरूआ (पटना) निवासी दरभंगा मेडिकल कालेज के पैथोलौजी विभागाध्यक्ष डा० जगदेव शर्मा के सुपुत्र तथा शिक्षा निदेशक श्री राम नरेश राय के दामाद। सोनभदरिया मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। श्रीकृष्ण चिकित्सा महाविद्यालय मुजफ्फरपुर से बिहार विश्वविद्यालय की 1981 की एम० बी० बी० एस० (अन्तिम) परीक्षा में चार विषयों में विशिष्टता के साथ सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया और इस समय दरभंगा मेडिकल कालेज में एम० एस० के छात्र हैं।

डा० नीलिमा पाठक

मदन सिरसिया (चंपारण) निवासी पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री कमला मिश्र मधुकर संसद सदस्य तथा राजकीय कन्या उच्च विद्यालय (पूसा) की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कामना मिश्र की सुपुत्री। तेजस्वी होने के कारण आई० एस० सी० के बाद ही चेकोस्लावाकिया में मेडिकल शिक्षा के लिए चुनी गयीं। मेडिकल शिक्षा समाप्त कर एम० डी० की उपाधि प्राप्त कर वापस आ गयी। हिन्दी के अतिरिक्त चेक और रशियन भाषा की भी ज्ञाता हैं। आपकी शादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौझील (मथुरा) निवासी श्री गौरी शंकर पाठक गौड़ ब्राह्मण के पुत्र डा० अनिल कुमार पाडक से 14/12/85 को हुई है। आप दोनों अब दिल्ली में ही चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

डा० श्याम सुन्दर शर्मा एम० डी० (होमियो)

पताढ़ (वैशाली) निवासी। वाराणसी के गोल दीनानाथ मुहल्ले में होमियोपैथिक पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं। आपने होमियो चिकित्सा सम्बन्धी लगभग दो दर्जन पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की हैं तथा अन्य होमियो चिकित्सकों की पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। आप 64/95 ए, अशोक भवन, गोला दीनानाथ (वाराणसी) में निवास करते हैं।

डा० सुरेश शर्मा

(वैशाली) निवासी। वाराणसी स्थित गोला दीनानाथ में होमियो चिकित्सक के रूप में चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं। कई पेटेन्ट दवाओं का निर्माण आपने किया है।

डा० पी० एन० राय

छपरा निवासी। मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध होमियो चिकित्सक। रा०व० टुनकी साह होमियो मेडिकल कालेज के भू० पू० प्रधानाचार्य। वर्तमान में मुजफ्फर पुर होमियो मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य हैं। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति (पटना) की कार्य समिति के सदस्य भी हैं।

डा० महेन्द्र सिंह ठाकुर

रतनपुर (दरभंगा) निवासी। प्रसिद्ध होमियो चिकित्सक। सुन्दर वन होमियो मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य, भारतीय होमियोपैथिक इतिहास समिति के अध्यक्ष। होमियोपैथिक लाइट के संपादक तथा दर्जनों चिकित्सा संबन्धी पुस्तकों के लेखक हैं।

डा० राम जी दुबे

सकरा (मुजफ्फर पुर) निवासी। प्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सक तथा होमियोपैथिक कालेज मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक हैं।

डा० पद्मनाभ शर्मा

ठुलास (सहरा) निवासी कटेशमूल के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री शुक देव ठाकुर भू० पू० संयुक्त शिक्षा निदेशक के सुपुत्र तथा भारत प्रसिद्ध संगीत गायिका प्रो० श्रीमती शारदा सिन्हा के अनुज। रा० व० टुनकी शाह होमियो कालेज से डिग्री प्राप्त कर राष्ट्रीय होमियो संस्थान से होमियोपैथिक की स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर निजी चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राजेश्वर प्र० पांडेय बी० एस-सी०, ए० एम० एस०

सैदपुर (समस्तीपुर) निवासी। शिवरैया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। राजकीय धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय में आयुर्वेद विभाग के प्राध्यापक हैं।

डा० जगदीश चन्द्र राय बी० ए०, ए० बी० एम० एस०

जमनिया कस्बा गाजीपुर निवासी श्री हुकुमचन्द्र राय के सुपुत्र। चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

डा० रामपदार्थ देव आयुर्वेदाचार्य, साहित्याचार्य

बढ़ेता (समस्तीपुर) निवासी। मुजौनिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। पटना जिला बोर्ड के आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्सा पदाधिकारी रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। मोक्ष साधन, श्री रामानन्दीय वैष्णव संप्रदाय भक्ति पथ तथा गीतामृत आपकी रचित पुस्तकें हैं।

पं० श्रीराम शर्मा आयुर्वेदाचार्य

विश्वंभरपुर लोहछा (छपरा) निवासी। वर्षों स्वामी जी के विहटा (पटना) आश्रम में अध्यापक तथा चिकित्सक रहे। अब घर पर आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

श्री विष्णु स्वरूप शर्मा ए० एम० एस०

धर्मागतपुर बथुआ (समस्तीपुर) निवासी, गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। श्री रामस्वरूप शर्मा के सुपुत्र तथा छपरा के भू० पू० सिविल सर्जन डा० कृष्ण स्वरूप शर्मा के अनुज। रांची के अरकी प्रखंड में आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्सा पदाधिकारी हैं।

श्री रणवीर प्र० मिश्र आयुर्वेदाचार्य, सी० टी०एस० (झाँसी) तथा साहित्याचार्य

पचदही, मुजफ्फरपुर निवासी, कोथवैत मूल के विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण। घर पर ही चिकित्सा व्यवसाय में संलग्न हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशिष्ट अभियन्ता

श्री नर्मदेश्वर सिंह

मोहनपुर (गाजीपुर) निवासी, कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। श्री शिवकुमार सिंह भू० पू० जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री शिवकुमार के अनुज। विहार के विद्युत विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए विद्युत विभाग में मुख्य प्रशासनिक पदाधिकारी सहअभियन्ता प्रमुख तथा बिहार विद्युत् बोर्ड के अभियन्ता सदस्य रहने के बाद बिहार राज्य जल विद्युत् निगम के अध्यक्ष सहप्रबन्ध निदेशक पद पर पर पदस्थापित थे। गत 6 मई को वाराणसी में एक दुर्घटना में घायल हो गये और 21/5/85 को दिल्ली स्थित आयुर्विज्ञान संस्थान में आपका देहान्त हो गया। आपकी मात्र दो पुत्रियां हैं। पिता और बड़े भाई जीवित हैं।

श्री शील नारायण राय

रामपुर (भोजपुर) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। विहार के सिंचाई विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए सिंचाई विभाग के मुख्य अभियन्ता पद से 1973 में अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री सीताराम पांडेय

छपरा जिला निवासी। वी० एस-सी० के बाद रासायनिक अभियंत्रणा में डिग्री और इंडियन इन्स्टीच्यूट ऑफ केमिकल इंजीनियरिंग द्वारा एसोसिएटेड मेम्बरशिप से विभूषित किये गये।

आसनसोल (बंगाल) अल्मूनियम कार्पोरेशन ऑफ इंडिया से 1951 में आपने सेवा प्रारंभ की। सिन्दरी फर्टिलाइजर ऑफ केमिकल में काम किया। राउरकेला (उड़ीसा) फर्टिलाइजर प्रॉजेक्ट के उपपरियोजना प्रबन्धक पद पर दो वर्षों तक रहे। उर्वरक उत्पादन तथा संयंत्र प्रबन्ध का यूरोप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1980 के जुलाई में बरौनी (बेगूसराय) खाद कारखाना के महाप्रबन्धक नियुक्त होकर कार्य संपादन किया। अब अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री विजयकृष्ण शर्मा

रामचन्द्रपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी स्व० श्री महेन्द्र ना० शर्मा भू० पू० उप-सचिव, बिहार सरकार के सुपुत्र। नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक कार्पोरेशन, नई दिल्ली के महाप्रबन्ध सह मुख्य अभियन्ता रहने के बाद बिहार विद्युत् बोर्ड के अभियन्ता सदस्य रहे हैं।

श्री शशि भूषण राय

संथाल परगना निवासी। बिहार के विद्युत् विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होते हुए महाप्रबन्धक सह मुख्य अभियन्ता (संचारण) पद पर रहने के बाद बिहार विद्युत् बोर्ड के अभियन्ता सदस्य रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह

मोकामा (पटना) निवासी, मौआर मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। रायल रिफाइनरी हल्दिया में मुख्य अभियन्ता पद पर पदस्थापित हैं।

श्री जगदीश प्र० सिंह

वारिसपुर (वैशाली) निवासी, ववनडीहा मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० रामेश्वर सिंह के सुपुत्र। बिहार के विद्युत् विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए महाप्रबन्धक सह मुख्य अभियन्ता (संचरण) के पद पर पटना में पदस्थापित हैं।

डा० त्रिशूलधारी सिंह

धरहरा (पटना) निवासी, कौंडिन्य गोत्रीय अथर्ववेदी ब्राह्मण स्व० श्री रजन धारी सिंह (भू० पू० मेयर, पटना नगर निगम) के सुपुत्र। इंडियन अलमूनियम फैक्ट्री कलकत्ता में निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

डा० रवीन्द्र प्र० सिंह

लारी (गया) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० बाबू आदित्य प्र० सिंह के सुपुत्र तथा श्री चितरंजन प्र० सिंह, भू०पू० आइ० ए० एस० और श्री मिथिलेश्वर प्र० सिंह भू० पू० विधायक के भाई। राउरकेला इस्पात कारखाना के महाप्रबन्धक तथा रांची में भारत सरकार के सलाहकार रह चुके हैं।

श्री रमेश प्र० ठाकुर

पीअर (मुजफ्फरपुर) निवासी, पिलखियैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामनन्दन ठाकुर के सुपुत्र। विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए बिहार सरकार के नदी घाटी योजना विभाग में क्रय और परिवहन निदेशक पद पर पटना में पद स्थापित हैं।

श्री सत्यदेव शर्मा

धर्मागतपुर बथुआ (समस्तीपुर) निवासी, गंभरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण। स्व० डा० रामाशीष ठाकुर भू० पू० विधायक के सुपुत्र। आप विधि स्नातक भी हैं। बिहार के विद्युत् क्षेत्रीय विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए इस समय तिरहुत क्षेत्रीय विद्युत् बोर्ड के महाप्रबन्धक सह मुख्य अभियन्ता के पद पर मुजफ्फरपुर में पदस्थापित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शर्मानन्द शर्मा

गोविन्दपुर (थाना घोसी, गया) में 1934 के लगभग जन्म। 1950 ई० में मैट्रिक तथा पटना सायन्स कालेज से आई०एस-सी०(पटना वि०वि० में तीसरा स्थान प्राप्त कर) परीक्षा पास कर धनबाद से खनन इंजीनियरिंग की डिग्री में सर्वोच्च स्थान प्राप्ति के साथ उत्तीर्ण हुए और इंजीनियर नियुक्त होकर 1962 तक कोइलियरी के व्यवस्थापक बन गये। विशेष प्रशिक्षण के लिए आप सोवियत संघ भेजे गये। वहां से लौटने पर 1963 में फर्टिलाइजर कार्पोरेशन में चीफ इंजीनियर बनाये गये—29 वर्ष की उम्र में। 1973-74 में एम० एम० टी० सी० बम्बई में जनरल मैनेजर बनाये गये। फिर फर्टिलाइजर कार्पोरेशन, मुख्यालय में आये। मैनचेस्टर जाकर शासकीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1978 में डायमंड कंपनी लि० तथा हिन्दुस्तान डायमंड कार्पोरेशन के चेयरमैन नियुक्त होकर उक्त पर पद प्रतिष्ठित हैं। आपके पुत्र की शादी भू० पू० केन्द्रीय मंत्री तथा अ० भा० कांग्रेस के वर्तमान महामंत्री श्री नवलकिशोर शर्मा (राजस्थान) की पुत्री से हुई है।

श्री गया प्र० शाही

बतरा भाऊर (सीतामढ़ी) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। जमशेदपुर में मुख्य अभियन्ता (सिंचाई) पद पर पदस्थापित हैं।

श्री जगदीश चन्द्र प्र० सिंह

बलिगांव (वैशाली) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण स्व० श्री चतुर्भुज सिंह के सुपुत्र तथा वाराणसी हिन्दू वि० वि० के कुल सचिव श्री रमेश चन्द्र प्र० सिंह के भ्राता। पटना क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण में मुख्य अभियन्ता पद पर पदस्थापित हैं।

श्री टी० पी० पांडेय

मुख्य अभियन्ता, पद पर सिंचाई विभाग में कार्यरत हैं।

श्री क्रान्ति प्र० सिंह

देसुआ (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। कांटी (मुजफ्फरपुर) स्थित वाष्प-शक्ति प्रतिष्ठान में मुख्य अभियन्ता पद पर पद स्थापित हैं।

देवेन्द्र कुमार ना० सिंह

बिहार राज्य विद्युत् बोर्ड के महाप्रबन्धक सह मुख्य अभियन्ता पद पर कार्यरत हैं।

श्री प्रभुनारायण राय

भगवानपुर गंगापुर (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण । स्व० श्री गोरखराय मोख्तार के सुपुत्र । बोकारो स्टील में कोलरोलिंग मिल के अधीक्षक पद पर पद स्थापित है । छितौनी (सारण) स्टेट) के भू० पू० अधिपति स्व० श्री नन्दन प्र० ना० सिंह भू० पू० एम० एल० सी० तथा भू० पू० चेअरमैन सारण जिला बोर्ड की पौत्री से आपकी शादी है । आपके दो पुत्र आई० ए० एस० में सफलता प्राप्त कर प्रशासकीय प्रशिक्षण समाप्त कर चुके हैं ।

श्री उपेन्द्र प्र० सिंह

मंझौल (वेगूसराय) निवासी, जलैवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण । बोकारो स्टील सिटी में उपमुख्य अभियन्ता पद पर पद स्थापित हैं ।

श्री रामचन्द्र शर्मा

वाराणसी निवासी ।

आप मुख्य अभियन्ता पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं ।

श्री मथुरा राय

एच० 12, संजय गांधी नगर, वाराणसी निवासी । प्रबन्ध निदेशक (उत्तर प्रदेश रा० वि० स० नि० लि०) तथा मुख्य अभियन्ता (उ० प्र० रा० वि० प०) पद पर रह कर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं । आप समाज सेवा में भी संलग्न हैं ।

श्री प्रसन्न कुमार ठाकुर

लखनपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, भोल रैतमूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण । अधीक्षण अभियन्ता पद पर बिहार में कार्यरत हैं । सुप्रसिद्ध दिवंगत किसान नेता स्व० पं० यमुना कार्यी के आप दामाद हैं ।

श्री ब्रह्मदेव ना० सिंह

रमापुर महेशपुर (समस्तीपुर) निवासी, चकवार मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण श्री जगदीश प्र० सिंह के सुपुत्र । मुजफ्फरपुर में अधीक्षण अभियन्ता पद पर पदस्थापित हैं ।

श्री योगेन्द्र चौधरी

चकुमर (बैशाली) निवासी । अमेरिका से अभियंत्रणा की डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त । आर० आई० टी० जमशेदपुर में मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष पद पर पदस्थापित हैं ।

श्री देवेन्द्र ठाकुर

कमतौल (दरभंगा) निवासी, मनेरिया मूल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण । यांत्रिक अंचल, पटना में अधीक्षण अभियन्ता पद पर पदस्थापित हैं ।

श्री महेश्वर प्र० सिंह

कफेन (मुजफ्फरपुर) निवासी, विजलपुरिया मूल के कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मण ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधीक्षण अभियन्ता पद पर बिहार में पदस्थापित हैं।

श्री शिवशंकर ठाकुर

बलहा (समस्तीपुर) निवासी. भोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। श्री रामलखन ठाकुर के सुपुत्र। कोल माइन्स बरोरा एरिया (पो० बरोरा) जिला धनबाद में योजना अधीक्षक रहने के बाद बेनीडीह एरिया नं० 1 (धनवाद) में कोल माइन्स एजेन्ट के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री शील किशोर

श्री कृष्ण चिकित्सा महा० के प्राध्यापक तथा प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डा० वीरेन्द्र किशोर के सुपुत्र। टेल्को (जमशेदपुर) में कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। आपको अमेरिका में विशेष शिक्षा के लिए स्कालरशिप प्राप्त हुआ है।

श्री उमा प्र० ठाकुर

बलहा (समस्तीपुर) निवासी, भोलरैत मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। श्री रामलखन ठाकुर के सुपुत्र। अभियंत्रणा में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त। डिफेन्स रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट लेबोरेटरी हैदराबाद में साइन्टिफिक ऑफिसर पद पर कार्यरत हैं।

श्री राम नरेश शर्मा

धर्मगतपुर बथुआ, समस्तीपुर निवासी, सहस्त्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री दामोदर ठाकुर के सुपुत्र। अमेरिका में परामर्शदाता अभियन्ता के रूप में कार्यरत हैं। आपके दो पुत्र अमेरिका में मेडिकल छात्र हैं।

श्री राम सुरेश शर्मा

धर्मगतपुर बथुआ, समस्तीपुर निवासी, सहस्त्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण श्री दामोदर ठाकुर के सुपुत्र। अलीमको फैक्ट्री, जी० टी० रोड, कानपुर में उपप्रबन्धक के पद पर पदस्थापित हैं।

डा० विजय कुमार शर्मा

मनियारी (मुजफ्फरपुर) के महंत श्री विश्वंभर कुमार शर्मा अधिवक्ता तथा प्रो० श्रीमती रत्ना शर्मा के सुपुत्र। अमेरिका के दो विश्व विद्यालयों से विद्युत् अभियंत्रणा में स्नातकोत्तर एवं तीन विशिष्टताओं के साथ डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त कर बिहार के पुराने बिहार डिग्री कालेज आफ, इंजीनियरिंग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। लेकिन गरीबों की सेवा के लिए 1973 ई० में नौकरी के साथ घर द्वार भी छोड़ दिया। 30/4/74 को नक्सलियों को जेल से भगाने के आरोप में गिरफ्तार कर पटना जेल में बन्द किये गये थे। वहाँ से 19 कैदियों के साथ भाग निकले। 18/4/76 को पुनः पटना से 20 किलोमीटर दूर पकड़ लिए गये। जेल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में काफी यातनायें दी गयी। जनता सरकार द्वारा जेल से छोड़ दिये गये। बाद में पुनः पुराने पद पर पदस्थापित हैं। आपकी पत्नी श्रीमती रेणुका शर्मा समाजशास्त्र में एम० ए० है तथा आपकी माता मगध महिला कालेज पटना में हिन्दी विभाग की अध्यक्षा हैं।

श्री राधेश्याम मिश्र

लल्मीपुर पतोर (दरभंगा) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामाश्रय मिश्र के सुपुत्र। सिन्दरी स्थित अभियंत्रणा महाविद्यालय में मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के रीडर हैं।

श्री विजय राघव मिश्र

रघुनाथपुर पतोर (दरभंगा) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण, सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं अध्यात्मिक नेता पं० रामनन्दन मिश्र के सुपुत्र। पटना में अधीक्षण अभियन्ता पद पर पदस्थापित हैं।

श्री राजाराम राय

कुछिला (रोहतास) निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार राज्य निर्माण निगम, रांची में अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता पद पर कार्यरत हैं।

श्री कृष्ण मोहन शर्मा

सिलौत (मुजफ्फरपुर) निवासी, सहदौलिया मूल के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण श्री मदन प्र० सिंह के सुपुत्र तथा चकगढ़ी (वैशाली) निवासी प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान स्व० पं० रामनारायण शर्मा के भगिना। जन स्वास्थ्य अभियंत्रणा विभाग में अधीक्षण अभियन्ता पद पर भागलपुर में पदस्थापित हैं।

श्री सी० पी० सिंह

कमला (समस्तीपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार के सिंचाई विभाग में अधीक्षण अभियन्ता पद पर कार्यरत हैं।

श्री अखिलेश कुमार शर्मा

छपरामेघ (मुजफ्फरपुर) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण श्री रामवदन शर्मा अधिवक्ता के सुपुत्र। रडार इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं।

श्री राजेन्द्र प्र० सिंह

दोहरिया (प्रयाग) निवासी। न्यूयार्क में अभियन्ता के रूप में कार्यरत हैं। आपकी शादी छितौनी स्टेट (सारण) के भू० पू० अधिपति स्व० श्री नन्दन प्र० ना० सिंह भू० पू० एम० एल० सी० तथा भू० पू० चेअरमैन सारण जिला बोर्ड की पौत्री से है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषि एवं पशुपालन पदाधिकारी

डा० राम सागर राय

सरायरंजन (समस्तीपुर) निवासी, कुढ़नियाँ मूल के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। सबौर (भागलपुर) कृषि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य तथा बिहार के कृषि निदेशक पद पर रहकर वर्षों पूर्व अवकाश ग्रहण कर चुके हैं और अधिकांश समय पटना में ही निवास करते हैं।

डा० चन्द्रिका ठाकुर

नवरंगा (भोजपुर) निवासी। बिहार के कृषि विभाग में केन्द्रीय ईख अनुसन्धान संस्थान (पूसा) के निदेशक, सबौर (भागलपुर) तथा ढोली (मुजफ्फरपुर) कृषि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, कृषि निदेशक बिहार तथा जवाहरलाल कृषि वि० वि० जबलपुर (म० प्र०) के कुलपति आदि पदों पर रहकर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० गोपाल जी त्रिवेदी

मतलूपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, आरे मूल के कुत्स गोत्रीय ब्राह्मण। तिरहुत प्रमंडल के संयुक्त कृषि निदेशक तथा राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा के प्रसार शिक्षा निदेशक रह चुके हैं। वर्तमान में राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा के कुलपति पद पर प्रतिष्ठित हैं।

डा० ललन राय

कृषि महाविद्यालय (हिन्दू वि० वि० काशी) के प्रधानाचार्य, डीन एवं कीट विभागाध्यक्ष रहने के बाद कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक पद पर आसीन हैं।

डा० आर० के० राय०

शिशुआपार (पो० सादत, गाजीपुर) निवासी, वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण। बीस वर्षों तक अमेरिका में अध्ययन तथा अध्यापन करने के बाद राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा में विश्वविद्यालय प्राध्यापक एवं कृषि अभियंत्रणा विभागाध्यक्ष पद पर पद स्थापित हैं।

डा० त्रिशूलधारी सिंह

मोकामा निवासी, शकरवार मूल के सांकृत गोत्रीय ब्राह्मण। तेलहन विशेषज्ञ (ढोली कृषि महाविद्यालय) के पद पर काम करने के बाद नाइजीरिया के ए०बी० विश्व विद्यालय में प्राध्यापक रहे। वहां से वापस आकर इस समय भागलपुर प्रमंडल के संयुक्त कृषि निदेशक पद पर पदस्थापित हैं। आपके पुत्र आई० ए०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एस० में सफल होकर प्रशिक्षण में हैं।

डा० राम बहादुर सिंह

रतनपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। बिहार राज्य फल एवं सब्जी निगम के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

डा० चन्द्रशेखर राय

दिघरा (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। अमेरिका में कृषि की विशेष शिक्षा प्राप्त। वेली (मुजफ्फरपुर) कृषि महासभा के प्राध्यापक रह चुके हैं। वर्तमान में बिहार के कृषि विभाग में अनुज्ञा पदाधिकारी सह संयुक्त कृषि निदेशक पद पर पटना में पद स्थापित हैं।

श्री श्रीधर नारायण चौधरी

खिरहर (मधुबनी) निवासी, स्व० श्री राजेन्द्र ना० चौधरी भू० पू० विधायक के सुपुत्र। पटना में कृषि उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री कुंजबिहारी राय चौधरी

डुमरांव (भोजपुर) निवासी, द्रोणवार मूल के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। कृषि विभाग में उपनिदेशक आदि पदों पर रहने के बाद बिहार राज्य चीनी निगम में परामर्शी के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री वी० वी० राय

शेरपुर (गाजीपुर) निवासी। उ० प्र० के कृषि विभाग में जिला कृषि पदाधिकारी रह चुके हैं। वर्तमान में आजमगढ़ में कृषि उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

डा० अरविन्द कुमार सिंह

नायर (समस्तीपुर) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। राजेन्द्र कृषि वि० वि० पूसा में प्रसार शिक्षा के उपनिदेशक पद पर पदस्थापित हैं।

डा० रामप्रसाद राय

मलिकौंड (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। दलदल परियोजना के मुख्य अन्वेषक एवं वरीय वैज्ञानिक पद पर खेली (मुज०) कृषि महा० में पद स्थापित हैं।

डा० भुवनेश्वर राय शर्मा

मलिकौंड (समस्तीपुर) निवासी, सावर्ण्य गोत्रीय ब्राह्मण। वरीय वैज्ञानिक धान के पद पर राजेन्द्र कृषि वि० वि० द्वारा पटना में पद स्थापित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० विन्देश्वरी प्र० शाही

बतरा (सीतामढ़ी) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण स्व० प्रो० अवध विहारी शाही (अरबी फारसी के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान) के पौत्र। विहार के कृषि विभाग में मुख्य मिट्टी सर्वेक्षण पदाधिकारी के पद पर सबौर (भागल पुर) में पदस्थापित हैं।

डा० राम कुमार

साइन (वैशाली) निवासी, दिघवे मूल के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। कृषि महाविद्यालय सबौर (भागलपुर) में विश्वविद्यालय प्राध्यापक सर मुख्य वैज्ञानिक फल प्रजनन एवं विभागाध्यक्ष के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री हरिशरण सिंह

विक्रम (पटना) निवासी। पशुपालन विभाग में विभिन्न पदों पर प्रोन्नत होते हुए इस समय निदेशक पद पर पटना में पदस्थापित हैं।

डा० ब्रजनन्दन चौधरी

श्रीरामपुर अयोध्या (समस्तीपुर) निवासी, सहस्रामे मूल के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। पूसा प्रक्षेत्र के प्रबन्धक रहने के बाद विदेश में ऊंची शिक्षा आपने प्राप्त की। पशुपालन विभाग में उत्तरी क्षेत्र के उपनिदेशक, वृहत् भेड प्रजनन प्रक्षेत्र चतरा (हजारीबाग) में परियोजना पदाधिकारी, भागलपुर में क्षेत्रीय पशुपालन निदेशक तथा संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग (मुख्यालय) के पद पर रहने के बाद 31 जनवरी 1985 को अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

डा० रामनन्दन सिंह

जाखौर (मुंगेर) निवासी। पशुपालन विभाग में विभिन्न पदों पर रहने के बाद इस समय संयुक्त निदेशक पद पर पटना में पदस्थापित हैं।

परिशिष्ट

त्यागी ब्राह्मण

मास्टर शालिग्राम शर्मा

चरथावल (मुजफ्फरनगर) के ब्राह्मण परिवार में जन्म।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपने सन् 1918 ई० से पहले त्यागी ब्राह्मण समाचार (उर्दू) का संपादन किया था। उसके बाद 'किसानोपकारक' (प्रतापगढ़) का संपादन किया। 1928 में 'त्यागी ब्राह्मण' (हिन्दी) का संपादन किया। पत्र तथा त्यागी ब्राह्मण सभा के माध्यम से आपने समाज की महत्वपूर्ण सेवा की थी। त्यागी ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष भी आप रह चुके थे। आपके निधन के बाद मास्टर शालिग्राम शर्मा स्मारक कोष संस्थापित तथा संचालित रहा है।

पं० पद्मसिंह शर्मा

नायक नगला (बिजनौर) में जन्म। उर्दू, हिन्दी और संस्कृत के प्रकांड विद्वान। आप हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक तथा तुलनात्मक आलोचना के प्रवर्त्तक माने जाते हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राध्यापक भी रहे। बिहारी सतसई पर संजीवनी भाष्य आपने लिखा—उसकी तुलना प्राकृत गाथा सप्तसती, आर्या सप्तसती आदि से की। भारतभारती और प्रेमाश्रम की तुलना में संजीवन भाष्य पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगला प्र० पारितोषिक आपको मिला। आपकी पुस्तक 'पद्म पराग' का प्रकाशन श्री राजेश्वर प्र०ना० सिंह ने किया था। 1928 ई० में अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 18वें अधिवेशन की अध्यक्षता आपने की थी। 1931 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री चौधरी रघुवीर नारायण सिंह

असौड़ा (हापुड़, गाजियाबाद) के प्रसिद्ध ताल्लुकेदार तथा स्वतंत्रता सेनानी। आपने अपने यहां गांधी जी को ठहराया था। मेरठ में त्यागी ब्राह्मण छात्रावास के लिए आपने ही जमीन दी थी। 1926 में पटना में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता आपने ही की थी। आप अयाचक ब्राह्मणों की एकता के प्रबल समर्थक तथा समाजसेवा व्रती थे। आपने अपनी पौत्री की शादी घोसवरी (पटना) के श्री नरसिंह नारायण सिंह भू० ब्रा० के भतीजे से कर एकत्व भावना का परिचय दिया था। दिवंगत हो चुके हैं।

मेजर आशाराम त्यागी

फतहपुर (मोदीनगर के निकट) के आप निवासी थे। भारतीय सेना में काम करते हुए आप 21 सितम्बर 1965 को जाट बटालियन की एक कंपनी का स्वयं नेतृत्व कर रहे थे। पाकिस्तान के गोगराई गांव की शत्रु चौकी पर कब्जा करने के लिए। शत्रु मोर्चे को तोड़ते समय कंधे पर दो गोलियां लगने पर भी शत्रु चालक को समाप्त कर तीन टैंकों पर आपने अधिकार कर लिया। इस क्रम में तीन गोलियां आपको और लगीं फिर भी आप होश रहने तक कंपनी का नेतृत्व करते रहे। बाद में आप सैनिक अस्पताल में वीर गति को प्राप्त हुए। मरणोपरान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महावीर चक्र प्रदान किया गया। आपके परिवार को सान्त्वना देने श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री महावीर त्यागी, श्रीमती तारकेश्वरी सिंह और राष्ट्र कवि 'दिनकर' जी फतहपुर गये और वहीं पर 'दिनकर' जी ने लिखा—

"तुमने दिया देश को जीवन, देश तुम्हें क्या देगा।
अपनी आग तेज करने को नाम तुम्हारा लेगा।"

स्क्वैड्रन लीडर सत्येन्द्रपाल त्यागी

पाकिस्तान के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई के समय आप एक आपरेशन स्क्वैड्रन के फ्लाइट कमांडर थे। राजस्थान-सिन्ध क्षेत्र में 11 बार आक्रामक उड़ानें भरकर आपने पूरी क्षमता के साथ हवाई जहाज का संचालन किया। इस कार्य में आपको शत्रु के विमान भेदी तोपों और मशीनगन की गोलाबारी का सामना करना पड़ा। अपनी साहसिक उड़ानों से अद्भुत पराक्रम, कार्यनिष्ठा और कुशलता का परिचय देकर आपने गौरवमय मर्यादा का पालन किया।

पं० प्रकाशवीर शास्त्री

रहरा (मुरादाबाद) में 1923 ई० में जन्म। गुरुकुल महा० में अध्ययन कर सं० वि० वि० वाराणसी की संस्कृत शास्त्री तथा गुरुकुल से विद्या भास्कर होकर 1942 में स्नातक बने। 1942 के पहले हैदराबाद में निजामी अत्याचार के विरुद्ध सत्याग्रह में सात माह जेल में रहे। 1942 में स्वतंत्रता संग्राम में भी शामिल रहे। आप कई बार संसद के सदस्य चुने गए। आपके संसदीय कार्यों का जिक्र करते हुए मद्रास के अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दू' ने इस प्रकार लिखा था, "लोक सभा में हिन्दी के मधुर भाषी वक्ता प्रकाशवीर शास्त्री स्वर्ण नियन्त्रण कानून से लेकर अध्यापकों, विद्यार्थियों, किसानों और दुखियों की आवाज उठाने में आगे रहते हैं। श्री शास्त्री का दृष्टिकोण स्पष्ट, अटल और सुदृढ़ है, उसी प्रकार जिस प्रकार उनका हिन्दी में बोलने का संकल्प।"

"आपकी मीठी हिन्दी कभी-कभी 'भवभूति' और 'कालीदास' के भाषा माधुर्य की याद ताजा कर देती है।"

आपकी मृत्यु एक दुर्घटना में 22/12/77 को हो गयी।

आपके पुत्र श्री प्रदीप कुमार त्यागी ने अमेरिका में औद्योगिक प्रबन्ध की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

श्री महावीर त्यागी

रतनगढ़ (बिजनौर) में जन्म। 1918 में भारतीय सेना में आप कार्यरत थे। बाद में आप महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित होकर कई बार जेल गये। उत्तर प्रदेश विधानसभा तथा संसद सदस्य और केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य रहकर देश और जनता की महत्वपूर्ण सेवा आपने की। कांग्रेस के भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्रिय सदस्य रहकर अ० भा० कांग्रेस के सदस्य चुने जाते रहे। आपकी पत्नी श्रीमती शर्मदा देवी भी एम० एल० सी० रह चुकी थीं।

'कबूतरी का दूध' नामक पुस्तक में आपने पं० अलगूराय शास्त्री (उ० प्र० के भू० पू० मंत्री) के साथ जेल में रहने का वर्णन करते हुए त्यागी और भूमिहार दोनों ब्राह्मणों की एकता प्रदर्शित की है। 1952 के दिसम्बर में दिल्ली में मुहयाल आश्रम की आधारशिला रखते हुए भूमिहार, त्यागी और महिवाल तीनों ब्राह्मणों को आपने एक बताया था तथा 1970 में गया (बिहार) में भूमिहार, त्यागी, महियाल और चिलावन ब्राह्मणों की सभा का सभापतित्व कर इन चारों की एकता प्रदर्शित की थी।

22/5/80 को दिल का दौरा पड़ने से राममनोहर लोहिया अस्पताल दिल्ली में आपका निधन हो गया।

आपको मात्र दो पुत्रियां ही थीं। आपके अग्रज श्री धर्मवीर सिंह त्यागी का निधन 27/2/87 को हुआ है

फ्लाइंग आफिसर सुधीर त्यागी

श्री रघुराज सिंह त्यागी के सुपुत्र। जन्म 12 फरवरी 1946। कपूरथला, दिल्ली और मेरठ में शिक्षा मिली। बचपन से ही विमान के प्रति विशेष आकर्षण था। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से सैनिक शिक्षा प्राप्त कर सैनिक जीवन में प्रवेश किया। विमान चलाने, हाकी, क्रिकेट आदि में आपको विशेष अभिरुचि थी। आप शाकाहारी थे। भारत-पाक युद्ध में आप पश्चिमी क्षेत्र में तैनात लड़ाकू बमवर्षक विमानों के दल में नियुक्त थे और दुश्मन के हवाई अड्डे पर बम वर्षा कर रहे थे—उसी समय पाक विमान मीराज को आते देख उसे मार गिराया— 14/12/71 के प्रातः। इसी बीच दो पाक विमानों ने सुधीर के विमान को घेर लिया। आप लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। एयर मार्शल एम० एम० इंजीनियर ने स्वयं आपके माता-पिता से भेंट कर उनकी बहादुरी की प्रशंसा की। 30 मार्च 1974 को (मरणोपरान्त) वीरचक्र प्रदान किया गया। नेताजी नगर, एम० एवेन्यू, नई दिल्ली में एक सड़क का नामकरण आपके नाम पर किया गया है। सहारनपुर में प्रतिवर्ष सुधीर टूर्नामेंट का आयोजन होता है।

श्री ओमप्रकाश त्यागी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा भारतीय संसद के वर्षों सदस्य रहकर देश तथा जनता की सेवा में संलग्न रहे। 1985 में आपका देहान्त हो गया।

श्री दयाशंकर शर्मा

कुतुबपुर (मुजफ्फर नगर) के रईस तथा भू० पू० अभियन्ता। सामाजिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतिविधियों में सक्रिय रहकर 1945 ई० में त्यागी ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष भी रहे।

श्री बाबूराम त्यागी

आदिवासी स्योहारा (बिजनौर) निवासी। वर्षों 'त्यागी बन्धु' (हरिद्वार) के संपादक तथा 'त्यागी ब्राह्मण' (मेरठ) के सहायक संपादक रहकर समाज को जागृत करते रहे। हरिद्वार म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य भी रहे। अयाचक ब्राह्मणों की एकता के लिए आप प्रयत्नशील रहे हैं।

श्री देवराज शर्मा

रूखी निवासी डा० जी० एस० त्यागी के सुपुत्र। रेल मंत्रालय, नई दिल्ली में ज्वायन्ट डाइरेक्टर क्लेम्स के पद पर पदस्थापित हैं।

श्री एच० आर० एस० त्यागी

रूखी निवासी डा० जी० एस० त्यागी के सुपुत्र। झांसी में रेलवे के डिविजनल मैनेजर पद पर पदस्थापित हैं।

श्री शान्ति त्यागी

भारतीय संसद के सदस्य हैं।

श्री धर्मवीर सिंह त्यागी

मुजफ्फरनगर।

श्रीमती कमला त्यागी

रहरा (मुरादाबाद) में लगभग 45 वर्ष पहले जन्म। स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री की बहन तथा श्री सत्यवीर सिंह त्यागी वरिष्ठ पत्रकार (नहटौर, बिजनौर निवासी) की पत्नी। 1980 से उ० प्र० कांग्रेस की सदस्या, वित्त मंत्रालय और हाउसिंग कमिटी की सदस्या तथा उ० प्र० की विधायिका हैं। आपकी एक पुत्री (19 वर्षीय) कु० दिव्या त्यागी ने बी० ए० (आनर्स) में श्रीराम कालेज, नई दिल्ली से 75 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं तथा एक पुत्री कु० शालिनी त्यागी ने सेन्ट एन्थोनी स्कूल 1985 की अ० भा० हाई स्कूल परीक्षा में 83 प्रतिशत अंक तथा 4 विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की।

डा० अरविन्द आत्रेय

रतनगढ़ (बिजनौर) निवासी डा० धर्मदेव आत्रेय के सुपुत्र। उम्र 32 वर्ष। दिल्ली कनाडा और अमेरिका में शिक्षा मिली। मिशिगन वि० वि० (अमेरिका) में मेकेनिकल इंजीनियरिंग के प्राध्यापक हैं। अगले वर्ष आपको अनुसन्धान के लिए 60 लाख का अनुदान अमेरिका देगा। 1986 में युवा अनुसन्धानकर्ता, पुरस्कार से अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से पुरस्कृत किये जा चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती प्रतिभा सिंह

सुरसंड (सीतामढ़ी) राज्य के भू० पू० अधिपति तथा भू० पू० राजदूत और भू० पू० राज्यपाल पद्म विभूषण सर चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह की सुपुत्री तथा स्योहारा (बिजनौर) निवासी स्व० प्रेमराज सिंह की पत्नी। विहार विधान सभा की सदस्या रहने के बाद वर्षों भारतीय संसद (राज्यसभा) की सदस्या रह चुकी हैं। केन्द्रीय सरकार में उपमंत्री पद मिलने पर भी आपने उसे अस्वीकार कर दिया। अ० भा० समाज कल्याण बोर्ड की सदस्या हैं।

श्री चन्द्र सिंह त्यागी

जन्म 23 फरवरी 1891 ई० को अछेजा (हापुड़, गाजियाबाद) में श्री राम विलास सिंह के पुत्र के रूप में हुआ। आप हिन्दी, उर्दू के कवि तथा प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी हैं। 1921 में सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर पूर्ण रूप से कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्त्ता बन गये। लगभग 30 वर्षों तक गांधी जी के निकट संपर्क (साबरमती तथा वर्धा) में आपका जीवन व्यतीत हुआ। डा० राजेन्द्र प्र० के भी संपर्क में आप रहे। उन पर आपकी कविता तथा उनके साथ आपका चित्र 'त्यागी बन्धु' (हरिद्वार) में वर्षों पूर्व निकला था। स्वतंत्रता संग्राम में दो बार आप जेल गये (28 माह की सजा पायी) 1952 में नैनीताल में 18 एकड़ जमीन सरकार ने आपको दी। वहीं अपने कनिष्ठ पुत्र के साथ इस वयोवृद्धावस्था में (96 वर्ष की आयु पूरी कर) ऋषि तुल्य जीवन व्यतीत करते हुए मतवाली नगरी पो० शिवराज पुर (नैनीताल) में निवास करते हैं।

पं० दिलीप दत्त त्यागी

'त्यागी ब्राह्मण समाज' (मेरठ) के संपादक तथा त्यागी ब्राह्मण इतिहास के लेखक हैं तथा राजेन्द्र नगर, मेरठ में निवास करते हैं।

महियाल ब्राह्मण

राजा दाहिर[1]

आठवीं शताब्दी में सिन्ध पर शासन करने वाले राजा दाहिर महियाल

1. हिन्दी के मूर्द्धन्य विद्वान स्व० प्रो० राजनाथ पांडेय (सुल्तानपुर उ० प्र०) द्वारा लेखक को लिखे 20/2/81 के पत्र के अनुसार—"अरबी के एक प्राचीन इतिहास 'चचनामा' के अनुसार राजा सिहर्प राय के मारे जाने के बाद उसके ब्राह्मण मंत्री 'चच' ने सौवीर (सिन्ध) पर अपना आधिपत्य कायम किया। चच की मृत्यु के बाद उसके पुत्र बल्लभ राय को अरबों ने दाहर (दार्हय: नास्तिक) कह कर इतिहास में बदनाम किया, जिसे सन् 710 ई० में सेनापति महम्मद इब्न कासिम ने युद्ध में मार डाला था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मणों के पूर्वज तथा मथुरा के राजा नरसिंह देव के पुत्र थे। उनके पांच पुत्र तथा दो पुत्रियां (सूर्यदेवी और प्रमिला देवी) थीं।

अरबी मुसलमान सेनापति महम्मद बिन कासिम ने 711 ई० (श्री सावरकर के अनुसार) में वैदिक स्वाभिमानी ब्राह्मण राजा दाहिर के राज्य पर पचास हजार सेना लेकर चढ़ाई कर दी और देवल नामक सिन्धु द्वार पर अधिकार कर लिया। फिर दाहिर ने अपनी सेनाओं के साथ ब्राह्मणाबाद नामक स्थान पर पहुंच कर उसके साथ घोर युद्ध किया। दाहिर की सेना में कुछ अरबी मुसलमान भी थे, जिन्होंने भी दाहिर की हिन्दू सेना पर आक्रमण कर दिया। वीरता पूर्वक लड़ते हुए दाहिर मारे गये। उनकी रानियों ने वीरांगनाओं के साथ जौहर का वरण किया।

आगे चलकर इन्हीं दाहिर की तीसरी पीढ़ी में सरदार कीक को कासिम ने अपना मंत्री बनाया था।

बाबा परागा

करियाला (झेलम) में जन्म। बड़े होने पर ईश्वर की भक्ति की ओर झुके। मुगलों के अत्याचार से लड़ते रहे। आपके पौत्र भाई मतिदास अलौकिक बलिदानी पुरुष हुए।

भाई मतिदास

झेलम (वर्तमान पाकिस्तान) के चकवल तहसील के करियाला गांव में 13 जनवरी 1651 ई० को जन्म। आप स्वाभिमानी, पराक्रमी, साहसी तथा आत्म बली थे। आपको गुरु तेगबहादुर ने अपना प्रधानमंत्री बनाया था। औरंगजेब से आप लड़ते रहे। औरंगजेब ने 1675 ई० में आपको हिन्दू धर्म छोड़कर इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आदेश दिया तथा किसी शहजादी से विवाह कर सरकारी नौकरी का सुख भोगने का प्रलोभन भी दिया और धमकी भी दी कि ऐसा नहीं करने पर शरीर के दो टुकड़े कर दिये जायेंगे। आपने अपना धर्म छोड़ना अस्वीकार कर दिया। दिल्ली के चांदनी चौक में भाई जी को 9 नवम्बर 1975 ई० को जीवित ही आरे से चीरा गया—वे ईश्वर स्तुति करते और हंसते रहे। ऐसे अलौकिक पुरुष थे भाई जी।

पं० लेखराम

झेलम जिले के सैयदपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी शुक्रवार सं० 1915 (ई० सन् 1858) को महियाल ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। 1876 ई० में पुलिस की नौकरी प्रारंभ कर 1884 में उसे छोड़ सर्वे में नौकरी की और उसे भी छोड़ दिया। 24 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी देवी से विवाह किया।

1921 में आर्य समाज की स्थापना की। प्रारंभ में फारसी पढ़े थे। नौकरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बाद संस्कृत का अध्ययन किया लाहौर में। फिरोजपुर से प्रकाशित 'आर्य गजट' का संपादन किया। आपने अपना उपनाम आर्य मोसा फिर रख लिया था। 6 मार्च 1897 ई० को एक आततायी मुसलमान ने छूरा भोंक कर आपकी हत्या कर दी।

पं० रामभज दत्त चौधरी

आपका जन्म पंजाब में महियाल ब्राह्मण वंश में 26 फरवरी 1866 ई० को हुआ था। आप पंजाबी के प्रख्यात कवि तथा लाहौर हाई कोर्ट के वकील और क्रान्तिकारी थे। आपकी शादी विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बड़ी बहन श्रीमती स्वर्णलता देवी की पुत्री सरला देवी बी० ए० से हुई थी—वह भी क्रान्तिकारी थी। आप दोनों के प्रयास से सरदार भगत सिंह के चाचा अजित सिंह क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हुए थे। क्रांतिकारी पत्र 'हिन्दुस्तान' निकालने तथा अन्य आरोपों में आजीवन कारावास की सजा आपको मिली। 6/8/24 को आपका देहान्त हो गया। आपकी पत्नी श्रीमती सरला देवी 1945 में दिवंगत हुई।

भाई परमानन्द

औरंगजेब द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक में आरा से चीरे जाने वाले वीर भाई मतिदास के वंशज। समाज सुधारक, देशभक्त क्रांतिकारी नेता के रूप में विख्यात। नेशनल कालेज लाहौर में अध्यापक रहते समय सरदार भगत सिंह का नामांकन आई० में आपने ही किया था। 1905-06 ई० में आर्य समाज के प्रचारक के रूप में आप इंगलैंड गये और इंडिया हाउस में ही ठहरे। वहां भी सरकार को आप पर सन्देह हुआ। वहां से आने के बाद जोधपुर में राजकुमारों ने शिक्षक रहे और रियासतों में तथा सेना में विप्लव का प्रचार किया।

अमेरिका जाकर फार्मेसी की उपाधि प्राप्त कर 1913 में भारत लौटने पर दवाखाना खोल दिया तथा अपने विचारानुसार देश सेवा में भी लगे रहे। लाहौर षड्यन्त्र के प्रथम केस में 13/9/16 ई० को आपको फांसी की सजा दी गयी। अपील के फैसले में 16/11/16 ई० को फांसी की सजा कालापानी की सजा में बदल दी गयी। 1919 ई० में सार्वजनिक क्षमा घोषणा होने पर आप भी जेल से छोड़ दिये गये।

जेल से छूटने के बाद आप हिन्दू संगठन में लग गये। अ० भा० हिन्दू महासभा के अजमेर अधिवेशन की अध्यक्षता आपने की थी। बम्बई को सिन्ध से अलग करते समय तथा मैकडोनाल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय स्वीकार कर उसके आधार पर बने 1935 के विधान का आपने विरोध किया था। 1944-45 में लाहौर में आर्य समाज की सभा में भी आपने हिन्दुओं को संगठित होने तथा संस्कृति की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षा का आह्वान किया था।

अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा में भी आपने अपना सन्देश देकर एकत्व प्रदर्शित किया था। आप दिवंगत हो चुके हैं।

आपके पुत्र डा० भाई महावीर भारतीय संसद के सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के नेता हैं।

भाई बाल मुकुन्द

1887 ई० में महियाल ब्राह्मण कुल में उत्पन्न। आप प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानन्द के दूर के सम्बन्धी चचेरे भाई थे। मेहता दीवान चन्द की पुत्री से आपकी शादी हुई थी। औरंगजेब द्वारा आरा से चांदनी चौक दिल्ली में चीरे जाने वाले वीर मतिदास के वंशज आप थे। आपने देश सेवा के लिए क्रांति का मार्ग ही चुना था। हार्डिंग बम केस में 8 मई 1915 ई० को दिल्ली सेन्ट्रल जेल में फांसी दे दी गयी। आपकी फांसी का समाचार जानकर आपकी पत्नी ने भी प्राण त्याग दिया।

ले० कर्नल हरवंश सिंह मेहता

पाकिस्तान के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई के क्रम में 8 सितम्बर 1965 को जवानों के उत्साह को बढ़ाते हुए आगे बढ़कर शत्रु की दुर्भेद्य सेना रेखा को आपने ध्वस्त कर दिया। इस आक्रमण में घायल हो जाने के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। मरणोपरान्त महावीर चक्र प्रदान किया गया।

कैप्टन रमेशचन्द्र बक्शी

पाकिस्तान के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई के समय 6 सितम्बर 1965 को शत्रु की एक चौकी पर आक्रमण कर शत्रु को परास्त कर उस पर कब्जा कर लिया। अपनी कम्पनी का नेतृत्व करते हुए अदम्य साहस, उत्साह और दृढ़ता का परिचय आपने दिया और अपने जीवन की बलि दे दी। मरणोपरान्त वीरचक्र प्रदान किया गया।

सेकेंड लेफ्टिनेन्ट भूपेन्द्र कुमार वैद्य

पाकिस्तान के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई के क्रम में 8 सितम्बर 1965 को स्यालकोट क्षेत्र में आप निगरानी अधिकारी की ड्यूटी पर तैनात थे। टैंकों की भयंकर लड़ाई में घायल हो जाने पर भी रेंगते हुए दूसरे टैंक पर चढ़कर जवानों को साथ ले शत्रु पर हमला बोल दिया। लेकिन आप वीरगति को प्राप्त हुए। मरणोपरान्त वीर चक्र प्रदान किया गया।

कर्नल वेद रत्न मोहन

प्रसिद्ध उद्योगपति। पद्मभूषण उपाधि से भारत सरकार द्वारा अलंकृत। भारतीय संसद (राज्यसभा) के सदस्य थे। 47 वर्ष की आयु में ही 28 जनवरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1973 को आपका देहान्त हो गया।

मेजर कपिल मोहन

स्व० कर्नल वेद रत्न मोहन के अनुज तथा प्रमुख उद्योगपति।

श्री सुनील दत्त

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता 1984 के दिसम्बर में भारतीय संसद के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। पंजाब में आतंकवाद समाप्त कराने के लिए शान्ति मार्च पैदल बम्बई से अमृतसर स्वर्ण मंदिर तक पदयात्रा।

श्री आनन्द बक्शी

प्रसिद्ध फिल्मी संगीतकार।

भाई महावीर

प्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं हिन्दू नेता स्व० भाई परमानन्द के सुपुत्र। भारतीय जनता पार्टी के नेता तथा संसद सदस्य हैं। 26 जनवरी 1952 को आपकी उपस्थिति में मुहयाल ब्राह्मण सभा के 40वें अधिवेशन (अमृतसर) ने अपने 10वें प्रस्ताव में त्यागी और भूमिहार ब्राह्मणों को अपना भाई बताकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रस्ताव भी पारित किया था।

डा० परशुराम छिब्बर

भाई मतिदास स्मारक समिति के अध्यक्ष तथा अ० भा० मुहयाल प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष रहे हैं।

श्री रजनीकान्त दत्त

वाराणसी निवासी। उ० प्र० विधान सभा के वाराणसी से निर्वाचित सदस्य हैं। 1980 में उ०प्र० भूमिहार ब्राह्मण समाज के अधिवेशन में भी आपने सम्मिलित होकर एकत्व भावना का प्रदर्शन किया था।

श्री ज्योति स्वरूप वाली आई० ए० एस०

बिहार के तिरहुत और पटना प्रमंडल के आयुक्त रहे। भारत सरकार के रक्षा विभाग के संयुक्त सचिव हैं।

श्री जगजीत कुमार दत्त आई० ए० एस०

देहरादून (उ०प्र०) निवासी। बिहार के परिवहन विभाग में विशेष सचिव, बिहार राज्य सहकारिता बैंक के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर रहने के बाद बिहार वित्त निगम के प्रबन्ध निदेशक पद पर पदस्थापित हैं। आपकी शादी बड़हिमा निवासी बिहार के पुलिस महानिरीक्षक (विधि-व्यवस्था) श्री ललित विजय सिंह की बड़ी पुत्री श्रीमती अमृता विजय से है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री उदयशंकर दत्त आई० पी० एस०

पुलिस विभाग में विभिन्न स्थानों पर रहने के बाद दरभंगा में पुलिस अधीक्षक पद पर भी रहे। 1987 से सहायक आरक्षी महा निरीक्षक पद पर पदस्थापित हैं।

श्री मेहता जितेन्द्र कुमार वैद्य

महुआडीह (वाराणसी) डीजल लोकोमोटिव वर्क्स में कार्यरत तथा कारखाने में स्थित अयाचक ब्राह्मणों की सामाजिक संस्था भूमिहार ब्राह्मण समाज के आप अध्यक्ष हैं।

चित्यावन ब्राह्मण

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में 23/2/1856 ई० को रत्नागिरि(महाराष्ट्र प्रान्त) जिले में जन्म। श्री गंगाधर शास्त्री के सुपुत्र। अंग्रेजी, संस्कृति, गणित, ज्योतिष, इतिहास आदि के विद्वान। 1890 में 'पूना न्यू इंगलिश स्कूल' खोलकर स्वयं बीज गणित के शिक्षक बने। पूना से 'मराठा' और 'केसरी' निकाल कर संपादन किया। महाराष्ट्र में शिवाजी उत्सव और गणपति उत्सव मनाने की प्रथा आपने चलायी। लगानबन्दी आन्दोलन चलाया। 'स्वतंत्रता जन्मसिद्ध अधिकार हमारा' का मंत्र फूका। राष्ट्रीय आन्दोलन में गर्म दल के पोषक रहे। स्वतंत्रता के लिए कई बार जेल गये। 'मांडले जेल में गीता रहस्य' लिखकर अपूर्व पांडित्य का परिचय दिया। 1/8/1920 को आपका देहान्त हो गया। आप राष्ट्रपितामह के रूप में याद किये जाते हैं।

1916 ई० में वाराणसी हिन्दू वि० वि० में आने पर आपने कहा था कि जिस वंश के काशीनरेश हैं, उसी वंश का मैं भी हूं।

श्री बालकृष्ण गोखले

9 मई 1866 ई० को कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में चिपलूण ताल्लुक के काटलुक गांव (महाराष्ट्र) में जन्म। प्राध्यापक, संपादक तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महामंत्री, अध्यक्ष तथा केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य भी रहे। भारत सेवक समाज की स्थापना आपने की। लार्ड कर्जन ने आपको सी०आई० ई० की उपाधि भी दी थी फिर भी आप बाद में लार्ड कर्जन के विरुद्ध रहे। 1913 में जन सेवा आयोग के सदस्य भी बनाये गये थे। 19 फरवरी 1915 ई० को आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेश सावरकर

भगूर (नासिक, महाराष्ट्र) में वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में जन्म। वीर सावरकर के अग्रज। क्रांतिकारी विचारधारा के देशभक्त। 1908 में 'लघु अभिनव भारत मेला' नाम की राष्ट्रीय गीतों की पुस्तक छापने के अभियोग में मि० जैक्सन कलक्टर (नासिक) की अदालत से आपको आजीवन कारावास की सजा दी गयी। इस सजा के विरोध में श्री कान्हरे नामक युवक ने जैक्सन को गोली से उड़ा दिया। 1919 में सार्वजनिक क्षमादान घोषणा होने पर आप भी जेल से मुक्त हुए थे।

श्री विनायक दामोदर सावरकर

28 मई 1883 ई० को वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में भगूर (जिला नासिक, महाराष्ट्र) में जन्म। क्रांतिकारी देशभक्त, कवि, वक्ता, साहित्यिक और हिन्दी नेता के रूप में विख्यात रहे। छात्र जीवन से ही देशभक्ति की ओर अग्रसर हुए और अपने क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करते रहे। 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संस्था का संगठन किया। 1906 में कानून के अध्ययन (बैरिस्ट्री) के लिए इंगलैंड गये—वहां भी 'इंडियन सोसाइटी' नामक संस्था स्थापित की। विदेश में रहने वाले भारतीयों के बीच क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करते रहे। पेरिस भी गये। वहां से पुनः इंगलैंड आये। लेकिन लंदन स्टेशन पर ही 10 मार्च 1910 ई० को आप गिरफ्तार कर लिए गये। वहां से पुलिस के पहरे में भारत लाये जाते समय मार्सलीज में जहाज के स्नानागार से नीचे समुद्र में चले जाकर तैरते हुए फ्रांस की सीमा में पुनः गिरफ्तार हो गये। तैरते समय आप पर गोली भी चलायी गयी किन्तु आप तैरते ही रहे। आपको भारत लाकर राज द्रोह तथा हत्या को प्रोत्साहन देने वाला केस चलाया गया और आजीवन कारावास की सजा देकर अंडमान भेज दिया गया। जेल में आपको यातनाएं दी गयी। 1919 से 1921 तक अस्वस्थ्य होकर रोग शय्या पर पड़े रहे। 1921 में आप कलकत्ता लाये गये और वहां से रत्नागिरि जेल में लाये गये। बाद में 6 फरवरी 1924 को जेल मुक्त हुए, किन्तु रत्नागिरि में नजरबन्द कर दिये गये। प्रान्तीय स्वराज्य होने पर श्री यमुनादास मेहता के मंत्रिमंडल ने 8 मई 1937 को आपको नजरबन्दी से मुक्त किया।

नजर बन्दी जीवन में मैजिनी, गैरीबाल्डी की जीवनियां, 1857 का स्वातंत्र्य समर, मेरी कारावास कहानी, हिन्दुत्व आदि किताबें लिखीं। नजरबन्दी से मुक्त होने के बाद हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने तथा हिन्दुओं के संगठन में संलग्न हुए। आपने 'हिन्दुत्व' में हिन्दू की परिभाषा इस प्रकार की है :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आसिन्धु सिन्धु पर्यन्त यस्य भारत भूमिका ।
पितृभू, पुण्य भूमिश्चैव सर्वे हिन्दू हिदुरिति स्मृतः ।।"
"सिन्धु (नदी) से सिन्धु (समुद्र) तक फैली हुई भारत भूमि को जो अपनी पितृ भूमि और पुण्यभूमि मानता है वह हिन्दू है।"

आपका देहान्त 26 जनवरी 1966 को हो गया।

आपके अनुज श्री गणेश सावरकर और अनुज श्री नारायण सावरकर भी क्रांतिकारी थे।

श्री एन० सी० केलकर

मराठी के महान साहित्यकार, देशभक्त तथा समाज सेवक के रूप में प्रसिद्ध थे।

डा० बी० एस० मुंजे

प्रारंभ में कांग्रेस के नेता रहे। बाद में हिन्दुओं के संगठन और उत्थान में संलग्न हो गये। अ० भा० हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी रहे। नासिक में भोसला सैनिक स्कूल खोलकर अधिक-से-अधिक संख्या में हिन्दुओं के सेना में प्रवेश के लिए प्रयत्न किया, जिससे शासनाधिकार बहुमत (हिन्दुओं) के हाथ में रहे। 1945 ई० में बेतिया (बिहार) में संपन्न अ० भा० भूमिहार ब्राह्मण महासभा की अध्यक्षता आपने की थी। आप दिवंगत हो चुके हैं।

श्री हरि अणे

जन्म स्थान वणी (यमतमाल, महाराष्ट्र)। आप प्रसिद्ध देशभक्त राष्ट्रीय नेता थे। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। सत्याग्रह के प्रथम डिक्टेटर भी थे। आप भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा रक्षक तथा लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे। बिहार के राज्यपाल तथा संसद सदस्य भी रहे। उसके पूर्व 1941 में वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य तथा 1946 में संविधान सभा के सदस्य भी रह चुके थे। आप दिवंगत हो चुके हैं।

श्री गौडवले

बिहार सरकार के भू० पू० मुख्य सचिव।

श्री मावलंकर

भारतीय संसद के भू० पू० अध्यक्ष।

श्री एन० बी० खरे

मध्य प्रदेश निवासी कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण। मध्य प्रदेश में कांग्रेस नेता तथा मुख्यमंत्री रहे। बाद में हिन्दू महासभा के नेता तथा अलवर राज्य के प्रधानमंत्री (1947 ई० में) रहे। लाखों मेव जाति के मुसलमानों को आपने हिन्दू धर्म में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीक्षित किया।

आचार्य विनोबा भावे

(श्री विनायक नरहरिभावे) गांधीयुग के शलाका पुरुष तथा भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य विनोवा भावे का जन्म महाराष्ट्र के कोलावा जिले के गगोडा गांव में 11 सितम्बर 1895 ई० को हुआ था। संस्कृत के विद्वान तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे।

1921 में आपने वर्धा आश्रम की जिम्मेवारी सभाली, 1924 में गुरुवापुर (केरल) में हरिजनों के मन्दिर प्रवेश का नेतृत्व किया।

1930 के नमक सत्याग्रह में जेल गये। 19/10/40 को प्रथम सत्याग्रही के रूप में तीन वर्षों की सजा पायी।

1952 में भूदान आन्दोलन चलाया—40 हजार मील की पैदल यात्रा की। लगभग 15 लाख एकड़ जमीन दान में प्राप्त कर गरीवों में वांट दिया।

भूदान के क्रम में गया जिले के खनवां ग्राम में पहुंचने पर उनके कार्यकर्ताओं ने कहा कि यह गांव भूमिहार ब्राह्मणों का है, वे स्वयं काश्त करते हैं। जमीन नहीं मिली। इस पर विनोवाजी ने कहा 'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यहां ब्राह्मण काश्त करते हैं। मैं भी ब्राह्मण हूं और ब्राह्मणों की इज्जत बढ़ाना चाहता हूं' आदि कहकर एकत्व भाव का प्रदर्शन किया था।

1962 में भूदान आन्दोलन को समाप्त कर पयनार आश्रम में रहने लगे। आपका संपूर्ण जीवन सत्य, अहिंसा और त्याग के लिए समर्पित था। आप नैतिक अध्यात्मिक प्रेरणा के स्रोत थे।

5/11/82 को दिल का दौड़ा पड़ा। 8/11/82 से प्रायोपवासन व्रत (अन्न, जल तथा औषधि का त्याग) प्रारंभ कर दिया तथा 15/11/82 सोमवार को आपका निधन हो गया।

मरणोपरान्त 1983 के गणतंत्र दिवस के अवसर पर 'भारत रत्न' की उपाधि दी गयी।

विहार के हजारीवाग में विनोवा विश्व विद्यालय की घोषणा तथा पूना में विनोबा भवन का शिलान्यास किया गया है।

श्री गोलवलकर

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक रहकर अपने विचारानुसार देश सेवा करते रहे। दिवंगत हो चुके हैं।

श्री जी० बी० केतकर

'केसरी' तथा 'तरुण भारत' के भू० पू० संपादक तथा अ० भा० हिन्दू महासभा के भू० पू० महामंत्री। 1980 में आपका देहान्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० आर० वी० साठे

वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण।

प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ। बम्बई वि० वि० के भू० पू० कुलपति। 29/8/83 को 78 वर्ष की उम्र में बम्बई में आपका देहान्त हो गया।

आचार्य वि० प्र० लिमये

आप संस्कृत के प्रकांड विद्वान तथा महाराष्ट्र के गौरव थे। वैदिक संशोधन मंडल तथा इतिहास संशोधन मंडल के उपाध्यक्ष, तिलक विद्यापीठ के कुलाधिपति और भंडारकर प्राच्य विद्या संशोधन मन्दिर के कोषाध्यक्ष रह चुके थे। 15/8/76 को पांडित्य और संस्कृत शिक्षा के लिए पुरस्कृत किये गये थे। आचार्य कुल को दस हजार का दान भी दिया था। 1984 में आपका देहान्त हो गया।

पं० अनन्त शास्त्री फड़के पुराणाचार्य

वाराणसी निवासी। वेद, व्याकरण, मीमांसा, वेदान्त तथा इतिहास के उद्भट विद्वान। काशी संस्कृत वि० वि० में अध्यापक रहे। विदेशों में भी डाक विद्यालय चलाया। 'हिन्दू संस्कार' तथा अन्य कई पुस्तकें आपने लिखी।

1968 ई० में नरउर (वाराणसी) में ब्रह्मर्षि सेवा समिति के तत्त्वावधान में आयोजित भूमिहार, चिलावन, त्यागी और महियाल ब्राह्मणों की अ०भा० सभा की अध्यक्षता भी आपने की थी। दिवंगत हो चुके हैं। आपके प्रथम पुत्र श्री नारायण फड़के चित्रकार, द्वितीय पुत्र डा० हरि फड़के प्राध्यापक (कुरुक्षेत्र वि० वि०) तथा तृतीय पुत्र श्री माधव फड़के पुराण, इतिहास, साहित्य आदि के विद्वान हैं।

श्री खांडिलकर

भारतीय संसद के भू० पू० उपाध्यक्ष।

श्री जे० एस० तिलक

शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। 'केसरी' के संपादक तथा संसद (राज्य सभा) के सदस्य रहे हैं। 12/1/73 से कांग्रेस दल के सदस्य हैं।

श्री जमनाराव तिलक

शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण। महाराष्ट्र विधान परिषद् के अध्यक्ष हैं।

श्री विक्रम सावरकर

वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण। हिन्दू सभा के नेता और अ० भा० हिन्दू महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में सेवा करते रहे। 31/12/83 से 2/1/84 तक संपन्न अ० भा० हिन्दू महा सभा के 49 वें अधिवेशन की अध्यक्षता आपने ही की थी। अभी भी आप अ० भा० हिन्दू महासभा के अध्यक्ष हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामचन्द्र दत्तात्रय साठे

वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण। भारत सरकार के परराष्ट्र सचिव पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद संघीय जर्मन गण राज्य में भारत के राजदूत हैं।

श्री वसन्त साठे

वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण। कालेज जीवन में रंगमंच के अच्छे अभिनेता रहे। पत्नी श्रीमती जयश्री साठे एक अत्यन्त संस्कार संपन्न मृदु स्वभाव की महिला हैं। सूचना और प्रसारण मंत्री रहते समय आपने ही आल इन्डिया रेडियो, का नाम 'आकाशवाणी' रखा था, जिसे मात्र तमिलनाडु के विरोध पर तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने अंग्रेजी नाम ही रहने देकर आपका विभाग बदल दिया था। आप राजीव गांधी के मंत्रिमंडल में भी मंत्री हैं।

श्री मधु दंडवते

समाजवादी तथा जनता पार्टी के नेता। जनता पार्टी शासन में भारत के रेल मंत्री रह चुके हैं। भारतीय संसद के सदस्य हैं। आपकी पत्नी श्रीमती प्रमिला दंडवते भी संसद सदस्या रह चुकी हैं।

श्री श्रीधर वासुदेव सोहनी, आई० सी० एस०

महाराष्ट्र निवासी वत्स गोत्रीय ब्राह्मण। संस्कृत और अंग्रेजी के विशिष्ट विद्वान। बिहार सरकार के आयुक्त, मुख्य सचिव, राजस्व बोर्ड के सदस्य तथा दरभंगा संस्कृत वि० वि० कुलपति आदि पदों पर रहकर सेवा निवृत्त हुए। बाद में लोकायुक्त पद पर नियुक्त हुए और 1978 में उक्त पद से भी अवकाश ग्रहण किया और अपने पैतृक निवास महाराष्ट्र चले गये। आपके पुत्र श्री एस० एम० सोहनी आइ० ए० एस० महाराष्ट्र में पदस्थापित हैं।

श्री वी० पी० परांजपे आई० ए० एस०

भारत सरकार के संयुक्त सचिव पद पर पदस्थापित हैं।

श्री एस० पाटेकर आई० ए० एस०

मुजफ्फरपुर के भू० पू० जिलाधीश, राजस्व परिषद् के भू० पू० सदस्य तथा बिहार के भू० पू० कृषि आयुक्त।

डा० वी० डी० फड़के

निदेशक, ज्ञान विस्तार और प्रौढ़ शिक्षा, पूना (महाराष्ट्र) विश्व विद्यालय।

श्रीमती तारा साठे

खादी ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य सचिव तथा 'जागृति' के संपादक मंडल की सदस्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गोविन्द रामचन्द्र पटवर्द्धन, आई० ए० एस०

जयपुर निवासी। सीतामढ़ी के भू० पू० जिलाधीश। वर्तमान में बिहार सचिवालय में कारा एवं कल्याण विभाग के सचिव पद पर पदस्थापित हैं।

अनावले ब्राह्मण

श्री भूलाभाई देसाई

भारत के प्रमुख विधि वेत्ता, केन्द्रीय एसेम्बली में कांग्रेस दल के नेता तथा गांधी जी के अनुयायी थे। स्वतन्त्रता संग्राम में कई बार जेल जा चुके थे।

श्री महादेव भाई देसाई

महात्मा गांधी के भू० पू० आप्त सचिव। आपके पुत्र श्री नारायण देसाई सर्व सेवा संघ के मंत्री रहे हैं।

श्री खंडूभाई देसाई

मजदूर नेता तथा देश भक्त। संसद सदस्य तथा राज्यपाल भी रह चुके थे। 1975 ई० में आपका देहान्त हो गया।

श्री दिनकर देसाई

वरिष्ठ श्रमिक नेता तथा भू० पू० संसद सदस्य। 74 वर्ष की आयु में 6/11/82 को आपका देहान्त हो गया।

श्री एम० जे० देसाई

भारतीय प्रशासकीय सेवा में विदेश सचिव के पद से अवकाश ग्रहण कर अमेरिका में प्राध्यापक रहे। आपके निधन के बाद संस्मरण में अमेरिकी राजदूत ने 'दुनिया के अच्छे प्रशासक' में रूप में आपका उल्लेख किया था।

श्री डी० ए० देसाई

भारत के सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश पद पर पदस्थापित हैं।

श्री पी० डी० देसाई

गुजरात उच्चन्यायालय के न्यायाधीश तथा 5/3/83 से कुछ दिनों तक कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश रहने के बाद दिसम्बर 1983 से हिमाचल उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्यरत हैं।

श्री मोरारजी देसाई

भदेली (वुलसर, गुजरात) में 29 फरवरी 1896 को जन्म। परम्परागत कृषि पेशे वाले अनावले ब्राह्मण। आपका जीवन अनुशासन, अपराजेय निष्ठा और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदम्य साहस की रोमांचक गाथा है। भ्रष्टाचार से प्रगाढ़ वितृष्णा तथा सदाचार से प्रवल अनुरक्ति है।

1918 ई० में डिप्टी कलक्टर के रूप में सेवा प्रारम्भ कर 1930 में उसे छोड़कर गांधी जी के अनुयायी बनकर कांग्रेस में शामिल हो गये। स्वतन्त्रता संग्राम में कई बार जेल गये। 1937 में बम्बई मंत्रिमंडल में सम्मिलित हुए, दुबारा खरे मंत्रिमंडल में गृह और राजस्व मंत्री रहे। खरे के अवकाश ग्रहण करने के बाद चुनाव में हार जाने के बावजूद आप कांग्रेस विधायक दल के नेता और मुख्यमंत्री चुने गये। बाद में विधान सभा के सदस्य भी चुन लिए गये। तीन वर्ष बाद भाषा-धार राज्यों के कारण प्रान्तों के विभाजन के बाद मुख्यमंत्री पद से त्याग-पत्र देकर केन्द्रीय मंत्रिमंडल में उद्योग तथा वाणिज्य मंत्री बने। 1963 में कामराज योजना के अन्तर्गत मंत्रिमंडल से हटे। 1965 में प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष तथा 1967 में श्रीमती इन्दिरा गांधी के मंत्रिमंडल में उप प्रधानमंत्री बने। वित्त विभाग ले लेने के कारण मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। कांग्रेस विभाजन होने पर संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष वने। देश में आपातस्थिति लागू होने पर अन्य विपक्षी नेताओं की तरह गिरफ्तार होकर 19 माह तक जेल में रहे। 1977 में विपक्षी दलों की एकीकृत पार्टी (जनता पार्टी) के अध्यक्ष वनाये गये। चुनाव के बाद आप भारत के प्रधानमंत्री वने। कुछ दिनों के बाद प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। अव भी देश की सेवा में आप संलग्न हैं।

10/8/79 को आपके दिल्ली निवास पर विश्व शान्ति के लिए सराहनीय सेवाओं और सुदृढ़ सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व देने के लिए अमेरिका के पिपडिन वि० वि० (कैलिफोर्निया) की ओर से 'डिप्लोमा ऑफ ऑन' की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। यह उपाधि वि० वि० के कुलाधिपति नोरवल जेम ने एक विशेष समारोह में दी।

श्री हितेन्द्र देसाई

गुजरात के कांग्रेसी नेता। गुजरात विधान सभा के सदस्य तथा मुख्यमंत्री रहे। कांग्रेस विभाजन के बाद कुछ दिनों तक संगठन कांग्रेस में रहने के बाद सत्ता कांग्रेस में आ गये। 1976 में केन्द्रीय मंत्री बने और 1977 में चुने जाकर संसद सदस्य भी रह चुके हैं।

डा० अमूल देसाई

भदेली (वुलसार, गुजरात) निवासी। पहले समाजवादी दल के नेता थे और विधान सभा के चुनाव में अपने चाचा श्री मोरारजी देसाई को पराजित किया था। बाद में कांग्रेस में शामिल हो गये और गुजरात के वित्त मंत्री रहे। शिक्षकों और छात्रों के आन्दोलन के समय मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देकर फरवरी 74 में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपने गुजरात में राष्ट्रपति शासन के लिए वाध्य कर दिया।

पद्मश्री मणिभाई भीमभाई देसाई

मेगसेस पुरस्कार तथा पद्मश्री से सम्मानित ग्रामीण क्षेत्रीय वैज्ञानिक। 1983 में जमनालाल पुरस्कार से पुरस्कृत किये गये। यह पुरस्कार ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान और तकनीक पर आधारित अनुसंधान के लिए मिला है। पूणे (महाराष्ट्र) स्थित भारतीय एग्रो इन्डस्ट्रीज फाउन्डेशन के आप निदेशक हैं।

श्री मनमोहन देसाई

वम्बई के एक व्यवसायी तथा सिनेमा आधारस्तम्भ। आप फिल्मों के निर्माता तथा निदेशक हैं। कई फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं।

हरि प्रकाश त्यागी

ग्राम हरेवली, जिला बिजनौर। जन्म 15 नवंवर 1949। सुपुत्र श्री जे० एस० त्यागी। कालेज ऑफ आर्ट दिल्ली से कला में डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् दिल्ली में ही निवास तथा दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र में कला विभाग में कार्यरत। देश की जानी मानी पत्र-पत्रिकाओं में कला कृतियाँ व कला लेख प्रकाशित।

प्रकाशित पुस्तकें 'दूसरा आदमी लाओ', उपन्यास 'नाखून उखड़ने की रात', कविता-संग्रह विचार पुस्तक 'भुट्टो की कानूनी हत्या' तथा एक संपादित पुस्तक 'जीवंत दोस्तों की कहानियाँ।'

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.